कर अपने आप में खो जाया करती थी और साथ ही जिसको देखने के लिए वह एक काफी लम्बे अरसे से इन्तजार कर रही थी, आज वह उसके पास खड़ा था—उसकी नजरों के सामने था।

और लेखक शायद यह सोचने में उलझ गया था कि उपन्यास की खूबसूरत नायिकाओं के हुस्न की तारीफ करने के लिये दुनिया भर की सभी उपमाएं इकट्ठी कर के एक में सजो देता है, लेकिन उन ख्यालों की हुस्न की शहजादियों से परे हकीकत में भी उनसे बढ़ कर हुस्न की मलिका इस दुनिया में मौजूद है और जिसकी एक मिसाल उसके सामने थी, जो न कोई ख्वाब था और न कोई रंगीन सपना।

सचमुच एक अजीब सा समां छा गया।

और तभी नाजनीन के पतले गुलाबी होंठ फुसफुसा उठे—'बैठिए।'

ओह! सपने से जागता हुए वह संभला।

और साजिद मुस्कुरा रहा था बैठा हुआ, जैसे उसको पहले से यही उम्मीद थी होने की

दोनों ही बैठ गये आमने-सामने, तो साजिद ने कहना शुरू किया—'यह हैं मेरी बहन मुमताज।'

और आप हैं एक मशहूर और मंजे हुये लेखक। नाम तो आपका दुनिया जानती है फिर हम ही अपनी जुबां पर ला कर गुस्ताखी क्यों करें, साजिद की इस बात पर कमरे में एक हल्की मुस्कुराहट गूंज उठी। हां तो मैं कह रहा था, साजिद बोला—मैंने कई बार तुम्हारा जिक्र मुमताज को खतों में किया कि जिनकी फलां कहानी उस पत्रिका में छपी है वो मेरे एक बहुत अजीज और गहरे मित्र हैं और अमुक नया उपन्यास जो अब मार्किट में आने वाला है वो इन्हीं का लिखा हुआ है। और हर बार मुमताज ने यही लिखा 'कि वो कौन सा खुशनसीब दिन होगा, जिस घड़ी मैं अलीगढ़ से तुम्हारे पास आऊँगी और मेरी मुलाकात उस महान लेखक से होगी।'

और लेखक इस बात पर थोड़ा सा मुस्कुरा दिया, और भला इस बात का जवाब देता ही क्या।

हां तो अब वो महान हस्ती तुम्हारे सामने है, साजिद ने मुमताज को को सम्बोधित करते हुए कहा—अब तुम जी भर कर देख भी लो, अपने दिल में छुपी वो बातें जिन्हें कहने को तुम सचमुच बेचैन थीं वो भी कह लो, और पूछ लो वो भी सवालात, जिन्हें तुम मुझ से पूछा करती थीं।

मगर वो हसीं नाजनीन अपने दिल की धड़कनें ही अपने बस में नहीं कर पा रही थी, सवाल करना तो बात ही जरा दूर की थी वो अपनी नजर उठा उसकी तरफ देखने की हिम्मत कहें या हिक्मत, भी नहीं कर पा रही थी, बन्द गुलाब की कली तरह छुई मुई सी बनी वो सामने छोटी सी खूबसूरत मेज पर पड़े सुन्दर से कांच के फूलदान में सजे हसीं फूलों की तरफ नजरें झुकाये बड़े प्यार से देख रही थी—'शायद सोच रही थी कि बात का सिलसिला कहां से शुरू किया जाए।

कि तभी लेखक ने कहा—क्या आप अलीगढ़ में ही रहती हैं?

जी ?······मुमताज ने घबरा कर नजरें ऊपर उठायीं, जैसे वो अचानक इस सवाल के लिये तैयार न थी, नजरें मिलीं तो उसने अपनी झील सी गहरी चमकीली आंखों से उसकी तरफ देखते हुए आहिस्ता से से बड़े लहजे लफ्जों में कहा—जी नहीं, मैं वहां पढ़ती थी, और आगे सवाल का मौका न देने की वजय से उसने खुद ही अगली बात की कड़ी को पूरा करते हुए कहा अब बी० ए० का इम्तहान दे कर आयी हूं और अब आगे पढ़ने का ख्याल नहीं है······।

क्यों ? —पूछा उसने।

बस यूं ही, वो कहने लगी—लियाकत के लिये लड़कियों को इतना भी बहुत है।

और खुदा न करे, अगर आप फेल हो जाएं फिर तो आपको एक साल और पढ़ना पड़ेगा या नहीं।

और मुमताज को इस बात पर हँसी आ ही गई—और हँसी भी इस तरह कि जैसे रात की रानी की पंखुड़ियां रात्रि होते ही एकदम खिल उठीं हों···

और कहना ही था उसका कि मुमताज के चेहरे पर फिर से रौनक गौड़ गयी, उसने एक गहरी सांस लेकर अपने कोमल गोरे हाथ से नर्म गालों पर उभर आयी पसीने की बूंदों को मिटा दिया। उसके लम्बे २ नाखूनों पर लगी नैचूरल कलर की नेल पालिश रोशनी में चमक उठी, और वो आवारा जुल्फों की लट जो गाल पोंछने की वजय से हिल गयी झूम २ कर बार-बार उसके गोरे-गोरे गुलाबी गालों को रह-रह कर चूमने लगी।

अरे! तो क्या चाय नहीं पिलाओगी अपने मेहमान को साजिद ने मुमताज की तरफ देखते हुए मुस्कुरा कर कहा, और एक क्षण भर को लेखक की तरफ देखा और उसी लहजे में बोला—अगर आज हमारे मेहमान होते तो···हम तो आते ही पूछते—'मगर आज तो···।

अभी लायी भाई जान ··साजिद की बात काटते हुए मुमताज ने लेखक की तरफ देखा तो नजरें चार होते ही थोड़ा सा मस्तानी अदा से शरमा गयी आंखों ही आंखों में, और कातिल अदा से सोफे पर से उठी और पतली सी नाजुक कमर को लचकाती···बलखाती कमरे से बाहर चली गयी उसके बाहर जाते ही साजिद ने कहा—शरमाती बहुत है···किसी से बात करने में और शर्म ही तो औरत का सबसे कीमती जेवर है···लेखक ने फरमाया,

लेकिन तुमसे भी···शरमाती है और जब अलीगढ़ में थी हर बार खत में लिखती थी क्या हमारे घर आते हैं वो···क्या रोज आते हैं···और यहां तक कि तुम्हारा हालचाल भी बराबर पूछती थी···और अब मुलाकात हुई तो हालचाल तो पूछना रही दूर की बात चाय के लिए भी नहीं पूछा···।

और यह बातें हो ही रही थीं कि करीब पांच सात मिनट बाद मुमताज ने पर्दा हटाकर कमरे का, वहीं खड़े २ पूछा—आप लोग चाय पियेंगे या शरबत?

और सुनना ही था कि लेखक को भी हंसी आ गई और साजिद ने जोर से हंसते हुए कहा—सारी रात रोये, एक मरा वो भी सुबह उठकर चलता बना ··जवाब नहीं तुम्हारा भी मुमताज, घंटे भर बाद तो तुम्हें चाय की याद दिलाई और अब डेढ़ दिन बीत जाने के बाद तुम पूछने आई हो कि चाय

उसके मोतियों जैसे दाँत चमक उठे मरकरी की ट्यूब की रोशनी में···! और इस खिलखिलाहट में उसका आवारा आँचल बड़ी अदा से सीने पर से फिसलता हुआ नीचे खिसक गया······और उसका जवान उभरा हुआ नुकीला सीना बगैर आँचल के कयामत ढा रहा था— उसके जवानी से भरे मदहोश उरोजों के बीचों बीच पड़ी नन्हीं नन्हीं मोतियों की माला ने मचल कर दोनों नितम्ब चूम लिये, सुराहीदार गरदन से नीचे कमीज के गले की पान की शक्ल की कटाई की नोक काफी नीचे तक चली गई थी कि...काश ! अगर टेलर मास्टर जवानों के जवां दिलों पर थोड़ा सा तरस खा कर उस कटाई की नोक को थोड़ा और नीचे ले जाता तो जाने उसका क्या हर्ज हो जाता मगर फिर भी उसके मदहोश नितम्बों का कुछ २ उभार स्पष्ट हो रहा था।

आपने बुरा तो नहीं माना कहीं मेरी बात का लेखक ने पूछा तो उसने उसी अन्दाज से एक मदभरी मुसकान से कहा अगर बुरा माना होता तो भला मैं हँसती ?···

हो सकता है कि आप मेरी ही मजाक उड़ाने के लिये हँसी हों।

जी ?···जी नहीं। मुमताज एकदम सहम सी गई उसकी इस बात पर, वो हंसता हुआ गुलाबी चेहरा एकदम यूँ मासूमियत लिये खामोश हो गया कि जैसे हँसी तो इन गोरे-गोरे गालों पर कभी आयी ही न हो, उसकी शराबी आंखें एक पल को उसकी तरफ उठीं और दूसरे ही क्षण लम्बी काली पलकों ने झुक कर पर्दा डाल दिया, वो कमरा जिसमें अभी एक मिनट पहले एक नाजुक सी हँसी गूंज उठी थी अब यूं खामोशी छा गयी वहां, कि जैसे कोई बैठा ही न हो कमरे में।

तभी साजिद ने—'जो काफी देर से मौन बैठा इनकी बातों का आनन्द ले रहा था, कहा—इनकी बातों को समझना कोई आसान नहीं मुमताज, न तुम इनकी बात को समझ सकती हो और न काट सकती हो।

खैर छोड़िये इन बातों को, आप तो यूं ही परेशानी में पड़ गए उसने बात का रुख ही बदल दिया, मैंने तो मजाक की बात कही थी आप लोग लगे पहेलियों की तरह सुलझाने।

पिओगे या शरबत, वरना और कोई होता तुम्हारी जगह तो अब तक यहां खाली प्यालियां नजर आतीं।

और वो थी कि शरम के मारे दरवाजे के पर्दे में ही लिपटी जा रही थी, गालों पर लाज के मारे गुलाल की तरह लाली उभर आई, उड़ती नजर से उसने कमरे के वातावरण का निरीक्षण किया तो पाया उसने कि लेखक उसी की तरफ एकटक देख रहा है कि जैसे उसके इस शरम और झेंप के चित्र को घर जाकर अपने उपन्यास के पन्नों पर उतारना हो, और साजिद कहे जा रहा था—हां तो अब तुम्हारी मर्जी क्या पिलाने की है ?

नहीं, मैंने तो इसलिये पूछा था, अपनी झेंप मिटाने के लिए अपनी सफाई देने लगी—कि आजकल गर्मी होने की वजह से शायद चाय अच्छी न लगे ।

अगर गर्मी का इतना ही ख्याल था तो शरबत के लिए तो आते ही पूछना चाहिये था तुम्हें।

और वो बेचारी कश-म-कश में पड़ गई कि सवाल क्या पूछा और जवाब क्या २ मिले और नतीजा भी कुछ न निकला, सोच ही रहा थी कि क्या अब दोबारा सवाल दोहराना पड़ेगा कि साजिद ने उसको खामोश खड़ी देखकर कहा—अच्छा, तो फिर तुम चाय ही ले आओ।

सुनकर मुमताज ने राहत की सांस ली जैसे किसी अपराधी को कारागार से मुक्त कर दिया गया हो, पर्दे को छोड़कर वो अन्दर चली गई और इधर फिर साजिद ने लेखक से कहा—देखा, इसका बचपना अभी तक नहीं गया, इतनी बड़ी हो गयी है पर बातें नादान बच्चों जैसी ही हैं।

यह बातें हो ही रही थीं कि मुमताज के साथ नौकर चाय की तश्तरी उठाये दाखिल हुआ, नौकर ने अदब से सामने रखी मेज पर तश्तरी रख दी, तो मुमताज ने चाय, बनाने के लिए केतली की तरफ हाथ बढ़ाया तो पतली कमलनाल सी उंगलियों में पहनी हुई नगों से जड़ी सोने की दोनों अंगूठियां चमक उठीं गोरे से कमल हाथ ने बढ़कर केतली थामी तो डर हुआ लेखक को कहीं इन नाजुक हाथों से केतली फिसल न जाये, मगर खैर हुई खुदा की कि

चाय सही सलामत प्यालियों में पहुंच गयी, उसने आहिस्ता से कप प्लेट उठा कर लेखक की तरफ बढ़ाया और अपनी घनी पलकों को कुछ उठाकर बाँकी अदा से लेखक की तरफ देखा तो न जाने क्यों अपने गुलाबी पतले होंठों ही होंठों में मुस्करा दी, तब दूसरा कप उसने साजिद की तरफ बढ़ाया और तीसरा कप उसके सुर्ख लबों से जा लगा, शायद चाय कुछ ज्यादा गर्म थी कि पहले ही घूंट पर मुमताज ने अपना निचला होठ दांतों में दबा लिया।

कमरे में एक खामोशी सी छाई हुई थी, चाय की चुस्कियां ही खामोशी तोड़ देतीं कभी, इस अजीब सी खामोशी में 'सीलिंग फैन' की आवाज भी कमरे में गूँज रही थी या थोड़ी आवाज कमरे में लगे 'कूलर' की आ रही थी, तीनों ही शायद इस खामोशी को दूर करने के लिए कोई बात सोच रहे थे पर क्या कहें···यह तीनों की समझ में न आ रहा था, कि इन्हीं सोच विचारों में चाय का दौर ही खत्म हो गया।

कि लेखक ही ने पूछा—आज आपकी अम्मी जान की आवाज सुनाई नहीं दी! तो साजिद ने कहा—आज वो घर में नहीं है शायद अब्बाजान के साथ अपनी खाला के यहां गई हैं···क्यों मुमताज?

घर तो यही कह कर गई हैं···मुमताज ने फरमाया।

तो क्या आपका मतलब है कि वो कालिज की लड़कियों की तरह घर पर झूठे बहाने बता कर कहीं पिक्चर गई होंगीं क्या? लेखक ने कहा,।

जी···जी नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है, मुमताज को अपने कहने के अन्दाज में गलती महसूस हुई तो वो शरमा गई, कहने लगी—बल्कि मुझे भी यही पता है।

और बात का सिलसिला फिर टूट गया और खामोशी फिर छा गई।

तभी साजिद ने कहा—अब तुम्हारी कहानी कौन सी पत्रिका में आ रही है इस महीने, और साजिद के इस सवाल पर मुमताज की आंखों में इक चमक सी आ गयी जैसे वो खुद इस सवाल को पूछना चाहती थी, जिज्ञासा की एक लहर उसके चेहरे पर दौड़ गयी, एकटक लेखक के चेहरे पर यूँ देखने लगी कि उसका कहा हुआ एक लफ्ज भी कहीं छूट न जाये।

तव जवाब में उसने कहा—यूँ तो कहानियां मैं कम ही लिखता हूं क्योंकि इनसे कोई खास फायदा नहीं होता, लेकिन अगर कोई पत्रिका वाला मांगे तो इन्कार भी मैं कभी नहीं करता, बहरहाल इस माह की 'सुनीता' में एक कहानी आने वाली है ।

और आपका उपन्यास ?…मुमताज ने बड़े भोलेपन से पूछा।

उपन्यास तो अभी हाल में मैंने लिखना शुरू किया है और ज्यादा से ज्यादा अभी सिर्फ सात आठ पृष्ठ ही लिखे हैं—उसने उसकी तरफ देखते हुए कहा और बात के खतम होते ही वह खड़ा हो गया । अच्छा तो अब इजाजत दें… काफी देर हो गयी है ।

तो साजिद भी खड़ा हो गया कहने लगा—बैठो भी, अभी तो तुम आये और अभी चल दिये।

नहीं अब काफी देर हो गयी है…और फिर यहाँ तो रोज का आना है ।

कहाँ रोज का आना है, कई महीने में एक-आध बार तुम्हारी सूरत नजर आती है और वो भी छः दफा घर से बुला लाने पर, खैर ! आखिर बड़े आदमी ठहरे, साजिद ने कहा ।

और मुमताज जो अब तक बैठी थी आंचल सम्भाल कर खड़ी हो गई, कहती क्या भला । मगर जैसे उदास सी हो गयी उसके जाने की बात सुन कर, जैसे वो चाहती हो कि वो सारी रात इसी तरह उसके सामने बैठी बातें करती रहे वो इसकी सूरत देखता रहे और ये उसकी आंखों में खो जाए ।

अच्छा तो फिर आओ तुम्हें सड़क तक तो छोड़ आऊं—साजिद ने कहा तो एकदम मुमताज बोली—जरा ठहरिये, मैं भी चलती हूं वहां तक, मैं जरा चप्पल पहन आऊं । तो नजर उसके पैरों की तरफ झुक ही गई लेखक की तो देखा कि नीले रंग के फूलदार काश्मीरी गलीचे पर उसके गोरे-गोरे सफेद पांव कितने खूबसूरत लग रहे थे, सुडौल पांवों की नाजुक उंगलियों में चांदी के सफेद छल्ले पहने हुई थी और तिस पर पतली सी पाजेब पहनी हुई थी…क्या बनाया है खुदा ने उसे कि अंग-अंग सांचे में ढला हुआ, कि जरूर खुदा ने उसे खाली वक्त में बनाया होगा ।

और तेजी से वो दूसरे कमरे में चली गई और जब वापिस आई तो जरीदार मखमल की जूती उसके नर्म पैरों को चूम रही थी, तीनों ही गैलरी पार करके लान में आ गये, आलीशान बंगले के चारों ओर बना हुआ छोटा-सा बगीचा अपने ही किस्म का एक अनूठा बगीचा था, रात की रानी की महक मदहोश किये जा रहा थी नर्म गद्देदार घास के कोमल सीने पर से लांघते हुए वो मेन गेट की तरफ बढ़े, चौकीदार ने बढ़ कर फाटक का एक दरवाजा खोल दिया, गेट से निकल कर वो सड़क पर आ गए, मेन गेट के दोनों बुर्जों की मुंडेर पर लगे 'लाइट ग्लोब्स' झीनी-झीनी रोशनी सड़क पर पड़ रही थी, मगर पास ही लगे हुए स्ट्रीट पोल पर लगी मरकरी ट्यूबों की रोशनी के सामने इनकी रोशनी एक दीपक की तरह लग रही थी।

तो साजिद बोला—तो अब सीधा घर जाइएगा या कहीं और···

और कहीं जाना होता है···हमारी दौड़ तो ज्यादा से ज्यादा आपके दौलत खाने तक ही है।

मगर अच्छा तो अब यहीं था तुम खाना खाकर जाते। साजिद ने कहा, तो लेखक ने जवाब दिया—नहीं अब तो मैं चलता हूं फिर कभी सही।

'शायद एतराज करते होंगे हमारे यहां का खाना खाने में। मुमताज ने कहा।

जी नहीं, यह बात मैंने आज तक नहीं सोची कि मैं हिन्दू हूं और आप लोग मुस्लिम धर्म के हैं, इस वास्ते आपके यहां का खाना मुझे नहीं खाना चाहिए, बल्कि यह कहिए कि हर लेखक का कोई धर्म न ीं होता, अच्छा तो इजाजत है फिर। लेखक ने चलने के लिए आज्ञा मांगी तो साजिद ने पूछा—फिर कब दीदार होंगे तुम्हारे।

शायद हफ्ते, दस दिन से पहले ही कोशिश करूंगा, उसने चलते-चलते कहा और साजिद से हाथ मिला कर उ ने मुमताज की तरफ देखते हुए दोनों हाथ जोड़ दिये तो नाजनीन ने भी ओटोमैटिक मशीन की तरह दोनों हाथ जोड़ दिये और वो उदास आंखें··, एकटक देख रही थीं उसे जाते हुए। एक हाथ सीने पर था और दूसरा आंचल का पल्ला थामे हुए था।

जब वह जगमगाते स्ट्रीट पोल को पार कर गया तो साजिद ने मुमताज की तरफ बिना देखे हुए कहा—आओ।

और जैसे वो सपने से जाग रही हो, चलने को वो सम्भली ही थी कि सामने से सड़क के सीने पर से दौड़ती हुई एक कार झटके से आकर रुक गई।

२

अपनी ही धुन में लेखक बढ़ा चला जा रहा था, विचारों में खोया वो मुमताज के बारे में ही सोच रहा था, कितनी हँसमुख लेकिन शर्मीली लड़की है, खूबसूरती और फिर शोखी और वो भी मदहोश, साथ ही चंचलता और लाजवाब बात करने का लहजा। क्या नहीं दिया खुदा ने उसे।

चलते-चलते उसने एक सिगरेट सुलगाई और एक गहरा कश लेकर फिर पिछली कड़ी को जोड़ते हुए सोचने लगा—क्या सचमुच वो मुझसे मिलने के लिए बेचैन थी···साजिद का तो कहना है कि वो अक्सर खतों में मेरे बारे में पूछती थी।

और इन्हीं विचारों में वो रेलवे की 'ओवर ब्रिज' (Over Bridge) के पास आ गया, चूंकि यह एक 'शार्ट कट' रास्ता था उसके घर तक पहुंचने का, वर्ना सड़क काफी लम्बी थी।

ओवर ब्रिज की पहली सीढ़ी पर उसने सिगरेट का टुकड़ा फेंक दिया और उसे पांव तले मसलता हुआ तेजी से ऊपर चढ़ता गया, कितनी ठण्डी और मीठी हवा चल रही थी पुल पर, दूर लाइनों में छोटी-छोटी लाल बत्तियां जल रही थीं, समानान्तर लाइनों का एक जाल-सा बिछा हुआ था, और इस ठण्डी हवा का आनन्द लेते हुए वो तेजी से कदम बढ़ाये चला जा रहा था। नीचे इन्जन और डिब्बों का एक जमघट सा लगा हुआ था, कि इतने में ही दूसरी तरफ उतरने के लिए सीढ़ियां आ गईं और पहली ही सीढ़ी के कोने पर एक

तरफ को हट कर एक भिखारी बैठा हुआ था, जिसे लेखक ने अक्सर कई दफा इसी जगह पर बैठे हुए देखा था और कभी-कभी वो कुछ दे भी दिया करता था और आज भी उसने एक पांच पैसे का सिक्का उसकी हथेली पर रख दिया और इससे ज्यादा एक लेखक दे भी क्या सकता है और फिर बम्बई जैसे शहर में, जहाँ खुद का खर्च भी निकालना मुश्किल है।

लेकिन—फिर बम्बई जैसे शहर में भिखारी भी पांच पैसे में क्या-क्या ले लेगा, सोचता हुआ लेखक नीचे उतरने लगा, आखिरी सीढ़ी उतर कर वो दायीं तरफ घर की ओर मुड़ गया, रास्ते में एक स्ट्रीट पोल की रोशनी में अपनी कलाई पर बधी सुनहरी रिस्ट वाच को देखा उसने, जो करीब पौने दस बजा रही थी।

उसने जल्दी से प्रोग्राम सैट किया अपने दिल में कि मुश्किल से अब घर तक का पाँच मिनट का रास्ता है और पांच मिनट में कपड़े वगैरा बदल कर फारिग होना और अगले पांच मिनट बाद यानी ठीक दस बजे अपना नाविल लिखना शुरू होगा, न जाने क्यों आज उसका 'मूड' बना। वर्ना लेखक के तो 'मूड' भी कमाल के होते हैं, बात करो तो उनसे 'मूड' की परिभाषा जरूर सुनने को मिल जायेगी, अगर पूछो कि इतने दिन से तो आप दिखाई ही नहीं दिये तो झट से फरमायेंगे, अजी साहब मूड ही कुछ खराब था कि मार्किट में आना नहीं हो सका और अगर आप पूछेंगे कि आप फलां जगह पर क्यों नहीं गए तो बड़ी संजीदगी से कह देंगे—अरे, अपना मूड ही ठीक न था। और अगर किसी शादी ब्याह या दावत पार्टी में न आने की वजह पूछेंगे तो यह कसूर भी मूड का ही था। बतायेंगे वो।

तेजी से सीढ़ियां चढ़ता हुआ वह ऊपर आया, सड़क की रोशनी में उसके दरवाजे के बायीं ओर लगी नाम की प्लेट चमक रही थी, हल्के से मुस्करा कर उसने प्लेट को देखा और फिर दरवाजे पर लगे ताले को खोलने लगा, किवाड़ खोल कर उसने अन्धेरे में अन्दाजे से दरवाजे के पास लगे 'स्विच' को दबा दिया. बिजली के प्रकाश में कमरा मुस्करा सा पड़ा जैसे आज बिजली की

चमक में कुछ फर्क था। लेखक ने अपने कमरे को ध्यान से देखा एक मिनट, एक तरफ पलंग बिछा हुआ था जिस पर सलवटें लिए चादर मचल रही थी और पास ही उसकी मेज कुर्सी पड़ी थी उसकी अपनी कुर्सी जिस पर वो किसी को बैठने नहीं देता और दो कुर्सियां भी रखी थीं कमरे में एक तरफ और उसके पास ही जमीन पर पत्र-पत्रिकाओं का ढेर लगा पड़ा था और धूल का राज्य तो चारों तरफ था, जैसे हफ्तों से कमरे में झाड़ू भी न लगी हो तभी उसकी नज़र रसोई घर और स्टोर के दरवाजे पर पड़ी जिन्हें शायद करीब छः माह से खोल कर देखा भी नहीं गया, आखिर जरूरत ही क्या थी उनकी। जल्दी से उसने कपड़े बदले और मुंह हाथ धोकर आ बैठा अपनी कुर्सी पर। और दराज से उपन्यास का पैड निकाला और लिखने बैठ गया। पहले तो उसने रात का लिखा हुआ एक पृष्ठ पढ़ा और फिर एक मिनट सोच कर लिखने लग गया, उसके उपन्यास की नायिका की नायक से भेंट होनी थी और वो सोच रहा था कि किस तरह लाजवाब ढंग से वो उसके सामने लाई जाए और किस कातिल अदा से वो उसके बात करने का ढंग लिखे।

सोचने लगा क्या इसी तरह जिस तरह आज उसकी भेंट मुमताज से हुई थी, सोचने लगा यह भेंट थी या मुलाकात या मिलन, नहीं मिलन नहीं था। मिलन में वासना की बू होती है और भेंट तो जान-पहचान वालों से होती है, हां यह एक मुलाकात थी, एक शरमीली मुलाकात। एक लजाई हुई मुलाकात, तो हां. सोचा उसने एक मुलाकात होनी है आज उसके उपन्यास की नायिका की नायक से, और वो भी नायिका के बंगले पर ही और फिर बिल्कुल ठीक उसी ढग से कि यह जान-पहचान भी उसी के भाई के जरिये होनी है—क्षण भर को सोचा उसने, क्या वो खुद इस उपन्यास का नायक तो नहीं है, कहीं और संजोग की बात यह भी तो है कि उसने अपने उपन्यास का नायक एक लेखक को बनाया है।

तो क्या लिख दे वो ठीक उसी ढंग से जैसे वो गुलबदन नाजनीं उसके सामने आई थी। चलती-चलती उसकी कलम वहीं रुक गई, एक मिनट को

उसने इस हाल ही में गुजरे हुए सपने को फिर से दोहराया अपने दिल के परदे पर।

ओफ! क्या गजब की अदा थी वो उसके आने की, और फिर वो कातिलाना अन्दाज...कितना हसीन था जब उसने अपने चांद से गोरे हाथ से वो गुलाबी रंग का रेशमी पर्दा हटाया था और फिर क्षण भर को दरवाजे पर शोख अदा से रुकना और फिर उसका वो रुक-रुक कर आगे बढ़ना, जैसे वो फूलों पर बड़ी आहिस्ता २ कदम रखते हुए आगे बढ़ती चली आ रही हो—नहीं, वो तो यूं लगता था जैसे वो किसी के जवां दिल की धड़कनों पर अपने पांव संभल कर रखती हुई चली आ रही थी, फिर पास आकर उसका रुकना, एक मदभरी दिल में उतर जाने वाली मुस्कान से उसने बड़ी बांकी अदा से उसकी तरफ देखा था और जब उसने अपना हाथ उठा कर धीरे से कहा था—तस्लीम, तो जानो ऐसा लगा था जैसे कमरे में नन्ही २ घुंघरियां सी एक साथ बज उठी थीं, और यह सोचकर उसे हँसी सी आ गई, कि वो उठकर उसके तस्लीम का जवाब देने के बाद एकटक उसकी तरफ देखते हुए खड़ा क्यों रह गया था उसे बैठ जाना भूल क्यों गया था, कहां से कहां चले गए थे उसके ख्यालात, उसकी महताब सी सूरत देखते ही। ओफ! उसका भाई भी तो पास ही बैठा था, तो क्या सोचता होगा अपने दिल में।

एक भाई के साथ राह जाती हुई यदि उसकी बहन की तरफ कोई जवां युवक इक तरसती नजर से देख ले, भाई का पारा पूरे पौने एक सौ आठ डिग्री तक चढ़ जाता है और चाहता है कि बस! इस साले को, साला बनाने से पहले ही आंखों ही आंखों से निगल जाऊँ और खुद वही जनाब...अगर किसी लड़की को अपनी तरफ आते हुए देख लेंगे तो मुंह में पानी यूं भर आयगा जैसे वो कोई रसगुल्ला हो। और चाहेंगे कि बस इसे चिड़िया बना लें किसी तरह और रख लें अपनी जेब में, और इस दौरान में अगर उनकी बहन का कोई मनचला अपनी आंखों के कैमरे का एक बटन 'टिक्' से दबाकर अपने दिल के कार्ड पर उसका 'नैगेटिव फोटो' भी ले ले तो उन्हें कोई तकलीफ मह-

सूस नहीं होती क्योंकि वो वेचारे खुद ही अपने कैमरे का 'लैंस' ठीक करने में व्यस्त थे ।

इस बढ़ते हुए ख्याल से दूर हट कर वो फिर वापिस अपनी बात पर आ गया, और फिर वो हँसी उसके कानों में गूंज उठी मुमताज की, कितनी खूबसूरत लग रही थी वो और वो मोतियों जैसे सफेद दांतों की लड़ी चमक उठी थीं ।

इन्हीं ख्यालों का जाल बुनते हुए अपनी कलम को तेजी से कागज के पन्नों पर चलाने लगा, आज मूड तो उसका वैसे ही बहुत खुशमिजाज था सो कलम भी उसकी बड़ी तेजी से दौड़ रही थी, विचार आज उसके मस्तिष्क में भरे पड़े थे और वो एक-एक को कागज पर उतार लेना चाहता था ।

काफी देर बाद जब उसने सिर उठाकर सामने दिवार पर बनी अंगठी पर रखी टाइम पीस को देखा तो वो साढ़े दस बजा रही थी तो उसे आश्चर्य हुआ, क्या इतनी देर से सिर्फ आधा घन्टा ही बीता है तो उसने दराज से अपनी रिस्टवाच निकाल कर देखी तो करीब बारह बजकर पचास मिनट बजा रही थी ।

समय का ख्याल आते ही उसे नींद ने अपने घेरे में ले लिया और वो सोने की तैयारी करने लगा ।

आज उसे इन हसीन ख्यालों में खाना खाने का भी ध्यान न रहा था ।

३

कार के रुकते ही मुमताज और साजिद ने घूम कर उस तरफ देखा तो दोनों के चेहरों पर एक मुस्कराहट सी खेल गई, मगर दोनों की मुस्कराहट में कुछ फर्क जरूर था । एक क्षण भर तो कार यूं ही खड़ी रही जैसे वो बिना ड्राइवर के अपने आप आ पहुंची हो । न उसका दरवाजा खुला न किसी ने हरकत की ।

तो मुमताज होठों ही होठों में मुस्कराती हुई नजदीक आई और स्वयं कार

का दरवाजा खोलते हुए बोली—अब आ भी जाइये न बेगम साहिबा बाहर, हमें भी मालूम है कि आपको शर्म जरा ज्यादा लगती है पर···। उसने कुछ रुक २ कर कहा—पर जरा उनसे मिले बिना आपको रात भर करवटें बदल २ कर परेशान होना पड़ता है। और उसने थोड़ा सा घूम कर साजिद की तरफ देखा जो लान को पार करके अपने कमरे की ओर जा रहा था।

तब धीरे से नौशाबा कार से उतरी और मुमताज के नाजुक हाथों को अपने मुलायम हाथों से दबाती हुई कहने लगी—अच्छी तो हो।

हां, मुमताज ने फरमाया—और वो भी अच्छे हैं—'हमारे तुम्हारे' 'साजिद मियां'।

यूं तो यह कोई नई बात न थी कि मुमताज को पता न हो कि नौशाबा उसके भाई साजिद के इश्क में गिरफ्तार थी और नौशाबा ने कभी छुपाया न था इस बात को। यहां तक कि दोनों के माता-पिता को भी उड़ती नजर से इस राज़ का पता था, पर आज जरा बात ही नाजुक सी पैदा हो गई थी कि मुमताज और साजिद दोनों ही गेट पर खड़े थे।

हालांकि नौशाबा आती तो मुमताज से मिलने का बहाना बना कर। पर नजरें उसकी साजिद को ही ढूंढने में लगी होती थीं।

अब अन्दर भी चलोगी या बाहर ही खड़ी रहोगी, मुमताज ने नौशाबा का हाथ पकड़ कर कहा। और दोनों ही अन्दर आ गईं, और उसी बैठक में ले आई जहां अभी चन्द मिनट पहले वो साजिद और लेखक के बीच घिरी हुई बातें कर रही थी।

चाय की केतली और प्यालियां वगैरा वैसे ही मेज पर पड़ी थीं। दोनों आकर सोफे पर बैठ गईं तो मुमताज ने नौकर को बुला कर मेज खाली करने के लिए कहा और साथ ही चाय लाने को कहा। तभी नौशाबा पूछ बैठी, कौन आया था अभी तुम्हारे यहां? बड़े भोलेपन से उसने बांकी अदा से मुमताज की तरफ देखा। सच था भी तो कितनी भोली सी, गोरी-चिट्टी मासूम सी लड़की, मगर थी बड़ी चंचल। चेहरे के कट्स बड़े कातिल थे उसके, आखिर वो भी अमीर मां-बाप की लड़की थी तो क्यों न फैशन परस्त भी होती।

और मुमताज ने जब उसकी तरफ देखा तो उसकी आंखों में एक चमक सी आ गई वो भी बड़ी अदा से बोली—आई थी कोई खुशकिस्मत।

क्या, तुम्हारी कोई फ्रेन्ड थी वो ?

अजी, हमसे कौन मिलने आता है। मुमताज आंखें नचा कर बोली—मुलाकात तो खुशकिस्मत वालों से होती है, हम जैसे बदनसीबों को कौन सलाम करता है।

तो किससे मिलने आई थी वो ?

साजिद से, मुमताज ने उसी तरह शरारत भरी नजरों से उसकी तरफ देखते हुए कहा।

क्या कहा—उन से, नौशाबा ने हिचकते हुए पूछा।

क्यों, जल गया न जख्मे-दिल, सच कहती हूं बड़ी देर तक मीठी-मीठी न जाने क्या बातें होती रहीं, और बात-बात पर वो मुस्करा यूं पड़ती थी कि न हँसने वाली बात पर भी हँसना पड़ता था, जालिम की अदाएँ बड़ी प्यारी थीं—और खूबसूरती की बात क्या पूछती हो मिस नौशाबा, वो अपने दिल पर आशिकी अन्दाज से हाथ रख कर बोली—मर्द तो क्या, हसीन लड़कियां भी दिल थाम कर रह जाएँ।

अच्छा अब बस करो न यह कहानी नौशाबा बोली।

क्यू ! उसके हुस्न की तारीफ सुन दिल के दो टुकड़े तो नहीं हो गये तुम्हारे और अन्दाज और नजाकत का हाल पूछती हो तो सच कहती हूं नौशाबा—तुम्हारे हुस्न की कसम, भैया तो उसके चेहरे की तरफ ही देखते रहे बस, करीब डेढ़ घण्टा बैठी होगी यहां पर भैया की आंखें तो उसकी झील सी गहरी आँखों में ही खोये रहे। तब मुमताज एक सर्द सी आह लेकर बड़ी एक्टिंग से बोली—जाने बेचारे भाईजान के दिल का क्या हाल होगा। और कहने के साथ-साथ उसने नौशाबा के चेहरे पर बदलते हुए भावों की तरफ देखा और दिल ही दिल में मुस्करा पड़ी।

तभी इतने में घर का बूढ़ा नौकर चाय लेकर आ गया, मेज पर तश्तरी रख कर बोला—कहो तो बिटिया रानी, खाना भी ले आऊँ।

तो मुमताज ने नौशाबा की तरफ देखते हुए पूछा—तुम खाओगी नौशाबा लेकिन उसने जब फरमाया कि मैं अभी घर से खाकर ही आयी हूं तो मुमताज ने नौकर की तरफ देखते हुए कहा—तो फिर अब रहने ही दो, मुझे भी अब कोई खास भूख नहीं है।

घूमकर जब उसने नौशाबा की तरफ देखा तो वो न जाने ख्यालों की दुनिया के कौन से देश में घूम रही थी, उसे पता ही न लगा कि मुमताज ने चाय भी प्यालियों में उडेल दी है। उसकी इस हालत को देखकर मुमताज के चेहरे पर एक चचंलता की लहर दौड़ गई, उसने थोड़ा मुस्कराते हुए कहा—अगर तुमसे उस नाजनीन के हुस्न का ठीक नक्शा न बन रहा हो तो, कहो तो मैं तुम्हारी कुछ मदद कर दूँ।

और नौशाबा झेंप गई, उसकी इस बात पर और प्याला उठाकर चाय पीने लगी, पर मुमताज कहाँ मानने वाली थी, उसने अधूरी बात का फिर दामन पकड़ लिया कहने लगी—क्यों अपना दिल जलाती हो उसके हुस्न का हाल पूछ कर, मगर तुम्हें सारी रात नींद भी तो न आयेगी न, तो फिर सुन ही लो—मासूम सा चेहरा था उसका बिल्कुल तुम्हारी तरह, मगर वो तुम्हारी तरह छुपे रुस्तम नहीं थी।

अच्छा रहने भी दो अब बहुत हो चुका—नौशाबा परेशान सी हो गई।

मगर मेरी जान, जरा दिल थाम कर सुन तो लो, सच कहती हूं कि उसकी मोटी २ कजराली आंखें तो मस्त हिरणी को भी मात किये दे रही थीं, गुलाब सा नर्म चेहरा और पतले होठों में जब वो मुस्कुरा देती थी तो यूँ लगता था जैसे चमन में बहार आ गई हो और जब वो जाने के लिए अपनी कमर लचका कर उठी तो न जाने क्यूं उसने एक मादक सी अंगड़ाई लेकर भाई जान की तरफ देखा जो बेचारे दिल थामकर रह गये, और जब उसने गेट तक छोड़ आने

के लिए कहा तो साजिद मियां यूँ खिचे चले गए जैसे वो कोई चुम्बक हो। बात के खत्म होते ही मुमताज ने तिरछी नजर उसकी तरफ देखा जो न जाने क्या सोच रही थी, तो मुमताज ने ही कहा—लो थोड़ी चाय और ले लो।

नहीं, नहीं बस रहने दो, मैं सिर्फ एक कप ही लेती हूं इस वक्त।

थोड़ी सी और ले लो न, परेशानियाँ दूर हो जायेंगी।

इतने में मुमताज की अम्मीजान की आवाज सुनाई दी जो शायद बाहर अभी २ आई थीं, साजिद से बातें करते हुए वो इस कमरे की तरफ ही आ रही थीं उनके आते ही, मुमताज भी खड़ी हो गई और नौशाबा ने अदब से कहा—तस्लीमात अर्ज—अम्मी।

जीती रहो बेटी—उन्होंने बड़े प्यार से कहा।

तब उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—जब तुम उससे मिली (उनका इशारा लेखक की तरफ था और मुमताज भी अभी कमरे में हुई बात को सुन चुकी थी सो विषय जानती ही थी) तो तुमने भला उससे खाना खाने को भी नहीं कहा—

कहा तो था अम्मीजान मगर वो माने नहीं।

अजी ऐसे आदमी मुंह से कह देने पर थोड़े ही मानते हैं हाथ पकड़कर मनाओ तो सीधे रास्ते पर आते हैं, तब बात पलट कर वो नौशाबा की ओर आकर्षित हुई तुम कब आई बेटी ?

और नौशाबा जो शरम से सिर झुकाए खड़ी थी बोली—जी अभी पंद्रह बीस मिनट पहले ही आई हूं।

'तो खाना खाकर जाना' वो बोली।

'मगर मैं खाना खाकर आई हूं अम्मीजान !

क्षण भर तो वो चुप रहीं मगर फिर बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चली गयीं, तो नौशाबा जो अभी हाल ही में हुई बात को काफी समझ चुकी थी मुमताज से पूछने लगी—किसकी बात कर रहीं थी अभी तुम्हारी मम्मी।

तो मुमताज ने बिना कुछ समझे ही कह दिया—वो हैं न लेखक जो भाई जान के अच्छे दोस्त हैं, वो आए थे अभी उन्हीं के बारे में बात कर रही थीं अम्मी। तो नौशाबा सारी बात समझ गई, चूंकि साजिद से कई बार उसने इस लेखक की बाबत सुना भी था और एक बार वो सड़क पर भी मिल गए थे रास्ते में ही। तो नौशाबा ने शरारत से एक छोटी सी चुटकी मुमताज की नर्म सी बगल में काटी और कहने लगी—तो यूँ कहो बानू कि आज तुम्हारी मुलाकात उनसे हुई है।

और मुमताज जो सचमुच गुमसुम सी खड़ी थी हड़बड़ा उठी, उसने नजर भर नौशाबा की तरफ देखा जो हसरत भरी नजरों से उसकी तरफ देखते हुए मुस्करा रही थी, तो न जाने क्यूं मुमताज के गालों पर भी मुस्कराहट दौड़गई, तो नौशाबा ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और उसी अन्दाज में बोली—क्यों री, शैतान, तो इतनी देर से वो मनघड़न्त कहानी किस नाजनीन की सुना रही रही थी, बल्कि यूँ कहो कि वो खुशकिस्मत तुम ही हो।

छोड़ो न मेरा हाथ, यह कर मुमताज आगे बढ़ गई, मगर नौशाबा अब कहाँ चूकने वाली थी उसने लपककर मुमताज की बाँह पकड़ ली और बोली—बताओ मेरी जान, कितने जख्म कर गए वो हमारी इस नाजुक सी अलबेली के छोटे से दिल पर।

हटो भी, तुम्हें तो हर बात में मजाक सूझता है, कहकर वो आगे बढ़ गई तो नौशाबा ने जाती हुई मुमताज का हाथ पकड़कर कहा—हाय हाय, मेरी दिलरुबा, इन्हीं नाजुक अदाओं पर तो वे लेखक साहब फिदा हो गए होंगे, आखिर खुदा की रहमत से यह बांकी सूरत भी कम मतवाली नहीं, अगर राह जाते किसी नौजवान की तरफ बुर्के का परदा उठाकर देख ले तो वो बेचारा तो यूँ ही दिल पकड़कर रह जाए।

आखिर तुम्हें और भी कोई बात आती है या हरदम यही रंगीन ख्वाब ही आते हैं—मगर दिल ही दिल में नौशाबा की यह बातें उसे बड़ी प्यारी लग रही

थीं, चेहरे को घुमाकर उसने मुस्कराती नौशाबा को देखा तो न जाने वो भी क्यूँ उसकी सूरत की तरफ देखकर मुस्करा पड़ी।

तो नौशाबा ने दिल पर हाथ रखकर कहा—जीयो मेरी जान, यही तो प्यार की पहली सीढ़ी है और यही वो अदाएँ हैं जिन पर फिदा होकर आशिक बनते हैं वो नौजवाँ इन हसीनों के और किसी शरारत के लिए वो मुमताज की तरफ बढ़ी तो मुमताज उसकी विपरीत दशा में बीच में रखे हुए पलंग की एक तरफ खड़ी हो गई—तो नोशाबा ने बड़ी हसरत से कहा—तो मेरी जान इस मुबारकबाद में हम तुम्हारी इन हसीन जुल्फों की लटों में छुपे गोरे गालों की महज एक मीठी 'किस' लेना चाहते हैं, यह हमारा हुक्म है आप सीधी तरह हमारी खिदमत में पेश हो जाएं वरना हमें जबरदस्ती करनी पड़ेगी।

ओय होय, बड़ी आई है मा बदौलत बन कर हुक्म चलाने वाली और उस का कहना ही था कि नौशाबा उसे पकड़ने के लिए दौड़ी तो मुमताज चिल्ला पड़ी—देखो नौशावा यह ठीक नहीं, मैं नहीं दूँगी 'किस' किसी भी हालत में।

और नौशाबा उसके पीछे दौड़ी और मुमताज पलंग के चारों ओर भागने लगी और नौशाबा उसके पीछे २। मुमताज साथ ही कहती जा रही थी—देखो नौशावा यह बदतमीजी की हरकतें मुझे अच्छी नहीं लगतीं, कोई देख लेगा तो क्या कहेगा।

मगर नौशाबा कहाँ मानने वाली थी, वो तेजी से घूमते-घूमते एक बार मुमताज के विपरीत दशा में भागी तो मुमताज और नौशाबा आमने-सामने आ गई तो मुमताज की अब खैर न थी, वो हाथ जोड़कर बोली—माफ कर दो मेरी जान मत सताओ।

लेकिन नौशाबा के शरारत भरे चेहरे पर कुछ भी असर न हुआ तो मुमताज ने पलंग पर अपने आपको गिरा दिया और नर्म तकिये में अपना चेहरा दोनों हाथों से छुपा लिया, तो नौशावा तुनक कर बोली—इससे क्या होता है

बेगम साहिबा, इसका इलाज बहुत आसान है, कहकर उसने मुमताज की नाजुक बगलों में गुदगुदी करनी शुरू कर दी और वो थी कि हंस-हँसकर बेहाल हुई जा रही थी और साथ ही कहती जा रही थी—बस करो न नौशाबा, अब छोड़ दो न, और जब उससे रहा न गया तो वो पलटकर सीधी हो गई, इस शरारत में उसका आँचल खिसककर इधर-उधर उसके नीचे में दब गया, इतनी देर बेत-हशा हँसने की विजय की वजय से उसकी सांस फूल गई, उसका जवान और कसा हुआ बे आंचल सीना ऊपर नीचे हो रहा था। तभी नौशाबा ने थोड़ा उस पर झुककर उसे अपनी बाहों में भर लिया—धीरे से पूछा उसने—कैसे लगे वो हमारी बानू के दिल को।

और मुमताज शरमायी सी पलकें झुकाए खामोश लेटी रही॥

तो नौशाबा ने थोड़ा और उस पर झुककर आहिस्ता में कहा—बताओ न मेरी जान, वरना मैं फिर गुदगुदी शुरू कर दूँगी।

और इस बात पर मुमताज ने उसके बन्धन में थोड़ा सा कसमसा कर सहम के अपनी पलकों को मामूली सा ऊपर उठाया, तो नौशाबा की आंखों में वही प्रश्न देखकर लाज के मारे फिर उसनें अपनी घनी पलकों को गिरा लिया।

तब नौशाबा उस पर थोड़ा और झुक गयी, और उसी लहजे में पूछने लगी—'बोलो न मुमताज वरना फिर मुझे अपना रास्ता अख्तयार करना पड़ेगा।'

तो मुमताज उसके बन्धन में घायल पन्छी की तरह थोड़ा सा तड़फ उठी, दोनों के जवान उभरे हुए नुकीले सीने सांसों की गति के साथ एक दूसरे को चूम रहे थे, मुमताज ने अपनी बोझिल पलकों को आहिस्ता से उठाया और दबी आवाज में बोली—अच्छे हैं।

"खाली अच्छे ही हैं या बहुत अच्छे।"

'···ऐसा ही समझ लो—मुमताज ने पलकें झपकाते हुए कहा।'

'तो यूं कहो कि पहली ही नजर में मुहब्बत को दिल का नजराना पेश कर दिया है, मेरी जान, मगर दिल की बेकरार धड़कनों को अपने बस में रखना

वरना कहीं ऐसा न हो कि इस धड़कते दिल की बेताब धड़कनें तुम्हें बेचैन कर दें और तुम पहलू में धड़कते दिल की धड़कनों पर हाथ रखकर अपने होश-हवास भी खो बैठो।

'कुछ बातचीत भी हुई या खाली आज आँखों से आँखें ही मिलीं—पूछा नौशाबा ने।'

"हुई थी।" मुमताज ने आहिस्ता से कहा।

'और तुम्हारे इस हुस्न और इन नाजोंन अदाओं का उन पर भी कुछ असर हुआ या नहीं या खाली तुम ही दिल फेंक बैठी हो ?'

"मैं क्या जानू"—मुमताज तुनक कर बोली।

तो मेरी जान कहीं ऐसा न हो कि तुम तो इधर पलंग पर करवटें बदल-बदल कर परेशान होती रहो और वो बेखबर होके खुर्राटे होते हुए किसी और के रंगीन ख्वाब देख रहे हों।

'···ऐसा न कहो, नौशाबा, वो ऐसे नहीं है।'

'···बात तो यूं बना रही है जैसे बरसों से उनको जानती हो ?

अगर ऐसी बात होती तो फिर क्या बात थी।

ओफ ! तो पहली ही नजर में इतना बुरा हाल हो गया है, तो ऐसा करो जल्दी से शादी का इन्तजाम करो वरना तुम्हारा···

अच्छा, अब हटो भी वो परेशान होकर बोली—इतनी देर से जकड़ कर लेटी हुई है मेरे ऊपर, जैसे मैं कोई बिस्तर हूं।

उसका कहना था कि नौशाबा ने उसे और अपने बन्धन में बांध लिया और चेहरा उसके चेहरे पर झुकाती हुई कहने लगी—तो हमारी टिप···कहां गई, कह कर उसने अपने होठों पर जीभ फेरी।

हटो न—यह क्या बदतमीजी है—मुमताज के गालों पर लाली दौड़ गयी।

बदतमीज नहीं—जबरदस्ती है हमारी—नौशाबा शरारत से बोली।

नहीं न—उसने पलकें झपकाई और तेजी से करवट बदल ली उसने, ता नौशाबा उसके ऊपर से फिसल कर बगल में आ गई और मुमताज एक दम उठ बैठी और जाने को थी कि नौशाबा ने जल्दी से पकड़ लिया और एक झटका देकर वापिस पलंग पर गिरा दिया, बस तो फिर क्या था मुमताज उठकर जाने को कोशिश करती और वो उसकी हर कोशिश नाकामयाब कर देती।

नौशाबा ने मुमताज को फिर अपने बन्धन में कस लिया और मुमताज फिर छटपटाने लगी, नौशाबा ने एक हाथ से फिर गुदगुदी शुरू कर दी, और मुमताज तो यूं भी हँसी जा रही थी कि नौशाबा ने दोनों बांहों में दवा कर मुमताज को अपने सीने से लगा लिया, दो जवान वक्षस्थल कोमलता पा कर कसक उठे, और इस शरारत में कभी मुमताज नीचे होती तो कभी नौशाबा, दोनों ही पलंग पर एक दूसरे से गुथी हुई थीं, करवटें बदल-बदल कर दोनों ही बेहाल हुई जा रही थीं, मुमताज के आँचल का तो पता ही न था कि किधर दबा पड़ा था और इस शरारत में नौशाबा की साड़ी भी घुटनों तक आ गयी थी, गोरी पिंडलियां स्पष्ट हो गयी थी, पर कुछ होश न था दोनों को।

कि जब मुमताज से रहा न गया तो हँसते २ बोली—अच्छा नौशाबा,··· मानूंगी जी तुम्हारी बात।

तो नौशाबा ने अपना बन्धन ढीला कर दिया, दोनों को सांस बुरी तरह चढ़ गई थी, मुमताज ने नर्म तकिये पर अपना चेहरा रख दिया अस्त व्यस्त काले घने वालों के बीच उसका गोरा भरा हुआ चेहरा बड़ा खूबसूरत लग रहा था, सीने पर हाथ रखकर वो अपनी सांसों पर काबू पा रही थी, और नौशाबा बगल में बैठी हुई अपनी अस्त व्यस्त हो गई साड़ी की सलवटों को ठीक कर रही थी, और दूसरे ही मिनट वो मुमताज पर पूर्वत: झुक गयी, उसकी गरदन में अपनी बाँहें डाल कर बोली—क्यों इस तरह सताने से कोई ज्यादा मजा आया है तुम्हें ?

और तुम भी तो कितनी बेशर्मी की हरकतें करती हो—मुमताज ने बड़े भोलेपन से कहा।

आय हाय ! मेरी जान, तुम्हारी यह शोख अदाएँ, कह कर उसने अपने सीने का भार मुमताज के पुष्ट वक्षस्थल पर रख दिया और पूरी तरह झुक कर उसने मुमताज के गोरे गोरे नर्म गालों को दबा कर दोनों तरफ से चूम लिया।

और मुमताज सिहर उठी उसके इन चुम्बनों से, नौशाबा के गीले होठों की निशानियाँ मुमताज के नाजुक गालों पर शबनम की तरह चमक रही थीं, चेहरा उठाकर नौशाबा ने मुमताज के दोनों गालों को अपनी हथेलियों से बड़े प्यार से पोंछ दिया।

शरमा कर मुमताज ने अपनी बोझिल पलकों को उठाया तो देखा कि नौशाबा बैठी बड़ी हसरत से मुस्करा रही थी।

शोखी और चंचलता उसके गालो पर खेल रही थी।

"आखिर जीत भी तो गई थी अपनी बात मनवाने में।"

तब मुमताज आहिस्ता से उठी, अपने बिखरे बालों को संवार कर आँचल संभाला।

...दोनो ही चुप थीं।

...बात का कोई सिलसिला कायम न कर पा रही थीं वो दोनों।

तभी नौशाबा ने अपनी गोरी कलाई पर बंधी सुनहरी रिस्ट वाच को देखा तो बोली—अब मैं चलती हूं...पौने ग्यारह बजने वाले हैं, बड़ी देर हो गयी है।

तो क्या हुआ यहीं सो जाओ।

कहाँ, तुम्हारे पास—शरारत से पूछा उसने

तो क्या हर्ज है—मुमताज ने कहा।

पर याद रखना मेरी जान, सारी रात तुम्हारे गालों को चूम २ कर ऐसे निशान बना दूंगी कि दस दिन तक को किसी को सूरत भी न दिखा सकोगी।

बस, तुम्हें तो हर वक्त यही सूझती है।

अच्छा जनाब ! अब तो मैं घर चल रही हूं फिर आऊँगी कभी तुम्हारा और तुम्हारे गालों का हाल पूछने।

अच्छा तो मैं जरा अभी आई—कह कर मुमताज दूसरे कमरे में चली गई।

यह एक लिफ्ट थी नौशाबा के लिए जिसे मुमताज देती थी, और मतलब इसका दोनों ही समझती थीं।

और मुमताज के जाते ही नौशाबा पल भर बाद बाहर आयी तो देखा कि साजिद बरामदे में कमरे के बाहर खड़ा था।

नौशाबा दबे कदमों के उसके पास आ गयी, धीरे से पूछने लगी—कब से खड़े हो।

अभी एक मिनट हुआ। क्योंकि तुम्हारा जाने का वक्त हो गया था सो अन्दाज से आ गया, कह कर उसने नौशाबा का हाथ धीरे से दबाया।

दूसरे हाथ से नौशाबा ने एक मुड़ा हुआ कागज साजिद के हाथ पर रख दिया, और धीरे से बोली—मैं आपका इन्तजार करूँगी।

तभी अन्दर से मुमताज की सीढ़ियों से उतरने की खट-खट सुनाई दी तो साजिद बराबर वाले कमरे में चला गया और नौशाबा बरामदे से निकल कर लान के पास आकर खड़ी हो गयी और गेंदे के बड़े से पौधे पर लगे फूलों से खेलने लगी।

गुनगुनाती हुई मुमताज जब कमरे में आयी तो उम्मीद के मुताबिक वो कमरे में न थी और बाहर आकर बरामदे में देखा तो वो लान में खड़ी थी, यूं तो मुमताज खिड़की में से बरामदे वाली घटना को देख रही थी पर वह नौशाबा के पास बिल्कुल अनजान सी बन कर आयी और नौशाबा भी बिल्कुल उसी मुद्रा में खड़ी थी।

आओ—मुमताज ने कहा। और दोनों आगे बढ़ने लगीं।

'अच्छा डीयर 'मुम' उसने प्यार से मुमताज की तरफ देखकर उसका हाथ पकड़ लिया कहने लगी—अब मैं चलूं।

"और जवाब में मुमताज मुस्करा पड़ी।

जब वो कार में बैठ गयी तो मुमताज ने बड़े भोलेपन से कहा—कोई मुहब्बतें पैगाम देना हो अपने···उनको तो बंदा खिदमते हाजिर है।

'शुक्रिया, आपकी इस जरानवाजी के लिए।'

"यूं कहो कि हम खुद ही,—काफी हैं।"

और दोनों हँस पड़ीं।

और साथ ही झटके से कार आगे बढ़ गयी। वापिस आकर जब मुमताज जान कर साजिद के कमरे के सामने से गुजरी तो देखा कि वो अपनी महबूबा का खत पढ़ने में खोया हुआ है।

मुस्कराकर मुमताज सीढ़िया चढ़ती हुई अपने कमरे में चली गई।

बराबर वाला कमरा उसके अब्बा हजूर का था, जिसमें से थोड़ी बहुत खाँसने की आवाज आ रही थी।

४

गेलार्ड होटल के एक फैमली कैबिन में बैठे हुए नौशाबा और साजिद कोल्ड काफी का मजा ले रहे थे और साथ ही प्यार भरी दृष्टि से एक दूसरे को निहार रहे थे।

आखिर प्रेमी और प्रेमिका का 'टापिक' ही अपनी इश्क की बातों का होता है उन्हें कोई यह फिक्र थोड़ी ही होती है कि गेहूं का भाव पहले से आठ गुना बढ़ चुका है और दालें व मसाले तीन गुना तेज हो गई हैं। बादाम और पिस्तों का तो बाजार ही मन्दा हो गया है

मिलते ही जुबां पर पहली यही बात होगी। डार्लिग मैं कब से तुम्हारा इन्तजार कर रही थी।

और जवाब में आशिक साहब अपनी महबूबा का नर्म हाथ पकड़ कर बड़ी बेचैनी से फरमायेंगे—सच तुम्हारी कसम! चला तो घर से ठीक वक्त पर था पर रास्ते में दो एक यार-दोस्त मिल गए तो बस—

और फिर आँखों ही आँखों में बातें होंगी।

वही हाल यहाँ का भी था, यह दोनों भी भारत और चीन के आक्रमण की बात थोड़े ही कर रहे थे, वहाँ लड़ाई के मैदान में हुए घायल जवानों की याद इन्हें कहाँ थी, यहाँ तो वैसे ही नजरों के तीर चल रहे थे और बिना खून का कतरा बहे घायल हुए जा रहे थे खुद ही, दूसरे के जख्म का हाल तो क्या ही पूछते।

नौशाबा का गोरा सा पतला नर्म हाथ अपने हाथ में लेकर साजिद बोला—आखिर तुम मुझ से इतना शरमाती क्यों हो।

और जवाब में नौशाबा ने अपनी घनी काली २ पलकों को झपका कर शरमाते हुए यों देखा, जैसे वो आज पहली दफा मिले हों, और साथ ही गले से बड़ी बड़ी बारीक सुरीली आवाज निकली—कहाँ शरमाती हूं, भला आप से कैसा शरमाना।

और नजाकत की इस बात को सुनकर साजिद का दिल बिना 'परमीशन' के साठ की स्पीड पर धड़कने लगा।

कमाल की बात यह थी कि अपने २ घर में तो बैठे हुए दोगे बड़े २ मनसूबे बांधते कि आज यह भी बात पूछनी है और साफ २ कहूंगा—मेरी रानी तुम रोज आया करो, मेरा दिल कितना बेचैन है···जरा मेरे दिल की धड़कनों को तो सुनो कितनी बेकरार होकर धड़क रही हैं··· हर वक्त बस तुम्हारी ही सूरत आंखों के सामने नाचती है। और उधर···

नौशाबा पलंग पर लेटी २ करवटें बदल-बदल कर अपने दिल का हाल बताने के लिए डायलाग्स, की रचना करती, सोचती जब वे मिलेंगे तो उनकी

पहली ही किसी बात को उल्टा सीधा बताकर उनसे मैं रूठ जाऊंगी और यह निश्चित है कि वह मुझे मनाएंगे बड़े प्यार से कहेंगे—मेरी रानी भला इसमें रूठने की क्या बात है, अगर तुम मेरी बात का बुरा मान गई हो तो लो मुझे माफ कर दो, और प्यार से मेरी जुल्फों को चेहरे पर से हटा कर मेरी ठुड्डी पकड़ कर अपनी ओर करेंगे और आँखों ही आँखों में पूछेंगे—क्या अब भी नाराज हो, और साथ ही उनका हाथ मेरी जुल्फों से खेलते २ मेरे नर्म गालों पर पहुंच जाएगा और मेरा कोई विरोध न करने पर वह मेरा चेहरा अपने दोनों हाथों में थाम लेंगे और फिर···'

और न जाने क्या २ आशिकी टाइप की बातें सोचते दोनों मगर—'जब आमना सामना होता तो सारा बना बनाया प्रोग्राम फिर कभी आजमाने पर छोड़ कर कैन्सिल कर दिया जाता, और वही हाल आज भी था।

साजिद जिसने साहस करके नौशाबा का हाथ थाम कर दस मरतबा रिहर्सल की हुई एक लाइन कह भी दी थी मगर दूसरी बात जबान पर इस तरस न आ रही थी जैसे कि वह भूल ही गया हो, बस, नौशाबा की नर्म कलाई पकड़े वह उसी तरह बैठा था चुपचाप, जैसे डाक्टर एक मरीज की नाड़ी देखने के लिए कलाई पकड़ता है।

कुछ क्षण बाद धीरे से नौशाबा ने अपना हाथ खींच लिया और शर्म से नजरें झुकाए उंगलियों पर आंचल लपेटने लगी, सर के थोड़ा झुकते ही माथे के पास से लटकती हुई काली जुल्फों की लट गाल को झुक कर चूमने लगी।

एक अजीब सी खामोशी छायी हुई थी, साजिद एकटक नौशाबा की खूबसूरती को देख रहा था, झुका हुआ चेहरा, गालों की लाली को चूमती हुई काली जुल्फें, गोरी सी पतली २ उंगलियों में अपना आंचल लपेटने-खोलने के खेल की वजय से वह शरारती आंचल उसके उभरे हुए नाजुक सीने की गोलाइयों पर से ढुलकता हुआ उसकी गोद में आ गया था, सांसों की गति के साथ सीने का कम्पन बड़ा प्यारा लग रहा था।

इन्हीं हालतों के दौरान साजिद के दिल में हलचल मच रही थी कि क्यों नहीं वह कोई बात कर पा रहा है और नौशाबा सोच रही थी कि इतनी शरारती दौर वे बात पर बोलने और छेड़ने की आदत होने पर भी यहां एक लफ्ज भी क्यों नहीं कह सकती।

तभी इनकी खामोशी में···केबिन के बाहर एक हंसी गूंज उठी, कुछ लड़कियां साथ वाले केबिन में बैठी बातें कर रही थीं।

कि नौशाबा ने धीरे से सिर उठाकर कहा—शायद मालूम होता है कि मुमताज भी यहाँ आई हुई है।

लगता तो ऐसा ही है—साजिद ने उखड़ी जबान से कहा।

तभी कोई लड़की बोल उठी—नो, मिस मुमताज, जब सब ने पिक्चर चलने का प्रोग्राम बनाया है तो तुम्हें भी चलना पड़ेगा।

अरे! जरा आहिस्ता से गला फाड़, यहाँ फैमली कैबिन में न जाने कितने जोड़े बैठे आँखों ही आँखों में बेचारे बातें कर रहे होंगे, क्यों तू उनकी मीठी-मीठी बातों में खलल डालती है।

वह लड़की तो अपने तेज बोलने की भूल को समझ कर चुप हो गई वो बेचारी क्या जाने बीच की बात।

और इधर साजिद और नौशाबा गुमसुम बैठे थे, एक टक न जाने दरवाजे पर नजरें गढ़ाये क्यूँ देख रहे थे। बरावर के केबिन से खुसर-फुसर की आवाज अब भी रही थी, आखिर जहाँ पांच-सात लड़कियाँ बैठी हों वहाँ खामोशी तो कभी रह ही नहीं सकती।

तभी नौशाबा ने धीरे से हिचकते हुए कहा—अब मैं चलती हूं···'

ओह! तो मैं भी चलाता हूं, कह कर साजिद भी खड़ा हो गया और दोनों ही होटल से बाहर आ गए।

रात को साढ़े नौ बजे मुमताज जब घर पहुंची तो देखा कि साजिद अभी २ लौट कर आया है। क्योंकि वह कपड़े बदलने में व्यस्त था।

अपने कमरे में जाने से पहले मुमताज साजिद के कमरे में गई। उसको

आया देख क्षण भर को वह ठिठक गया, और बिना कुछ बोले अपने काम में लगा रहा।

मुमताज ने बिल्कुल अनजान सी बन कर बड़ी सादगी से कहा—तुम शाम को चाय पीने भी नहीं आए।

कुछ काम ही ऐसा आन पड़ा था—वो पलंग पर बैठकर जूते के फीते खोलते हुए कहने लगा—आखिर बिसनिज तो जाल ही ऐसा है कि आदमी चौबीस घंटे भी फसा रहे, तो भी कम है।

तभी तो कहती हूं: इस चक्कर से जरा दूर रहा करो, और जरा अपने आराम, अपनी सेहत का भी ख्याल रखा करो। और हाँ, एक क्षण रुक कर मुमताज ने तिरछी नजर से साजिद की तरफ देखते हुए कहा—'अगर शाम को घर तक आने में टाइम ज्यादा वेस्ट होता है तो तुम···शाम की चाय किसी होठल या रेस्टोरेन्ट में पी लिया करो।

कह कर उसने साजिद के चेहरे का बदलता हुआ रंग देखा और दिल ही दिल में मुस्कुरा कर फिर बड़ी अदा से बोली—और या कोई ऐसा यार दोस्त बना लो जो तुम्हें शाम के वक्त मजबूर करके या जबरदस्ती चाय पिलाने के लिए ले जाए।

इसकी बात का क्या जवाब दे, यह साजिद की समझ से बाहर था, वह समझ ही न सका कि मुमताज की बात का आखिर मकसद क्या है। इससे पहले कि साजिद मुमताज की बात का कुछ जवाब दे वह फिर बोल उठी—सच कहती हूं भाई जान, गेलार्ड की काफी बड़ी मजेदार होती है, और खुश-किस्मत से यह होटल तुम्हारे बिसनेज सैंटर के बिल्कुल नजदीक है। और यह भी एक हकीकत है कि अगर कोई साथी साथ में हो तो काफी पीने का मजा ही दुगना हो जाता है। और आँखें मटकाते हुए अपने बैग को हाथ से नचाते हुए दरवाजे की ओर बढ़ती हुई उसकी तरफ देखते हुए मुस्कुरा कर कहने लगी—और अगर फैमली कैबिन में बैठकर चाय पी जाए तो वह लुत्फ ही कुछ और होता है।

और वो दरवाजे से बाहिर हो गई।

५

आईने के सामने खड़ी मुमताज अपनी काली र घनी जुल्फों पर ब्रुश चला रही थी, कि तभी उसे नीचे हाल में बातचीत करने की फुसफुसाहट सी सुनाई दी, पल भर तो उसने अपने हाथ का चलता हुआ ब्रुश रोक दिया, मगर फैसला न कर पायी कि आवाज किस की है, मगर सोच रही थी कि आवाज कुछ जानी पहचानी जरूर है।

धीरे से उसने दरवाजे की ओट में नीचे देखा तो देखकर अपने छोटे से नाजुक दिल की बेकरार धड़कनों पर काबू न पा सकी और झट से कमरे से निकल कर बाहर गैलरी में आ गयी।

अपनी प्यासी आंखों से उसने बातचीत करने वाले उन दोनों को देखा और बेताब सी होकर चिल्ला पड़ी—आप !

तो दोनों की नजर उधर उठ गयी, तो देखकर साजिद ने लेखक से कहा—अब तो बैठिये, आपकी खातिरदारी के लिये ये तो मौजूद हैं।

एक बार फिर लेखक ने गैलरी में खड़ी मुमताज की तरफ देखा, बिखरी काली जुल्फों में भरा हुआ गोरा सा बिल्कुल महताब सा चेहरा मुस्कुरा रहा था, घनी पलकों के परदे में कैद उन झील सी गहरी आंखों में क्या था, यह लेखक न समझ पाया, उठते हुए जवान और बे-आंचल सीने पर मचलती हुई घुंघराली जुल्फें बड़ी शोखी से उसके उरोजों को चूम रही थीं।

साजिद ने मुमताज की तरफ देखते हुए कहा—'अच्छा, मैं तो जरा चलता हूं…।

उसकी बात को वहीं काट कर मुमताज धीरे से बोली—अच्छा मैं अभी आयी, और हाथ उसका अपने सीने पर आंचल संवारने के लिए पहुंचा तो अपने आप को बिना आंचल पाकर शरमा गयी, जल्दी से दौड़कर अपने कमरे में गयी, और ड्रेसिंग टेबल पर रखे आंचल को उठाने के लिए बढ़ी तो नजरें आईने पर पड़ ही गईं।

बस इन दोनों को तो चौबीस घन्टे बिजनिस के चक्कर से ही फुरसत नहीं मिलती, अब्बा हजूर से पूछो कि कहाँ जा रहे हो तो झट से कह देंगे—, आज बाजार कुछ मन्दा है सोचा है कुछ स्टाक कर लूं। और इनसे पूछो तो इनका जवाब होगा, आज मार्किट का भाव ऊँचा होने का आदेश है तो जरा अपना पिछला स्टाक निकालने का ख्याल है।

सच कहती हूँ जनाब—वो लेखक की तरफ देखते हुए शरारत भरी आवाज में बोली—'बुल' और 'बीयर' तो हमारे घर में ही हैं जब चाहे मार्किट रिपोर्ट मालूम कर लो।

अच्छा जनाब, मैं तो चलता हूँ—कह कर साजिद मुमताज की तरफ मुड़ा —, अब तुम सम्भालो अपने मेहमान को।

क्यों नहीं, अब तुम रुक भी कहाँ सकते हो, चाय पीने तक की तो फुरसत नहीं मिलती, किसी से बात तो क्या ही करोगे, कितनी बार कहा है कि अगर घर न आ सको तो किसी रेस्टोरेन्ट में ही पी लिया करो, कहते हुए उसने टेढ़ी निगाह से साजिद की तरफ देखा और कहा—अगर रेस्टोरेन्ट में इतने आदमियों के सामने पीने में शरम आती हो, तो बुर्का पहनकर चले आया करो, फेमली कैबिन में बैठने से कोई इन्कार नहीं करेगा, और अगर………कोई बुर्के वाली ही साथ देने को तैयार हो जाए फिर तो मजा ही कुछ और……।

साजिद उसकी इस बात का कुछ जवाब न देकर लेखक की तरफ देखते हुए बोला—अच्छा तो फिर इजाजत फरमाएँ।

और वो तेजी से कमरे के बाहर हो गया।

और अब रह गए इतने बड़े हाल में सिर्फ दो, लेखक और मुमताज। एक मिन्ट तक तो दोनों खामोश रहे, मुमताज ने एक बार अपनी हिरणीसी मस्त आँखों से बड़ी मुहब्बत भरी नजर से उसकी तरफ देखा और खामोशी को तोड़ती हुई बोली—आइए, ऊपर ही चलते हैं, आज आप मेरे ही कमरे में चल कर बैठिये।

अपने लिए सब एक से हैं मगर देखिये, मैं ज्यादा देर न रुक सकूंगा मुझे कुछ काम भी है।

पहले आइए तो सही, कहकर मुमताज सीढ़ियों की तरफ बढ़ी, इतने दिनों के बाद तो न जाने कैसे हमारी याद आयी होगी आपको, और अभी आ कर बैठे तो हो नहीं कि चलने का प्रोग्राम पहले ही बता रहे हो। उसने मुड़-कर मुस्कुराती नजर से लेखक की तरफ देखा और उसी लहजे में बोली—आना अपने बस में होता है और जाने के लिए इजाजत लेनी पड़ती है, और एक झटके से सिर हिलाकर उसने सीने पर पड़ी जुल्फों को पीठ पर झटक दिया।

गैलरी पर आकर उसने कमरे की ओर अपना गोरा सा पतला हाथ लख-नवी अन्दाज से करके कहा—आइए।

दरवाजे पर लगे रंगीन मोटे-मोटे मोतियों की कीमती झालर हटाकर लेखक कमरे में दाखिल हुआ, और पीछे-पीछे मुमताज भी।

यह था मुमताज का कमरा, सिर्फ मुमताज का।

सामने के सोफा सेट की ओर इशारा करती हुई बोली—तशरीफ फरमा-इए। और स्वयं सामने की कुर्सी पर बैठते हुए बोली—सच बताइएगा आज आप मुझसे मिलने आए हो या साजिद से।

और अगर कह दूं कि मैं आपकी अम्मी जान से मिलने आया हूँ तो ....।

'मगर झूठ मत बोलियेगा'

लेकिन सच सुनना भी तो बहुत मुश्किल होता है। इस बात पर भी जरा सोच लीजिए।

तो रहने दीजिए। कह कर वो खड़ी हो गई और ड्रेसिंग टेबिल के सामने जाकर बैठ गई।

आइने में उसने सलोनी सी सूरत की छवि को देखा और फिर उसने आइने में लेखक की पड़ रही परछाईं पर गौर किया, एक आइने में दो सूरतें थीं, बिल्कुल पास-पास, मगर बठे थे दूर २।

मुस्कराकर उसने एक बार अपने उभरे सीने की तरफ देखा और जाने क्या सोचने लगी, और दूसरे ही क्षण उसने सीने पर मचलते आंचल को उससे

जुदा करके अलग रख दिया, बेचारा सिसकता आँचल मेज पर पड़ा हुआ फिर से उसके जवान सीने से लिपटने के लिए इन्तजार की घड़ियाँ बेकरार होकर गिनने लगा। कितना खुशकिस्मत होता है यह आवारा आँचल, अगर राह जाते किसी जवाँ दिल वाले मर्द की नजर लड़की पर पड़ जाएगी तो नज़र मिल कर झुकते ही सीने पर यह देखने के लिए झुक जाएगी कि उसका आँचल ने उरोजों से आलिगन किया हुआ है या नहीं।

अपने काले रेशमी बालों की लटों को अपनी गोरी उंगलियों में लपेटकर सुलझाने लगी, उसकी हलचल जानने के लिए लेखक की नजर उधर उठ ही गई तो उठते ही नजर आइने में झलकती मुमताज की नजरों से टकरा गई और उसकी नजर से नजर मिलते ही उसने अपनी नजर झुका ली और उसकी झुकती नजर ने मुमताज को बेआँचल हालत में होने की दशा को भी जान लिया अपने आपको उलझाये रखने के लिए सामने मेज पर रखीं 'ईविज वीकली' को उठा लिया, मैगजीन के पन्ने पलटने के साथ-साथ उसने कमरे का निरीक्षण किया। हर चीज बेशुमार कीमती और लाजवाब थी, बिल्कुल हल्के नीले रंग की पालिश कमरे की दीवारों पर चमक रही थी, और तिस पर दिन के वक्त भी दो-दो ट्यूबें जल रही थीं। दीवारों पर एक से एक सुन्दर आयल पेन्टेड पिक्चर्स लगी हुई थीं। अलमारियाँ, सोफा सेट, रेडियो ग्राम, पलंग, ड्रेसिंग टेबल आखिर क्या न था वहाँ, और कमी भी क्यूं होती। हजारों रुपये रोज की जिन्हें इन्कम हो वो अपने पैसे को इन्हीं चीजों पर तो बेदर्दी से खर्च करते हैं।

एक गरीब की जवान लड़की अपनी उठती जवानी को जमाने की भूखी और वासना भरी नजरों से छुपाने के लिए चिथड़ों पर पैबन्द लगाकर किसी तरह अपने जिस्म के उभरे अंगों को छुपाती है। और अमीरों के घरों में उन के उन नाममात्र के झीने और पुराने वस्त्रों की अपेक्षा सौ गुना कीमती परदे लटक रहे होते हैं दरवाजे और खिड़कियों पर। जिनको अगर न भी लगाया जाय तो कोई हर्ज भी नहीं। सोचने लगा वो यह तो बात ही जरा दूर की है, हालत तो यहाँ तक की दर्दनाक है कि एक गरीब का मासूम बच्चा सड़क की

पटरी पर माँ के सीने से लगा सर्दी से ठिठुर-ठिठुर कर मर जाता है, आखिर वो दम तोड़ते हुए फटे पुराने चिथड़े कहाँ तक सर्दी से मुकाबला कर सकते हैं और खुद सर्दी में मरती हुई वो जर्जर शरीर वाली माँ कहाँ तक बच्चे को सीने से लगाकर सर्दी से बचा सकती है। ओफ ! कितनी कठिन जिन्दगी है, इन गरीब इन्सानों की, जिनके पास सर्दी से बचने के लिए बिस्तर तो क्या ऊपर ओढ़ने के लिए एक दो गज का कपड़ा भी नहीं होता, और अगर बेचारे मर जाते होंगे, तो किसी राह जाते अमीर की आंखों में आंसू थोड़े ही न आ जाते होंगे। बेचारी शबनम ही अकेली आँसू बहा कर अपने छोटे-छोटे कतरे चुन-चुन कर कफन पहना देती होगी।

और यह अमीरों की कोठियाँ भी हैं इसी धरती पर, जिनका तमाम फर्श कीमती गलीचे और कालीनों से ढका होता है महज इसलिए कि कमरों में चलते वक्त कहीं पाँव में धूल न लग जाए। इस कठोर धरती पर चलने से कहीं पाँव में दर्द न होने लगे।

एक ठण्डी आह लेकर दिल में कह उठा, यह सब किस्मत का खेल है, सिर्फ तकदीर का करिशमा है यह सब।

हाँ किस्मत ही तो है यह। उसे वो बात याद आ गई कि उस दिन जब इंगलैंड की महारानी ऐलिजाबेथ का लड़का पैदा हुआ था तो यह खबर सारी दुनिया के अखबारों में छपी थी, आखिर छपती भी क्यों न, और वो भी अखबार लिए जा रहा था कि सहसा उसके कदम सड़क के किनारे लगी भीड़ को देखकर रुक गए थे, पास जाकर मालूम करने पर पता लगा कि किसी भिखारिन ने एक लड़के को जन्म दिया है और पीड़ा से छटपटाती वो अभागी भिखारिन बेहोश पड़ी है। पास ही चिथड़ों पर एक मासूम सा दुनिया की हालत से बेखबर बच्चा रो-रोकर मां के प्यार के लिए अपनी नन्हीं २ बाहें फैला रहा था।

भिखारिन की सेवा के लिए उसी की तरह पटरी पर जिंदगी गुजारने वाली दो तीन भिखारिनें मौजूद थीं, और वो बेचारी हमदर्दी ही तो दिखा सकती थीं इसके अलावा उनके खुद के पास है ही क्या, मगर केवल हमदर्दी से हो ही

क्या सकता है। इस दुनिया में पैसा भी तो चाहिए। जिसके आगे सभी झुक जाते हैं। उसने भी रहम करके एक पाँच का नोट उसे दिया था, और शायद दो एक दरियादिल वालों ने भी पाँच दस देकर उसकी मदद की थी पर क्या होता है इन दस बीस रुपयों से इस चमक दमक की दुनिया में।

और यही बात वो रास्ते भर सोचता आ रहा था कि एक क्वीन ऐलिजा-वेथ का भी लड़का है जिसके पैदा होते ही न जाने किन बेशुमार कीमती कपड़ों में उसे लपेटा होगा और एक यह भी इन्सान की औलाद है उसी की तरह हाथ, पाँव, मुंह, नाक, कान सब कुछ हैं मगर जिन्दगी की शुरूआत ही सड़क के किनारे से हुई है, ऊपर ओढ़ने की तो बात जरा बाद की है धरती की कठोरता को कुछ कम करने के लिए नीचे बिछाने लायक इतने चिथड़े भी तो नहीं हैं और उस क्वीन के घर पैदा होने वाले बालक की खुशी में शाही बैण्ड बाजों ने सलामियाँ दी होंगी, बड़े-बड़े अफसरों ने भी झुक-झुक कर उसे अभिवादन किये होंगे और एक वह भी हाड़ मांस का पुतला है जिसके पैदा होते ही उस भिखारिन को यह फिक्र लग गई होगी कि इसके लिए दो घूंट दूध कहाँ से आएगा, वो इसे पालेगी कैसे ?

ओफ ! आखिर बात वो ईश्वर पर ही ले आया और बात का दामन किस्मत पर आकर खत्म हो गया।

और इतनी देर उसका चेहरा मैगजीन पर झुका रहा चाहे ख्यालात कहीं ही पहुँच गए थे, तो इतनी देर में मुमताज ने मेक अप कर लिया था।

आँचल सम्भारती, वो मुस्कराती हुई उसके सामने आकर बैठ गई, अपनी तरफ उसकी नजर उठते ही वो पूछने लगी—कहो, मेरा यह कमरा पसन्द आया।

तारीफ करने की आदत मेरी नहीं है—एक छोटा-सा जवाब दिया उसने, मगर मतलब कितना बड़ा था इसे मुमताज न समझ सकी।

और सुनने को—मुमताज ने भी छोटा सा सवाल पूछा।

"मैं उस पर कभी गौर नहीं करता"

और अगर मैं यह कहूँ कि आपकी कहानी जो अभी हाल ही में "सुनीता"

में छपी है मुझे बहुत ही पसन्द आयी, तो—…?

"इसे मैं महज़ आपकी एक राय कहूंगा, कि आपकी नज़र में वो कहानी कैसी रही"।

शायद अब मुमताज के पास कोई सवाल न था, क्षण भर को वो खामोश बैठी रही, कोई सवाल बनता न देख उसने कहा—खैर छोड़िये इन बेतकल्लुफ बातों को, अच्छा यह बतलाइये पहले, कि आप चाय पीजियेगा या कुछ ठण्डा……कहने के साथ २ उसके होठों पर कुछ मुस्कराहट खेल गयी, जैसे कि उसे पिछली मुलाकात की बात याद आ गयी हो।

और उसने देखा कि पहली ही मुलाकात के बाद मुमताज़ कितनी खुल गई है, वो झिझकना, शरमाना, सब दूर हो गया है। चंचलता की लहर हर बात में है।

बताइए न……पूछा नज़ाकत से।

और अगर रहने ही दें तो ज्यादा बेहतर है……,

'……यह भला कैसे हो सकता है'

नहीं सच कहता हूं, यह खातिरदारी तो महमानों के लिये की जाती है……भला अपनों के लिए यह हर बार का तकल्लुफ कुछ जंचता नहीं।

सुनकर उसकी बात को, मुमताज़ अपने आपमें खो गई, "अपनों के लिए"……क्या सचमुच ?……

मगर दूसरे ही क्षण वो सम्भल गयी, और उठते हुए बोली—अच्छा आज मेरी मर्जी पर ही सही।

फिर वही बात है न ?……,

तो क्या अपनों पर इतना भी हक़ नहीं होता कि वो किसी की बात मान लें—कह कर मुमताज ने दिल में उतर जाने वाली अदा से उसकी तरफ देखा।

नहीं सच कहता हूं आज कुछ भी पीने का मूड नहीं है……,

पीने का ना सही, खाने का ही सही, कह कर वो कमरे से बाहर चली गयी, और तेजी से खट २ करती हुई सीढ़ियाँ उतर कर नीचे चली गई।

कमरे में अकेला वही रह गया, कोई दूसरा भी न था कि जिससे बात का कोई सिलसिला जोड़ा जाता। उसने कमरे की सजावट का फिर एक बार निरीक्षण किया, घूम कर नजर उसकी ड्रेसिंग टेबिल की तरफ पड़ी तो पास ही प्यानो भी रखा हुआ था।

किसी साज का घर पर होने का यही मकसद होता है कि जरूर उस घर में कोई कला प्रेमी है। और प्यानो जबकि मुमताज के ही कमरे में रखा हुआ है तो निश्चित ही है कि जरूर उसे इससे लगाव होगा। सोचता हुआ वो उठ कर प्यानो के नजदीक चला आया।

उसके वो नजदीक आया ही था कि पीछे से मुमताज भी हवा में खुशबू बिखेरती आ गयी, पास आकर वो खड़ी हो गई, एक प्यार की नज़र से उसने उसकी तरफ देखा और हाथ की काशमीरी सेबों की भरी प्लेट प्यानो पर रखती हुई बोली—बजाना आता है आपको ?......,उसने बड़े नाज से पूछा।

तो क्या आप समझती हैं कि सिर्फ आप को ही बजाना आता है—उनकी बात पर व्यंग कसा उसने—

जी मेरा मतलब यह नहीं है—मुमताज अपने कहने के अन्दाज पर झेंप गई, अपनी बात का रुख बदलते हुए बोली—मेरा तो मकसद यह है कि क्या आपको इस साज......,खैर रहने दीजिए। न जाने क्यों उसने अपनी बात अधूरी छोड़ दी, शायद इसलिए कि कहीं बात का उल्टा सीधा जवाब दे देने पर फिर कहीं कोई ऐसी बात न कह दें कि जवाब देना ही मुशकिल हो जाये।

जानती थी न लेखकों की आदतों को, सवाल का जवाब तीर की तरह निशाने पर मारते हैं कि फिर हिम्मत नहीं पड़ती कभी दोबारा सवाल पूछने की।

अच्छा तो आप से अर्ज करती हूँ कि एक खूबसूरत सी कोई गजल या गीत साज की आवाज के साथ सुना दीजिए आज।

कौन मैं, मैं तो कभी गुनगुनाता भी नहीं।

नहीं। आप झूठ बोल रहे हैं।

तुम चाहे कुछ भी कह लो,

'मेरी कसम खाकर कहो'··· कि यह सच है।

"इन कसमों और रसमों में मैं यकीन नहीं करता," और एक मिनट को दोनों खामोश हो गए. जैसे बात अधूरी ही रह गई हो। लेखक ने उसकी तरफ देखते हुए कहा—तो आप ही कुछ फरमा दीजिए।

मैं भला इस काबिल ही कहां हूं, कह कर उसने प्लेट में से एक बड़ा सा सेब उठा लिया, और स्टैनलैस स्टील की चमकती हुई छुरी से सेब का सीना चीरने जा ही रही थी कि उसने कहा—सुना है कि खूबसूरत लड़कियाँ अपने हुनर की फरमाइश के वास्ते पहले इन्कार जरूर करती हैं !

और सुनना ही था कि मुमताज शरम से लाल हो गयी, लाज के मारे उसके गोरे २ चिकने गालों पर एक दम इतनी सुर्खी फैल गई कि उसके हाथ में पकड़ा हुआ खून के रंग का पका हुआ लाल सुर्ख सेब भी अपनी लाली पर शरमा गया। बिल्कुल काश्मीरी सेबों की तरह उसके दोनों गाल लाल हो गए, अपनी झेंप को मिटाने के लिए उसने उस बेगुनाह सेब की छाती तेज छुरी की धार से चीर डाली, और जल्दी से तीन चार फाँकें करके उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा,—'हमने भी सुना है कि मर्द भी नाजनीज लड़कियों से बार २ फरमाइश करवाने में अपनी शान समझते हैं।'

'और अगर में कह दूँ कि यह बात गलत है।

लेकिन······'बात को गलत साबित करने के लिए सबूत पेश करना जरूरी होता है।"

'और अगर सबूत भी पेश कर दूँ तो,'

'फरमाइए'

लेकिन······'इस वक्त नहीं'

'तो ?·········'

'वक्त आने पर।' मैं हर बात को सही तरीके से पेश करने के लिए मौके का इन्तजार करता हूँ।

मगर आप जानते हैं कि मौके आदमी के सम्भलने की इन्तजार नहीं किया करते।

तो यूं समझ लीजिए कि मैं हर बात का जवाब हर वक्त नहीं दिया करता।

खैर जाने दीजिए इन बातों को। इस बात को मुमताज शायद आगे बढ़ाना नहीं चाहती थी। क्योंकि जानती थी बात वो जितनी आगे बढ़ाती जायेगी उसका जवाब उतना ही उलझा हुआ मिलेगा और आखिर में उसे जवाब के आगे चुप हो जाना पड़ेगा।

बात को मौजूदा हालात पर लाती हुई बोली—खाइए न, आपने तो लिया ही नहीं। बेफ़िक रहिए, मैं इन्हें वापिस ले जाने वाली नहीं हूँ।

और अगर न खा सकूं तो क्या जबरदस्ती कीजिएगा।

तो······, एक क्षण वो सोच में पड़ गई, कि क्या कहे। तो दूसरे ही क्षण चंचलता से बोली—क्यों नहीं। ऐसा करूँगी कि एक सेव एक हाथ में पकड़ा दूँगी और दूसरा दूसरे हाथ में, रास्ते भर खाते जाइएगा।

और अगर किसी ने देख लिया तो,

तो झट से आपकी फोटो खींचकर अखबार में छपवा देगा, कि मशहूर लेखक'······' रास्ते में जाते २ सेव खाते हुए।

और इस बात पर दोनों ही हंस पड़े, कमरा हँसी से गूंज उठा। एक मिनट के लिए फिर खामोशी छा गयी।

तो लेखक ने अहिस्ता से कहा—एक बात पूछूं आप से? उसकी इस बात पर मुमताज सकपका गई, कि ना मालूम क्या पूछने लगें, घबराकर उसने उसकी तरफ देखा। और धीरे से बोली—

क्या?,······और अपने आप को वयस्त सी बनाए रखने के लिए वो प्यानो के स्टूल पर बैठ गयी, और अनजान सी बन कर प्यानो के रिट्ज पर अपनी पतली गोरी-गोरी उगलियाँ चलाने लगी, कान उनके सवाल सुनने की तरफ थे और दिल······, दिल धड़क रहा था बेचारा।

लेखक ने प्यानो पर थोड़ा झुक कर उसकी तरफ देखते हुए कहा—

''क्या आप कभी गल तफहमी का शिकार हुई हैं ?......,

जी गलत फहमी का......, मैं समझी नहीं। मुमताज ने अपनी घनी पलकों को दो तीन बार झपकाकर कहा—जरा बात खोल कर कहिए।

मेरा मतलब है कि आपके साथ कुछ हालात गुजरे हों और उनके बारे में जो कुछ आपने सोचा हो वो कभी गलत न साबित हुए हों। बस यह समझ लीजिए कि आपने कभी धोखा न खाया हो।

जी, आज तक तो ऐसा नहीं हुआ, और भविष्य की बात कह नहीं सकती, हाँ कोशिश तो यही करूँगी कि कभी गलतफहमी का शिकार न होऊँ।

जी, बिल्कुल दुरुस्त फरमाया आपने, अगर आज तक कभी गलतफहमी नहीं हुई आपको, तो यह बड़ी अच्छी बात है और उम्मीद करता हूं कि आइन्दा भी नहीं होगी।

मगर आपने यह उल्टा सीधा सा उलझा हुआ सवाल पूछा क्यूं ?......, मुमताज जैसे अपने आपमें उलझ गयी।

'यूं ही ! दिल में एक सवाल उठा और आपसे पूछ लिया।

'मगर कुछ तो बात होगी ही—'

'वो इस वक्त कहने की नहीं है......'

'तो ऐसी भी क्या राज की बात है।'

'राज की नहीं ! मौके की बात है। मैंने कहा था न आपसे कि हर बात कहने, बताने के लिए उसके मुताबिक वक्त देखना होता है, बस यही समझ लीजिए।'

मगर आपकी यह बातें मेरी तो समझ में नहीं आयीं। कह कर मुमताज धीरे से मुस्करा दी।

मैंने कहा न, कि बात अगर उस वक्त के माहौल के मुताबिक कही जाए तभी समझ में आती है। खैर जाने दीजिए—लेखक ने उसकी परेशानी को देख कर कहा—वक्त आने पर सब कुछ समझ जाओगी।

मगर मुमताज उसी वक्त समझने की कोशिश कर रही थी। दिमाग पर

काफी जोर भी दिया उसने कि शुरू से आखिर तक इस अजीब सी बात का आखिर मक्सद क्या था, बात का रुख किधर था। और इस वक्त इस बात का कुछ ताल्लुक भी है या नहीं। मगर सब बेकार था उसका—इन बातों का ताना बुनने का। सर झुकाये वो प्यानो के रिट्ज से व्यर्थ ही खेल रही थी, और वो घुँघराली पेचदार जुल्फों की लट उसके गोरे गाल से गुलाबी गाल को रह २ कर बड़ी हसरत से चूम रही थी।

तब लेखक ने कहा—अच्छा, अगर इजाजत हो तो चलूँ।

जी, अभी से—,अभी तो आप आए हो, जरा कुछ देर तो और बैठिए न, मुमताज जैसे चाहती नहीं थी कि वो अभी चला जाए।

अभी कहाँ आया हूं—कह कर उसने रिस्ट वाच की तरफ देखा और बोला—करीब सवा दो घन्टे हो गए हैं। फिर यहाँ तो रोज का आना जाना होता रहता है।

'रोज का!' अगर झूठ भी बोला करिए तो जरा सच्चा तो बोला करिए, आपने तो उस दिन कहा था हफ्ते भर में ही आने की कोशिश करूंगा, और आज मेरे ख्याल से करीब ग्यारहवां रोज है, और आज फिर झूठा बहाना पेश कर रहे हैं। उसके चेहरे की तरफ प्यार से देखते हुए बोली—अच्छा सिर्फ दस मिनट और बैठ जाइए, इतने में चाय तैयार करके लाती हूं। और मुस्कुरा पड़ी, कहने लगी—अब तो आपका मूड पीने के लिए ठीक हो गया होगा। कह कर वो दरवाजे की तरफ बढ़ी। जाती जाती बोली—सिर्फ दो मिनट में आयी।

लेकिन सुनिए तो, कह कर वो भी दरवाजे की तरफ बढ़ा, और उनकी आवाज सुनकर मुमताज भी रुक गई, पास आकर वो बोला—मैं सच कहता हूं इस वक्त आप चाय की तकलीफ मत कीजिए और आज मुझे जरा मार्किट भी जाना है।

मगर यह बात ठीक तो नहीं है—मुमताज ने उलाहना सा दिया, चलिए उधार रही, आप फिर कभी चाहें दिन में दो बार पिला देना।

और दोनों चुपचाप दरवाजे से बाहर आ गए, गैलरी को पार करके नीचे

उतरने के लिए अभी पहली सीढ़ी पर कदम रखा ही था मुमताज ने कि नीचे से ऊपर आने के लिए उनकी अम्मीजान दो एक सीढ़ियाँ चढ़ चुकी थी। उनको सामने देखकर लेखक ने दोनों हाथ जोड़ दिए। वो बोलीं—मैं तो अभी नीचे से गुजरी तो तुम्हारी आवाज सुनकर पहचान गयी कि है तो अपना ही बेटा।

इतने में दोनों नीचे आ गए।

उस दिन तुम आये भी, मगर मैं तुमसे मिल भी न सकी।

जी······, इत्तफाक की बात है। और अगर आप सच पूछिये········, उसने मुमताज की तरफ तिरछी नजर से देखते हुए कहा—तो आज मैं आपसे ही मिलने को आया था, न जाने क्यूं एक दो दिन से आपकी याद बहुत तड़पा रही थी, तो रह न सका, और साजिद से भी कहीं मुलाकात नहीं हो पायी थी और उनसे भी मिलने का वादा कर गया था, उसने मुमताज की तरफ इशारा करके कहा—सो इस वास्ते मैं आपकी खिदमत में पेश हुए बगैर न रह सका।

मैंने तो कितनी बार कहा है कि यहीं आकर रहो, वहाँ सारा दिन घर में अकेले बैठकर न जाने कैसे वक्त कटता होगा, और मैं तेरी माँ नहीं लगती क्या?

यह मैंने कब कहा है। बल्कि मैंने आपसे अभी कहा न कि दो एक रोज से आपकी याद बहुत तड़पा रही थी, तो मैं अपने आप चला आया, वरना साजिद से तो मुलाकात अक्सर कहीं न कहीं रास्ते में ही हो जाती है और हमें अभी तक दुनियाँ में और किसी से ऐसी दिलचस्पी है नहीं कि उसकी खातिर हम खामख्वाह अपने पैरों को तकलीफ दें—कहकर उसने मुमताज की तरफ देखा तो उसने बाँकी अदा से अपनी पलकों को झपकाकर नजरें झुका लीं।

और हाँ मुमताज! अम्मीजान ने उसे अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा—चाय वगैरा भी पूछी या नहीं।

जी—, इन्होंने ही पीने से मना कर दी थी, मैंने तो बहुत कहा था। मुमताज ने बड़ी शोखी की निगाहों से लेखक की तरफ देखते हुए कहा।

'......खाली पूछा ही था या सामने भी लाकर रखी थी ।'

'......जी इन्होंने......, फरमाया कि पीने का मूड ही नहीं......'

बस-बस रहने दे, तुझे मालूम होना चाहिए कि ऐसे आदमी खाली बातों से ही नहीं मानते, जबरदस्ती करनी पड़ती है, और फिर इन लेखकों से—, तो बस खुदा ही निबट सकता है ।

'जी, फिर मुझे भला क्या पता था इनकी इन छुपी कयामत सी अदाओं का । मुमताज अपनी मम्मी की मौजूदगी में भी अपनी शरारत का तीर चलाए बगैर न रह सकी । तो मम्मीजान को भी हँसी आ गई, और वह भी उसके कहने के अंदाज पर मुस्करा पड़ा ।

तब मुमताज की अम्मीजान ने ओठों पर मुस्कराहट लाते हुए कहा—बड़ी शरीर है. हर किसी से मजाक करने में जरा नहीं चूकती ।

चंचलपना अच्छा होता है,......

हाँ तभी तो कहती हूँ थोड़ा सा बातूनीपन इनसे उधार ले लो तुम, तुम तो हर वक्त खोये-खोये से रहते हो, मतलब की बात हुई तो जवाब देते हो, वरना खामोश सा रहना ही पता नहीं तुम्हें क्यों अच्छा लगता है और यह है कि सारे दिन छेड़खानी करती फिरती है, यहाँ तक कि घर के बूढ़े नौकर को भी तंग करने से बाज नहीं आती । अभी तो घर में कोई इससे छोटा नहीं है, वरना तो खुदा जाने यहाँ घुड़दौड़ हुआ करती ।

यह बातें हो ही रही थीं कि हाँफता हुआ सा तेजी से साजिद ने हाल में प्रवेश किया और तीनों को सामने पाकर खुशी से चीख पड़ा—अम्मीजान !

आज तो गजब हो गया, खुदा ने आज हम पर रहम की इतनी बारिश की है कि बस क्या बताऊँ, मुंह से बात नहीं निकलती ।

क्या हुआ—, तीनों ही एकसाथ पूछ बैठे ।

आज हमारी किस्मत ने दिल खोलकर हम पर इनायत फरमाई है ।

कुछ कहोगे भी, या बातों का सिलसिला ही जोड़ते रहोगे । मुमताज जैसे उतावली हो गई । वह जल्द-से-जल्द सुनना चाहती थी कि क्या बात है आखिर साजिद इतना खुशी से पागल सा दिखाई दे रहा है ।

और साथ ही लेखक और मुमताज की अम्मीजान की आँखों में भी यही प्रश्न छिपा हुआ था।

तब साजिद ने कुछ राहत से कहा—अम्मीजान, आज खुदा की रहमत से हमें पूरे सवा दो लाख का फायदा हुआ है……जब कि हमें मुश्किल से उम्मीद एक लाख के आसपास की थी।

सचऽ!!!—, मुमताज और उसकी अम्मी दोनों ने खुशी से बेहाल सी होकर कहा।

और जानती हो—आया यह मुनाफा हमें किसकी खुशनसीबी की वजह से हुआ है। साजिद ने उसी तरह खुशी की मिली-जुली आवाज में कहा।

'किसकी वजह से……? झट से वो पूछने लगीं।

यह इनायत हम पर लेखक साहब की वजह से हुई।

मेरी वजह से—,लेखक ने उसकी बात काटते हुए कहा—इसमें भला मेरा क्या हाथ; जो करता है वो सब परमात्मा ही करता है, यह किस्मत बिगाड़ना बनाना सब उसके हाथ की बात है। इनसान की भला इसमें क्या मेहरबानी।

नहीं ! चाहे कुछ भी हो, तुम हो बड़े खुशनसीब, जिस दिन मैं सूरत देख कर तुम्हारी, किसी भी काम को करने गया वो उम्मीद से भी कहीं ज्यादा अच्छा हुआ। उस दिन की बात तो मैं इसके सबूत के एवज में पेश कर सकता हूं कि जिस दिन मेरा बी० ए० का 'रिजल्ट' आया था, मुझे अपने घर पर ही यकीन नहीं था कि मैं तीसरे साल में भी पास हो जाऊँगा, क्योंकि पिछले साल तो पहले दो सालों से भी बड़े "टफ" पेपर थे और रिजल्ट वाले दिन तो मैं घर पर पहले से ही बिना अखबार देखे मातम मनाये बैठा था, क्योंकि नतीजे का तो मुझे वैसे ही पता था। लेकिन……याद है न, कि मेरे लाख मना करने पर भी तुम अखबार लेने चल दिये। और……जानते हो न, उसने बड़े अंदाज से टाई की गाँठ ठीक करते हुए कहा कि मैं ग्रेजुएट हो गया और वह भी सैकिंड डिवीजन से। सच कहता हूं मुझे तो आज भी यकीन नहीं आता, मेरे खयाल से पता नहीं वो किसी तरह प्रेस में मिस प्रिण्ट हो गया होगा। वरना हमारा नम्बर तो कयामत तक भी अखबार में नजर न आता।

अच्छा तो अम्मीजान, फिर फर्स्ट क्लास नाशते का इन्तजाम जरा जल्दी से करो। आज तो लेखक साहब की पूजा अच्छी तरह करनी है, कहीं नाराज न हो जाएँ। साजिद ने कहा।

लेकिन देखिये न, मैं तो जाने के लिए बिल्कुल तैयार खड़ा था। उसने झट से कहा।

ऐसे भला कैसे जा सकते हो। और हाँ, तुम्हारे लिए एक तोफा भी लाया हूं।

वो क्या है ? पूछा मुमताज ने।

तुम्हारे मतलब का नहीं है······समझी। साजिद ने खीझकर कहा।

और हाँ, तुम्हारे अब्बा हजूर कहाँ रह गये ? साजिद की अम्मी ने उससे पूछा।

वाह ! सुभान अल्लाह ! यह भी क्या बात पूछी तुमने। अरे भाई जब सवा दो लाख का माल इधर सरका है तो ऐसे में भला उन्हें नोट गिनने के सिवाय और काम भी क्या हो सकता है।

उसकी इस बात पर मुस्कुराती हुई उसकी अम्मीजान किचिन में चली गई नाशते का इंतजाम करने।

काफी देर तक सबमें गप-शप होती रही। करीब एक घण्टे बाद उसके अब्बा हजूर भी नोट के बण्डल सँभालकर आ गये थे। नाशते की मेज पर छुरी काँटों के साथ-साथ कहकहे भी चल रहे थे और इसी आलम में लेखक को वहीं साढ़े दस बज गये।

सबसे आज्ञा लेता हुआ जब वो अपने आशियाने की तरफ साजिद के साथ जा रहा था तो रास्ते में साजिद ने उससे पूछा—बताओ मैं तुम्हारे लिए क्या तोफा लाया हूं।

यह बताना भी कोई मुश्किल बात है। उसकी बात सुनते ही साजिद ने मुस्कराकर कार की सीट को थोड़ा सा उठाकर 'ड्राइजिन XXX रम' की एक बोतल उसके हाथ में थमा दी।

लेखक ने कहा—भला इसकी क्यों तकलीफ की।

आज मैंने खरीदी नहीं, बल्कि एक मारवाड़ी ने खुश होकर पेश की है। और इतनी तेज मैं कभी पीता नहीं, लेकिन सोचा कि हम न सही तो हमारे जनाब के काम ही आएगी।

इतने में लेखक का घर आ गया। कार से उतरते हुए उसने साजिद का शुक्रिया अदा किया और सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ ऊपर चला गया।

ट्रन……ट्रन……करती टेलीफोन की घण्टी बज रही थी।

आवाज सुनकर मुमताज सीढ़ियाँ उतरती हुई नीचे हॉल में आई और रिसीवर उठाकर कान से लगाती हुई बोली—हैलो……।

जी क्या मुमताज बी घर पर हैं……। मैं नौशाबा बोल रही हूं। उधर से आवाज आई।

आवाज सुनकर नौशाबा की, मुमताज को शरारत सूझी। उसने दाँतों तले जीभ दबाकर अपनी आवाज बदलते हुए कहा—'जी, वो तो घर पर नहीं हैं।'

'आप कौन बोल रही हैं?' पूछा नौशाबा ने।

'जी, मैं घर की नौकरानी हूं, फरमाइये?'

'क्या वो घर पर नहीं हैं?'

'जी, वो अभी पन्द्रह-बीस मिनट हुए न मालूम कहाँ बाहर गई हैं।' मुम-ताज ने कहा।

'तो……क्या……उनके भाई साहब हैं घर पर?' नौशाबा ने रुक-रुककर कहा।

'जी हाँ, वो तो हैं। कहो तो उन्हें ही बुला दूँ?'

'हाँ।' नौशाबा ने कहा।

तो मुमताज के चेहरे पर मुस्कुराहट दौड़ गई। उसने एक मिनट तक रिसीवर यूं ही हाथ में पकड़े रखा, और होने वाली बात का सिलसिला अपने दिल में जोड़ने लगी।

तब उसने आवाज को कुछ भारी बनाकर साजिद के बोलने के अंदाज की नकल करते हुए कहा—'हैलो डियर!'

'ओह ! जी आप !' नौशाबा ने सकुचाई सी आवाज में कहा ।

'हाँ, कहो डार्लिंग, आज कैसे याद किया ?'

'जी,......जी बात यह है कि कल मैं आपका इन्तजार ही करती रह गई, मगर आप आये ही नहीं ।'

'हां नौशाबा, बात दरअसल यह थी कि मैं इन बिजनेस के झञ्झटों से ही फ़ुरसत न पा सका ।'

'मगर आपके गले को क्या हो गया है ?' पूछा उसने ।

'गले को........?' मुमताज़ ने आवाज और भारी करने की कोशिश करते हुए कहा—'कल किसी के यहाँ दावत थी, और मिठाई वगैरह खाने से गला जम गया है । बोलने में भी बड़ी परेशानी होती है ।

'अच्छा तो अभी मैं आपका........' उसने बड़ी शरमाई-सी आवाज में कहा—'जूहू पर इन्तजार करूँगी, ठीक छः बजे, एक घण्टे तक । देखिए जरूर आइएगा ।'

'ओ० के० डियर ! मुमताज ने बड़ी अदा से कहा । और फोन रखकर मुस्कराकर अपने आपसे बोली—जियो मेरी जान ।

और तेजी से सीढ़ियाँ चढ़कर अपने कमरे में पहुंच गई । कोई लचकता हुआ फिल्मी गाना गुनगुनाती हुई उसने कपड़े की अलमारी खोली, एक मिनट तक उसने आँखों से एक से एक कीमती और खूबसूरत पोशाकों को देखा, रंग-बिरंगे चमकीले रंग उसकी आँखों के आगे बिखरे हुए थे ।

वो सोच रही थी कि कौन सा रंग चुने, कौन सा स्टाइल हो । और वो पोशाकें भी तो बड़ी बेचैनी से इसके फैसले का इंतजार कर रही थीं । सभी तरस रही थीं, उसके नाजुक से जिस्म से लिपटने के लिए । क्योंकि उन्हें भी तो बहुत इन्तजार करनी पड़ती है । चूंकि अमीरों के पास कपड़े भी इतने होते हैं कि अगर एक तरफ से दिन में दो बार भी ड्रेस चेंज करें तो हर एक का फिर से दोबारा नम्बर आने में हफ्तों लग जाएँ ।

आखिर को धानी रंग की साड़ी की किस्मत जागी । उसने लपककर हैंगर समेत उसे उतार लिया, और उसी से मैच करता ब्लाउज और पेटीकोट उतार

कर दो बाथ रूम जाने को मुड़ी। घूमकर उसने दीवार पर लगी घड़ी की तरफ देखा—ठीक सवा पाँच बजे हुए थे, और लेखक ने सात बजे आने का वादा किया था। दिल में खुशी की लहर दौड़ गई कि मुलाकात का वक्त नजदीक आ गया था। और इससे कहीं ज्यादा खुश थी कि आज उन्होंने घूमने चलने के वास्ते हां भी कर दी थी। आखिर मना ही लिया था उसने किसी तरह मिन्नतें करके।

कपड़ों को आवारा लड़की की तरह कन्धे पर डालकर वह बाथ रूम की ओर चल दी।

गुनगुनाती हुई जैसी ही वो सीढ़ियाँ उतर कर हाल में पहुंची तो सामने से साजिद आता हुआ दिखाई दिया।

पास आकर क्षण भर को वो मुमताज के सामने रुक गया।

पूछने लगा—आज कोई अहमदाबाद से टेलीग्राम तो नहीं आया था।
जी—, अहमदाबाद से तो कोई टेलीग्राम नहीं आया, बहरहाल……बम्बई की 'लव्ली काटेज' से एक टेलीफोन जरूर आया था, सिर्फ आपके नाम।

किसका था, साजिद ने कुछ शरमाकर और कुछ मुस्करा कर पूछा

अच्छा ! तो यही भी बताना पड़ेगा। यह पूछो कि 'मैसेज' क्या था—कहने के साथ उसने दरवाजे की तरफ बढ़ने को दो चार कदम बढ़ा दिये।

तो वही बता दो, मुमताज की तरफ घूमकर उसने उसे रोकते हुए कहा।

तो मुमताज ने बड़ी अदा से कपड़ों को कन्धे पर ठीक तरह रखते हुए गरदन घुमाकर कहा—फरमाया था कि बड़ी बेचैनी है, मिलने की।

और जूहू पर ठीक छ: बजे बड़ी बेकरारी से इन्तजार फरमाया जाएगा कह कर वो गोरे गालों ही गालों में मुस्कराती हुई पतली सी कमर लचका कर बाथ रूम की तरफ चल दी।

होठों पर फिल्मी गीत की कड़ियाँ थीं—'ओ, मेरे प्यार आजा, बन के बहार आजा।'

कपड़ों को उसने 'हुक' पर 'हैंगर' समेत लटका दिया, दरवाजे की चिट्कनी लगाकर उसने बिजली का बटन दबा दिया' और झट से दो ट्यूबे रोशनी से

जगमगा उठीं, जिनकी रोशनी में सगमरमर का बाथ रूम अपनी सफेदी पर मुस्करा उठा।

आदमकद आइने के सामने खड़ी होकर उसने अपनी मचलती जुल्फ़ों को सवार कर बांध दिया, और अपने चेहरे को गुनगुनाते हुए हर कोण से देखने लगी।

भीनी-भीनी महक से सारा गुसलखाना भरा हुआ था, क्रीम पाउडर की खुशबू ही इतनी फैली हुई थी कि जैसे रात की रानी बाग में खिल उठी हो।

बन्द गुसलखाने में मुमताज के गुनगुनाने की आवाज कुछ और गूंज उठी कुछ तो खुदा की रहमत से गला यूं ही सुरीला था और कुछ बन्द बाथ रूम की मेहरबानी थी।

उसी तरह गुनगुनाते हुए उसने तमाम कपड़े उतार कर एक ओर टांग दिये, और मदहोश निगाहों से उसने एक नजर अपने बदन पर डाली, शरमायी-२ सी उसकी नजरों ने गोरे गोरे जिस्म की हर गोलाई, कटाई उतार-चढ़ाव को देखा। और देखकर अपने आपको ही काली काली पलकों में खुद से ही शरमा गयी।

मगर-नजर भी आइने से हटने को न चाह रही थी। जैसे वो जी भर के देख लेना चाहती हो उसके हर अंग को। और जाने वो शरमा भी क्यूं रही थी, कोई था भी तो नहीं वहां। इससे पहले भी तो वो रोजाना ही 'आइने के सामने' कपड़े उतारती थी, पर आज क्या खास बात थी, वो खुद भी न समझ पा रही थी। सकुंचायी नजरें उसके बदन का निरीक्षण बड़ी बारीकी से करने लगीं, नजरों से नजर मिलाते ही झट से झुक गयीं, गले से नीचे झुकते ही उसकी निगाहें उभरे हुए नुकीले नितम्बों की गोलाइयां नापने लगीं, सुडौल और सफेद उभरे अंगों पर कुछ गुलाबीपन का घेरा भी था, और फिर नाजुक सी पतली लाजवाब कमर की कटाई से गुजरती हुई नजरें जांघों के संगम पर जाने क्यूं रुक गयीं, और रुकते ही नजर के वो एक दम शरमा क्यूं गयी यह बात वो समझ न पाई। सीने के पहलू में रखा दिल बेकरार-सा होकर धड़कने लगा।

मचलती निगाहें झट से ऊपर उठ गयीं। तड़प कर उसने बेकरार धड़कनों को बस में करने के लिए अपने दिल पर हाथ रख लिया। कुछ ठण्डे से हाथों का स्पर्श पाकर वो नर्म नितम्ब सिहर उठे। और नाजनीन खुद उस स्पर्श से मचल उठी। तड़प कर उसने जवानी से भरे मदहोश चिकने उरोजों को हथेलियों से भींच दिये। शायद कुछ राहत मिली थी इससे, पलकें उन्माद से अपने आप बन्द हो गयीं—

खुदा भी शायद अब पछताता होगा, कि इतनी हसीन, इतनी खूबसूरत बनाकर भी उसने धरती पर क्यों भेज दी, अपने पास ही क्यूं न रख लिया उसे, जी बहलाने को। पर अब पछताये क्या होता है और कोसता होगा बाथ रूम की दीवारों को कि कितनी खुशनसीब हैं जो हर रोज ही नाजनीन को इस आलम में जी भर के देखती हैं।

कि सचमुच संगमरमर के बने गुसलखाने में इस आलम में खड़ी वो यूं लग रही थी कि जैसे वो भी संगमरमर की एक सफेद शिला हो और किसी मूर्तिकार ने तराश कर उसे नारी का रूप दे दिया हो।

सकुचाती हुई वो 'शावर बाथ' के लिए हौज की तरफ बढ़ी और अपने आपको उसने साबुन के झाग में गिरा दिया।

गीत की कड़ियां उसके लबों पर फिर छा गयीं। मस्ती में गुनगुनाती हुई वो हौज में करवटें बदलने लगी।

काफी देर तक नहाने के बाद अपनी वो चमकीली धानी रंग की साड़ी पहन कर वो अपने कमरे में आ गयी।

ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी होकर उसने साड़ी की सलवटों को ठीक किया, स्टूल पर बैठकर वो मेकप करने लगी। बालों के 'क्लिप' खोलकर जुल्फों को आधुनिक ढंग से संवारा। चेहरे पर क्रीम पाउडर लगाने की कला उसे भली प्रकार आती थी, भोहों को काटकर उन्हें और नुकीला बना दिया उसने। घनी पलकों को 'मसकरा' की मदद से उसने संवार दिया उन्हें। पतले २ गुलाबी होठों पर नेचुरल कलर की फीकी २ लिपिस्टिक चमक उठी।

सज संवर कर अपने आपको मदहोश नजरों से देखा, घूमकर अलमारी

से उसने रिस्ट वाच उठाकर कलाई में बाँध ली, गोरी कलाई पर काले स्टैप के बीच रखी सुनहरी रिस्ट वाच बड़ी खूबसूरत लग रही थी। और दूसरी कलाई में सोने की एक मोटी सी चूड़ी पहन ली उसने।

अपने आपको बिल्कुल रेडी करके फिर से अपनी छवि देखने के लिए वो ड्रेसिंग टेबुल के सामने जाकर खड़ी हो गयी। तभी नीचे से बात करने की आवाज आयी।

उसने ध्यान देकर सुना—घर का बूढ़ा नौकर कह रहा था—बिटिया ऊपर अपने कमरे में ही हैं, ऊपर ही चले जाओ।

सुनकर मुमताज खिल उठी, शीशे में अपने मादक चेहरे को निहारते हुए बालों की लट को माथे पर संवारने लगी, गले में पड़ी पतली सी सोने की चमकती चेन को ठीक करने लगी।

सीढ़ियां चढ़कर जैसे ही लेखक उसके कमरे में दाखिल हुआ, मुमताज ने बड़ी अदा से घूम कर कहा—'आदाब अर्ज ···जनाब ! आपके वादा निभाने और वक्त की पाबन्दी के लिए बंदा नवाज की तरफ से शुक्रिया कबूल करें।'

'वादा निभाने की बात तो आप बेजा फरमाती हैं मगर वक्त की पाबन्दी की तारीफ करना दीवार पर लगी इस घड़ी के साथ बेइन्साफी करना है—'

उसने कहा—देखिए सवा सात बज रहे हैं।

और नाजनीन ने झट से फरमाया—मगर यह घड़ी गलत भी तो हो सकती है।

लेकिन हमारी रिस्ट वाच भी इसी की गवाही दे रही है।

खैर छोड़िये इन 'कबाब में हड्डी वाली' बातों को। मैं अर्ज यह करना चाहती हूं कि मैं चलने को बिल्कुल तैयार हूं।

और मुस्कराते हुए दोनों कमरे से बाहर आ गए। हाल में को गुजर कर वो बाहर लॉन की तरफ जा रहे थे कि मुमताज की मम्मी अपने कमरे की चिलमन से उनको जाते हुए देख रही थीं, आँखों में खुशी की एक चमक-सी थी मगर उसका मतलब क्या था वो खुद ही जानती थी। इन दोनों को इस बात का कुछ पता न था।

ड्राइवर ने आदेशानुसार कार पार्क के गेट की तरफ लगा दी थी।

'शेवर लेट' का बिल्कुल न्यू मॉडल, गार्डन में लगे गलोब की रोशनी में चमक रही थी, सफेद दूधिया कार अपने रंग पर नाज फरमा रही थी।

स्टीयरिंग वील की तरफ का दरवाजा खोलते हुए मुमताज बोली—आज तो कार आप ही चलाइएगा।

कार! कार तो मैंने कभी नहीं चलाई, बहराल दिल्ली में कभी टैक्सी जरूर चलाया करता था। लेखक ने मुस्कराकर कहा।

लेकिन आज मेरी अर्ज पर ही इनायत फरमा दें। और कातिल अदा से कार के सामने से घूम कर कार के दूसरी तरफ सीट पर आकर बैठ गयी।

उसने स्टीयरिंग वील सम्भाल कर कार का दरवाजा बन्द कर दिया।

एक झटका लेकर कार आगे बढ़ गई। बम्बई की काली सड़क पर शेवर लेट की गोरी कार बड़ी मस्तानी चाल से चली जा रही थी, पानी की तरह वो हर भीड़ को काटती आगे बढ़ती चली जा रही थी।

कहाँ चलिएगा—, पूछा मुमताज से लेखक ने।

मेरा ख्याल है कि 'प्रिंस' में चला जाए—मुमताज ने अदाएं बिखेरते हुए कहा।

गेटवे आफ इण्डिया के सामने से दाहिनी ओर होती हुई कार 'प्रिन्स होटल' की बाउन्ड्री में आकर रुक गई।

होटल की फुटपाथ सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वो जैसे ही इस शानदार होटल के दरवाजे पर पहुँचे, वहाँ खड़े हुए दरबान ने सलाम बजाते हुए बिजली की तेजी की तरह झुक कर अदब से दरवाजा खोल दिया।

कोल्ड स्टोरेज से भी कहीं बढ़ कर वहाँ ठंडक थी।

भारतीय और विदेशी दोनों तरह के लोग वहाँ दिखाई दे रहे थे।

बाहरी सीटों के बीचों बीच से लांघते हुए वे दाहिनी ओर के एक फैमली केबिन में बैठ गये।

कि तभी वेटर 'मीनू' लेकर पेश हुआ। 'मीनू' को देखे बगैर ही मुमताज ने दो कोल्ड काफी, कुछ सैंडविचिज तथा कुछ और खाने की चीजों का आर्डर

देकर लेखक की तरफ देखते हुए बोली—मुझे आज यकीन नहीं था कि आप मेरा साथ देंगे—,

और अब भी आँखें मलकर अच्छी तरह देख लो, ऐसा ना हो कि कहीं आप अब भी ख्वाब देख रही हों।

'……अगर, यह ख्वाब ही हो तो ज्यादा बेहतर है।'

……क्यूं ?……,

क्योंकि अगर यह ख्वाब हुआ तो आपको वादे के मुताबिक असलियत में आना पड़ेगा और इस तरह एक बार फिर आपका साथ मिल जाएगा।

तब उसने जेब से सिगरेट केस और लाइटर निकालकर सिगरेट केस खोल कर एक सिगरेट को होठों में दबा लिया, लाइटर जलाते हुए कहने लगा—यह जानतीं हैं आप, कि ख्वाब देखने वाले अक्सर धोखा खा जाते हैं।

बात का जवाब यूँ भी मुमताज न दे सकती थी, और देती भी क्या ? कि तभी बैरा-ट्रे में सब चीजें लेकर हाजिर हुआ। सावधानी से सब चीजें मेज पर रख कर बिना मुंह से कुछ बोले वापिस चला गया।

मुमताज ने लेखक की बात गोल मोल करते हुए कहा—लीजिए। और कोल्ड काफी का कप उसकी तरफ बढ़ा दिया।

खाने पीने का दौर खामोशी से चल रहा था। लबों से लगे कप की ओट में कभी-कभी मुमताज अपनी घनी पलकों के पर्दे में छुपी चमकीली आँखों से उसकी तरफ प्यार से देख लेती।

बात की कड़ी कहीं भी जुड़ती न देख लेखक ने यूँ ही साधारण बातचीत की तरह पूछा—मेरे ख्याल से साजिद शायद घर पर नहीं था।

सुनते ही उसकी बात, मुमताज कुछ मुस्करा पड़ी। गोरे गालों के दोनों तरफ दो छोटे-छोटे गड्ढे खिल उठे। आँखों में इक चमक सी फैल गयी। गुलाबी-गुलाबी होठों पर रंगीन तबासुम बिखेरती हुई बोली—सच बताऊँ या झूठ।

अगर सच बतलाने में कोई एतराज न हो तो झूठी बातें सुनने का मैं शौकीन नहीं हूँ।

तो यह हकीकत है कि इस वक्त तो अपनी महबूबा का हाथ थामे निगाहों ही निगाहों में जूहू की ठंडी रेत पर बैठे बातें कर रहे होंगे। कह कर शोख कली ने कातिल अदा से उसकी तरफ देखा और बड़ी नज़ाकत से फिर सिर झुकाकर प्याले में बिला बजा चम्मच हिलाने लगी।

न जाने वो खुद शरमा गई थी इस बात को कह कर या उसका अपना ही दिल उस लुत्फ के लिए मचल उठा था, कुछ कहा नहीं जा सकता था। और मुमताज शायद कोई बात सोच रही थी कि उसने थोड़ी देर तक सिर न उठाया था।

साड़ी का रेशमी पल्ला हवा के हल्के से झोंके से फिसल कर मचलता हुआ उसकी गोद में आने को बढ़ा कि उरीजों से नीचे आने से पहले ही उसने सम्भाल लिया, धीरे से नजरें उठाकर उसने लेखक की तरफ देखा, जो शायद उसकी बात पर गौर कर रहा था।

धीरे से वो बोला—'शायद वही लड़की है न—क्या नाम है उसका,...... हाँ नौशाबा।

जी—मुमताज ने बिना किसी झिझक के कहा।

एक गहरी साँस लेकर लेखक ने कहा—लड़की अच्छी है, और साजिद को चाहिए कि वो उससे जल्द से जल्द शादी कर ले।

'क्यों, महबूबा के साथ ही शादी करना जरूरी होता है—क्या ?

बिल्कुल ! किसी बेगुनाह जवान लड़की के आगे प्यार का हाथ फैलाकर फिर उससे शादी न करना बहुत बड़ा गुनाह ही नहीं पाप भी है। अगर वो कोई शादी की रस्म पूरी नहीं कर सकता तो उसे ऐसा नाता जोड़ना ही नहीं चाहिए। अव्वल तो प्यार करना ही न चाहिए......अगर निभा न सके तो।

बात को कह लेखक भी खामोश हो गया और सुन कर मुमताज भी आगे कुछ न बोली।

तभी करीब दो मिनट बाद मुमताज बोली—एक छोटी-सी बात बताइयेगा, वो कहते हुए कुछ लज्जा रही थी।

कौनसी—उसने मुस्कराहट के साथ जवाब दिया।

तो शायद हसीन परी के छोटे से दिल की धड़कनें तेज हो गई थीं, किसी तरह उनपर काबू पाकर, चेहरे पर मुस्कराहट लाती हुई बोली—क्या आप की भी कोई प्रेमिका है ?………,

प्रेमिका ! उसने धीरे से दोहराया और फिर उसके चेहरे की तरफ देखा, बड़े अन्दाज से कहने लगा—हाँ, है तो—,

तो शरारत भरी मुस्कान चेहरे पर लाती हुई पूछने लगी—कौन है वो, ………मेरे ख्याल से अता पता पूछने से पहले लड़कियाँ किसी दूसरी लड़की की खूबसूरती का हाल पहले पूछती हैं—

तो यही बता दीजिए पहले,

तो भला यह भी कोई पूछने की बात है, जब किसी ने किसी को प्रेमिका बनाया होगा तो वो उसके दिल को जरूर भायी होगी या उसे वो सुन्दर, खूबसूरत लगी होगी तभी तो उसने प्रेमिका बनाया होगा।

बस ! बात का पलटना तो आपसे सीखे कोई। मुमताज ने परेशाँ-सी हो कर कहा—क्या सचमुच खूबसूरत है ? ………वो……,

और बात को अन्दाज से पूछने की कला सीखने के लिए आपकी शागिरदी कामयाब रहेगी—क्यों है न। उसकी बात का जवाब न देकर उल्टा उसके ही सवाल में उलझा दिया उसने।

फिर वही बात है न, मुमताज ने शरमाने का अभिनय करते हुए कहा—कहाँ रहती है वो—आपकी ? मुस्करा पड़ा वह उसकी इस बात पर बोला—वो सिर्फ दिल में रहती है, ख्यालों में आकर प्यारी २ मीठी २ बातें करती है, और ख्वाबों में उसके दीदार होते हैं। न कभी रूठती है न कभी गिल्ला-शिक्वा करती है, उसने बड़ी संजीदगी से जवाब दिया।

कौन है वो……नाम क्या है उसका—मुमताज ने बड़ी उत्सुकता से पूछा। —कल्पना—लेखक ने लहजे में कहा।

क…ल…प ना, मुमताज ने अपने पतले २ गुलाबी होठों में यह रंगीन नाम दोहराया, महजबीं के गोरे माथे पर पसीने की नन्हीं बूंदें सुबह की ओस की तरह चमक उठीं।

हाँ, कल्पना ! कितना खूबसूरत नाम है, ख्यालों से भी कहीं ज्यादा हंसीं —सपने सा रंगीन नाम है । वह गम्भीर सा होकर सिगरेट के धुएं का बादल सा छोड़ता हुआ कहने लगा—दुनिया की हर खूबसूरती की वो मलिका है—हर अन्दाज उसके पास है । नज़ाकत की कमी नहीं उसमें, नाज़नीन अदाएँ भी रखती है वो ।

और मुमताज का दिल हर बात पर ढलता सा जा रहा था, एयर कन्डी-शन कूलर की इतनी ठण्डक के बावजूद भी उसके चेहरे पर पसीने की छोटी २ बूंदें सफेद मोतियों की तरह चमक रही थीं । दिल की धड़कनों को किसी तरह बस में करके कहा उसने—क्या कभी एक छोटी सी मुलाकात करा सकोगे उस खुशनसीब खूबसूरत हुस्न की शहजादी से ।

'..... मुलाकात, मुलाकात की बात जरा टेढ़ी है । और साथ ही मुश्किल ही नहीं वरन् नामुमकिन भी है ।'

क्यों, भला ऐसी भी क्या दिक्कत है,

दिक्कत नहीं, बल्कि पाबन्दी है.....,

पाबन्दी.....मुमताज को पहेली सी बात समझ में न आई ।

हाँ, पाबन्दी । एक लम्बा कश लेकर 'ऐशट्रे' में सिगरेट के टुकड़े को मसल कर धुएँ का गुब्बार छोड़ते हुए बोला—कल्पना सिर्फ मेरी ही नहीं बल्कि हर लेखक की प्रेयसी है वो । हर 'राइटर' से वो पाक मुहब्बत करती, जब चाहे बुला लो उसे, न दिन की परवाह करती न रात का बहाना ।

बस-बस रहने दो अपनी इस नामुराद प्रेयसी की तारीफें । मुमताज ने एक गहरी साँस लेकर अपने दिल पर हाथ रख लिया, जैसे वो देखना चाह रही हो कि धड़कनों का क्या हाल है ? नर्म से उरोजों को छूती हुई उसकी गोरी २ उंगलियाँ बड़ी सुन्दर लग रही थीं ।

बातें बनाकर, बात का मतलब कहीं से कहीं ले जाना तो आपकी आदत है, वो शोख कली मुस्कराकर बोली—इन लेखकों का दिमाग़ तो बस हर वक्त ऐसी ही बातें सोचने में लगा रहता है, जाने रात को नींद में भी ऐसे ही ख्वाब होते होंगे ।

'जी क्यों नहीं ! आशिकों से पूछ लो जरा उनके दिल का हाल, कि हर वक्त इनको माशूका की याद आती है या नहीं। वही हालेदिल हमारा भी है, उसने कहा।

इस बेवफा कल्पना की बात छोड़ कर कभी और भी कोई बात कर लिया कीजिए।

यही तो हमारी जिन्दगी का सहारा है, भंवर में डगमगाती हमारी सफीना की साहिल ही जब यह है; तो भला इसे हम दिल से जुदा कर भी कैसे सकते हैं ?

बात का जवाब कुछ सोचने जा रही थी कि बैरा बिल लेकर हाजिर हुआ और सरवेन्ट बर्तन लेकर चला गया।

बिल की तरफ सरसरी निगाह से देखा मुमताज ने, और पर्स खोलकर पेमेंट के लिए अभी रुपये निकाल ही रही थी कि लेखक ने उससे पहले ही जेब से सौ का नोट निकालकर प्लेट में रख दिया।

मुमताज ने झट से कहा-··यह कैसे हो सकता है ?

लेकिन एतराज भी क्या है··· और बैरे की तरफ इशारा किया, अदब से सिर झुकाकर वो चला गया।

लेकिन मुमताज शिकायत करने लगी—देखिए यह नहीं। आपको बिल पेमेंट नहीं करना चाहिए, आर्डर तो मैंने दिया था,

लेकिन आपका साथ भी तो मैंने दिया है या नहीं। फिर इसमें फर्क की बात ही क्या है ?

इस बात से आगे मुमताज कुछ न बोली, जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाते हुए बोला—अब हमें चलना चाहिए, काफी देर हो गई है।

जी, ·····उसने गोरी सी नरम कलाई पर बंधी रिस्ट वाच की तरफ देखते हुए यह छोटा सा जवाब फरमाया।

इतने में बैरा बाकी रुपये प्लेट में लिए हाजिर हुआ। सारे नोट उठाकर लेखक ने उनमें से एक पाँच का नोट बैरे की प्लेट में वापिस रख दिया और बाकी रुपये जेब के हवाले करते हुए बोला—आओ।

मुमताज भी उठ कर खड़ी हो गई, बैरे ने बूट की ऐड़ियों को 'ठ्क' से बजाते हुए एक जोरदार सलूट फरमाया। और फुर्ती से कैबिन का दरवाजा खोलकर पथ-प्रदर्शक की तरह साथ चलने लगा। मेन गेट पर आकर उसने फिर एक सलूट बजाया और गेट का एक दरवाजा खोलकर खड़ा हो गया।

सीढ़ियाँ उतरते हुए वे लोग कार के पास आए जो पार्क की हुई तैयार खड़ी थी।

७

दोपहरी कुछ ढल चुकी थी, आसमान पर कुछ २ बादल छाये होने की बजह धूप कुछ खास न थी। नर्म गद्देदार पलंग पर औंधी लेटी मुमताज किसी पत्रिका में छपी इसी लेखक की कहानी बड़ी तन्मय होकर पढ़ रही थी। कहानी कुछ रोमान्टिक थी शायद, कि पढ़ते २ वो शरमाकर मुस्करा पड़ती, सीने के भार लेटी हुई चेहरे को दोनों हाथों में कोहनियों के भार पर टिकाए सब बातों से अनजान होकर बड़ी फुरसत से वो कहानी में खोयी हुई थी। दोनों पैरों को आपस में रगड़ती हुई वो कुछ आनन्द महसूस कर रही थी।

सफेद रेशमी चूड़ीदार पायजामा उसकी गोरी-गोरी पिंडलियों तक ढका हुआ था। और वो नर्म से सफेद पाँव आपस में अठखेलियाँ करते हुए बड़े सुन्दर लग रहे थे। कहानी के साथ ही लेखक की फोटो भी छपी हुई थी, और उस तस्वीर को वो बड़े प्यार से देखे जा रही थी, नजरें एक ट्क उस तस्वीर पर टिकी हुई थीं। और दिल में न मालूम क्या सोच रही थी,

कि तभी उसके पाँवों पर किसी ने गुद्गुदी कर दी,

'उई'......, एक दम बाहों के भार पलट कर वो कह उठी। पलट कर जब नजरें घूमीं तो सामने मुस्कराती हुई नौशाबा को देखकर कहने लगी—मुरदाद कहीं की, तूने तो डरा ही दिया मुझे।

और सचमुच उसका सीना तेजी से धड़कने की वजह से ऊपर नीचे हो रहा था। कोहनियों के भार लेटी होने की वजह से उभरा हुआ सीना और भी उभर आया।

कहने लगी नौशाबा—'सच कहती हूँ डार्लिंग'—'गुस्से में खूबसूरत लड़कियाँ और भी हसीन लगती हैं।'

जरा अपनी तरफ तो निगाह उठाकर देखो, जवानी का बोझ उठाए नहीं उठता, और कातिल अदाएँ ''पूछो मत। वो सम्भल कर बैठने लगी।

नौशाबा जब करीब ही आने लगी तो मुमताज ने हड़बड़ाते हुए पत्रिका को यूं ही उल्टा सीधा लपेट कर बेपरवाही से अल्मारी में फेंकने लगी तो इस से पहले ही नौशाबा ने उनके हाथ से पकड़ ली, पूछने लगी---क्या पढ़ रही थीं ? और पन्ने उलटने लगी।

कुछ नहीं। घबराकर मुमताज ने कहा---यूं ही दिल बहलाने को लिए बैठी थी।

पत्रिका उसी कहानी पर काफी देर से मुड़ी होने की वजह से झट से वहीं खुल गई। कहानी के साथ ही लेखक की फोटो छपी देख वो मुस्करा पड़ी। उसकी तरफ देखते हुए कहने लगी—

'दिल बहलाने को या दिल लगाने को।'

और मुमताज शरमा गई उसकी इस बात पर। गालों पर सुर्ख लाली दौड़ गई। लजाकर आहिस्ता से नजर उठाकर उसने नौशाबा की तरफ देखा, तो वो गालों पर मुस्कराहट लिये उसकी तरफ देख रही थी।

पलंग पर उसके पास ही बैठकर मुमताज के गले में अपनी बाँह डालकर धीरे से नौशाबा ने पूछा—'क्या सचमुच दिल दे बैठी हो......?'

चेहरा मुमताज का शर्म से और भी झुक गया। गालों पर सुबह की तरह लाली छाई हुई थी। कजराली काली-काली घनी पलकें झुकी हुई थीं, और नाजुक सा छोटा सा दिल बड़ी बेकरारी से धड़क रहा था। आँचल को दाँतों तले कुरेदती हुई उसने झुकी नजरों को ऊपर उठाया तो नौशाबा की आँखों में वही सवाल था, उसको यूँ खामोश देखकर नौशाबा ने उसे छेड़ा—'अरे, तू क्या बताएगी, महबूब का हाल।'

'……यह हर वक्त की बेवक्ती मजाक अच्छी नहीं लगती मुझे।' मुमताज बोली।

'वो तो अच्छे लगते हैं या नहीं; कहीं उनसे भी……'

'देखो फिर वही बातें।'

मुमताज पलंग से उठकर दो-चार कदम की दूरी पर रखे सोफे की पीठ पर हाथ रखकर खड़ी हो गई। मगर नौशाबा यूँ ही चुप हो जाने वाली कहाँ थी। झट से उठकर उसके पीछे जाकर खड़ी हो गई। पीछे से उसके कन्धों पर हाथ रखकर बोली—'जरा सम्भलकर मुहब्बत की सीढ़ी पर पाँव रखना, कहीं ऐसा न हो कि……यह नाजुक सी कमर……उसकी पतली सी कमर पर हाथ रखती हुई बोली—'लचक जाए और यह नर्म पांव कहीं फिसल गए तो बस, फिर तो खुदा ही हाफिज है।'

'देख नौशाबा, मैं कहे देती हूं, हर वक्त की यह छेड़खानी मुझे पसन्द नहीं।' मुमताज ने तुनककर कहा।

'हाय! सच कहती हूं—आजकल की लड़कियाँ लेखकों और अभिनेताओं पर बहुत मरती हैं और अगर वो खूबसूरत जवान और उलझे घुंघराले बालों वाला हो, तो फिर तो मत पूछो, दीवानी हुई फिरती हैं उनके पीछे। और मेरे खयाल से शायद आपका नाम भी इसी लिस्ट में कहीं ऊपर-नीचे शामिल जरूर है।'

मगर मुमताज उसी तरह खामोश खड़ी थी। आखिर कहती भी क्या, उसको यूं खामोश देखकर नौशाबा उसके सामने खड़ी हो गई। उसके चेहरे को अपने हाथों में लेते हुए कहने लगी—'सच कहती हूं बानू! यह गुलाब का फूल वाकई उनके लायक है। अगर वो खूबसूरत हैं तो हमारी कली भी हसीन है।'

मुमताज का चेहरा खून की लाली से सुर्ख हुआ जा रहा था। गोरे-गोरे गाल जवानी के गर्म लहू से तप से गए। पहलू में तड़पता हुआ दिल कसक-सा रहा था, नजरें न मालूम वो क्यों नहीं उठा पा रही थी और नौशाबा थी कि हर पल बाद बातें बनाए जा रही थी। मुमताज को यूँ लगा कि जैसे उसकी

साँस घुटती जा रही हो। इससे राहत पाने के लिए उसने एकदम निगाह उठा कर नौशाबा की तरफ देखा और कहती हुई दरवाजे की तरफ बढ़ी—'मैं जरा चाय को कह आऊँ।' और तेजी से सीढ़ियाँ उतरती हुई नजरों से ओझल हो गई।

करीब दस मिनट बाद गुनगुनाती हुई वो ऊपर आई। देखा उसने—नौशाबा अभी तक पत्रिका उलट-पुलट रही थी। उसको आया देख बड़े लहजे से बोली—'सच कहती हूं कहानी बड़ी भावपूर्ण है। एक-एक लफ्ज़ दिल में उतर जाने वाला है और नाम भी तो देखो क्या रखा है—आँसुओं का संगम।'

'पढ़ी भी है तूने या यूंही बातें बना रही है?'

'तो क्या तू समझती है सिर्फ तेरे लिए ही एक पत्रिका छपती है। मैं यह कहानी आज से सात-आठ दिन पहले पढ़ चुकी हूं।'

मुमताज खामोश हो गई इस बात पर, और नौशाबा अपने तीर को निशाने पर लगा देख मुस्करा पड़ी, और आँखों को तिरछी करके कहा उसने—'एक बात बता दूं तुम्हें……।' कहकर उसने मुमताज की तरफ देखा, जिसकी आँखों में 'क्या' का भाव स्पष्ट हो रहा था, तो नौशाबा ने फरमाया—'तुम्हारे इन लेखक साहब पर तुम ही नहीं, न जाने कितनी ही जवाँ और हसीन लड़कियाँ मरती हैं। किसी रेस्टोरेण्ट में बैठ जाइये, फैशन और फिल्मों की चर्चा के साथ इनका भी किस्सा जरूर सुनने को मिल जायगा, और अगर उन दिनों इनकी कोई कहानी हाल ही में छपी हो तो बस, फिर तो पूछो मत, सभी की जुबाँ पर किस्सा ही यही होता है।'

नौशाबा की यह बात सुनकर मुमताज के दिल में गुदगुदी सी उठ गई। मचलते दिल को संभालते हुए उसने घनेरी पलकों को उठाकर नौशाबा की तरफ देखा, जो चेहरे पर चंचलता छिपाये बड़ी संजीदगी से उसके चेहरे की तरफ निहार रही थी।

तभी नौकरानी चाय की तश्तरी लिए कमरे में दाखिल हुई।

झुकी निगाहों से मुमताज चाय की तश्तरी पर झुकी। प्यालों में चाय

उड़ेलकर उसने चीनी डालकर चम्मच सहित कप नौशाबा की तरफ बढ़ा दिया और बिना कुछ कहे अपने लिये चाय तैयार करने लगी। सोच रही थी—आज उसकी जुबान चुप क्यों है, वो खामोश क्यों बैठी है। न जाने नौशाबा ने आते ही क्या माहौल पैदा कर दिया है कि वो अभी तक एक बात भी नहीं कह पाई।

कप को उठाकर उसने होंठों से लगा लिया। प्याली की आड़ में उसने अनजान सी बनकर पलकें झपकाकर नौशाबा की तरफ देखा, और इस तरह अचानक नजर मिलते ही नौशाबा पूछ बैठी—'सारा दिन यूं घर पर बैठी-बैठी क्या करती रहती हो।'

और अचानक इस सवाल पर मुमताज कुछ ठिठक गई। बड़ी संजीदगी से बोली—कुछ नहीं बस······सारा दिन ऐसे ही गुजर जाता है।' कहकर उसने नौशाबा के चेहरे की तरफ देखा, तो खेलती चंचलता देखकर उसने झट से कहा—'तो तुम ही बताओ······क्या किया करूं?'

'मेरे खयाल से ···उसने रुक-रुककर कहा—'उनको बुला लिया करो।'

शरमा तो गई मुमताज इस बात पर, मगर दूसरे ही पल उसने झट से तीर छोड़ा—'मुआफ करना डार्लिंग, उनके घर पर फोन नहीं है, वरना········ कभी वादे के मुताबिक न आने की शिकायत भी फरमा दिया करती और आगे के प्रोग्राम का हवाला भी पेश कर दिया करती। सच! कितना लुत्फ आता है अपने······उनसे······टेलीफोन पर बात करने से! डार्लिंग और मेरी जान कहकर पुकारा जाता है और जवाब! जरा बता दो न वह अंदाज······?'

मुमताज का यह वार कामयाब रहा। वो हसीन कली जो हवा के मस्त झोंके आने पर झूम-झूमकर इठला रही थी अब सर झुकाये यूं खामोश बैठी थी, जैसे कमल के फूल पर चन्द्रमा की पहली किरण पड़ते ही अपने आप में सिकुड़ जाता है। उसका यूं एकदम बदला जाना देखकर मुमताज मुस्करा पड़ी। उसको छेड़ते हुए बोली—'फरमाइये न कुछ दिले-बहार की बातें, कुछ मरहले इन्तजार की बातें, कोई शौकिये-दीदार की बातें, नहीं तो नबमा-ए दिल का, या बेकरार की बातें, हुस्न की शोखियाँ या दिलदार की बातें, कुछ

तो फरमाओ सरोकार की बातें, और कुछ न सही तो फरमा दो·········अपने मुहब्बते-यार की बातें·······। बहरहाल हों बातें, मगर हों प्यार की बातें·······।' मुमताज ने कहकर बड़ी शोखी से उसकी तरफ देखा।

'हटो न, तुम तो शायरी करने लगीं !' मुमताज की बात को उड़ाने के लिए नौशाबा ने फब्ती कसी।

'सच !·····सुना नहीं तुमने·········साथ हो गर ऐसे ही साथी का·········तो असर आ ही जाता है।' कहकर वो खड़ी हो गई और कमरे की दोनों खिड़कियों के पट खोलती हुई बोली—'देखो न मौसम भी तो कितना सुहाना है। यह छाई हुई काली-काली मस्त घटायें और मस्ती से भरे यह मस्त ठण्डी-ठण्डी हवा के झोंके, ···और यह झूमते मस्त नज़ारे, सच कहती हूं, ऐसे में शायरी तो क्या, अगर कमर में हाथ डालकर रॉकन-ए रोल डान्स किया जाए तो कितना मज़ा आ जाए ! और खिड़की पर से तेज़ी से हटकर वो सोफे पर बठी नौशाबा के पास आई और उसके पास ही सोफे पर बैठकर उसकी कमर में बाँहें डालकर बिल्कुल सीने से लगाकर बोली—'आओ न दिलरुबा, थोड़ा डान्स करें।'

'हटो भी, यह बदतमीज़ी नहीं अच्छी लगती।'

'क्यूं नहीं,·········हमारी तो प्यार की एक बात भी बदतमीज़ी लगती है और उनकी बदतमीज़ी पर दिल कसक उठता होता और तमन्ना यही करती होगी कुछ शरारत भी करें।'

'बड़ी बेशर्म हो गई है तू·······।' शरमाकर और कुछ लजाकर नौशाबा ने कहा।

'क्या फरमाया है तुमने ? मालूम नहीं आपको, मैंने अपनी सारी शरम आप ही के पास तो गिरवी रखी थी। तभी तो आपको दुगुनी शरम आ रही है।'

'अच्छा, हटो भी !' वह अपनी कमर में लपटी नौशाबा की बाँहों को हटाते हुए बोली—'यह डांस-वांस उन्हीं से लिपटकर करना।'

'हाय ! जो मज़ा तुमसे लिपटने में है, वह मर्द के सख्त सीने में कहाँ है।'

कहकर उसने अपने आपको नौशाबा पर ढीला छोड़ दिया। सोफे पर उचकी सी बैठी नौशाबा उसका वज़न संभाल न सकी, और संभलने के लिए मजबूरन उसको मुमताज का जिस्म बाँहों में संभालना पड़ा। और वो थी कि अपने चेहरे को नौशाबा के जवाँ और नर्म से गर्म सीने में छुपाए जा रही थी, नौशाबा को कसकर बाँहों में भरकर उसके कोमल उरोजों पर गाल रगड़ती हुई बोली—'हाय ! दिलरुबा, यह कसक, यह सिरहन, यह मस्ती······तो तेरी जवानी तोबा, तोबा !'

'बेशरम कहीं की······।' उसके कन्धे पकड़कर हटाती हुई कहने लगी—'चल हट, पीछे हो। न जाने यह बातें कहाँ से सीखकर आई है।'

'अ—ऊऽऽ—ँ······,' रहने भी दो न, कुछ राहत सी मिलती है, कुछ सकून सा आता है, कुछ मज़ा भी तो है, यह नर्म से ···'

'आय हायऽ !' उसने परेशान सी होकर झटक ही दिया उसे।

अलग होकर उससे, मुमताज ने चेहरे पर से उलझे बालों को हटाया, और गालों पर आँचल का पफ सा बनाकर हल्की-हल्की उभर आई पसीने की बूंदों को हटाती हुई बोली—'मुझे भी अपना आशिक बना लो न, सच कहती हूं तुम्हारी इन जुल्फों की छाँव तले सारा दिन गुज़ार दिया करूंगी, पहलू में बैठाकर तुमको······जी भरके प्यार······'

'अच्छा तो मैं चलती हूं······ ···' नौशाबा उसकी बात को काटती हुई उठ खड़ी हुई। साड़ी का पल्लू ठीक से कंधे पर डालती हुई पर्स उठाने को सोफे पर झुकी, तो मुमताज ने वहीं उसके हाथ को पकड़कर कहा—'बैठिये न हुजूर ! इतनी भी जल्दी क्या है, इधर आए और इधर चल दिये। अभी तो दिल भी भरा नहीं, न जाने क्यूं तड़पाने में तुम्हें क्या मजा आता है। और फिर अभी तो तुमने हाले-ए-दिल की बातें तो सुनाई ही नहीं।'

'तुम तो शायद आज पागल हो गई हो······'

'पागल नहीं···बावरी हो गई हूं तुम्हारे प्यार में··········।' कहकर उसने बड़ी अदा से नौशाबा के गले में बाँहें डाल दीं। अपना जिस्म बिल्कुल उसके साथ सटाकर चेहरे को चेहरे के नज़दीक लाती हुई बोली—'जा ही रही हो,

तो··· इन तड़पते होठों पर अपने इन सुर्ख लबों से एक प्यार की मोहर तो लगाती जाओ।'

उसका चेहरा नौशाबा के चेहरे के बिल्कुल नजदीक था। सुलगते से होंठ हल्के-हल्के कांप से रहे थे। घनी पलकों में छिपी काली-काली कजराली आँखें एकटक नौशाबा की आँखों को निहार रही थीं। साँसों की खुशबू और गर्मी दोनों महसूस कर रही थीं।

मुमताज की यह दीवानगी देखकर नौशाबा ने उसे अपनी बांहों में भर लिया। उसकी आंखों में आँखें डालकर आहिस्ता से फुसफुसाई—'क्यों, अभी से इतनी बेताबी पैदा हो गई है क्या जिस्म में, यह सरूर, यह बेकरारी, यह कसक ····देखकर लगता है, कि तुम जैसे बहक सी रहो हो। क्या तुम सचमुच अपने आप पर काबू नहीं रख सकतीं, अगर ऐसी ही बात है तो तुम जल्दी से शादी · '

इतना ही कह पाई थी वो कि मुमताज ने झट से उसके फड़फड़ाते होंठ चूम लिये और एक झटके से अलग होकर हंसने लगी। बोली—'शादी की तो जल्दी तुम्हें है, मेरा तो अभी इश्क करने का जमाना है।'

'बिल्कुल पूरी बेहया हो गई है···· ·········।' अपने होठों को पोंछने लगी। नौशाबा उसकी तरफ देखकर बोली—'शर्म-हया तो बिल्कुल ताक में रख दी है तूने, अब तो बातें यूं बढ़-चढ़कर और बेशर्मी से करने लगी है, वरना पहले तो·· ······'

'रहने दो बेगम साहिबा··············मुझे आपसे करैक्टर सार्टीफिकेट नहीं लेना।'

'अच्छा, बॉम-बॉय हम तो चले।' कहकर नौशाबा दरवाजे की तरफ बढ़ी।

'क्या सचमुच ?' पूछा मुमताज ने।

'हाँ।' नौशाबा ने सिर हिला दिया।

'लेकिन · ···उनसे मिले बिना ही।'

शरमाकर देखा नौशाबा ने······मगर बोली कुछ ना।

'बैठ जाओ न, वो आते ही होंगे, शायद······अगर आपने फोन किया है तो जरूर ही आने वाले होंगे।'

'नहीं मैं तो अब चलती हूं'

'क्यों फोन खराब था तुम्हारा'—मुमताज ने छेड़ा।

'मुझे नहीं पता······कह कर नौशाबा सीढ़ियां उतरती जा रही थी और मुमताज पीछे-पीछे थी ···· बढ़ती आ रही थीं दोनों लॉन की तरफ। कार गेट के पास ही खड़ी थी, कार में जब नौशाबा बैठने लगी तो मुमताज ने उसका पर्स पकड़ कर कहा—कोई पुर्जा कोई पैगाम हो तो फरमा दो।

कुछ नहीं······कह कर बैठ गयी नौशाबा, तो मुमताज ने फिर कहा—कुछ तो खिदमत का मौका दो ही।

कह देना वो आयी थी······नौशाबा ने आंखें झपकाकर कहा तो गालों पर लाली खिल गयी, और एक झटका लेकर कार आगे बढ़ गयी।

मुस्कराती हुई मुमताज फिर अपने कमरे में आ गयी, ठंडी-ठंडी हवा समां बांधे हुए थी, खिड़कियों के पर्दे मस्ती में झूम रहे थे।

कमरे में खड़ी हुई वो सोच रही थी कि क्या करे, तभी उसकी नजर पलंग पर पड़ी पत्रिका पर पड़ी।

दिल में एक मस्त सी लहर दौड़ गयी, एक पल देखा उसने पत्रिका की तरफ और दूसरे ही क्षण पलंग पर गिरा दिया उसने अपने आप को। पूर्वतः वो सीने के बल लेट गयी, आधी कहानी उसने पढ़ ली थी और आधी अभी बाकी थी, फिर से पिछले पन्ने पलट कर वो लेखक की तस्वीर निहारने लगी, झुकी पलकें बड़े प्यार से वो तस्वीर देखे जा रही थीं, और दिल था कि न जाने कहां खोया हुआ।

ख्यालों में डूबी वो लेखक के बारे में ही सोच रही थी, उसे नौशाबा की बात याद आ गयी—तुम ही नहीं, न जाने कितनी लड़कियां मरती हैं—तो सोचने लगी······उनसे दो बातें भी अगर कोई लड़की कर लेती होगी तो वो अपने आप को न जाने कितना खुशनसीब समझती होगी······शायद दिल में मुहब्बत के महल भी बन जाते होंगे—और अपने बारे में सोचने लगी—कि वो खुद कितनी खुशनसीब है।

विचार की कड़ी टूटी तो पलकें भी झपक उठीं, तस्वीर नजरों के सामने थी। तो रहा न गया उससे……आहिस्ता से झुक कर उसने अपने होंठ लेखक की तस्वीर पर रख दिये। पलकें मदहोशी से बन्द हो गयीं। वो सोच न पा रही थी कि उसे क्या हो गया है—यह दिल यूँ मचल सा क्यूँ रहा है, यह मदहोशी यह दीवानापन सा छा क्यूं रहा है, दिल की बेताबी आखिर कहना क्या चाहती है। होंठ उसके तस्वीर पर ही लगे हुए थे, कसा हुआ जवां सीना अपने ही उसके भार तले दबा हुआ कसक सा रहा था, कुछ राहत सी महसूस हो रही थी उसे शायद, कि वो उसी तरह औंधी लेटी रही।

बाहर आसमान पर बादलों की घटा और गहरी होती जा रही थी, काले-काले बादलों की टुकड़ियां एक दूसरे के पीछे भागती हुई अठखेलियां सी कर रही थीं। हल्की-हल्की हवा यूं अदा लिऐ चल रही थी कि जैसे कि कालिज की कोई शोख और हंसी लड़की, लड़कों के ग्रुप से दामन बचाकर चल रही हो। और लड़के मुड़-मुड़ कर उसकी नागिन सी चाल को देख रहे हों, आखिर लड़कियां जानती हैं कि अगर लड़कों के पास से गुजरते वक्त अपनी बोझिल पलकें बड़े अन्दाज से उठाकर देख लेगी तो यह निश्चित है कि मुड़ कर उसे जाती हुई को जरूर देखेगा, तो वो जरा और बाकी अदा से कमर लचका और कूल्हे मटका कर चलेगी और नजर के तीर से घायल हो गया हुआ वो दीवाना देख कर कह उठेगा—हाय मेरी जान, तेरी यह अदा।

हवा भी मस्त थी और मौसम भी सुहाना था, पलट कर मुमताज सीधी हो गयी, तकिये पर सर रख कर वो लेट गयी और फिर से अधूरी कहानी को पूरा करने के लिए निगाहें पत्रिका की लाइनों पर दौड़ने लगीं। एक हाथ से पत्रिका थामे हुए थी और दूसरे हाथ से वो अपनी काली घनी घटा सी रेशमी जुल्फों को सीने पर संवार रही थी, अपने हाथ का ही उरोजों पर स्पर्श पाकर सिहर उठती, कुछ आनन्द सा था।

कहानी पढ़ कर जब उसने खत्म की तो पत्रिका को अलमारी में फेंक कर उसने लेटे ही लेटे बाहें फैलाकर एक मादक सी अंगड़ाई ली, सारा जिस्म लचक सा उठा।

मौसम की बहार का मजा लेने के लिए वो उठ कर खिड़की के नजदीक आ गयी और लहराते पर्दे की ओट से सड़क की ओर देखने लगी।

अभी निगाह नीचे गयी ही थी, कि मोड़ काटती हुई कार पर नजर पड़ते ही उसका दिल बेकरार सा होकर धड़कने लगा, आंखों को जैसे यकीन ही न आया, कि क्या सचमुच साजिद की बगल में बैठा हुआ···लेखक·····ही है, अचानक उसके आने को देख उसका चेहरा यूं खिल गया जैसे सुबह के उगते हुए सूरज की पहली-पहली किरण पड़ते ही कमल का फूल मुस्करा कर अपनी नरम सी पंखुड़ियों को फैलाकर खिल उठता है।

रंगीन से ख्वाब में खोयी वो सोचने लगी—कि क्या दिल की पुकार इसे ही कहते हैं जिसकी याद में आज वो सुबह से ही बड़ी बेताबी से तड़प रही थी वो इस तरह सचमुच ही सामने आ जाएगा।

तेजी से वहां से हट कर वो ड्रेसिंग टेबल के सामने आकर बैठ गयी अपनी ही नजरें चार होने पर वो मुस्करा उठी, चेहरा गुलाब सा महक रहा था, बालों की पेचदार घुंघराली रेशमी सी लट को गालों पर संवार कर हल्के 'पफ' से गालों पर पाउडर की तह बैठा दी। मेकअप यूं भी सुन्दर लग रहा था लेकिन वो फिर भी अपने चेहरे को हर कोण से निहार रही थी, धड़कते सीने पर मचलती सोने की चेन को संवार कर दिल पर हाथ रखे वो नीचे होने वाली आहट का इन्तजार करने लगी, एक सपना सा महसूस कर रही थी वो इसे।

तभी सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आवाज हुई। नौकरानी ने कमरे में आकर कहा—आपको नीचे बुलाया है—

'क्यों ? उसने अनजान सी बनकर पूछा।

'वो हैं न, छोटे सरकार के दोस्त, जो अक्सर यहां आते हैं वो आये हैं।'

'बुलाया किसने है ?'······उसने दिल पर काबू पाकर पूछा—' उन्होंने ही था साजिद ने।

'जी, मुझसे तो बीबी जी ने कहा है। कह कर वो चली गयी।

दोनों बांहें उठाकर उसने एक जवान अंगड़ाई ली और कह उठी—हाय

रसिया—यह बेताबी सी कब खत्म होगी इस जिस्म की। और आंचल सम्भालती हुई वो नीचे भागी।

तेजी से सीढ़ियां उतरती हुई वो नीचे हॉल में पहुँची, मगर वहां कोई न था, आवाज साजिद के कमरे से आ रही थी, बरामदे से होती हुई वो उसी ओर बढ़ी, एक मिनट को कमरे से बाहर खड़ी होकर अन्दर होने वाली बात-चीत को सुनने की कोशिश करने लगी, परन्तु कुछ समझ न सकी।

इससे ज्यादा वो इन्तजार न कर सकी, और आहिस्ता से वो दरवाजे का महीन सा पर्दा उठाकर अन्दर दाखिल हुई। अन्दर जाते ही उसका सामना लेखक से हुआ, धीरे से होठों की फुसफुसाहट हुई···आदाब ! और गोरा नाजुक हाथ अपने आप उठ गया—

आइए ! लेखक उसके आदाब का जवाब मुस्करा कर देते हुए बोला—शायद आज तो आप शिकायत नहीं करेंगी कि मैं अपने वादे के बावजूद बहुत दिनों बाद आया हूं।

ये तो मेरी मेहरबानी समझो कि मैं पकड़ कर ले आया हूं वरना यह हजरत कहां आने वाले थे—साजिद ने कहा।

क्यों ? हंस कर उसकी अम्मी पूछने लगी।

जनाब लब्ली रेस्टटौरेन्ट में बैठे प्यानो पर अपनी गजलों से खेल रहे थे, और सुनने वाले, बस पूछो मत, इनकी आवाज और साज की लय पर यूं खामोश से बैठे थे जैसे पत्थर के बुत हों।

तो क्या वहाँ गा रहे थे, मुमताज की आवाज सितार के बेजान तारों की तरह काँपी—मुझसे तो उस दिन कह रहे थे, मैं तो कभी गुनगुनाता भी नहीं।

'गुनगुनाते चाहे न हों, बहरहाल गाते बड़ा गजब का है' कभी सुनी नहीं तुमने इनकी आवाज। कतल है बस, और आज भी तो वहां लोगों पर अपनी आवाज का मन्त्र पढ़ रहे थे, और वे सब ऐसे लग रहे थे जैसे बेहोश हुए जा रहे हों—और खासकर·····कुछ रुक कर बोला वो—लड़कियों की तो आंखें यूं बन्द हुई जा रही थीं कि जैसे शराब के नशे में झूम रही हों।

सुनते ही मुमताज का दिल धक् से रह गया, नजर उठाकर वो लेखक की आंखों में कुछ पढ़ने की कोशिश करने लगी।

मगर उसकी झील सी गहरी और चमकीली आँखों में क्या था, यह समझना मुमताज के वस से बाहर की बात थी, दिल में एक शुबाह अंगड़ाई लेने लगा, आखिर एक लड़की जिसके लिए वो कदमों में दिल बिछाकर अपने आप को यूं इश्क में जला रही हो और वो दूसरी लड़कियों में घिरा मौसम का मजा ले रहा हो यह कैसे सह सकती थी वो, दिल में समुन्द्र की लहरों की भांति तरह २ के ख्याल हिलोरें मार रहे थे, ज्वालामुखी की तरह उसका हृदय जल रहा था और वो गर्म लावा बाहर आने को बेचैन था, यूं लगा उसे जैसे उसकी नाव बिना पतवार नदी की लहरों में डोल रही हो और वो किनारे पर सब बातों से अनजान खड़ा अपनी ही मस्ती में डूबा हुआ हो, आखिर सुलगता हुआ दिल रह न सका, पूछ ही बैठी—क्या कोई पार्टी वगैरा थी आज !

पार्टी वगैरा तो क्या, कुछ भी नहीं था, मैं तो वैसे ही वहां बैठा था, लेखक ने साधारण सी बातचीत की तरह कहा—और एक सज्जन ने पता नहीं कैसे पहचान लिया मुझे, और ज़िद करने लगे कि मैं कोई गजल सुनाऊँ तो वहाँ बैठे दो चार आदमियों ने भी उसकी देखा देखी मुझसे हाँ कराने को मजबूर करने लगे और मुझे लाचार होकर कुछ कहना ही पड़ा।

बाहर से आती हुई ठन्डी हवा कमरे में सुहाना वातावरण उत्पन्न कर रही थी, मुमताज ने कुछ और न पूछा इससे आगे, शायद दिल में उठता हुआ ज्वार-भाटा शान्त हो गया था, एक गहरी साँस लेकर खुद से ही कहने लगी —"औरत जात भी कितनी बहमी होती है, हर बात पर शक करना एक आदत सी होती है, अपने नेल पालिश से चमकते नाखूनों को आपस में कटकटाते हुए कहने लगी—हमें भी 'इनवाइट' कर लेते, सुनते तो सही आपकी वो दिल निशां आवाज।"

और अगर बोर हो जातीं तो……

मैं तो उलटा दूसरों को बोर करने में 'एक्सपर्ट' हूँ, मुझे क्या कोई बोर करेगा ?

किसी दिन मौका मिला तो जरूर अजमायेंगे आपकी इस तारीफ को।

अच्छा तुम लोग यहीं बैठो—मुमताज की अम्मी उठती हुई बोली—मैं तुम्हारे लिए नाश्ता भिजवाती हूं ।

'यह तो अब आप रहने दीजिये, देखिये न ऊपर आसमान पर बादल इस बात का इन्तजार कर रहे हैं कि मैं घर पहुँचूं और ये बरसना शुरू करें, लेखक ने कहा ।'

'लेकिन यह तो अब नामुमकिन है, नाश्ता भी तो तुम्हारा इन्तजार कर रहा है, उन्होंने प्यार से कहा ।'

लेकिन बादल शायद इतनी देर इन्तजार न कर सकेंगे, आज न सही, फिर कभी सही, यहाँ तो रोज का यही चक्कर है ।

'मगर आपको याद होगा, कि एक चाय मेरी भी आप पर उधार है, मुमताज ने बड़ी शेखी से फरमाया ।'

लेकिन मैं उधार वाला हिसाब नहीं रखती, कह कर वो चली गई ।'

तो साजिद बोला—अरे मियां, घबराते क्यों हो, बरसने दो उन बादलों को, अपना यह 'शेवर लेट' का न्यू छकड़ा किस लिए है, और मेरे ख्याल से इसे धुले हुए भी पन्द्रह बीस रोज हो गये हैं, चलो इसी बहाने इसका जिस्म भी ठण्डा हो जाएगा ।

खैर ऐसी बात नहीं है, लेखक बोला—जब तक मैं यहाँ बैठा हूँ यह बादल बरस नहीं सकते ।

तो क्या सचमुच ऐसी बात है"'मुमताज ने बड़े अन्दाज से तिरछी निगाहों से देखते हुए कहा ।

'क्यों आपको यकीन नहीं आया क्या ?'

'खुदा की बात के आगे क्या कहा जा सकता है ?'

'तो ऐसा करो, तुम दोनों शर्त बांध लो, अपने होठों पर जीभ फेरते हुए साजिद बोला—अपना भी कुछ भला हो जाएगा ।'

बोलिये—लेखक ने कहा ।

मन्जूर है, मुमताज ने मुस्कराकर कहा, बोलिये कितने २ की ?

'नो', यह बात नहीं, बल्कि जीतने वाला जो चाहे माँगे, हारने वाले को मन्जूर करना होगा।'

'चलो ऐसे ही सही, मुमताज बोली।'

लेकिन भई, हमारा हिस्सा दोनों तरफ रहेगा, जो जीतेगा हम उसी की जय का नारा लगा देंगे, साजिद ने कहा।

कैसे हिस्से बट रहे हैं, साजिद की आपा अन्दर आती हुई बोली तो साजिद ने कहा—जनाब ने शर्त लगाई है कि जब तक मैं यहाँ बैठा हूँ तब तक बादल नहीं बरसेंगे, और मुमताज का कहना है कि बरसेंगे।

नौकर ने तस्तरी लाकर मेज पर रख दी, चाय के कप सीधे रखते हुए वे बोलीं—शर्त कुछ तगड़ी भी लगाई है या यूं ही।

अरे, वरदान वाली बात कहो, 'जो माँगो सो मिलेगा, वाली बात है यहाँ तो।'

'तब तो वाकय ही कुछ बात बनी है।'

आप बतलाएँ, कि आप किसके लिए दुआ करेंगी, पूछा साजिद ने।

एक पल के लिए केतली से चाय डालती हुई रुक गई वो, फिर पूर्णतः प्यालों में चाय का पानी उड़ेलती हुई बोली—मेरे लिए तो दोनों एक से हैं, एक दायीं आंख है तो दूसरी बायीं। इस वास्ते हम चुप ही रहेंगे।

उनकी बात सुनकर मुमताज भी चुप थी और लेखक भी, और खामोशी से सभी चाय पीने में व्यस्त थे।

मुमताज के दिल में एक गुद्‌गुदी सी भी थी और हलचल भी, सोच रही थी......आसमान पर काली २ बढ़ती हुई घनी घटाओं को देखकर, कि अगर जीत गई तो क्या माँगेगी, अपने दिल की पर्तों को उलटने पलटने लगी, आखिर कौनसी चीज माँगनी चाहिए, मगर हलचल भी थी उसी दिल में, कि अगर हार गई तो ? .....और न जाने क्या माँग बैठे, और वो दे न पाई तो.........? मगर यह भी सोचने लगी, आखिर एक हसीन लड़की से एक जवान मर्द माँग भी क्या सकता है, इस बात पर गौर करने लगी। क्या चुम्मन माँगेंगे वो मेरा, या मेरे जिस्म की कोई नरमी महसूस करना चाहेंगे। सोचकर जवाब

के इस पहलू को, उसका दिल जैसे शराब के झलकते रंगीन जाम में डूब गया। उसने एक हसरत सी निगाह से लेखक के भरे हुए सुन्दर चेहरे को देखा और दिल में दुआ करने लगी कि खुदा करे कि वो जीत जाएँ और खुद वो हार जाएँ, चाहती थी शायद, "कि वो जान सके कि आखिर वो उससे मांगेंगे क्या ?"

अरे लो न यह—साजिद, तले हुए काजू की प्लेट उसके आगे करते हुए बोला—यह तो घर का बना हुआ तर माल है, और साथ ही 'मोहमड्न्स' लोग इस मेवे को ज्यादा पसन्द करते हैं।

मगर आप फिर भी कुछ मोटे तो हुए नहीं, मेरे ख्याल से यह तर माल !

हमारी बात तो छोड़ो मियां हम देखेंगे जब तुम्हारे यहाँ कोई बुर्के वाली आयेगी, तो वो तुम्हें कितना मोटा कर लेगी ?

बुर्के वाली—साजिद की 'आपा' मुस्करायीं, और लेखक की तरफ देखते हुए मुस्कराट को होठों तले दबाकर पूछने लगी—क्यों ? मामला कुछ गड़बड़ तो नहीं कर रखा कहीं।

सुनकर वह थोड़ा झेंप गया, जवाब कुछ देने जा ही रहा था कि साजिद उससे पहले बोल पड़ा—यह मामला क्या गड़बड़ करेंगे, गड़बड़ तो ऊपर वाले ने पहले से ही कर रखी है।

आखिर मतलब क्या हुआ, पूछा उन्होंने।

और मुमताज भी कुछ हैरान सी थी, बड़ी उत्सुकता से बात पर विचार कर रही थी, कभी लेखक के चेहरे की तरफ देखती तो कभी साजिद के। मतलब उसकी भी समझ से बाहर था, पर शादी की बात—और वो भी लेखक की, उसके लिए कम महत्त्वपूर्ण न थी।

तो साजिद बोला—हमारे जनाब के हाथ पर खिची लकीरों में एक लकीर ऐसी भी है जो यह बताती है कि खाँ साहब की शादी किसी इस्लाम धर्म की लड़की से होगी।

इतना सुनना ही था कि मुमताज का दिल कमल के फूल की तरह खिल उठा, पर लेखक की शादी इस स्थिति में सुनकर न जाने उसका चेहरा लाल क्यूं हो गया, चुप थी वो, मगर।

लेकिन मेरा तो इरादा शादी करने का ही नहीं है—लेखक ने थोड़ी नजर उठाकर कहा।

तो झट से साजिद बोला—'मगर ज्योतिषी महाराज की बात क्या भूल गये हो। उनका कहना था कि तुम्हारी इच्छा चाहे हो या न हो, लेकिन शादी होगी और जरूर होगी और होगी भी किसी पर्दा-नशीं से, और मजबूरन करनी पड़ेगी उससे।

'—तो क्या यह बात सचमुच सही है—' साजिद की अम्मी बोलीं।

'तो क्या आपको यकीन नहीं आया मेरी बात पर, तो उन्हीं से पूछ लो, और खास इसी बात के वास्ते उन्होंने चार-पाँच ज्योतिषियों से मशवरा किया, मगर सबकी राय एक सी थी।'

'तो मुझे बता दो भई, वो कौन सी दिल-निशाँ है?' वह लेखक से पूछने लगी। बोली—'अगर हो सका तो मंज़िल का रास्ता भी कुछ आसान करा दूंगी।'

'ऐसी तो कोई बात नहीं।' कहकर लेखक उठ खड़ा हुआ। 'अच्छा अब इजाज़त दें, बारिश भी बेचारी इन्तजार कर रही है।'

'लेकिन थोड़ी देर तो बैठो—अभी तो तुम आये हो।'

'नहीं अब नहीं, वरना दुगना नुकसान होगा। अगर बरसात शुरू हो गई तो एक तो शर्त का हरजाना देना पड़ेगा और दूसरे घर तक पहुंचने में थोड़ी दिक्कत होगी।'

'तो आओ—' साजिद बोला।

'मैं भी चलूंगी तुम्हारे साथ।' मुमताज बोली।

'तुम क्या करोगी, मैं ज़रा इन्हें घर तक पहुंचाकर वापिस आ जाऊँगा। कहीं तमाशा देखने तो नहीं जा रहा हूं।'

'कम-से-कम एक हफ्ते से घर से बाहर नहीं निकली, मैं भी तो तुम्हारे साथ ही वापिस आ जाऊँगी।'

'तो ले ही जाओ।' मुमताज की मम्मी ने भी उसकी थोड़ी सिफारिश की।

आगे साजिद कुछ न बोला। इस खामोशी का मतलब इकरार ही था, तो मुमताज मुस्करा पड़ी। दिल खुशी से भर गया। दौड़ती हुई वो सीढ़ियाँ चढ़कर अपने कमरे में पहुंची। जल्दी से कोई चप्पल पहनी उसने और तेजी से नीचे जाने को दरवाजे की तरफ बढ़ी, मगर तभी एकदम रुककर वापिस घूमी और झट से ड्रेसिंग टेबल के सामने आकर रुक गई। एक बार उसने मदभरी निगाह से अपने चेहरे को मुस्कराकर देखा। मेकअप पूरी तरह ठीक था। आँखों से आँखें मिलते ही अपने आपसे शरमा गई और फिर न मिला सकी अपने आप से ही नज़र। उठकर जल्दी से वो अपने कमरे से नीचे आ गई।

लेखक, साजिद और उसकी अम्मी कार के पास ही खड़े हुए बातें कर रहे थे। मुमताज के आते ही लेखक ने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा—'अच्छा, फिर मिलेंगे।'

और तीनों कार में बैठ गये। ड्राइवर ने स्टियरिंग वील सँभालते हुए कार का दरवाज़ा तेज़ी से बन्द किया, तो साजिद की अम्मी लेखक और मुमताज की तरफ देखते हुए बोली—'अभी तक तो बारिश नहीं हुई।'

तो लेखक की बगल में बैठी मुमताज उसके चेहरे की ओर देखते हुए मुस्करा पड़ी।

और एक झटका लेकर कार आगे बढ़ गई।

काली घटा छाई होने की वजह से शाम काफी गहरी सी लग रही थी। हालांकि वक्त भी इतना अभी हुआ नहीं था। तीनों पिछली सीट पर बैठे मामूली बातचीत में व्यस्त थे, लेखक की बगल में बैठी मुमताज अपने बदन में लेखक के बदन के स्पर्श की सिहरन सी महसूस कर रही थी और लेखक को नाज़नीन के नर्म जिस्म के स्पर्श का कुछ अनुभव हो रहा था। यह कहा नहीं जा सकता, चूंकि उसके चेहरे पर ऐसे आनन्द की झलक स्पष्ट नहीं हो रही थी, जब कि मुमताज थी कि सीट की बैक से पूरी तरह पीठ लगाये हुए बैठी थी और साथ ही लेखक के पीछे से अपनी बाजू सीट पर रखकर कुछ टेढ़ी होकर बैठी थी। शायद चाहती थी कि लेखक के बाजू और कोहनी कार के

झटके से या मोड़ तेजी से काटने से उसके उरोजों को छूती रहें। यूं भी उसका जिस्म काफी सटा हुआ था उससे, ना मालूम इससे क्या राहत सी पा रही थी वो।

चौड़ी सपाट सड़क के सीने पर दौड़ती हुई कार लेखक के घर के पास आ कर रुक गई।

पहले साजिद नीचे उतरा और फिर लेखक। मुमताज अन्दर ही बैठी रही।

वहीं बैठी-बैठी खिड़की से बाहर मुँह निकालते हुए बोली—'आ गया आपका घर।'

'जी, आइये, सामने ऊपर वाला अपना ही आशियाना है।'

मुमताज एकटक उसके घर की तरफ देखते ही बोली—'मैं तो सोच रही थी कि शायद अभी ड्राइवर को आदेश दिये जाएंगे कि इधर मुड़ो, उधर चलो।'

लेकिन आप जानती हैं कि ड्राइवर को इस जगह का पता आज से कई महीने पहले से मालूम है।'

'ओह!' कहती हुई वो भी कार से उतर पड़ी और आसपास की जगहों को देखकर शायद लेखक के घर की निशानी लगा रही थी। बिल्डिंग के नीचे वाले पोरशन में कोई मिडिल क्लास होटल था। नाम पढ़कर उसने दिमाग में बैठा लिया।

हल्की-हल्की हवा चलने से उसका लावारिस आँचल बड़ी मस्ती से लहरा रहा था। शोख, हसीन गोरे-गोरे गालों को हल्की हवा में उड़ती हुई उसके गेसुओं की लटें बार-बार बड़ी अदा से यूं चूम रही थीं कि जैसे भँवरा किसी के रस का मजा लेकर बार-बार उड़-उड़कर आता है।

'तो आइये फिर, क्या ऊपर तशरीफ नहीं लाइयेगा?' लेखक ने मेहमाँ-नवाजी का फर्ज पूरा करते हुए कहा।

'अब तो वक्त नहीं, फिर किसी दिन खुद ही आ जाऊँगी।' कार के सहारे खड़ी होकर, अपनी गोरी-गोरी पतली उंगलियों से वो हुस्न की शहज़ादी

अपनी नागिन सी बल खाती जुल्फों को संवारती हुई कुछ बाँकी अदा से कहने लगी—'लीजिये, मैं शर्त हार गई। अब बोलिये,—क्या देना होगा मुझको ?'

तो साजिद भी मुस्करा दिया और लेखक भी।

कहकर वो खुद शरमा गई थी। सुर्ख लबों को दाँतों तले दबाये, नजरें झुकाकर खड़ी थी वो।

आसमाँ पर बादल गड़गड़ा रहे थे, और हवा भी बड़े रुख से चल रही थी। उनको यूं वीरानों की तरह खड़ा देखकर हर पास से गुजरने वाले की नजर उधर उठ ही जाती।

खामोशी को तोड़ते हुए लेखक ने कहा—

'अब यह बात तो पक्की हो गई है न कि आपकी जीत हुई, और जहाँ तक मेरी फरमाइश का सवाल है, वह मुझ पर छोड़ दो, मैं जब चाहे अपनी माँग आपके सामने पेश कर दूंगा।

'अच्छा, अब जल्दी चलें।' कहते हुए साजिद ने कार का दरवाजा खोला। कहने लगा—'यह बरसात लेखक साहब पर ही इनायत फरमा सकती है, हम पर नहीं। और अब तो लगता है कि जैसे और इन्तजार नहीं कर सकते।'

मुमताज भी तब तक कार में बैठ चुकी थी।

लेखक की तरफ देखते हुए दोनों हाथ जोड़ती हुई बोलीं—'अच्छा !'

शरमाई सी नजरें लेखक से एक दफा मिलीं और फिर पलकें झपककर रह गयीं।

कार अपनी स्पीड पकड़ चुकी थी।

पलटकर लेखक सीढ़ियों की तरफ लपका। अपने घर का दरवाजा खोल कर अभी कदम उसने अन्दर रखा भी न था कि बादल एक दम यूं बरस पड़े, जैसे पानी से भरे गुब्बारे में किसी ने नुकीली पिन चुभा दी हो।

बाहर जल और थल एक सा होता जा रहा था।

मुस्कराकर लेखक कमरे में दाखिल हुआ।

८

कमरे में आकर लेखक ने बिजली का बटन दबाया, तो मीडियम पावर का बल्ब मुस्करा पड़ा और शायद हँस रहा था लेखक के आलस और लापरवाही पर, कि उस पर कितनी ही मक्खियों ने छोटे-छोटे काले निशान बना रखे थे और यूं भी गर्द की भी कमी न थी। शायद जब से बल्ब लगाया होगा तब से धूल झाड़ने की नौबत ही न आई होगी।

मुस्करा पड़ा लेखक भी अपने आप पर। घूमकर उसने सड़क की तरफ खुलने वाली खिड़की खोल दी। ठंडी हवा के झोंके बारिश की बूंदों से छन-छनकर आ रहे थे।

चारपाई पर बैठकर वो जूते के फीते खोलते हुए सोचने लगा कि कहीं मुमताज सचमुच ऊपर चली आती तो उसे कितना शर्मिन्दा होना पड़ता मुमताज के सामने और क्या सोचती वो अपने दिल में।

नजरें कमरे में घूमीं तो खुद को एक अहसास सा हुआ।

चारों तरफ सिगरेट के जले-बुझे टुकड़े और माचिश की तीलियां बिखरी पड़ी थीं और फर्श भी तो धूल की परतों तले छिपा हुआ था। कहीं पत्र-पत्रिकाएँ बेतरतीब बिखरी पड़ी थीं, तो कहीं फटे हुए कागज के टुकड़े ऐश कर रहे थे। सामने की अल्मारी में रखी किताबें वगैरह भी तो यूँ ही उल्टी-सीधी पड़ी हुई थीं।

सोचने लगा अगर वो आ जाती तो उसके लिए बैठने को क्या चीज पेश करता। कुर्सी के नजदीक आकर उस पर आहिस्ता से उंगली चलायीं तो धूल की एक मोटी लकीर खिंच गई। सिर्फ अपने बैठने की एक कुर्सी ही साफ थी, बाकी दो तो कुर्सियाँ और सारी ही थी, उसके घर में फरनीचर के नाम पर। तो क्या वो उसके सामने ही कुर्सी की धूल झाड़ता या अपनी कुर्सी पेश करता या बिस्तर हटाकर चारपाई पर बैठने को कहता। और फिर कमरे में डेकोरेशन का तो नामोनिशाँ ही न था। दीवार पर न मालूम किस मुहूर्त्त में लगे हुए प्राकृतिक चित्र गर्द के पर्दे की ओट से लेखक की हँसी उड़ा रहे थे,

और खिड़की पर लगा पर्दा अपने पर इनायत होने की घड़ी की इन्तजार काफी दिनों से कर रहा था बेचारा, चूंकि उसके बाँधने के लिए खिड़की की चौखट पर एक तरफ की कील टूट गई थी और पर्दा स्परिंग सहित एक कील पर ही फांसी के फन्दे की तरह लटक रहा था।

एक ग्लानि सी तो जरूर हुई दिल में, पर दूसरे ही पल लापरवाही से अपने आपसे बोला—यह भी एक हसीन ज़िन्दगानी है, न कोई फिक्र है न चिन्ता, सब ठीक है।

और फिर आज तो वो वैसे ही चली आई थी यहाँ तक, वरना हम कौन सा 'लिफ्ट' देते हैं, दिल की छोटी सी परेशानी को दूर करने के लिए बोला—हाँ कर देंगे किसी रोज डटकर सफाई।

और वो खिड़की के नज़दीक आकर मौसम की बहार का नजारा देखने लगा।

यूं तो बम्बई में इस मौसम में शाम के वक्त बारिश का होना कोई नई बात न थी, पर आज की बारिश कुछ ऐसे रंग ढंग से बरस रही थी कि उसका प्रोग्राम तीन-चार घण्टे से कम का मालूम नहीं दे रहा था।

सड़क पर जाता हुआ कोई छाते में अपने आपको छुपाने का प्रयत्न कर रहा था, तो कोई बरसाती पहने बड़ी शान से सिर उठाये चला जा रहा था और कोई गरीब दुबला-पतला सा बेचारा जूट की बोरी ओढ़कर ही सन्तोष से जा रहा था, तभी उसकी नजर सड़क पर जाती एक बीस-बाईस साल की शोख और हसीन लड़की पर पड़ी, जो अपने आपमें सिमटी जा रही थी। कपड़े तमाम पानी से तर हो रहे थे और साथ ही उसका पीछा कोई मनचला नौजवान कर रहा था। जो छाते को बड़ी शान से घुमाता हुआ हंसता हुआ उसके पीछे जा रहा था।

और वो लड़की शरमाई सी बढ़ती चली आ रही थी। गालों पर शर्म और झेंप व साथ ही गुस्से की लाली खेल रही थी और लाज के मारे पसीना भी आ रहा था या नहीं, चेहरे पर खेलती बारिश की बूंदों में इस बात का पता लगना नामुमकिन था।

ऊंची ऐड़ी की मार्डन शू से उसकी चाल यूं भी गजब की थी और फिर ऐसे में,—जब कि वो भी गजब की लग रही थी, तो कातिल अन्दाज से कदम चलते आ रहे थे।

किसी लड़के का, एक लड़की को यूं इस आलम में परेशान करना कुछ ठीक न था। पर अपनी कालेज लाइफ याद करके वो मुस्करा पड़ा।

तभी पास से कोई कार गुज़री और छींटों की धारें बरसाती हुई तेज़ी से निकल गई। पर बारिश में भीगी लड़की पर वो कुछ खास असर न कर पायीं। उसी वक्त आसमान पर तेज़ी से बिजली चमकी और जाने वो लड़की किन ख्यालों में खोई हुई थी कि आवाज़ से सिहरकर सहम सी गई और झेंप कर चाल और तेज़ कर दी उसने।

वो लड़की उसकी बिल्डिंग के करीब आने ही वाली थी कि न जाने क्या सोचकर वो तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आया और फुटपाथ पर से गुज़रती हुई उस लड़की की तरफ इशारा करते हुए बोला—'जी, सुनिये तो।'

घूमकर लड़की ने देखा तो कह उठी—'ओह ! आप !'

शायद वो लेखक की शक्ल पहचानती थी।

नज़दीक आने को उसने कदम उसकी ओर बढ़ाये और इतने में वो मन-चला नौजवान भी पास आ गया था और उस पर तरसती नज़र डालकर आगे उखड़े से कदमों से बढ़ा। शायद वो इन्तज़ार में था कि कहीं वो लड़की वहाँ वैसे ही खड़ी हो गई है। मगर उसको एक आदमी से बात करते देख वो आगे यूं बढ़ा, जैसे कटी पतंग के पीछे वो भागा आ रहा हो और उसे लूट किसी और ने ली हो।

'आपका शुक्रिया कैसे अदा करूं......।' अपने आंचल को निचोड़ते हुए उसकी तरफ देखकर आहिस्ता से भीगी पलकों को झुकाती हुई बोली—'जो आपने मेरा पीछा उस आवारा लड़के से छुड़ाया।'

हल्के गुलाबी रंग का आँचल उसके हाथ में था और हसीन लड़की का उभरा हुआ सीना और वो भी बिना आँचल और फिर भीगे चुस्त कपड़ों में,—और वो भी एक मर्द की निगाह के सामने, साथ ही जब कि वो भीगे

कपड़ों के बारीक तारों से कुछ-कुछ झलक भी रहा था, आखिर कमीज़ के गले की कटाई की नोक भी तो दोनों उभारों से काफी नीचे जाकर खत्म हो रही थी—। ऐसे में भला होश में रहना, क्या कुछ कम बात थी भला। आखिर लेखक भी तो एक जवाँमर्द था, उसके सीने के पहलू में भी एक दिल धड़क रहा था, तो भला नज़र क्यूं हट जाने को चाहती।

सारे कपड़े जिस्म से बुरी तरह लिपटे हुए थे। बालों से पानी की सफेद बूंदें टपककर नाज़नीन के गोरे-गोरे गालों पर आ जातीं और सुर्ख चिकने गालों को चूमती हुई नीचे फिसलने लगती और गले में होती हुई कमीज़ के गले की राह उसके कठोर कसे हुए सीने पर ढल जातीं।

'ओफ ! कितनी खुशनसीब थीं वो बारिश की बूंदें।'

'……वो खुशकिस्मत सफेद मोती……'

'आइये, ऊपर आ जाइये ……अगर आप ऐतराज़ न करें।'

'यह भी क्या कहा आपने भला, आपका इतना अहसान क्या कम है।' वो बोली।

'इसमें भला अहसान की क्या बात है……'

'तो मेरे लिये यह भला क्या कम खुशकिस्मती की बात है कि आप जैसे बड़े और मशहूर आदमी से इस वक्त यूँ अनजाने में ही मुलाकात हो गई।'

इससे आगे दोबारा लेखक ने न कहा उसको ऊपर चलने को। आखिर अपनी कमज़ोरी समझता था वो।

अपने हाथों से वो गीले चेहरे को पोंछकर उसकी तरफ देखते हुए बोली—'ना मालूम, यह आजकल के लड़के क्या समझते हैं अपने दिल में कि जैसे राह जाती किसी लड़की का पीछा करने या छेड़ने से वो उससे प्यार करने लगेगी।'

'आखिर फिल्मों का असर बहुत चढ़ा हुआ है ज़माने पर।'

'अजी हां क्यों न—' वो हसीन नाज़नीन हंसकर बोली—'क्यों नहीं, अगर फिल्मों की हीरोइनन्स की तरह नज़र मिलते ही यहाँ सड़कों पर भी मुहब्बत होने लगे तो बस फिर तो हिन्दुस्तान में सारे ही लैला-मजनूं की तरह फिरते नज़र आएँ।'

बरसात के ठण्डे पानी से धुलकर उसका चेहरा और निखर आया था। भीगी-भीगी सुनहरी सी जुल्फें लाख-लाख बार पीछे करने पर भी उसके चाँद-से चेहरे को चूमने के लिए बादलों की तरह फिर उमड़ आतीं और बड़ी मस्ती से चूमती हुई वे पानी की बूंदें उसके चेहरे पर छोड़ जातीं और बूंदें फिर नीचे फिसलने लगतीं।

और वह भी उसके सौन्दर्य को यूं बड़ी बारीकी से निहार रहा था, जैसे उसके इस खूबसूरत नजारे को अपने उपन्यास के पन्नों पर उतारने की इच्छा उसके दिल में उठ रही हो।

आखिर उसके उपन्यास में भी तो एक ऐसी ही घटना थी कि मुख्य पात्र की मुलाकात बरसात की एक शाम को एक अनजान लड़की से होनी थी।

'अच्छा, अब मैं चलूं।' उस लड़की ने बड़े भोलेपन से कहा—'अब तो बारिश भी हल्की हो गई है और टैक्सी स्टैंड भी नज़दीक आ गया है।'

'जैसी आपकी मरजी।' कहा लेखक ने।

तो वो अपने दोनों हाथ अदा से जोड़ते हुए बोली—'अच्छा......नमस्ते। और आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।'

और मुस्कराकर उसने उसे विदा दी और वो फिर बारिश की हल्की-हल्की फुहार में आगे बढ़ने लगी और फिर वह ऊपर चला गया।

ऊपर आकर उसने एक सिगरेट जलाई और धुएं का गहरा कश लेकर सोचने लगा—कितनी अजीब-अजीब मुलाकातें भी हो जाया करती हैं इस जीवन में,—न जान न पहचान, न कभी देखा, न कहीं मुलाकात हुई। सोचने लगा—वो एक लड़की थी—एक खूबसूरत लड़की। एक हसीन जवानी, और उसका पीछा कोई नौजवान कर रहा था और निश्चित था कि वो परेशान थी और गुस्सा भी आ रहा था उसे, उस लड़के पर। ऐसे में उसके इस तरह अचानक बुलाने पर वह गलतफ़हमी में पड़कर उसे ही बुरा-भला कहने लगती, बीच बाजार में तो उसकी क्या इज्ज़त रह जाती ऐसे वक्त पर। सड़क पर आने जाने वाले क्या सोचते, जिस तरह वो उसे जानती भी थी तो उसके लेखक होने का हवाला देकर झाड़ने लगती—बड़े आये हैं लेखक बनकर,

सड़क पर जाती लड़कियों को छेड़ते हैं, और निश्चित था कि ऐसे मौके पर बरसात में भी भीड़ लग जाती और मुमकिन था कि भीड़ में से भी उसे कोई पहचानने वाला निकल आता, तो उसकी क्या इज्जत रह जाती। लोग तो उसके साथ तमाम लेखकों को लपेटकर कहते—चले हैं लेखक बनकर समाज की बुराइयों को दूर करने, जो खुद राह जाती लड़कियों को छेड़ते हैं, वो क्या उत्तम साहित्य लिखेंगे। और ऐसे में कोई बूढ़े शख्स कहने से कभी न चूकते—अजी क्या बने फिरते हैं लेखक बनकर, ये सोचते हैं कि लेखक बनकर कुछ मशहूर हों तो लड़कियां हमें पहचानने लगें और हम हाथ सफाई दिखाएँ।

न जाने इस तरह हर पहलू को छूती हुई उसके विचारों की कड़ी कहाँ तक जुड़ती चली गई। मगर साथ ही यह भी सोचने लगा कि लड़की कुछ एडवान्स भी थी।

और तब उसके दिमाग में सवाल एकदम यह पैदा हुआ कि उस लड़की का नाम क्या था।

नाम······? वह बुदबुदाया और दूसरी सिगरेट सुलगाकर उलझ गया कि नाम तो उसका पूछा ही नहीं।

लेकिन पूछकर करना भी क्या था।

मगर एक 'साइकोलोजिकल' आदत है आदमी की कि नाम वो जरूर जानना चाहता है।

उसे कालिज का जमाना याद आ गया। जब भी कोई किसी खूबसूरत हसीं और नाजुक सी लड़की को देखता तो उसके नाम की इनक्वारी जरूर करता अपने दोस्तों से।

क्या उन्हें नाम पूछकर माला जपनी होती है।

लेकिन एक 'सैटिस्फैक्शन' सी हो जाती है पता नहीं क्यों दिल को।

लेकिन अब उसका नाम जानना उस वक्त सम्भव न था।

मुस्करा पड़ा वह अपने आप पर, अपनी बातों पर। क्या बेकार और बे-तकल्लुफ बातों को सोचने में पड़ गया है वो।

अपने लिखने की मेज पर आकर डट गया लिखने को। कुर्सी पर बैठकर

वो हाल ही के गुजरे वाक़यात को भुलाकर दराज़ से अधूरे नॉवल का लिखा राइटिंग पैड निकालकर, उपन्यास को आगे चलाने के लिए लिखा हुआ पिछला पन्ना पढ़ने लगा।

मैटर उसके दिमाग में घूम ही रहा था। देर थी तो महज़ कलम चलने की; विचारों को संगठित करके वो लिखने में जुट गया।

बाहर बारिश पूरी तरह थम चुकी थी। मगर आसमान अभी पूरी तरह साफ हुआ नहीं था। ठंडी-ठंडी हवा के झोंके आपस में अठखेलियाँ कर रहे थे। वातावरण में कुछ ठंडक सी महसूस हो रही थी।

अभी उसने एक ही पेज लिखा था कि अगली कड़ी जोड़ने के लिए वो कुछ सोचने को रुका, और साथ ही चलती कलम भी थम गई। शायद कोई विचार आकर खो गया था और लगता था कि वो बात भी कुछ महत्त्वपूर्ण जरूर थी कि लेखक उसी के पीछे दौड़ रहा था, ख्यालों का आजाद परिन्दा बड़ी तेजी से उस विचार को दबोचने के लिए उड़ रहा था। आंखें पैड से थोड़ा सा हटकर एक टक खुली हुई थीं, और हाथ भी कोई हरकत नहीं कर रहा था।

मगर न जाने वो विचार क्या था, कुछ याद न आ रहा था उसे। ना मालूम कहाँ गुम हो गया था वो, काफी देर तक तो वो उसी तरह बैठा रहा, पर जब कामयाबी की कोई किरण किसी कोने से भी न चमकी तो उसने हार कर कलम पैड पर ही रख दी।

यही एक मुसीबत होती है लेखक के लिए। अगर चलती कलम किसी ख्याल के खो जाने से रुक जाए तो आगे बढ़नी बहुत मुश्किल हो जाती है। चलती ही नहीं फिर उस वक़्त।

कलम वैसे ही खुली रखकर वो हाथों को मसलते हुए खड़ा हो गया और आकर खिड़की के पास एक सिगरेट निकालकर उसे जलाते हुए नीचे का नजारा देखने लगा।

लेकिन ख्याल उसके अब भी बेलगाम घोड़े की तरह भागे हुए उस विचार को पकड़ने के लिए पीछा कर रहे थे।

नज़र उसकी तभी रिस्ट-वाच पर पड़ी। करीब पौने नौ का टाइम हो चुका था और कुछ भूख भी लग रही थी उसे। मगर सिगरेट का एक गहरा कश लेकर वो धुएं के गुब्बार में इस विचार को उड़ा देना चाहता था।

और इस विचार के साथ ही उसके दिमाग में एक छोटा सा बिन्दु उभरा वो था—मुमताज।

मुमताज! सोचने लगा—जिसके साथ उस दिन होटल में एक चाय का साथ देने के लिये उसे मजबूर सा होना पड़ा। और इसी मजबूरी के साथ अपनी इज्ज़त रखने को उसे करीब पचास का बिल भी अदा करना, क्या करता आखिर, अगर मुमताज बिल का 'पेमेन्ट' करती तो उसकी नज़रों में कुछ घट जाता।

मगर क्या जाने वो कि उसके लिए तो पचास रुपये एक पचास पैसे की तरह हैं और दूसरी तरफ इसके लिए कम से कम बारह-तेरह रोज के लिए वो दो वक्त के खाने के साधन थे वो पचास रुपये।

उम्मीद के मुताबिक इस कटौती से महीने का बैलेन्स बिगड़ गया था। और बैलेन्स को पूरा करने के लिए उसने हफ्ते में दो तीन दिन, रात के खाने का नागा करने का प्रोग्राम बनाया हुआ था। आखिर किसी तरह महीना जो पूरा करना था।

कितनी अनिश्चितता होती है एक लेखक के जीवन में, यह लेखक ही जानता है। 'प्रापरटी' और बैंक बैलेन्स तो ज़रा दूर की बातें हैं। यह भी निश्चित नहीं होता कि अगले माह के लिए दो जून का खाना जुटाने के लिए कुछ बन पड़ेगा भी या नहीं।

और फिर आवश्यक आवश्यकताओं में अच्छे कपड़ों का होना प्रमुख बात है आज के बनावटी और कोरे दिखावटी ज़माने में। सिगरेट की आदत भी अक्सर होती है लेखकों को और इनमें से काफी 'परसेन्ट' शराब पीने के भी शौकीन होते हैं। खासकर गज़लें और शेर लिखने वाले शायर तो अक्सर पीते हैं। शायद समझते हैं कि बिना सरूर के लफ्ज़ों में भी नशा नहीं पैदा होता।

और बात घूमकर वापिस फिर मुमताज पर आकर अटक गई।

इतना अरसा हो चुका था उससे मुलाकात हुए को, मगर अभी तक उसके बारे में वो कोई अपनी राय न बना सका था। लगता ऐसे ही था कि किसी तरह आज सड़क पर जाती उस लड़की से मुलाकात हो गई थी, और कुछ खास बात न हुई थी।

फर्क इतना ही था कि वो उसका नाम जानता था और दो चार दफा मुलाकात हो चुकी थी व एक बार उसके साथ घूमने भी चला गया था।

सिगरेट के धुएँ के गुब्बार में हर पल कोई नई बात पैदा होती और धुएँ की तरह ही लुप्त हो जाती। ध्यान उसका खिड़की से नीचे था। सड़क धुल कर और चमक उठी थी और किनारों पर लगे स्ट्रीट पोल की ट्यूबें अपने पूरे जोर पर जगमगा रही थीं और गीली सड़क के आयने में पड़ती इन ट्यूबों की रोशनी रात के अन्धेरे में बड़ी सुन्दरता पैदा कर रही थीं। कुछ देर पहले वो सड़क की रौनक खत्म हो गई थी, अब अपने पूरे उन्माद पर आ गई थी। मोटर गाड़ियाँ, कारें आदि एक दूसरे के पीछे बड़ी तेजी से भागी जा रही थीं और लोगों के कदम भी सड़क को पीछे छोड़ते हुए तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। कितना व्यस्त जीवन है बम्बई के लोगों का।

सोचकर वो भी पीछे हट गया। अपना अधूरा काम पूरा करने को वो भी मेज़ पर आकर बैठ गया। मेज की दराज़ के नीचे की छोटी सी अल्मारी से ह्विसकी की बोतल निकालकर गिलास में डालने लगा। बोतल आधे से ज्यादा खत्म हो चुकी थी और महीने के अभी करीब दस दिन बाकी थे।

एक पैग से कम ही डाला उसने और सोडा मिलाने के लिए उसे कुर्सी से उठना ही पड़ा, झुंझला पड़ा वो उठते हुए।

सोडा मिलाकर वो वापस कुर्सी पर आकर बैठ गया। पन्ने पर लिखी आखिरी पाँच-सात लाइनें पढ़कर आगे लिखने को कलम उठाई उसने।

वो खोया हुआ ख्याल जिसने कि लेखक की कलम रोक दी थी। वो तो वापिस न आया, पर एक नया ख्याल उसके दिमाग में आ गया था कि वो उसे उस वक्त छोड़कर नये विचार का पीछा करने लगा।

कड़वी शराब गले को जलाती हुई दिल में सरूर पैदा करने को तमाम सीने में फैल गई।

और सरूर दिल में पैदा हुआ और जोश कलम में, जो तेज़ी से पन्नों की लकीरों पर दौड़ती जा रही थी।

और न मालूम कब तक कलम यूं ही इस तरह चलती रही और कब उस का सिर मेज़ पर ही टिक गया।

नशे में नींद आ गई थी।

और लाइट वैसे ही जल रही थी।

रात ढलती जा रही थी।

सितारे भी सोने जा रहे थे।

९

लेखक के कदम साजिद के घर की तरफ बढ़े जा रहे थे। चूंकि साजिद से मुलाकात हुए को करीब दस दिन तो जरूर हो गये थे और उसका भी उस तरफ जाना न हो सका था।

जैसे ही वो नीचे के बरामदे में दाखिल हुआ तो उसकी नज़रें साजिद की अम्मी से जा मिलीं जो उधर आ रही थीं, उसको देखते ही वो खिल सी गई। उसके हाथों को अपने हाथ में लेते हुए बोली—'अब तो तुम शायद हमें बिल्कुल ही भूल गये हो और हो सकता है कि उधर का रास्ता भी याद न रहा हो।

'माफ करना, ऐसी तो कोई बात नहीं, न ही ऐसा करने की मैं भला गुस्ताखी कर सकता हूं। कुछ काम की ज्यादती की वजह से नहीं आ सका।

'......साजिद, अब्बा हुज़ूर वगैरा कहाँ गये हैं। क्या घर पर कोई नहीं ?" कुछ देर रुककर पूछा उसने।

'साजिद तो पता नहीं, शायद बराबर वालों के यहाँ गया है और उनके अब्बा तो घर पर होते नहीं इस वक्त, पर बहरहाल जो हैं, वो तो जैसे दुनिया से······कह कहना चाहिये।' वह रुककर लफ्ज ढूंढने लगीं। बोलीं—बैराग······ लेकर बैठे हैं।'

'कौन······' पूछा उसने।

'मुमताज और कौन······'

'क्यों?'······मकसद न समझ सकी वह।

'खुद अपनी आँखों से जाकर देख लो······।' कहकर वे आगे-आगे मुमताज के कमरे की ओर बढ़ने लगी और पीछे-पीछे लेखक।

ऊपर आकर कमरे के दरवाजे पर से देखा लेखक ने कि पीठ किये मुमताज बैठी थी। पीठ पर नागिन की तरह बलखाते बाल लहरा रहे थे, पैरों की आहट पाकर भी जब मुमताज ने कोई हरकत न की तो उसकी अम्मीजान ने आहिस्ता से पुकारा—'मुमताज बेटी!'

घूमकर धीरे से उसने पलटकर देखा तो अम्मी के साथ लेखक को देखकर कुछ हड़बड़ा गई और घबराकर अपना आँचल ठीक करने लगी। मगर जबान से कुछ न कह सकी चाहते हुए भी।

'क्यों, तबियत दुरुस्त नहीं·········' लेखक आधी बात मुमताज के चेहरे की तरफ देखते हुए बोला और आधी बात कहते हुए वह उसकी अम्मी की तरफ देख रहा था।

लेकिन मुमताज की निगाह झुक गई थी।

तब मुमताज की अम्मी बोलीं—'और तो कोई खास बात नहीं हुई, सिर्फ अखबार वालों से गलती यह हुई है कि इसका रोल नम्बर नहीं छापा उन्होंने।'

'ओह! यह तो बड़ी बुरी खबर सुनाई आपने।'

और झुकी पलकें मुमताज की शायद भीग गई थीं कि उसने मुँह दूसरी तरफ फेर लिया था। आँचल का छोर भी आँखों तक पहुंच गया था।

'लेकिन अब अफसोस करने से क्या हासिल होगा, सिवाय इसके कि

अपनी सेहत खराब करने के और तो कुछ नहीं होगा। और फिर 'एग्ज़ाम' तो.........' वह सोफे पर बैठते हुए बोला—'लक़ की बात होती है, आपने कौनसा मेहनत न की होगी। वैसे तो अपनी तरफ से कोई भी कसर नहीं छोड़ता।'

'मगर यह तो तीन दिन से मातम मनाये बैठी है।' कहने लगी उसकी अम्मी—'न किसी से बात करती है न बोलती है, न ढंग से खाती है न पीती है। जैसे यह ही सिर्फ सारी यूनिवर्सिटी में एक फेल हुई है।' कहती हुई वह पीठ किये खड़ी मुमताज के पीछे जाकर खड़ी हो गयीं और उसके कन्धों पर हाथ रखती हुई बोलीं—'हम से न सही, इनसे तो बात करो, यूँ इस तरह गुम-सुम कब तक रहेगी।'

मगर मुमताज का झुका हुआ चेहरा उधर न उठा। न कुछ मुँह से बोली।

वे फिर उसको अपनी ओर करने की चेष्टा करते हुए बोली—'अब छोड़ो भी नाराजगी के दामन को, फेल हो गई तो कौन सी आफत आ गई है और फिर तू कौन सी इतनी बड़ी हो गई है। देखो न, इधर मेरी रानी।' मगर मुमताज की खामोशी को देखकर वे मुस्कराकर उसकी कमर में गुदगुदी करने लगी। बोली—'छोड़ो भी इस बच्चों वाली हठ को।'

'आयऽ ! न करो न अम्मी।' वह सिहरकर पलट गई—'तो क्या हंसोगी नहीं......।' वो उसके चेहरे की तरफ देखते हुए गुदगुदी किये जा रही थी।

तो हँसती हुई मुमताज उनके गले में अपनी मरमरी बाँहें डालकर बोली—'अम्मी !'

और उन्होंने कसकर अपनी बाँहों में थाम लिया और प्यार से एक हाथ से उसके गालों पर से बालों को हटाकर अपने सुर्ख होठों से उसके नर्म गालों को चूमते हुए बोली—'मेरी रानी बेटी।'

'आय ऽ हाय ऽऽ ! अम्मी ! !.........छोड़ो भी।' वो लेखक की उपस्थिति में और भी शरमा गई, अपने आपको अपनी अम्मी की बांहों में पाकर, आखिर वह भी अभी जवान ही लगती थी। चेहरे पर जवानी की देहरी पर पांव

रखने वाली हसीन लड़की की तरह अब भी लाली की रौनक खेल रही थी। 'कट्स' वैसे ही लव्ली थे और यूं भी वो सज-धजकर रहती थीं। हंसी में मुस्कराहट खेलती थी और साथ ही सीने का उभार भी तो एक जवान और हसीन लड़की से कम न था। अच्छी खुराक होने की वजह से सेहत भी भरी हुई थी। देखने वाला मुमताज और उसकी अम्मी को इकट्ठा देखकर मां-बेटी समझने में जरूर धोखा खा जायगा। बिल्कुल उसकी बड़ी बहन लगती थीं वें।

शरमाती हुई मुमताज अपनी बांह से गाल पोंछते हुए अपने आपमें सिमट गई।

'अच्छा तुम बैठो, मैं कुछ खाने को भेजूं।' कसकर वे नीचे चली गयीं और सकुचायी सी मुमताज क्षण भर तो वैसे ही खड़ी रही और फिर सामने ही बैठ गई।

लेखक ने सिगरेट के धुएं के बादल से बालों की बदली में छिपे चांद से गोरे चेहरे की तरफ देखा तो पाया, कि इस अस्त-व्यस्तता में भी वो वाकय खूबसूरत लगती है। लावण्य की लालिमा गोरे गालों पर फैली हुई थी। काली-काली कजराली आँखें न मालूम झुकी हुई क्या देख रही थीं।

'जाने दीजिये इन गुजरी बातों को। अब यूं दिल से लगाकर क्या मिलेगा।' उसने खामोशी को तोड़ते हुए कहा—'इन्सान की राहों में यह मोड़ तो आते ही रहते हैं अक्सर।'

सुनकर मुमताज सोच रही थी कि आखिर कहे तो क्या कहे। इस बात का जवाब तो कुछ दिया ही नहीं जा सकता। आहिस्ता से नजर उठी और उसके चेहरे को देखकर झुक गई। कहने को कोई बात ही न आ रही थी दिमाग में, जब कि इस वक्त की खामोशी उसे भी बुरी लग रही थी।

तभी सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आहट हुई। दोनों की नजर दरवाजे की ओर उठ गई—नौकरानी चाय की तश्तरी लिये आ रही थी। दोनों के बीच रखी मेज पर तश्तरी रखकर वह बिना कुछ कहे चली गई।

तश्तरी को थोड़ा अपनी तरफ सरकाकर वह चाय बनाने लगी।

तो लेखक ने कहा—'क्या आज आपने मौन व्रत रखा हुआ है या न बोलने की कसम खाई हुई है।'

'जी, ऐसी तो कोई बात नहीं।' मुमताज ने कहा।

'तो कुछ बात करो न ....'

'बताइये क्या करूं .....।' कहकर उसने आहिस्ता से सिर उठाया, और चाय का कप उसके हाथ में थमा दिया। कहने लगी—'आप ही कुछ कहिये।'

पहले तो आप यह बतलाइये......।' उसने मुमताज की तरफ देखते हुए पूछा—'फेल हो जाने का क्या आपको सचमुच अफसोस है भी या नहीं, या यूं ही दिखाने के लिए......ऐसा मूड़ बना रखा है।'

तो मुस्करा पड़ी वो। बोली—'अफसोस तो है पर ग़म नहीं।'

'अगर ग़म नहीं तो फिर यह हाल क्यों बना रखा है। हंसो-गाओ, घूमो-फिरो। और वास्तव में रखा भी क्या है ग़म में, सिवाय इसके कि अपने आप को गलाने के।'

'लेकिन कोई साथ हो तो बाहर भी चली जाऊं थोड़ा दिल बहलाने को। पर...... मुश्किल भी तो यही है।' तो दूसरे ही पल बोली—'आप ही साथ दे दो न।'

'कौन मैं......!' जैसे चौंक पड़ा वह उसकी यह बात सुनकर।

'सिर्फ थोड़ी ही देर में आ जाएंगे।' बोली वो।

लेकिन एक बात और भी तो है—वह कुछ कहने जा रहा था कि बीच में ही बातों को काटती हुई मुमताज बोली—'चले भी चलिए न, मैं चन्द ही मिनटों में तैयार हो आऊंगी।

तभी उसकी अम्मी ऊपर आ गई, दरवाजे में दाखिल होते वक्त मुमताज की बात का आखिरी सिरा सुनाई दे गया होगा कि पूछने लगी—यह चन्द मिनटों में तैयार होकर कहाँ जाना है......

'कहीं नहीं अम्मी......सिर्फ कुछ चहल कदमी करने के लिए थोड़ी दूर जाने का इरादा है'......कनखियों से उसने लेखक की तरफ देखते हुए कहा।

"शुक्र है खुदा का'……वे बोलीं—'कि कुछ कहने को तेरी जुबान तो हिली।'

बात कुछ ऐसी परिस्थिति में आ गई थी लेखक चाहते भी कुछ कह न सका और खामोशी इकरार का हवाला बन गयी, कुछ सोच न सका वो इस कश-मकश के दौरान।

और मुमताज कपड़े उठाकर बाथरूम की तरफ चल दी, तो मुमताज की अम्मी बोलीं—घर में ऐसी बात हो जाने से सचमुच सारा दिन सूना २ सा समसूस होता था, चाहे ऊपर से हम इसे कितनी भी दिलासा दें, मगर दुःख तो अन्दर से हमें भी होता है, फिर कुछ शर्म भी महसूस होती है फेल हो जाने वाले को।

क्यों नहीं होता, साल भर दिमाग खपाने पर फेल हो जाने का दुःख तो होता ही है।

तभी नौकरानी ऊपर आयी, बोली—बीबी जी, कोई औरत आयी, नीचे जनाने में बैठी है।

कौन है ? पूछा उन्होंने,

'शायद, खालिक की ताई मालूम देती है।

कौन, आपकी रिश्तेदार हैं कोई……लेखक ने पूछा,

हमारी क्या, वो तो सारे शहर की रिश्तेदार है, पूरी बातूनी है, किसी को लड़का ढूंढना हो या लड़की, तो बात है खालिक की ताई के कानों पढ़नी चाहिए सारे शहर के घर गिनवा देगी, फलां के यहाँ लड़का अच्छा बैठा है, उसकी लड़की खूबसूरत है, उसने तो बात वहाँ पक्की कर रखी है और उसकी बात वहाँ पक्की होने वाली है, सबका कच्चा चिट्ठा तारीख की तरह रटा हुआ है, अच्छा मैं फिर जरा चलूं……, वे उसकी तरफ देखते हुए बोलीं—वरना बोफिर उलहाना देती हैं……, मैं यहाँ घण्टे भर से सूख रही हूं और तुम्हें अब याद आया है ! और मुस्कुराती हुई वे दरवाजे से बाहिर हो गयीं।

और इतनी ही देर में आ पहुँची मुमताज,

रूप ही बदला हुआ था उस वक्त, चुस्त कमीज शलवार पहने हुए थी और गले में सूट के रंग से मैच करता हल्के फिरोजी रंग का दुपट्टा लहरा रहा था, काले घुंघराले बाल आधुनिक ढंग से जूड़े की शेप में बंध कर भी पीठ पर लहरा रहे थे। लगत था जरूर नकली बालों का इस्तेमाल किया हुआ है पर पता लगाना मुश्किल था कि वे नकली बाल कहाँ जुड़े हुए थे।

बस दो मिनट और······, मुस्कराकर कहते हुए वो ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठ गयी।

पीठ किये खड़े लेखक की झलक आइने में पड़ रही थी, शायद अच्छा ही था मुमताज के लिए, कुछ भी हो, हर लड़की किसी की उपस्थिति में मैकअप करने में शरमाती है।

हाथ उसके तेजी से काम कर थे, अपने आप को देखकर मुस्करा रही थी, अपनी जीत पर या अपने रूप पर, यह नहीं कहा जा सकता।

मेकअप कर के आखिरी बार उसने हाथ में छोटा आइना लेकर पफ से गालों पर पाउडर की तह ठीक की और आइने को रखते हुए बोली—बस, मैं तैयार हूँ अब।

मुमताज की तरफ थोड़ा सरसरी निगाह से लेखक ने देखा और बोला—आओ।

नीचे लान में आकर मुमताज बोली—कार तो शायद अब्बा हजूर ले गए होंगे, खैर तो हम टैक्सी ही पकड़ लेंगे कोई।

दोनों के बढ़ते हुए कदम फाटक से बाहर सड़क पर आ गए।

पास ही से गुजरती टैक्सी को लेखक ने हाथ के इशारे से रोका टैक्सी में बैठते हुए लेखक ने कहा—'नेशनल पार्क'

और टैक्सी तेजी से सड़क के सीने पर दौड़ने लगी, पीछे की सीट पर बैठे थे दोनों, मगर दोनों ही चुप से थे, ना मालूम कहने की कोई बात नहीं थी उसके पास या खुद ही चुप बैठे थे, मगर आदमी के सोचने की धारा तो कभी रुकती नहीं ना मालूम कहाँ २ पहुँचे हुए थे दोनों के ख्याल।

इतने ही में कार पार्क के फाटक पर आकर रुक गयी।

टैक्सी का बिल चुका कर ये लोग अन्दर दाखिल हुए। चारों ओर हरियाली फैली हुई थी, फूलों की खुशबू से सारा बाग महक रहा था, हल्की हल्की ठन्डी हवा कलियों से आलिंगन करती हुई लोगों के चेहरों को छूकर आगे बढ़ जाती और झरने का कल कल करता किसी नाजुक हसीना की प्यारी सी हंसी की तरह बड़ा भला लग रहा था, पेड़ों की ओट में झर रहे इस झरने की आवाज एक संगीत सा पैदा कर रही थी।

हरी २ घास पर चलते २ यह आगे बढ़े। मुमताज के गुलाब से गुलाल गालों पर झुकी घुंघराली जुल्फों की महकी कड़ियों को बार २ चंचल हवा छूकर हिला देती जैसे वो आँख मिचौनी खेल रही हो।

तभी वो बोली—लगता है आपको प्रकृति से ज्यादा प्यार है।

क्यों नहीं—कम से कम इसलिए कि यह इन्सान की तरह बेवफा नहीं होती।

नहीं मेरा मतलब लेखकों से है, कि वे सब प्रकृति को ज्यादा चाहते हैं।

लेकिन मेरे ख्याल में खामोशी उन्हें ज्यादा प्यारी होती है—लेखक ने कहा।

पार्क में आने जाने वाले एक तरसती सी नजर से मुमताज के मुस्कराते मुखड़े की तरफ देखते और आह सी भर कर आगे बढ़ जाते, लड़कियाँ भी तो एक रश्क की सी निगाह से देख रही थीं उसे।

आहिस्ता २ चलते हुए दोनों झील पर बने लकड़ी के पुल पर आ गए, नीली सी झील कितनी गम्भीर लग रही थी चारों तरफ दूर तक फैला हुआ बाग यहाँ से एक अजीब मस्ती में डूबा नजर आ रहा था।

पुल पर बने जंगले पर झुक कर मुमताज झील में मचलती मछलियों को देखने लगी, रंग बिरंगी मछलियाँ एक दूसरे के पीछे दौड़ रही थीं। कहने लगी—'अक्सर विरहा और दिल की जुदाई को 'जल बिन तड़पे ज्यों मीन' की मिसाल पेश करके कहा जाता है, क्या सचमुच दिल, किसी के बिना वसे ही तड़पता है जैसे पानी बिना मछली।

'मगर आपने जुदाई के सबब को पूरी तरह ब्याने-पेश तो किया ही

नहीं, किस की जुदाई किससे है'—यह जाने बगैर तो मिसरा पूरी तरह समझा ही नहीं जा सकता।

'जी मेरा मतलब है……' उसने एक नजर उठाकर उसकी तरफ देखा और फिर पानी की ओर देखते हुए कुछ धीमी आवाज में बोली—अक्सर यह बातें प्रेमी प्रेमिका के बारे में कही जाती हैं।

एक क्षण तो वह चुप रह कर उसके चेहरे को देखता रहा, फिर मुस्कुरा पड़ा, बोला—'सुनते ऐसा ही हैं कि प्यार होने से पहले प्रेमी और प्रेमिका में इश्क पैदा होता है, जो एक दूसरे को, एक दूसरे की जवानी कह लीजिए या रूप और सुन्दरता के लिए मोह की भावना पैदा कर देता है, एक दूसरे को छूने की इच्छा पैदा होती है तथा स्पर्श और सिहरन कुछ ऐसी अनुभव की चीजें होती हैं जो इन्सान के जिस्म में अपना असर काफी देर के लिए छोड़ जाती हैं और यही नहीं दोबारा उसका एक ख्याल लाने भर से भी वो स्पर्श सिहर उठता है और इन्सान के वो स्पर्श और सिरहन सुरक्षित रखने वाले तन्तु बार २ उस स्पर्श को पाने के लिए उत्सुक और उत्तेजित हुआ करते हैं, और आप जानती हैं कि भावनाएँ इन्सान के दिल में पैदा होती हैं, और जिस्म की उत्तेजना को शान्त करने के लिए दिल ही तड़पता है उसे दोबारा पाने के लिए।

क्या आपने भी कभी तड़प को महसूस किया है, पूछने लगी वो।

आप सवाल आधा ही पेश करती हैं……वो मुस्कराकर बोला—हर किसी के लिए हर बात एक सी लागू नहीं होती, इन्सान प्यार पाने के लिए भी तड़पता है और पैसे के लिए भी, किसी के दिल में बच्चों के लिए तड़पन होती है तो किसी के दिल में हवस को बुझाने की।

खैर छोड़िए इन बातों को मैं भी क्या बात छेड़ बैठी हूँ आपसे—, मालूम नहीं मुमताज ने बात को आगे क्यों नहीं बढ़ाया, अधूरी बात को बीच में ही छोड़कर वो चुप क्यों हो गई।

चलते २ वे लोग झील के उस किनारे पर पहुंच गए जहाँ से आगे यह एक नदी का रूप धारण कर लेती है।

किनारे पर ही पड़े हुए एक छोटे से पत्थर पर घास में पाँव फैलाकर मुमताज बैठ गई और पास में वह भी बैठ गया।

तभी उसने कहा—आपको बी० ए० में फिलास्फी लेनी चाहिए थी,

एक मतवाली सी नजर से उसने लेखक की तरफ देखा, और हल्के से होठों ही होठों में मुस्कराकर घास का एक लम्बा तिनका तोड़ कर अपने दाँतों तले उसका सिरा चबाते हुए बोली—'सोशोलाजी' और 'हिस्ट्री' जैसे थर्डक्लास 'सबजैक्टस' लेकर तो पास हो नहीं सकी, फिलास्फी लेकर तो शायद पंचवर्षीय योजना बनाने पर भी पास नहीं हो सकूँगी।

लेकिन अपना 'इन्टैरेस्ट' भी तो होता है, उसने कहा।

लेकिन जवाब में वो कुछ न बोली, घास का तिनका दाँतों तले दबा हुआ था, नजरें झुकी हुई एक टक देख रही थीं, तभी आहिस्ता से चेहरा उठाकर बोली—एक बात पूछू आपसे ?

'फरमाइए', उसने साधारण तौर पर कहा—,

'क्या आप कभी फेल हुए हैं किसी क्लास में ?

यह बात जब वो कह रही थी तो लेखक उसके चेहरे की तरफ ही देख रहा था, बात कहते ही वो थोड़ा झेंप गई।

तो दवी मुस्कराहट से बोला—क्यों नहीं, दुनियाँ का हर तजुरबा तो हासिल नहीं कर सका, बहरहाल कुछ २ खास नयामतों से भी परे नहीं हूं।

कब हुए थे आप''''', पूछने में मुमताज को कुछ मजा सा आ रहा था जैसे।

मैं''', मैं बी० काम० फाइनल में फेल हुआ था एक दफा, कहा उसने।

तो आपको अफसोस हुआ था या गम'''''''', कहने में एक मस्त अन्दाज था।

कुछ भी नहीं''''', उसने भी वैसे ही अन्दाज से कहा।

कुछ भी नहीं—, हैरानगी से पूछा उसने, यह कैसे हो सकता है, अफसोस तो जरूर हुआ होगा थोड़ा बहुत।

नहीं ! एक क्षण बाद बोला—शायद मैं चाहता ही था कि मैं पास न होऊँ।

क्यों ? एक हैरानगी की बात थी, वह कहने लगी यह भी भला कोई चाहता है कि सारा साल पढ़ कर भी मैं फेल हो जाऊं ?

इस वास्ते कि·····, चूंकि मैं अनुभव करना चाहता था कि क्या वास्तव में फेल हो जाने पर अफसोस होता भी है या नहीं, लोगबाग अक्सर कहा करते हैं कि फेल हो जाने से दिल टूट जाता है, मगर टूटे दिल की हालत का आलम क्या होता है यह मैं जानना चाहता था, ताकि मैं सही ब्यान कर सकूं अपने नाविल में।

तो फिर क्या महसूस किया आपने ? उसने बड़े भोलेपन से पूछा, आँचल उसका लुढ़क कर गोद में आ गया था, कसा हुआ बेआँचल सीना जवानी की उभरती आग में सुलगसा रहा था।

सच पूछो तो, मुझे कुछ भी असर नहीं हुआ था, न गम ही ने घेरा आकर के, न परेशानी ने अपना दामन संवारा मुझ पर, मैं कुछ दिन तक तो यही सोचता रहा कि क्या मैं फेल भी हो गया हूं या यह एक सपना तो नहीं है कहीं, पर आंखें वास्तव में खुली होने पर मुझे जागना पड़ा कि फेल तो मैं वास्तव में हो गया हूं चूँकि कुछ ने मेरे फेल हो जाने पर जबानी अफसोस जाहिर किया, पर मैं कुछ भी ढूंढ़ न पाया कि फेल हो जाने पर दुःख क्या होता है, कुछ भी अहसास न हुआ।

'तो फिर आपने अपने नॉवल में वो चित्र कैसे खींचा होगा ?' बड़े भोले-पन से उसने पूछा।

'तो फिर मुझे अपनी हीरोइन के 'करेक्टर' में कुछ तबदीली करनी पड़ी और मैंने भी वही हाल पेशे नजर कर दिया कि उसे भी कुछ दुःख नहीं हुआ।'

'हा SS·····हा S·····' इक नाजुक सी हँसी गूंज उठी। अपने होंठों को जीभ से तर करते हुए बोली—'बड़े मनमौजी होते हैं लेखक भी, जिधर जी चाहा, उधर ही मोड़ दिया उपन्यास को।'

'अब आप यहाँ से जल्दी चलने की फिक्र फरमाएँ। सर पर देखिये, बादल कितने गहरे छाये हुए हैं, कहीं घर पहुँचने से पहले ही यह हम पर इनायत फरमानी न शुरू कर दें।'

'ओह !' कहती हुई वह आंचल सम्भालकर खड़ी हो गई। अपनी कसी हुई कमीज को सलवटों को ठीक करते हुए उसने चप्पलें पहनीं और दोनों साथ २ कदम मिलाते हुए पार्क के फाटक से बाहर आ गये। टाइम भी करीब साढ़े छः का हो चला था।

सड़क पर आकर एक टैक्सी पकड़ ली उन्होंने। हवा भी तेज चलने लगी और बादल भी गहरे होते जा रहे थे। टैक्सी की खिड़कियों से सर-सर करती आती हवा दोनों के चेहरों को छूती हुई निकल जाती।

पूछने लगी मुमताज—'आपके यहाँ तो उपन्यास वगैरा की तो काफी किताबें पड़ी होंगी, कोई एक-आध पढ़ने को तो लेते आना कभी मेरे लिये।'

'आप कौन सा राइटर ज्यादा पसन्द करती हैं—आवारा, गुलशन नन्दा या आदिल रशीद, गुरुदत्त आदि कौन सा लेखक पसन्द है आपको ?'

'जैसा भी आपकी मर्जी में आए, पर हो अच्छा।' ऐसी ही इधर-उधर की बातें हो रहीं थीं उनमें।

लेखक के आदेशानुसार टैक्सी मुमताज के घर के सामने रुक गई। दोनों तरफ से वो दोनों उतरे और लेखक उसको विदा देते हुए बोला—'अच्छा फिर मिलेंगे।'

'ऊ ऽ······हूं ऽ ऽ·········आये हो तो चले भी जाओगे न, मगर थोड़ी देर के के लिए अन्दर तो चलिये।'

'अभी इतनी देर तक तो आप ही का साथ दिया है, और फिर यहाँ तो आना रोज का ही है। और साथ ही ऊपर का हाल भी आप देख ही रही हैं।'

'अच्छा।' कहते हुए वो वापिस टैक्सी में बैठ गया और मुमताज दोनों हाथ जोड़े एकटक निगाह से उसे जाते हुए देख रही थी।

जब टैक्सी मोड़ लेकर आँखों से ओझल हो गई तो वो फाटक के अन्दर दाखिल हुई और लान से धीरे २ गुनगुनाते गुजर रही थी कि वहीं पास ही खुले में घास पर कुर्सियाँ बिछाये उसकी अम्मी व दो एक और औरतें बैठी बातें कर रही थीं। शायद मुमताज के फेल हो जाने पर अफसोस करने आयी थीं।

उसको गुजरते देख प्यार से पुकारा उसकी अम्मी ने—'आ गई बेटी।'

'जी, आपा।' उसने थोड़ा रुककर उधर देखते हुए कहा। तो पास बैठी उन दो-एक औरतों को भी आदाब फरमाना पड़ा उसे, और जवाब देती हुई वो कहने लगीं—'कोई बात नहीं बेटी, पास-फेल तो चला ही करता है······।'

और वो सर झुकाये वहाँ से खिसक गई, तेजी से अपने कमरे की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पहुंची।

बिजली का बटन दबाया उसने तो झट से दो ट्यूबें एक साथ जल उठीं। गुनगुनाते हुए उसने आंचल को उतारकर पलंग की पीठ पर रख दिया और दोनों खिड़कियों को खोलकर पर्दों को गिरा दिया उनके आगे।

आसमान पर बादलों की घटा गहरी होती जा रही थी। ठंडी २ हवा उसके सारे जिस्म में सिहरन सी पैदा कर रही थी।

'सिहरन ·····' उसने दिल में दोहराया इस लफ्ज़ को।

उसे अभी हाल ही में लेखक की कही हुई बात उसके मस्तिष्क में घूम गई। स्पर्श और सिहरन कुछ ऐसी अनुभव की चीजें होती हैं, जो इन्सान के जिस्म में अपना असर काफी समय के लिए छोड़ जाती हैं और यही नहीं दोबारा उसका ख्याल लाने भर से भी वह स्पर्श सिहर उठता है।

और सचमुच वो उस स्पर्श को याद करके सिहर उठी, जब उस शाम को लेखक के घर तक साजिद के साथ कार में गई थी और उसके बराबर में कुछ तिरछी होकर बैठी थी और कार के झटकों से कई बार लेखक की बाजू उसके उभरे वक्ष को छू जाती थी।

हाय! कितनी तड़पन थी उस स्पर्श में। वह कह उठी अपने आप से।

जालिम! कहा उसके दिल ने सिसककर। और लपककर वह बिस्तर पर आ बैठी। तकिये के नीचे से लेखक की तस्वीर निकालकर उसे प्यासी आँखों से देखने लगी। सच, कितनी खूबसूरत थी तस्वीर भी।

तस्वीर को एकटक देखे जा रही थी वो और साथ ही मुस्कराते दिल में साजिद की बात लहरा रही थी। अभी हाल ही तो कह रहा था वो, मेरे दराज में लेखक की तस्वीर पड़ी थी एक।

कैसी थी वो, पूछा था मुमताज ने बड़ी अनजान बनकर ।

बड़ा शानदार पोज था वो, वो दराज से सारे कागज, लिफाफे, खत उलटते पुलटते हुए बोला ।

मुझे क्या पता, कहकर वो ऊपर आ गई थी और फोटो को चूमकर अपने दिल से लगाते हुए बोली—इसे तो मेरे पास ही होना चाहिए, इतनी कद्र कहाँ है इसकी तुम्हारे दराज में, इसको तो दिल में रख सके जो, उसी के पास होनी चाहिये ।

पलके झपकाकर वो उस सपने को अपनी आंखों के सामने से हटाते हुए, फिर तस्वीर को देखने लगी ।

फोटो पर अपनी पतली २ गोरी २ उँगलियाँ फेरते हुए उस बेजबान चेहरे से कहने लगी—'दिले-निशाँ, तुम्हारी कसम खाकर कहूं या अपनी पाक मुहब्बत के सदके का वास्ता देकर । न जाने क्यूँ पहली ही नजर में तुमने मेरे छोटे से दिल को मुहब्बत में बेकरार होकर धड़कना सिखा दिया है । जाने क्यूं तुम्हारी भूरी २ आँखें और आकर्षक व्यक्तित्व को देखकर मेरी जबान मुहब्बत का वास्ता क्यों नहीं पेश कर पाती, धड़कता भी है दिल तुम्हारी याद में और सुलगता भी है जुदाई में, पर मालूम नहीं, कह क्यों नहीं पाता प्यार का अफसाना ।

उन्माद में बोझिल हुई जा रही भारी पलकें बन्द हो गयीं और तस्वीर सीने से आकर लग गई । अपने दोनों हाथों से उसे अपने कक्ष में समेटते हुए बोली—जालिम ! बनते भी तो कितना हो तुम, प्यार की बात छेड़ती हूं तो उसे अपनी फलास्फी में लपेटकर गुम कर देते हो, और अगर फिर बात बढ़ाती हूं तो तुम फिर उसे दूसरी तरफ मोड़कर गुल कर देते हो । सब समझती हूं मर्दों की यह बातें ! सोचते हैं औरत ही पहले कहे अपनी जबान से कि मुझे तुमसे मुहब्बत है । मैं तुम्हारे प्यार में पागल हुई जा रही हूं ।

ठीक है कातिल ! तड़पा लो मेरे नन्हे से नाजुक दिल को अपनी मुहब्बत में । मैं भी एक जवाँ और हसीन हुस्न की शहजादी हूं, मैं भी तुम्हें अपने मदहोश जल्वे में सुलगना सिखा दूंगी, अपनी जवानी और शोखी से तुम्हारे

दिल में बेकरारी का दर्द पैदा कर दूंगी, तुम्हें अपने जिस्म और साँसों की गर्मी देकर तुम्हारे बदन को भी जलना सिखा दूंगी, अपने जिस्म की नरमी से तुम्हारे जिस्म में भी सिहरन भरकर तुम्हें जवानी के नशे में डुबो दूंगी। और सचमुच उसकी साँसें तेज हो गई थीं, सीने को चूमती हुई उसकी ठंडी तस्वीर एक सरसराहट सी पैदा कर रही थी।

आँखों के सामने करती हुई वो बड़े प्यार से बोली—क्यों आग लगा दी है तुमने मेरे दिल में, सच कहती हूं यह बावरा-सा बेचैन दिल सचमुच तुम्हारे प्यार में बहक गया है, न दिन को चैन आता है, न रात को आराम की नींद आती है। सपनों में भी तो आकर झिझोर डालते हो तुम, न मालूम इस तरह एक तरफ आग लगाकर मुझे मीठे दर्द में तड़पाने में तुम्हें क्या मजा आता है, जाने दिल की लगी कब बुझेगी।

मेरे हमदम, क्यूं मेरे छोटे से दिल को छूकर तुमने इसे बेबस सा बना दिया है, सारा दिन तुम्हारे ही ख्यालों में कटता है और रात तुम्हारे मीठे २ सपनों के पहलुओं में को होकर किसी तरह करवटें ले-लेकर गुजरती है। हर वक्त तुम्हारी ही सूरत बादलों की तरह आंखों में घूमती है? पता नहीं, दिल भी तो क्या २ सोचता रहता है। यह नशा, यह सरूर, यह बेताबी सी हर वक्त दिल पर छाई सी रहती है।

नजरें काफी देर से तस्वीर पर टिकी हुई थीं। हल्की २ बूंदाबांदी की आवाज का अहसास पाकर उसने तस्वीर को तकिये के नीचे रख दिया और खिड़की के पास आकर खड़ी हो गई। रात का गहरा अन्धेरा चारों तरफ फैला हुआ था, हवा के बहते तेज झोंकों के साथ २ बारिश की बौछार भी उसके चेहरे पर शबनम के नन्हे-नन्हे कतरों की तरह खेलने लगी, इस ठंडक में भी एक अलौकिक आनन्द सा महसूस कर रही थी वह।

तभी नौकरानी ने कमरे के दरवाजे के पास ही खड़े होकर कहा—'नीचे खाने पर आपका इन्तजार कर रहे हैं सब, जल्दी आने को कहा है।'

'कह दो मुझे भूख नहीं है।'

और जब नौकरानी जाने को मुड़ी तो जोर से बोली—'ठहर, मैं ही नीचे जाती हूं।'

और उसकी अम्मी ने चार-पाँच कौर खिला ही दिये। उसके बार २ ना-ना करने पर भी।

ऊपर आकर उसने कमरे का दरवाजा अंदर से बन्द कर लिया और अपने आपको पलंग पर औंधा गिरा दिया उसने, नर्म तकियों पर अपने गाल रगड़ती हुई पलकें बन्द करके सोने का उपक्रम करने लगी।

बारिश अब भी बौछार की तरह हल्के २ बरस रही थी।

मचलती हवा भी मन्द गति से चल रही थी।

१०

आज सुबह से ही लेखक अपने कमरे की सफाई करने में जुटा हुआ था, न मालूम कितने दिन बीत गये थे सफाई किये हुए को, धूल की गर्द का राज्य अंधेर नगरी की तरह फैला हुआ था।

कम से कम तीन दफा तो उसने कमरे में झाड़ू दी होगी पर धूल फिर भी फर्श पर चिपकी हुई थी, सो उसने तीन चार पानी की बाल्टियों से सारा फर्श धोया तब जाकर कहीं सीमेंटेड फर्श की शक्ल दिखाई थी, दोनों खिड़कियों पर धुले हुए पर्दे लगाये उसने, तमाम रद्दी अखबारों व रिसालों को अपने स्टोरनुमा पिछले कमरे में फेंका, और बाकी किताबों को अलमारी में सैट करके मेज को खाली कर दिया, फर्नीचर के नाम पर अपनी तीनों कुर्सियों और एक मेज को भली प्रकार झाड़ा पोंछा उसने, वैसे तो कोई खास कीमती फर्नीचर न था यह लेकिन झाड़ने पूछने से कुछ चमक उठा, प्लाईवुड की सीट वाली यह कुर्सियाँ उसके पास काफी समय से थीं शायद एक बार उसने पालिश भी कराई थी इन पर, तभी यह कुछ अच्छी लग रही थीं और प्लाईवुड की सीट की कठोरता को मोटी-मोटी गद्दियों से ढका हुआ था, कमरे में लगे तीन चार प्राकृतिक दृश्यों वाले चित्रों की भी आज किस्मत जागी थी, कि उनको

भी अपने ऊपर लगी धूल से छुटकारा मिला, और खुश था आज बिजली का बल्ब भी कि पता नहीं कितनी मक्खियों के काले निशान उस पर जमे हुए थे और आज के शुभ मुहूर्त में उसको भी इन धब्बों से राहत मिली थी, और शुक्र की बात यह थी कि यह छोटा-सा तमाम पोरशन माडर्न स्टाइल का बना हुआ था और हवा, रोशनी भली प्रकार आती थी, वरना लेखक कौन सा नये मकान ढूंढने वाला था, और यह भी साजिद की मेहरबानी थी कि उसने इससे पिछला मकान किसी तरह छुड़वाया था और यहाँ रहने को मजबूर किया था, तथा करीब दस माह से वो यहाँ रह रहा था।

और इसी सफाई में इसे दोपहर का डेढ़ बज गया होगा, और खुद नहा धोकर 'फ्रेश' होकर खाना खाया अपने नीचे वाले होटल से ही तथा ऊपर आते-आते उसे दो ढाई बज ही गए।

अपने कमरे को देखकर वो खुद भी मुस्करा पड़ा उसे लगा कि जैसे कमरे में आज जवानी आ गयी हो, हर चीज जैसे खुश नजर आ रही थी, और खुद भी तो वो अपने आपको शावासी दे रहा था कि पता नहीं आज कैसे मूड बन आया था कमरे की सफाई का।

एक सिगरेट सुलगाकर चारपाई पर लेट गया, वो यह भी सोच रहा था कि इसी व्यस्तता के कारण आज सुबह से कुछ लिखा भी तो नहीं है, आखिर उपन्यास को भी तो जल्द से जल्द पूरा करना है, क्योंकि अभी तो सिर्फ सौ ही के करीब पृष्ठ सारे ही लिखे हैं।

सोचता हुआ वो उठ बैठा और सिगरेट के टुकड़े को ऐशट्रे में मसल कर बुझा दिया, हालांकि शारीरिक थकावट काफी हो गई थी परन्तु काम भी तो पूरा करना था, सोचकर उसने मेज की दराज से राइटिंग पैड निकाला और लिखने को कलम खोला।

विचारों को इकट्ठा करके तेजी से चलती कलम कागज के सफेद पन्नों को काला करती जा रही थी पर उस काला करने में एक आदर्श था न कि सिर्फ रंगाई ही थी कोरी। अभी उसने आधा ही पृष्ठ लिखा था कि तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी, चलती कलम रुक गयी और जब उसे वास्तव में

यकीन हो गया कि दस्तक उसी के दरवाजे पर दी जा रही है तो उसने जल्दी 'पैड' को दराज में रखा और उठकर दरवाजे की चिटखनी खोली।

जैसे ही उसने दरवाजे के दोनों पट खोले तो सामने खड़े हुए को देखकर यकीन न आया उसे, क्या सचमुच वो वही थी या सपनों के बादल में तो नहीं कहीं खोया हुआ, उसने हैरानगी से कहा—

आप''''''यहाँ, कहिए खैरियत तो है।

जी हाँ, वैसे आप फरमाइए, क्या आपके यहाँ आना मना तो नहीं है या कहीं मैं ही गुस्ताखी तो नहीं कर रही हूँ।

जी''''''नहीं, यह भला क्या फरमाती हैं आप, आइए कहा लेखक ने और एक तरफ को हो गया।

आने वाली मुमताज थी।

मुस्कराकर उसने मुमताज का स्वागत किया, और जब वो कमरे में आ गयी तो लेखक ने कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा—बैठिए।

पर एक हिचक सी जरूर थी उसके कहने में, एक साधारण सी ही तो कुर्सी थी वो, न सोफा सेट की नर्मी थी उस प्लाईवुड की सीट वाली चेयर में और न ही सोफे का आराम।

लेकिन करता भी भला क्या वो, इस तरह उसका अचानक आ जाना उसके लिए एक हैरानगी भी थी। पूछने लगा—आज कैसे हमारे गरीबखाने पर इनायते नजर हुई आपकी।

'आई तो मैं यूं ही हूँ' पर आप क्या इसे गरीबखाना कहते हैं एक शानदार सुहाना वातावरण लिए एक जन्नत सा आशियाना है।

दिल बहलाने को गालिब ख्याल अच्छा है और अपने आपको समझाने के लिए मीठी बातें बेहतर होती हैं। खैर छोड़िये इन बातों को—बात का प्रसंग बदल कर वह बोला—पहले मुझे महमानवाजी का फर्ज अदा करना चाहिए न कि इन बेतक्ल्लुख बातों का मिसरा पेश करना चाहिए।

कह कर वह दरवाजे की तरफ बढ़ा, और तभी मुमताज ने पीछे से पुकारा—लेकिन मेरी एक बात तो सुनिये''''''''''', पर तब तक वह सीढ़ियाँ उतर चुका था।

नीचे वाले होटल में गया वो, और चाय के साथ-साथ कुछ आलादर्जे की खाने की चीजों का आर्डर देकर होटल से बाहर आया। फुटपाथ के किनारे पर ही 'शेवर लेट' की दुधिया गोरी चिट्टी कार अपने रंग की सफेदी पर मुस्करा रही थी।

ऊपर आया तो देखा कि मुमताज कोई किताब हाथ में लिए हुए दीवार पर लगे बड़े से प्राकृतिक दृश्य वाले चित्र को निहार रही थी, उसके आने की आहट पाकर अपनी नजरों को उसकी ओर घुमाते हुए बोली—आपको प्रकृति से वाकय ही बहुत प्रेम है क्या ? एक भी तो कोई दूसरा चित्र नहीं लगा हुआ है सभी प्राकृतिक दृश्य वाले ही हैं।

शायद इस वास्ते कि अपने स्वार्थ को सामने रखकर इन्सान तो हर रोज बदलता रहता है कभी धोखा देने की कोशिश करता है तो कभी बेवफाई। मगर प्रकृति हमेशा ही एक सी रहती है।

ओह ! तो अपने दार्शनिक ख्यालों को आप वास्तविक रूप में लाते हैं, और कहने के साथ-साथ उसके जवाब का इन्तजार करने के लिए नजरें झुका-कर किताब के पन्नों को पलटने लगी।

पर उसने जब कोई उत्तर न दिया तो वो बोली—किताबें तो एक से एक इकट्ठी कर रखी हैं आपने।

क्या इकट्ठी कर रखी हैं, कबाड़खाना भर रखा है सारे घर में।

तो इसका मतलब है, मुमताज ने एक नजर उसकी तरफ देखा, कहने लगी—'लोग आपके साहित्य को भी यूं ही कहते होंगे।' पता नहीं मुमताज ने यह बात किस साहस से कही थी या अनजाने में जुबां से फिसल गयी थी।

पर लेखक को ऐसे लगा कि जैसे उसके मुंह पर किसी ने थप्पड़ दे मारा हो और वो सहन कर गाल सहलाने लगा हो। कितनी लाजवाब बात कही थी मुमताज ने कि उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था। और वो सोच रहा था कि लेखक होकर अगर वो ही ऐसी बात कहेगा तो बाकी लोग तो फिर न जाने क्या कहेंगे, अपनी भूल का अहसास भी हुआ उसे और अफसोस भी पर वो अपने आपको किसी की नजर में गिरा कैसे सकता था, छूटते ही

बोला—मेरा कहने का मतलब यह नहीं जो आप समझ बैठी हैं बल्कि मकसद कहने का यह है कि इतना लिटरेचर पड़ा है यहाँ कि अपना घर ही कबाड़ी की दुकान बनकर रह गया है।

उसका तीर वाकय ही निशाने पर जा बैठा था।

उसने देखा कि मुमताज होले से मुस्करा उठी थी, कहने लगी-क्या सचमुच ?

तो क्या यकीन नहीं आया आपको, यह अलमारी ही आपको जुड़ी हुई नजर आ रही है और पता नहीं यह भी किस घड़ी में जुड़ी है, शायद अपनी ही बात पर मुस्करा पड़ा था, मगर बात जारी रखते हुए बोला—अगर आप यह बराबर वाला कमरा खोलकर देखें तो आप खुद ही कह उठेंगी, कि सच-मुच एक कबाड़ीवाले की दुकान भी कुछ बेहतर होती है इससे।

छोड़िये इन फिजूल की बातों को, आपने तो बातचीत का 'टापिक' ही बदल दिया है. मैं तो यह कह रही थी कि आपको इस छोटी-सी 'परसनल' लायब्रेरी' में ऐसी-ऐसी कीमती किताबें रखी हुई हैं कि बड़ी-बड़ी 'लायब्रेरीज में यह किताबें लाख ढूंढने पर भी न मिलें।

अलमारी से एक मोटी-सी किताब निकालकर इसका हवाला देते हुए बोली—लार्ड बर्नार्डशा की यह किताब आज उनके लिट्रेचर की लिस्ट से 'अप्राप्य' लिखी हुई है, लायब्रेरीज से पूछने पर पता लगाने पर भी मालूम हुआ है कोई कहता है कि किताब बहुत पुरानी हो जाने की वजह से 'कन्डम' हो गयी है तो कोई कहता है कि कोई साहब ले गए थे मगर उनसे खो जाने की वजह से वो 'पेमेन्ट' तो कर गए पर दुबारा मार्किट से किताब नहीं मिल पायी।

बात खत्म करके मुमताज ने एक मस्त निगाह से उसकी तरफ देखा जो उसके चेहरे की ही तरफ एक टक देख रहा था। उसकी बात को वो ध्यान-पूर्वक सुन रहा था या उसके गुलाबी हुस्न को देख रहा था, वो देख रहा था कि दोनों हाथों से किताब थामे वो पन्ने पलट रही थी और पन्ने पलटने के दौरान ही में उसकी साड़ी का पल्लू खिसक कर बाहों में झूल रहा था और

कमर तक का उसका भाग बिना आँचल के था, वो गोरी-गोरी गोल भरी हुई नंगी बाहें और जिस्म से कसा हुआ कमर से काफी ऊपर तक का बिना बाहों का ब्लाउज उसकी जवानी के उभारों को दबाए खिसक रहा था, और उस झीने से रेशमी ब्लाउज में से उसकी बाडिस भी तो साफ झलक रही थी।

शायद वह सोच रहा था कि मुमताज ने खिसक गए पल्लू को उठाकर कन्धे पर क्यों नहीं डाला, मगर ऐसा भी तो नहीं हो सकता कि उसको अपनी इस स्थिति का आभास न हो।

अपनी ही तरफ उसको देखते हुए मुमताज कुछ शरमा गयी या उसने शरमाने का कुछ अभिनय किया, और उस किताब को वापिस अलमारी में रखकर साड़ी के पल्ले को कन्धे पर लापरवाही से रखती हुई पूछने लगी—*क्या आपको खुशी नहीं महसूस होती कि आपके पास लिट्रेचर का इतना* कीमती सेट है !

तब उसने अपनी निगाह मुमताज की तरफ से हटाकर एक बार बाहर दरवाजे की तरफ दौड़ाई और फिर उसी के चेहरे पर लाते हुए बोला—

'खुशी से ज्यादा नाज भी तो है।'

तभी सामने से होटल का बैरा हाथों में बड़ी सी तश्तरी उठाये अन्दर आया और इशारे से मेज पर रखकर चला गया।

उसके ये कहते ही मुमताज उस ओर बढ़ी और कुर्सी पर बैठते हुए बोली—चाय तो आपने मंगाई सो मंगाई, पर साथ में यह इतना क्यों मंगा लिया आपने।

यह शिकायत तो आप बाद में करना, पहले आप इनायत तो फरमाइये और फिर बात यह कि आप कौन सा रोज २ आने वाली हैं।

'बल्कि यह कहो कि आज पहली बार आने की यह खातिरदारी हो रही है।'

और दोनों ही हंस पड़े।

मुमताज चाय बनाने में व्यस्त हो गई।

झुके २ कटीले नैन और माथे पर झूमती बालों की काली २ घुंघराली

आवारा लटें, एक मदहोशी सी लिए खामोशी थी, जुल्फों और मेक-अप की भीनी २ खुशबू फूट रही थी, जाने वह भी क्यों उसके चेहरे की तरफ देखे जा रहा था ।

कि अचानक मुमताज के नयन उठ उठे और पूछने लगी—शक्कर कितनी……? और निगाह मिलते ही इस तरह पलकें झपक गयीं और झुककर उसके जवाब का इन्तजार करने लगीं, मालूम नहीं दिल की धड़कन उन दोनों में से किसकी तेज हो गई थी, पर लगता था मुमताज कुछ हड़बड़ा जरूर गई थी, जिसका आभास पसीने की उस महीन सी चमक से लगता था जो उसके गालों पर उभर आई थी, वरना गर्मी का तो नामोनिशां भी न था वहाँ। एक तो यूँ ही सामने की दोनों खिड़कियों से हवा आ रही थी और फिर दूसरा छत पर लटका हुआ पंखा भी मीडियम स्पीड पर चल रहा था ।

'……… डेढ़ ।' उसने धीरे से कहा, और मुमताज के हाथ हरकत करने लगे ।

चाय का कप तैयार करके उसने लेखक की तरफ बढ़ाया और अपने लिए तैयार करने लगी ।

उसके हाथ से चाय का कप लेते हुए उसने पूछा—आज आपका इधर आने का कुछ खास सबब था क्या ?

जी नहीं, कोई खास नहीं । उसने अपनी हलाहल भरी आँखों से उसे देखते हुए कहा ।

नहीं, मेरा मतलब है कि शायद आपको कोई काम पड़ा हो मुझसे । और आपको आना पड़ा हो । और देखिये, उसने अपनी तरफ उठी हुई मुमताज की आंखों में एक बार झांका और फिर नजरें कुछ झुकाकर बोला—मगर वास्तव में कोई खास काम हो तो कह दीजिये इसमें शरमाने की कोई बात नहीं और मैं भी हर तरह से हाजिर हूं ।

जी नहीं, आप यकीन कीजिये, मैं किसी काम की वजह से नहीं, बल्कि आपसे यूं ही मुलाकात करने को आ गई हूं और फिर कोई काम होता तो भला आपसे छिपाती क्यों, आते ही कह न देती आपसे ।

'नहीं, यह बात नहीं, बल्कि कई बार आदमी कहने की इच्छा रखते हुए भी कह नहीं पाता।'

और चाय के दौरान ही मुमताज ने शिकायत कुछ अदा से पेश की। बोली—उस रोज आप तो बाहर से बाहर ही चले गये आती दफा, और अम्मी जान की बातों को मुझे सुनना पड़ा। कहने लगीं, तूने कहा ही नहीं होगा अंदर आने को।

लेकिन आपने देखा नहीं, मेरे यहाँ पहुंचने के दस पन्द्रह मिनट बाद ही बारिश होनी शुरू हो गई थी और फिर अगर वहाँ आपके या कुछ देर के लिए रुक जाता तो आधा पौना घंटा तो मामूली सी बात थी, खैर मैं आपकी तरफ से माफी माँग लूंगा।

और मुमताज एक फीकी सी हंसी हंसकर रह गई।

लीजिए न, आप कुछ खा तो रही ही नहीं, खाली चाय ही पीये जा रही हैं आप तो। लेखक ने कहा।

पर आपको भी देखिये न, लंच के वक्त भी भला इतना कुछ मंगाता है कोई। उसने बड़ी भोली अदा से कहा।

बल्कि यह कहिये कि मैं आपकी कुछ खिदमत नहीं कर सका। मजबूर हूं, अपने हाथ से तो कुछ बनाना आता नहीं और बाजार से जैसा मिला है वैसा ही पेश कर दिया है और मैं वास्तव में शर्मिन्दा भी हूं।

यह भला आप क्या कहते हैं, इसका मतलब है कि आपको मेरा आना अच्छा नहीं लगा। मुमताज ने जैसे कुछ उलाहना दिया।

जी नहीं, यह मकसद नहीं, बल्कि यह कि आपकी खिदमत भी कुछ नहीं की, न ही आराम और विलासिता के कीमती साधन मेरे पास हैं कुछ, कि आपकी खिदमत में पेश करता।

आप गलत फरमाते हैं, बल्कि मेरी राय तो यह है कि यहाँ एक अजीब सी दिल को लुभाने वाली शक्ति है, एक खामोशी सी है, ऐसा लगता है यहाँ, कि जैसे यह घर, यह दीवारें, यह सारा वातावरण बिल्कुल सन्तुष्ट सा है, कहिये क्या आपको महसूस नहीं होता, कुछ!

आवारा लटें, एक मदहोशी सी लिए खामोश थी, जुल्फों और मेक-अप की भीनी २ खुशबू फूट रही थी, जाने वह भी क्यों उसके चेहरे की तरफ देखे जा रहा था ।

कि अचानक मुमताज के नयन उठे और पूछने लगी—शक्कर कितनी·····? और निगाह मिलते ही इस तरह पलकें झपक गयीं और झुककर उसके जवाब का इन्तजार करने लगीं, मालूम नहीं दिल की धड़कन उन दोनों में से किसकी तेज हो गई थी, पर लगता था मुमताज कुछ हड़बड़ा जरूर गई थी, जिसका आभास पसीने की उस महीन सी चमक से लगता था जो उसके गालों पर उभर आई थी, वरना गर्मी का तो नामोनिशां भी न था वहाँ । एक तो यूं ही सामने की दोनों खिड़कियों से हवा आ रही थी और फिर दूसरा छत पर लटका हुआ पंखा भी मीडियम स्पीड पर चल रहा था ।

'········डेढ़ ।' उसने धीरे से कहा, और मुमताज के हाथ हरकत करने लगे ।

चाय का कप तैयार करके उसने लेखक की तरफ बढ़ाया और अपने लिए तैयार करने लगी ।

उसके हाथ से चाय का कप लेते हुए उसने पूछा—आज आपका इधर आने का कुछ खास सबब था क्या ?

जी नहीं, कोई खास नहीं । उसने अपनी हलाहल भरी आँखों से उसे देखते हुए कहा ।

नहीं, मेरा मतलब है कि शायद आपको कोई काम पड़ा हो मुझसे । और आपको आना पड़ा हो । और देखिये, उसने अपनी तरफ उठी हुई मुमताज की आंखों में एक बार झाँका और फिर नजरें कुछ झुकाकर बोला—मगर वास्तव में कोई खास काम हो तो कह दीजिये इसमें शरमाने की कोई बात नहीं और मैं भी हर तरह से हाजिर हूं ।

जी नहीं, आप यकीन कीजिये, मैं किसी काम की वजह से नहीं, बल्कि आपसे यूं ही मुलाकात करने को आ गई हूं और फिर कोई काम होता तो भला आपसे छिपाती क्यों, आते ही कह न देती आपसे ।

'नहीं, यह बात नहीं, बल्कि कई बार आदमी कहने की इच्छा रखते हुए भी कह नहीं पाता।'

और चाय के दौरान ही मुमताज ने शिकायत कुछ अदा से पेश की। बोली—उस रोज आप तो बाहर से बाहर ही चले गये आती दफा, और अम्मी जान की बातों को मुझे सुनना पड़ा। कहने लगीं, तूने कहा ही नहीं होगा अंदर आने को।

लेकिन आपने देखा नहीं, मेरे यहाँ पहुंचने के दस पन्द्रह मिनट बाद ही बारिश होनी शुरू हो गई थी और फिर अगर वहाँ आपके या कुछ देर के लिए रुक जाता तो आधा पौना घंटा तो मामूली सी बात थी, खैर मैं आपकी तरफ से माफी माँग लूंगा।

और मुमताज एक फीकी सी हंसी हंसकर रह गई।

लीजिए न, आप कुछ खा तो रही ही नहीं, खाली चाय ही पीये जा रही हैं आप तो। लेखक ने कहा।

पर आपको भी देखिये न, लंच के वक्त भी भला इतना कुछ मंगाता है कोई। उसने बड़ी भोली अदा से कहा।

बल्कि यह कहिये कि मैं आपकी कुछ खिदमत नहीं कर सका। मजबूर हूं, अपने हाथ से तो कुछ बनाना आता नहीं और बाजार से जैसा मिला है वैसा ही पेश कर दिया है और मैं वास्तव में शर्मिन्दा भी हूं।

यह भला आप क्या कहते हैं, इसका मतलब है कि आपको मेरा आना अच्छा नहीं लगा। मुमताज ने जैसे कुछ उलाहना दिया।

जी नहीं, यह मकसद नहीं, बल्कि यह कि आपकी खिदमत भी कुछ नहीं की, न ही आराम और विलासिता के कीमती साधन मेरे पास हैं कुछ, कि आपकी खिदमत में पेश करता।

आप गलत फरमाते हैं, बल्कि मेरी राय तो यह है कि यहाँ एक अजीब सी दिल को लुभाने वाली शक्ति है, एक खामोशी सी है, ऐसा लगता है यहाँ, कि जैसे यह घर, यह दीवारें, यह सारा वातावरण बिल्कुल सन्तुष्ट सा है, कहिये क्या आपको महसूस नहीं होता, कुछ !

शायद ! हो सकता है। लेकिन मेरे ख्याल से, सन्तुष्टि इन्सान के हृदय से नापी जाती है। हृदय अगर सन्तुष्ट है तो उसे हर चीज में सन्तुष्टि दिखाई देती है। वह हर दूसरे आदमी को देखकर भी यही सोचता है कि मेरी तरह यह भी सन्तुष्ट होगा।

मुमताज उसके चेहरे को बड़े ध्यान से देख रही थी और जब मुमताज ने कुछ जवाब न दिया तो उसने भी बात को आगे न बढ़ाया।

दोनों तरफ ही खामोशी छाई हुई थी।

मुमताज सोच रही थी कि क्या बात कहें। मगर कुछ दिमाग में न आ रहा था, कई बार ऐसा ही होता है कि इन्सान चलती बात में ही ऐसा खामोश हो जाता है कि कुछ सोच नहीं पाता कि बात कैसे शुरू की जाए।

घर से तो मुमताज काफी कुछ सोचकर आई थी कहने को, पर उसके सामने दिल की उन बातों में से एक भी बात न कह पाई, पता नहीं क्या बात थी।

मेज ही पर रखे सिगरेट के टीन का ढक्कन यूं ही खोलते हुए मुमताज ने हौले से कहा—एक बात मानियेगा......आप ?

क्या ?...... पूछा उसने।

'......पहले वादा करो......'

'अगर मेरे लायक हुई तो भला मैं क्यों इन्कार करूंगा।'

तब मुमताज ने एक नजर उसके चेहरे पर फेंकी और कहने लगी—है तो बात बेसिर पैर की, और खुद ही हिचकते हुए बोली—आपके छपे हुए उपन्यास बहुत से देखे हैं मैंने, पर आज आपके हाथ की लिखी हुई कापियां देखना चाहती हूं कि छपने से पहले वो कैसी होती हैं।

तब एक क्षण उसने उसके चेहरे की तरफ देखा और बोला—वैसे तो कोई हर्ज की बात नहीं इसमें, पर फिर भी कुछ नियम के विरुद्ध जरूर है लेकिन आपकी इच्छा को भी कभी नहीं टालूंगा।

क्यों ? बड़ा भोलापन सा था उसके चेहरे पर, इस लफ्ज को जबान पर लाते वक्त।

कुछ रिश्ते, कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिनके आगे इन्कार नहीं किया जा

सकता, कहते हुए उसने मेज की दराज से एक मोटा सा 'राइटिंग पैड' निकाल कर उसके सामने रख दिया, जो आधे से ज्यादा लिखा हुआ था।

एक पल तो मुमताज सामने पड़े राइटिंग पैड को छू न सकी, लेकिन जब उसका हाथ बढ़ा तो लेखक ने कहा—लेकिन देखिये, एक बात है, पढ़ियेगा नहीं कुछ भी।

जी……, कहते हुए उसने पैड अपने सामने सरका लिया और लेखक की सूरत पर वही स्थिति थी, जैसे कि किसी विद्यार्थी की परीक्षा की उत्तर-पत्रिका, उसके सामने ही 'एगजामिनर' जाँच रहा हो, एक बार तो उसने सारे पैड के पन्ने साधारण स्थितियों की तरह पलट दिये और फिर कहीं २ बीच २ में खोलकर देखने लगी।

और फिर उसके बाद साधारण सी बातों का सिलसिला जुड़ गया, घर बाहर की बातों के साथ कालिज जीवन की भी चर्चा हुई, और बातों के साथ-साथ फ़ैशन और फिल्म की भी बातें हुईं, आखिर यह भी तो आज के समाज के प्रमुख अंग बन गये हैं।

अपनी रिस्ट वाच पर नजर डालते हुए बोली—अच्छा अब इजाजत फरमाइए, काफी देर हो गई है आए हुए।

कुछ देर तो और बैठिए— न, आप कौनसा रोज आने वालों में से हैं—लेखक ने शिष्टाचार के रटे-रटाए लब्ज दोहराए, और खुद उससे पहले कुर्सी से खड़ा हो गया था।

नहीं, और तो कोई खास बात नहीं, बस यह कि जब मैं घर से आयी थी तो 'आपा' भी घर पर नहीं थीं न साजिद। हालाँकि मैं नौकरानी से कह तो आयी थी पर वे फिर भी इन्तजार में बैठी होंगी—मुमताज ने मन-गढ़न्त बातें कहीं।

जब कि वो नौशाबा के घर आने का बहाना बनाकर आयी थी।

आखिर माँ-बाप को तो फिर भी फिक्र रहती है—उसने बड़े बूढ़ों की बात को दोहराया।

और बैठे २ कुर्सी को थोड़ा पीछे खिसका कर मुमताज खड़ी हो गई, पर्स को सम्भाल कर चलते हुए बोली—कल तो आइएगा न आ………,

इतना ही कहा था उसने कि 'ख······च्च' से किसी कपड़े के कुछ तेजी से फटने की आवाज हुई, देखा मुमताज ने कि उसकी चमचमाती चमकीली साड़ी का पल्लू कुर्सी की सीट पर ठुकी हुई टेढ़ी कील की नोक में उलझ कर काफी फट गया।

तेजी से मुमताज भी बढ़ी और लेखक भी, और दोनों ने दामन कील की पकड़ से यूं छुड़ाया जैसे पानी की धार में बहते आदमी को उठाकर तेजी से किनारे पर फेंक दिया जाता है।

उसका फटा हुआ दामन हाथ में लेकर लेखक ने कुछ दर्द भरी आवाज में कहा—'ओह काफी फट गया है।'

कोई बात नहीं ऐसी, साड़ी भी तो पुरानी सी है—कह कर उसने लेखक के हाथ से दामन खींच लिया और गोल मोल अपने हाथ पर लपेटते हुए बोली बहुत दिन हो गए थे इस साड़ी को पहनते २, बिलकुल घिस गयी है। खैर यह बताइए—उसने बात का पहलू ही बदल दिया—आप आओगे न कल देखिए जरूर आइएगा। उसने फिर एक झूठ बोला—आपा ने ताकीद की थी।

कोशिश तो जरूर करूंगा······, उसने बुझे से दिल से कहा।

लेकिन ऐसा न हो कि आप खाली टालने को ही कह रहे हों, कहती हुई वो सीढ़ियां उतर कर नीचे फुटपाथ के किनारे लगी कार के पास आकर खड़ी हो गयी।

अच्छा! अब मैं चलूं······, कहते हुए दोनों हाथ जुड़ गए उसके और कार में बैठते हुए बोली—वक्त तो आपका जाया जरूर हुआ होगा उसके लिए माफी चाहती हूँ और कल का वादा याद रखना।

बात के खत्म होते ही एक हल्का सा झटका लेकर कार तेजी से आगे बढ़ गई।

और वह खोई २ सी नजर से गुमसुम सा खड़ा देख रहा था, नजर उसकी कुछ उदास सी उसी तरफ मुड़ी हुई थी जिधर अभी मुमताज की कार भीड़ में खो गई थी।

सड़क पर जाता हुआ कोई नौजवान उसको इस तरह खड़ा देख मुस्करा पड़ा चूंकि कुछ दूर से आते हुए मुमताज के गुलाबी हुस्न की एक झलक उसकी आँखों ने भी देखी थी।

पर क्या थी दिल में हलचल यह कोई न जानता था।

होटल का बिल चुकाकर उसने ऊपर से बर्तन उठा लाने का आदेश दे दिया।

सरवैन्ट जब बर्तन उठाकर चला गया तो कमरे में वह अकेला था बिल्कुल अकेला। पर तरह तरह के मानसिक ख्यालों ने उसे घेरा हुआ था चेहरे पर सूनापन छा गया था।

कुर्सी के नजदीक आकर उसने झुककर वो कील देखी जिसने मुमताज की साड़ी का पल्लू नहीं बल्कि उसका सीना चाक कर दिया था।

दो चार रेशमी पतले पतले धागे अब भी उसके उलझे हुए थे।

उसके कानों में मुमताज के कहे शब्द गूँज उठे—'कोई बात नहीं ऐसी साड़ी भी तो पुरानी सी है।'

'..... नहीं !!!, वो चीख पड़ा,' यह गलत है।

उसके मस्तिष्क की नसें कस गईं, दिल हाहाकार कर उठा, निगाहें कील की झुकी हुई गर्दन पर जमी हुई थीं एक टक, जिसकी बेहयाई की वजह से आज उसकी भी गरदन झुक गई थी उसके सामने।

उसने क्या सोचा होगा अपने दिल में। लेखक के दिमाग पर हथोड़े की सी चोट पड़ी।

आज जीवन में पहली बार शायद वो इतना गम्भीर हुआ था, और लगता था कि इतनी हलचल उसके दिल में इससे पहले कभी नहीं हुई थी, विचारों के जाल में वो बराबर फंसता चला जा रहा था, तर्क पर तर्क उसके सामने पेश हो रहे थे।

नहीं—, यह झूठ है, वो अमीर घराने की लाड़ली बेटी क्या पुरानी साड़ियाँ पहनकर बाहर निकलती है और दिल उसका गवाही दे रहा था कि आज तो वह खासकर इसके यहाँ ही आने का प्रोग्राम बनाकर आई थी तो

क्या वो घिसी हुई साड़ी पहन कर आती ·····और फिर साड़ी के फटने की आवाज भी तो कितनी तेज थी·····क्या पुरानी साड़ी इतनी तेज आवाज पैदा कर सकती है, 'नहीं·····'

'नहीं·····कभी नहीं' वो चमचमाती साड़ी हरगिज पुरानी नहीं थी।

वो झिलमिलाती साड़ी कभी पुरानी नहीं कही जा सकती।

यह बातें सिर्फ उसने मेरे दिल पर चोट न पहुंचने के लिए कही थीं—,

शायद इस वास्ते कि कहीं मैं उससे माफी न माँगने लगूं··· , और अफसोस के दो लब्ज भी न कह सकूं।

और तभी तो झट से चली गई थी उस वक्त, कि कहीं मैं दोबारा न उसका दामन देख कर कहने लगूं कि साड़ी तो नयी है·····तुम झूठ बोल रही हो।

छूटते ही दूसरा विचार टकराया 'एक क्षण भी तो नहीं रुकी फिर, वरना उसके इस तरह जाने के आसार ही कहाँ नजर आ रहे थे।

'और हाँ·····' उसके दिल पर एक विचार ने अपना तीर चलाया·····, जाते वक्त वह कोई किताब भी तो नहीं ले गई आखिर रुकना जो नहीं चाहती थी एक मिनट भी। और·····वरना कितनी तारीफें कर रही थी वो आते ही।

ओफ ! न जाने क्या २ सोच रही होगी वो, उसने अपना सर थाम लिया जैसे मस्तिष्क ने और सोचना बन्द कर दिया हो।

लेकिन कहाँ रुकती है इन्सान की सोचने की कड़ी, बराबर जुड़ती ही रहती है।

वहाँ से उठ कर वो मेज के सहारे खड़ा हो गया, अपने माथे पर हाथ रखे वो विचारों में ही खोया हुआ था, जाते २ कोई न कोई मुसीबत गले पड़ ही गई। कितना हीन होना पड़ा था उसे जब वो कमरे को निहार रही थी और कितनी शर्म आ रही थी उस वक्त, जब उसने इस साधारण सी कुर्सी को बैठने के लिए आगे बढ़ाया था, क्या सोचती होगी—, यही है बस इसकी औकात ?

ओफ ! क्या बताइए इसे, कि यह मान मर्यादा, यह प्रसिद्धि सिर्फ कोरे कागजों पर लिखे अक्षरों तक ही सीमित है कागज के नोटों द्वारा सम्मान नहीं होता आज भी लेखक का। कोई क्या जाने कि अपनी लोकप्रियता और योग्यता की तारीफ सुनकर खाली मुस्कराना ही आता है लेखक को, आर्थिक संघर्ष कितना करना पड़ता है यह लेखक ही जानता है।

अपनी बेबसी पर वो रो सा पड़ा, जजबातों में खेलने वाले मर्द की आँखों में भी आँसू आ गए, दर्दे दिल से आहें सिसक उठीं, हृदय चीत्कार कर उठा।

यूं तो कई बार उसे आर्थिक संघर्ष से जूझना पड़ा था जिन्दगी में, पर इसका आभास उसे आज ही हुआ था, उसे अब पता लगा कि उसकी स्थिति इतनी शोचनीय है कि वो फर्नीचर का नया और कीमती सेट तो क्या, दो अच्छी सी कुर्सियाँ भी नहीं खरीद सकता।

और अगर वह चाहे कि एक नयी साड़ी लाकर किसी भी बहाने को पेश करके उसकी क्षतिपूर्ति कर दे तो यह भी तो नामुमकिन है ···कहाँ जुटा सकता है वो इतना धन, इस चमचमाती साड़ी की कीमत चार-पाँचसौ से कम क्या होगी और इतना कहाँ से लाए वो, दो नयी कुर्सियाँ तो ला नहीं सकता और कीमती साड़ियों का ख्वाब हवा महल बनाने की तरह है।

और दिल उसका यूं धड़क रहा था जैसे वो कोई चोरी करके आया हो या किसी का खून कर आया हो, दिल अन्दर ही अन्दर उसका घुट सा रहा था, अपनी लाचारी और बेबसी पर। सोच रहा था क्यों उसने इस तरह की अनिश्चितता की जिन्दगी को अपनाया, क्यों उसने इस रास्ते पर चलना गवारा किया था जिसका यह न पता हो कि अगले मोड़ पर किधर जाना होगा। क्यों वो ऐसे जीवन को अपनाए हुए है जिसका यह पता नहीं कि कल क्या होगा।

और 'टप' से दो आँसू की बूंदें उसके गालों पर से फिसलती हुई फर्श पर गिर गयीं, यह आंसू पश्चाताप के थे या उसकी मजबूरी के, पर लेखक की निगाह जब इन चमकते आँसुओं पर पड़ी तो उसे ऐसा लगा कि इन बूंदों में जैसे मुमताज की शक्ल झलक रही हो और खिलखिला कर वह उसका मजाक उड़ा रही हो—

नाम बड़े और दर्शन छोटे।

११

मुमताज जैसे ही अपने बंगले में पहुँची, उसकी आँखों में एक चमक थी, और दिल में गुद्‌गुदी सी थी लाजवाब लचकती, अलबेली मस्त नशीली, बावरी सी बलखाती वह पर्स को हवा में हिलाते हुए अपने आपमें ही खोयी हुई वो चुपके से अपने कमरे में पहुँची।

पर्स को पलंग पर लापरवाही से फेंककर उसने अन्दाजे से दरवाजे के पास बिजली के बटन को दबा दिया।

जगमगाहट लिए उसी की तरह दो ट्यूबें मुस्करा पड़ीं।

और मुस्कराकर उसने अपनी साड़ी का फटा हुआ दामन हाथों ही हाथों में फैलाकर अपनी आँखों से देखा, करीब डेढ़ बालिश्त जितना फट गया था, और आँखों के आगे वो नजारा घूम गया जो हाल ही में एक सपने की तरह गुजरा था "जब दामन उलझ गया था तो खिचकर आँचल उसके कन्धों से फिसल गया था और लपक कर उसने उलझे दामन को छुड़ाने के लिए हाथ बढ़ाये थे और लेखक भी तेजी से इस ओर बढ़ा था तो उसकी मरमरी नंगी बांहों से टकरा गया था और दामन को पकड़ कर इसे रिहा करने में इसके हाथों से लेखक के हाथ पूरी तरह उलझ गये थे और झुकी हुई होने की वजह से उसके महकते गेसुओं की घुंघराली लटाएँ भी तो उसके कन्धों पर बिखर गयी थीं, कितना लुत्फ़ था इन हाथों के छूने में······", और भारी पलकों को बन्द करके उसने अपना दामन चूम लिया······जैसे लेखक के हाथों में का असर अब भी उसमें सिहर रहा हो।

और वो दुआ दे रही थी उस कील को जिसने ऐसा समां बाँध दिया था। और उसी कील को कोस रहा था लेखक।

मगर उसका तो दिल बेकाबू सा होकर घड़क रहा था, जैसे चाहता हो कि पहलू से निकलकर बाहर आ जाये वो।

अपने गालों पर साड़ी का पल्लू रगड़ते हुए जब उसने अपनी बोझिल

पलकों को खोला तो उसे ऐसा लगा कि जैसे बराबर के कमरे से कुछ बातचीत करने की खुसर फुसर की आवाज आ रही हो, और सचमुच ठीक था आवाज उसकी आपा और अब्बा हजूर की थी।

मुमताज ने आहिस्ता से दरवाजे से बाहर पाँव रख कर देखा, उसके अब्बा हजूर के कमरे का दरवाजा बन्द था और कुछ उल्टा बन्द होने की वजह से थोड़ा सा खुला हुआ था, धीरे से कदम बढ़ाकर वो दरवाजे के पास आ गई, यहां आवाज बहुत धीमे लेकिन बिल्कुल साफ सुनाई दे रही थी, दीवार के सहारे खड़ी होकर वो अन्दर होने वाली बात को सुनने की कोशिश कर रही थी।

आवाज उसकी अम्मी की थी—छोड़ो भी, यह क्या बदतमीजी है........, इस उम्र में भी तुम्हें मजाक करने की सूझती है,........।

सुनकर मुमताज शर्म से लाल यूं हो गई जैसे सुहागरात की पहली रात को उसी का घूंघट उठाया हो.....उसके.....?

लेकिन कान उसके फिर वहीं लग गये।

उसकी अम्मी कह रही थीं—मैं अपनी बात नहीं, बल्कि मुमताज की की बात कर रही थी।

वो तो मुझे भी दीख रहा है कि वो जवान हो गई है लेकिन मैं तो यह कह रहा था कि अभी तो तुम भी जवान हो, बेटी की बात तो बाद में.....।

और इनकी आधी बात को काटते हुए बोली—आपको तो सचमुच शर्म नहीं आती, छोड़ो न मेरी बाँह.....।

और बाहर खड़ी हुई मुमताज शर्म से दोहरी हुई जा रही थी, पर वहाँ से हटने को भी तो दिल न चाहता था उसका।

आवाज उसके कानों से फिर टकराई, कह रहे थे उसके अब्बा हजूर—भई यह शादी ब्याह के मामले में औरतें ही सबसे बढ़ कर तजुर्बेकार होती हैं, हम तो सिर्फ हाँ में हाँ मिलाने वाले होते हैं।

लेकिन लड़का तो अपना देखा भाला हुआ है.....।

कौन है वो,

मेरी नजर तो लेखक पर ही, मेरी ही क्यूं खुद मुमताज भी तो उससे प्यार करती है।

लेकिन अगर वो न माना उस रिश्ते को तो……।

क्यों ? कोई कमी है क्या हमारी चाँद सी बेटी में, तो क्या उससे बढ़कर कोई हूर की परी आयेगी उसके लिए आसमान से उतर कर।

और मुमताज के गुलाल से लाल गाल उस वक्त देखने लायक थे……… मगर दिल थामे खड़ी थी वो भी।

मगर सबसे बड़ी कमी तो यह है कि हम इस्लाम धर्म के हैं और वो हिन्दू धर्म का, भला रिशता कैसे मन्जूर कर लेगा वो।

लेकिन मैं तो आपसे यह पूछना चाहती हूँ कि लड़का आपको पसन्द है या नहीं।

पसन्द भला किसे नहीं आएगा, अच्छी खासी सूरत सेहत है. इज्जतवाला शरीफ आदमी है, और फिर सबसे बड़ी बात कि एक शौहरत याफ़िता है, आज के जमाने में इतनी शोहरत पाना कोई हंसीखेल नहीं, इन्सान से पहले एक मंजा हुआ कलाकार है वो, पर हो सकता है कि इकरार करने से इंकार कर दे।

यह बात आप मुझ पर छोड़ दें, सिर्फ आप की हाँ की जरूरत थी।

तो हम भला तुम्हारी मर्जी के खिलाफ 'ना' कर भी कैसे सकते हैं।

खैर अब यह काम मेरा भी नहीं खुद मुमताज का भी होगा उसकी 'हाँ' सबसे ज्यादा मायने रखती है, लेकिन मैं जानती हूँ कि वो घर में किस कदर खोयी रहती है।

लेकिन देखो, कहीं ऐसा न हो कि प्यार ही प्यार में बहक कर दोनों गलत रास्ते पर कदम उठा बैठें और नतीजा यह हो कि हमारे खानदान की इज्जत खाक में मिल जाए।

बेफिक्र रहिये ऐसी बात नहीं, वो दीवानापन छुप २ कर होता है किसी की नजरों के सामने नहीं, मुस्कराकर बोली—जब भी आता है, तो मुमताज

अपने ही कमरे में बिठाती है और फिर मालूम नहीं घन्टों तक क्या २ बातें होती रहती हैं घुल मिलकर।

क्यों तुम्हें भी क्या अपना जमाना याद आ रहा है, लेकिन तुमने तो बुर्के की ओट में हमें घायल कर दिया था, एक दिन तुमने हमारे सामने बुर्के का नकाब उलट कर हमारी तरफ क्या देखा था कि हम तो सच खुदा कसम दिल थाम कर रह गये थे।

और अंजाम भी तो पूरा कर दिया था, आखिर बाँधकर ले ही आये थे।

और भूल गईं वो दिन तुम, जब खत लिखा करती थीं तुम, कि··· रात को बेकरारी में नींद नहीं आती और दिन सारा उदासी में गुजर जाता है, और हफ्ते में कम से कम एक दिन तो किसी बहाने आ जाया करो इधर, और नहीं तो······, चिलमन की ओट से ही तुम्हारा दीदार करके दिल को······।

अच्छा बाबा मैं तो चलती हूं······, शर्म तो बिल्कुल ताक में रखी हुई है आपने, कोई सुनले तो क्या सोचे······, आह ऽ······, ओफ ऽऽ, छोड़ो न मेरा हाथ, यह भी भला क्या······, लेकिन इसी घुटी सी आवाज में बोसे की हल्की सी चुस्की घुल मिल गई थी जिसका सबूत इस बात से मिलता था कि वो कुछ कह रही थी—आखिर अपनी मर्जी करके ही छोड़ते हो, न उम्र का लिहाज आता है न वक्त का।

कहती हुई वो बाहर आने को हुई और तब तक मुमताज अपने कमरे में पहुँच चुकी थी।

और झट से सोच भी न पाई कि अपने आपको व्यस्त सी बनाए रखने के लिए वो क्या करे, और कुछ न देख कर वो अपनी नाइट ड्रेस को ही उलट-पुलट कर ठीक करने लगी।

और उसके कमरे के सामने गुजरते वक्त उसको अन्दर देख वो भीतर आते हुए पूछने लगी—कब आयीं तुम ?

बस, सीधी ऊपर ही आई हूँ, महज आपके अन्दर कदम रखने से दो मिनट पहले ही आई हूँ, मुमताज ने कहा।

बैठी थी नौशाबा घर ही—वो इसके नजदीक आकर उसकी पीठ पर

हाथ रखकर दूसरे हाथ से उसके गालों के आसपास बिखरे हुए बालों को सहलाने लगीं।

जी ! घबराहट और कुछ नजाकत में उसने यह छोटा सा जवाब दिया।

और उसके इस जवाब की परवाह किये बगैर वो पूर्णतः उसके बाल सहलाते हुए उसकी ठोड़ी को ऊपर उठाते हुए प्यार से बोली—चेहरे पर यह उदासी सी क्यों छाई रहती है।

कहाँ छाई रहती है, मैं भला उदास क्यों रहने लगूं ?······मगर पता नहीं वो नजर उठाकर यह बात क्यों नहीं कह सकी, और घबराहट में वो शर्माकर अपनी अम्मी के गले में झूलती सोने की लॉकेट से खेलने लगी।

मगर फिर भी अपने आप में खोयी २ सी तो रहती हो, क्यों, हमसे भी दिल की बात छुपाकर रखोगी।······

कुछ भी तो नहीं है, आपको तो खामख्वाह में बहम हो गया है—, और मुमताज ने लजाकर उनके कन्धे पर सिर टिका दिया, तो उसकी अम्मी ने भी प्यार से अपने बाहुपाश में कस लिया, प्यार से इसके सिर पर हाथ फेरने लगीं, और उनके चेहरे को अपने दोनों हाथों के बीच लेकर मुस्कराती नजर से उसके चेहरे की तरफ देखते हुए उसके दोनों गाल चूम कर बोली—यह सब उदासी थोड़े दिनों में अपने आप दूर हो जाएगी।

और उसे आपसे अलग करते हुए कमरे से बाहर चली गई।

लेकिन मुमताज अब तक खोयी २ सी खड़ी थी, न जाने क्या सोच रही थी और अपने गाल पोंछते हुए पता नहीं किस ख्याल को सोचकर अपने आप से ही शरमा गई।

और मस्ती में लहराकर उसने अपने को पलंग पर औंधा गिरा दिया और तकिये के गिलाफ से लेखक की तस्वीर निकाल कर बड़े प्यार से देखने लगी, और शरमाई नजरों से उसे देखते हुए चूमकर अपनी आँखों से लगाते हुए बोली—

मेरे ख्वाबों के······।

शहनशाह !

१२

दोपहर काफी ढल चुकी थी, मुमताज अपने कमरे में बैठी कोई फिल्मी मैग-जीन पढ़ रही थी, तभी सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आहट हुई, नजरें पत्रिका से हट कर आने वाले को देखने की इन्तजार करने लगीं। और जब नजरों के सामने वो सूरत आ गई तो, पलंग से उठते हुए मुमताज़ बोली—आओ मेरी जान......बड़े दिनों में तशरीफ लाई हो आज तो।

तुम सुनाओ......, अपनी........ कैसी हो, पूछा उसने।

आने वाली नौशाबा थी।

उसके पास ही पलंग पर बैठ गई वो, कहने लगी—भई! बहुत अफसोस है तुम्हारे फेल हो जाने का।

तो—, दस दिन बाद तुम्हें आज अफसोस जाहिर करने की याद आयी है...।

सच बताऊँ......, उसने मुमताज के बालों को पीठ पर करते हुए कहा—मुझे मालूम था कि फेल हो जाने का तुम्हें कोई अफसोस तो हुआ नहीं होगा, लेकिन हाँ, दो चार रोज तुमने रंज की एक्टिंग, तो जरूर की होगी और फिर मैंने सोचा कि अगर पहले एक दो रोज में आऊँ तो खामख्वाह तुम्हें भी दो चार दिखावटी आँसू बहाने पड़ेंगे, मेरे सामने।

फिर तो मेरे ख्याल से तुम्हें शायद खुशी हुई होगी मेरे फेल हो जाने से।

क्यों नहीं? अब हमारी बानो को फिर एक साल अलीगढ़ में रहना पड़ेगा, और अपने उनकी याद में तड़प कर कम से कम उनका हाल पूछने के लिए इसी बहाने एक प्यार भरा खत तो लिखोगी।

और पीछे तुम्हें हमारे भाईजान को अपने प्यार के रेशमी धागों में बाँधने का सुनहरा मौका मिल जाएगा, पर बेगम साहिबा अब मैं यहाँ से जाने वाली नहीं हूँ, यहीं रह कर प्राइवेट इम्तहान दूंगी।

हाँ, क्यों नहीं ताकि हर दो चार रोज में उनके दीदार तो होते रहेंगे यहाँ रह कर।

बल्कि यह कहो कि कभी उनसे पढ़ने को भी चली जाया करूँगी उनके यहाँ इसी बहाने।

और वहाँ सबसे पहले दिन ही इंगलिश का लब्ज एल० ओ० वी० ई० 'लव' का पूरे ब्यौरे के साथ मतलब समझाया जाएगा।

लेकिन तुम्हारे दिल में क्यों दर्द उठने लगा, मुमताज ने पलंग पर लेटकर अपनी एक लात उसकी पीठ पर रखते हुए बोली—ऐसी थर्ड क्लास इशकिया टाइप बात आज तक उन्होंने नहीं की, और न ही मैंने।

तो ... ! फिर कैसे होती हैं मीठी २ बातें—नौशाबा उस पर झुकते हुए बोली।

प्यार करने वाले आँखों से बातें किया करते हैं जबान से नहीं, मुमताज ने अपनी जुल्फों को सीने पर संवारते हुए कहा।

तो कहीं ऐसा न हो, कि कहीं वो तुम्हारे आँखों के इशारों को तो समझ न सकें और जबान पर तुम भी न लाओ, और सारा मामला ही गड़बड़ हो जाए।

अरे, यह कहो कि जब भी उनके सामने आती हूँ तो बस मेरे चेहरे की तरफ ही देखते रहते हैं, पता नहीं बीच के इतने दिन कैसे कटते होंगे और मुझे यह भी पता लगा है कि पहले वो कभी हफ्ते-दस-दिन में आया करते थे और अब तो पाँच-चार-रोज में ही किसी न किसी बहाने चक्कर लग जाता है, मैं भी सब समझती हूँ यह चक्कर ही किसी और चक्कर में लगते हैं।

आखिर हमारी दिलरुबा का हुस्न भी तो कितना कातिल है, नौशाबा ने उसके गाल पर बालों की एक लट बिखेरते हुए कहा—और हुस्न को देख कर भला कौन आशिक बनना पसन्द नहीं करेगा?

अच्छा बाबा छोड़ो इस किस्से को, मुमताज कुछ खीजते हुए बोली—आते ही बस ऐसी बातें लेकर बैठ जाती हो।

लो जनाब, इसमें नाराज होने वाली बात क्या है पर यह अदा यह शोखियाँ दिखाकर हम पर न सितम ढाया करो, यह नजाकत तो बस उन्हीं के सामने पेश करना।

और मुमताज मुस्करा पड़ी, कहने लगी—इश्क की ट्रेनिंग के लिए तुमसे फार्मूले पूछे कोई। अच्छा छोड़ो इन बातों को पहले यह बताओ कि तुम ठण्डा पियोगी या गर्म, बातों ही बातों में इतना भी तो ध्यान नहीं रहने दिया तुमने।

लेकिन मेरा तो प्रोग्राम ही और है।

वो क्या है ?

यानी कि मेरे पास इवनिंग शो की दो टिकटें हैं, एक तुम्हारे लिये और एक खुद की और ····

लेकिन आज हम पर यह इनायत किस खुशी में फरमाई जा रही है ······ मुमताज बीच में ही बोल उठी—बल्कि यह कहो कि टिकटें तो अपने उनके लिये बुक कराई होंगी और उनके वक्त पर न मिलने की वजह से हमीं पर रौब डाल रही हो।

नहीं ! मैं सच कह रही हूं—वो कुछ शरमा गई थी मुमताज की बात सुनकर, पर अपने आपको सम्भालकर बोली—मैंने तो सोचा था, साहबज़ादी वीरान सी बनी बैठी होंगी अपने फेल हो जाने के ग़म में और इसी बहाने आपकी तबीयत बहल जायगी।

शुक्र है इसी बहाने हमारा ख्याल तो आया।

लेकिन पूरी बात तो सुन लो पहले, और मुमताज को अपनी ओर आकर्षित करती हुई बोली—अब बजे हैं··· उसने झट से कलाई पर बंधी घड़ी की तरफ देखते हुए कहा—सवा चार, यहां से चलकर पहले किसी रेस्टोरेन्ट में चाय वगैरा पी जाये और फिर छः वाला शो देखा जाये, क्यों ?

गुड आइडिया।

हाँ, तो बस फिर जल्दी से तैयार हो जाओ।

'ओ० के०' कहती हुई मुमताज कपड़ों की अल्मारी को खोलकर देखने लगी, सोच रही थी शायद कि कौन सा रंग पसन्द करूं, लेकिन उसके दिमाग़ ने झट से चुनाव कर डाला और हाथों ने बढ़कर हल्के से गुलाबी रंग की साड़ी उठा ली, जिस पर ड्राक ब्लेक कलर की छपाई में महीन २ बेल-बूटे

सारी साड़ी पर फैले हुए थे, चमकती साड़ी पर काली छपाई बड़ी आकर्षक लग रही थी, उसी से मैच करता ब्लाउज निकालकर उसने एक उड़ती नजर नौशाबा पर डाली तो उसको पलंग पर रखी फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलटते देखकर उसने ऊपर वाले खाने से धुली हुई सफेद बाडिस कपड़ों में से खींच कर झट से अपने हाथ पर लपेट ली।

लेकिन पूछो उससे, इसमें भला शरम की क्या बात थी।

और बाकी कपड़ों को बाँह पर रखे वो नीचे बाथ रूम में चली गई, और करीब दस मिनट बाद जब वो बाथ रूम से निकल कर अपने कमरे की तरफ आ रही थी तो उसे ऐसा लगा कि नौशाबा नीचे उसकी 'आपा' के कमरे में है, चूंकि बातचीत से ऐसा ही लग रहा था, और जब उसने ऊपर आकर नौशाबा को अपने कमरे में न पाया तो उसको पूरा यकीन हो गया, पर वो सोच रही थी कि 'चलो अच्छा हुआ' मेक-अप करने को फुरसत मिली।

पता नहीं, किसी लड़की के सामने हर लड़की मेक-अप करने से शरमाती क्यों है—, खैर यह तो लड़कियाँ ही जानें।

मुमताज ने पहले तो ड्रेसिंग टेबुल के सामने खड़ी होकर साड़ी की सलवटों को संवारा और फिर सीने पर से साड़ी का पल्ला हटाकर अपने उभरे वक्ष को यथास्थान ठीक करने लगी, ब्लाउज के गले में से हाथ डालकर उसने बाडिस को सही सैट किया और फिर ब्लाउज को ठीक से नीचे खींच दिया, फिर मुस्कराकर उसने अपने उठे हुए नुकीले सीने को देखा और शरमा कर उसे साड़ी के पल्ले में छुपा लिया।

जल्दी में मेकअप करके उसने हाथ के छोटे आइने से चेहरे को नजदीक से देखा उसने और अपने गुलाबी होंठों पर नेचुरल कलर की लिपस्टिक लगाने लगी, सुर्ख होंठ लिपिस्टिक की चमक से निखर उठे, माथे पर उलझी हुई बालों की कड़ियां हवा में हल्के २ उठ रही थीं, चेहरे को हर तरफ से देखकर उसने जैसे ही आइने को टेबुल पर रखा, तभी कमरे के दरवाजे में कदम रखते हुए बोली—हुई नहीं अभी तैयार।

बस बिलकुल तैयार हूं·········कहकर उसने शिल्फ पर पड़ी हुई दो तीन घड़ियों में से एक को उठाकर कलाई पर बाँधने लगी, और दूसरी कलाई में उसकी प्यारी कड़े सी मोटी चूड़ी पहले से ही चमक रही थी, नौशाबा के गले में पड़ी मोतियों की माला को देखकर उसे भी ध्यान आ गया, लपककर तेजी से उसने ड्रेसिंग टेबुल की दराज से मोटे २ मोतियों की सफेद रंग की माला निकाल ली और गले में डालकर एक लपेटा और दे लिया और बाकी लम्बी सी माला सीने के काफी नीचे तक झूल रही थी ······, काली २ छपाई वाली साड़ी पर सफेद मोतियों के दानों वाली माला सितम ढा रही थी।

दोनों लान को पार करती हुई फाटक की तरफ बढ़ीं।

नौशाबा की कार सड़क के किनारे पर ही लगी खड़ी थी, कैडीलॉक की ग्रीन मॉडल दो हसीनों को लेकर, मतवाली चाल से सड़क पर फिसलने लगी।

कार नौशाबा ड्राइव कर रही थी।

रेंगती हुई कार जूहू के एक अच्छे से रेस्तराँ के सामने आकर रुक गयी।

दोनों अंदर दाखिल हुईं।

हर तरफ मेजों पर लोग झुके हुए चाय की चुस्कियों के साथ कहकहों और बातों का बाजार गर्म किये थे, कहीं दो-चार लड़कियों के साथ दो-तीन नौजवान भी बैठे हुए अपने आपको लार्ड समझ रहे थे, तो कहीं खाली लड़कियाँ ही बैठी हुई प्यालों पर झुकी एक-दूसरे को बातों में उलझाये हुए थीं।

इन्हीं के बराबर बाँयी वाली टेबुल पर दोनों बैठ गयीं, बैठते ही उनके झट से बैरा आन पेश हुआ।

नौशाबा ने हाफ सैट टी और कुछ सैंडविचिज़ लाने का आर्डर दिया और मुमताज की तरफ देखते हुए बोली—कुछ और मंगाने की इच्छा है ?

नहीं, बस ठीक है।

क्यों ···?

और नौशाबा की बात सुनकर पास ही लड़कियों से घिरी टेबुल पर से एक लड़की बोली—मिस नौशाबा, और किसी की आवाज़ अपने नाम को

चूमती हुई सुनकर उसने गर्दन घुमाकर देखा तो वो लड़की कहने लगी—हम भी इधर बैठे हैं।

ओह ! वो कुर्सी से उठते हुए बोली—हैलो, मिस मंजु……, और उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए बोली—कैसी हो, आज तो बहुत दिनों बाद दिखाई दी हो।

तुमने कभी याद किया हो तो……तब न, लेकिन तुमने तो यहाँ बैठी हुई को भी नहीं बुलाया।

नहीं मंजु ! उसने मंजु का हाथ कुछ दबाते हुए कहा—मैंने देखा ही नहीं तुम्हें, वरना क्या नाराजगी थी मुझे तुमसे कुछ।

और जब मंजु की नजर मुमताज की तरफ उठी, तो उसकी नज़रों के आशय को समझते हुए नौशाबा बोली—यह है मिस मुमताज बानो……, वन ऑफ माई फास्ट फ्रेन्ड्स……, बट ए लवली कम्पेनियन।

मुमताज ने उठकर मुस्कराहट के साथ उसका अभिवादन स्वीकार किया, कहा नौशाबा ने……, यह है मिस मंजु……, बी० ए० में मेरी क्लासफैलो थीं ……और कालिज की हीरोइन रह चुकी हैं……,

और दोनों ही मुस्करा पड़ीं।

उन्हीं टेबुल पर यह दोनों भी आकर बैठ गयीं, बैरे ने जब चाय और खाने का सामान मेज पर लगा दिया तो नौशाबा ने उन सबको सम्बोधित करते हुए कहा—आपके लिये कुछ मंगाया जाय।

पहले ही हम लोग लिये बैठी हैं इतना सारा कि खतम ही नहीं हो रहा।

इसी बीच में मंजु ने अपनी बाकी सखियों से भी नौशाबा और मुमताज का इन्ट्रोडक्शन कराया।

पल भर में ही सब घुल-मिल गयीं।

यही तो खासियत होती है लड़कियों में कि किसी अजनबी से मुलाकात होते ही एकदम यूँ फ्रैंक हो जाती हैं कि जैसे बरसों से जान-पहचान वाली हों, और फिर क्या, खुल-खुलकर बातें इतनी घुल-मिलकर होती हैं कि यहाँ

तक नौबत आ जाती है कि, एक कहती है मुझे तो छब्बीस नम्बर की बॉडिस पूरी आती है और दूसरी कहती है कि रात मुझे इतना 'सेक्सुअल ड्रीम' आया कि पूछो मत……वगैरा २……

लेकिन खैर उनमें बातें अभी इस हद तक नहीं पहुंची थीं, बात पहले आजकल के फैशनों से शुरू हुई, फिर कपड़ों के स्टाइल और फिर शलवार की मोहरी की नाप पर बहस हुई, फिर आई बात कमीज की कटाई और गले के डिजाइन पर।

और जब बात का रुख बदला तो फिल्मों का किस्सा छिड़ा और, कौन सा एक्टर अच्छा है, कौन खूबसूरत है कौन सी हीरोइन किसके इश्क में गिरफ्तार है, एक ने किसी चोटी की हीरोइन का नाम दाँतों तले दामन दबाते हुए कहा, सुना है उसी फिल्म के हीरो की इनायत से उसके लड़की पैदा हुई और पता नहीं, वो कुछ सोचते हुए कहने लगी, वो हरामी लड़की उस हीरो की नजदीकी जान पहचान वाली किसी और ऐक्ट्रेस के घर पल रही है।

पूछा नौशाबा ने—कहीं पढ़ा भी है या खामख्वाह उड़ा रही है।

लेकिन मैंने तो ऐसा सुना है, उसकी बात का जवाब पाये बगैर एक तीसरी कली बीच में ही बोल पड़ी—कि वो लड़की मर गयी है या मार दी गई है।

लो जी, क़िस्सा ही खतम हो गया, नौशाबा की बात पर सारी खिलखिला पड़ीं, और पीछे की टेबुल पर बैठे कुछ नौजवां उनकी तरफ मुस्कुराती नजर से देखने लगे, यह सोचकर कि शायद हमें भी कोई देखकर पलकें झपका दे।

इसमें से एक तो मुमताज के गुलाबी हुस्न को बड़ी बेताबी से देख रहा था, और बार २ चेहरे को रूमाल से पोंछ रहा था कि शायद सूरत पर उसकी तरस खाकर वो एक नजर देख ले भूले से इधर।

और रंगीन बातों में साहित्य का क़िस्सा भी टपक पड़ा, कोई किसी उपन्यास की बात करने लगी, कोई उसकी 'क्रिटिसाइजिंग' पर उतर आयी

तो तीसरी ने उसके बीच बचाव की बात की, तभी मंजु ने क़िस्सा छेड़ा किसी लेखक का नाम लेकर तो उसका नाम सुनकर एक ने गोलमोल लपेटी हुई पत्रिका को खोलते हुए कहने लगी—इन्हीं की तो बात कर रही हो, साथ ही लेखक की फोटो भी छपी थी, सबने झुक कर देखा तो दूर से ही पहचान कर नौशाबा ने इशरत की सी मुस्कराती निगाह से मुमताज की तरफ देखा तो मुमताज अपने आप ही में शरमा गई तो बराबर में बैठी नौशाबा ने उसकी नरम सी बग़ल में चुटकी काट दी, तो इक तीखी सी लजाई नजर से देखा मुमताज ने उसकी तरफ।

एक ने तारीफ का तराना छेड़ते हुए कहा—बड़े गजब के राइटर हैं यह—, एक २ लब्ज दिल को छू लेने वाला होता है।

तब मंजु बोली—तुम तो लिखने की बात कर रही हो, अगर कभी बात करने का मौक़ा मिले तुम्हें तो बस""", अपने आपमें खो जाता है, जवाब दिए नहीं दिया जाता।

बातें तो यूं बना रही हो जैसे तुम उसकी पड़ोसिन हो—, एक ने उसे बीच में ही टोका।

पड़ोसिन तो नहीं हूं मगर मुलाक़ात के तजुर्बे का अन्दाज़ पेश कर रही हूं"""", समझी, उसने गर्व से सीना यूँ फुला लिया जैसे उसने लड़ाई में पाकिस्तानियों के दो चार टैंक उड़ा दिए हों।

कभी मिली हो उससे तुम—रहा न गया मुमताज से, पूछ ही बैठी, जाने क्यों उस पर वो अपना एक खास हक सा समझती थी।

अरे हाँ मंजु ने अपनी जुल्फों को बड़ी अदा से सिर झटकाकर पीछे किया और मुमताज की तरफ बाँकी अदा से देखती हुई कहने लगी—

मुलाक़ात हुई थी"""बरसात की एक शाम को"""जब आसमान पर छाए हुए मस्त बादल मदहोशी से बरस रहे थे, मेरी मुलाक़ात एक अजीबोग़रीब वजह से हुई,""ओफ कितना प्यारा था वो वक्त""", लेकिन कहूं क्या, मैं तो बरसात में सर से पांव तक पानी में तर थी और सारे कपड़े जिस्म से चिपके हुए थे, पानी से टपकते बालों को संवार कर पीछे करती तो भीगा

हुआ आँचल सीने पर से ढलक जाता, और फिर तीसरी बात यह भी तो थी कि वो, जाने क्यों······वो शरमाने की अदा पेश करती हुई बोली—मेरी तरफ एक टक देखे जा रहे थे और मैं भीगी पलकें उठाकर भी न देख पायी।

मेरे ख्याल से बारिश में धुलकर तुम संगमरमर की तरह निखर आयी होगी—एक ने उसके हुस्न की तारीफ करते हुये छेड़ा—और कुछ अदा भी दिखायी होगी तुमने, तो भला ऐसे में होश किसे रहे।

और सही बातों के दौरान नौशाबा ने एक-आध बार मुमताज़ की तरफ देखा तो पाया कि चेहरे पर कुछ रंगत ही और तरह की खेल रही थी।

लेकिन उनकी बातों का सिलसिला जारी था, कह रही एक नाज़नीन—फिर तुमने प्यार की तीखी नजरों से देखा होगा और उन्होंने बढ़कर तुम्हारा नाज़ुक सा हाथ थामकर तुम्हारे आशियाने का अतापता पूछा होगा, और फिर······,

अरे यही तो मुसीबत की बात थी······, अतापता तो क्या ही पूछना था······, जाते वक्त मेरा नाम भी नहीं पूछा।

और सब कलियाँ एक साथ खिलखिला कर हंस पड़ीं।

हंसते २ एक बोली—तेरा नाम पूछकर उन्हें तेरे नाम की कोई माला तो फेरनी नहीं थी।

वो कोई कालेज की कैन्टीन थी नहीं कि तुमने सोचा होगा कालेज के नौजवान दीवाने दिल वाले छोकरों की तरह आहें भर कर वो तुम्हारे हुस्न की तारीफ करके तुमसे सम्पर्क बढ़ाना चाहेंगे।

लेकिन हाँ तुमने वो वजह तो बताई ही नहीं कि मुलाक़ात हुई कैसे थी—,एक ने पूछा।

कहने लगी मंजु—, यह एक अपनी प्राइवेट बात है।

हाँ क्यों नहीं—, आख़िर अपनी झेंप मिटाने का एक अच्छा फारमूला है।

अच्छा भई हम तो चलते हैं। कह कर नौशाबा उठ खड़ी हुई और मुमताज भी :

अरे कुछ देर बैठो तो—, मंजु बोली।

नहीं, ज़रा कुछ काम है मार्किट में, सच को छिपाया उसने, कहने लगी,—फिर मिलेंगे कभी।

अच्छा, मंजु भी यह कहते हुए खड़ी हो गयी, और मुमताज़ का हाथ पकड़ कर बोली—आइये न कभी हमारे यहाँ, आपसे मिलकर तो वाक़ई ही बहुत खुशी हुई।

जरूर आऊंगी, मुस्कराकर जवाब दिया उसने, और दोनों आगे बढ़ गयीं, सबसे विदा लेकर।

बिल चुकाकर दोनों जब बाहर आईं तो नौशाबा ने मुमताज़ की तरफ देखते हुए होंठों को दबाते हुए कहा—, देखा मेरी बात सच है न, पता नहीं कितनी लड़कियाँ इसी तरह ख्वाबों के महल देखती हैं, लेकिन तुम ख्याल रखना अपने सपनों के मीत का।

और कार फिर सड़क पर दौड़ने लगी।

टाइम छः का होने ही जा रहा था जब वो दोनों सिनेमा हाल में दाखिल हुईं, दोनों को सिनेमा गाइड ने जब उनकी टिक्टों पर लिखी सीटों के नम्बर के अनुसार पहुंचा दिया तो आपस में ना-नुकर होने लगी।

बात दरअसल यह थी कि दोनों को बीच के छुटे हुए रास्ते के कौने पर सीटें मिली थीं और उनसे तीसरी सीट यानी कि दाहिनी तरफ वाली सीट खाली पड़ी थी और चौथी सीट पर कोई साहब बैठे थे और सारी लाइन भी इसी तरह औरतों मरदों से भरी हुई थी।

और दोनों में से कोई भी दूसरी सीट पर इस वास्ते बैठना मन्जूर नहीं कर रही थी कि पता नहीं वहाँ कौन आकर बैठे। चूंकि दोनों अन्दाजा यही लगाए हुए थीं कि एक ही सीट होने की वजह से आएंगे तो कोई महाशय ही, क्योंकि एक अकेली औरत कम ही आती है, लेकिन हार कर बेचारी नौशाबा ही बैठ गई दूसरी सीट पर और बाँयी तरफ कौने की सीट पर मुमताज़ बैठ गई।

पिक्चर शुरू होने में अभी कुछ देर बाकी थी, दोनों ही अपनी २ बातें ब्यान कर रही थीं, आखिर औरतजात जो थी, जुबान को चुप तो रख ही

नहीं सकती, चाहे ट्रेन में सफर कर रही हो या बस में, बातें जरूर होंगी, और होंगी भी बेसिर पैर की—, एक कहेगी आज तो हमारे यहाँ 'बताऊं' की सब्ज़ी बनी थी तो दूसरी फरमाएगी हमारे यहाँ बैंगन की सब्ज़ी बनी थी।

और यह दोनों भी इसी तरह एक दूसरे की तरफ मुंह किए बातों में मस्त थीं, और तभी सिनेमा गाइड ने किसी को हाथ से इशारा करते हुए कहा—'दैट थर्ड वन'······,कह कर वो आगे बढ़ गया।

और आने वाले आगन्तुक पर जब दोनों की निगाह उठी मुमताज़ झट से खड़ी हो गई—, दोनों हाथ जोड़कर आश्चर्य और खुशी के मिले लब्ज़ों में बोलीं—ओह ! आप···,

आने वाला लेखक ही था।

तो नौशाबा ने भी खड़े होकर शिष्टाचार का फर्ज निभाया।

सीट पर बैठने के लिए जब वह आगे बढ़ा तो मुमताज़ ने नौशाबा को हल्का सा झटका देकर उसे कोने वाली सीट पर बैठने का इशारा किया, तो नौशाबा शरारती निगाह से मुस्करा पड़ी।

अब लेखक के बायीं तरफ मुमताज़ बैठी थी और कोने वाली सीट पर नौशाबा विराजमान थी।

तब मुमताज़ ने अपनी नंगी गोरी बाज़ू लेखक के कन्धे पर से सटाती हुई बोली—कभी २ इत्तफ़ाक़ भी कितने अजीब तरीक़े से हो जाते हैं। देखिए न एक ही दिन एक ही पिक्चर और फिर सीटें भी क़रीब २ मिली हैं।

सीटें तो क्या कभी इन्सान की मुलाक़ात किसी अनजान से इस इत्तफ़ाक़ से हो जाती है कि वो फिर हमेशा हमेशा के लिए एक हो जाते हैं, सब मिलन संयोग पर ही निर्भर है और करने वाला सब परमात्मा ही होता है।

लेकिन बाद की आधी बात मुमताज़ के कानों में पड़ी ही कहाँ थी। वो तो पहले ही आधी बात को सुनकर उस पर ग़ौर फरमा रही थी।

तभी हाल की बत्तियां गुल हो गईं और पिक्चर आरम्भ हो गई, तीनों ही खामोशी से पिक्चर देख रहे थे, कभी २ बीच में मुमताज़ पर्दे पर होने वाली हलचल को देखकर कुछ बात कह देती तो कभी नौशाबा से कुछ इसी तरह की बात कर लेती।

पिक्चर ख़त्म होने पर नौशाबा दोनों से विदा लेकर अपने बंगले पर चली गई तथा लेखक और मुमताज़ दोनों टैक्सी से मुमताज़ के घर पहुंचे ।

यद्यपि नौशाबा ने अपनी कार द्वारा दोनों को वहाँ तक छोड़ने को कहा भी था लेकिन कुछ मुमताज़ के ना करने के अन्दाज पर और कुछ अपनी अक़्ल से सोचकर वो चुप हो गयी ।

लेखक की मुमताज़ की 'आपा' ने काफी आवभगत की और साजिद ने कई रोज़ से न मिलने का शिकवा फरमाया और उसके अब्बा हुज़ूर ने उसकी कामयाबियों पर सराहना की ।

रात के ग्यारह बजे वो अपने आशियाने पर लौटा ।

१३

लेखक जैसे ही साजिद के यहाँ पहुंचा बरामदे में उसकी मुलाकात मुमताज़ की आपा से हुई, कहने लगी—तुम्हें तो सच मैं आज सुबह से ही याद कर रही थी, सोचा था अगर आज भी न आया तो किसी के हाथ ख़बर पहुंचाऊंगी ।

'क्यों, कोई काम था⋯⋯', पूछा उसने और दोनों ही अन्दर हॉल में आ सोफे पर आमने सामने बैठ गए ।

नहीं काम तो कुछ नहीं था, बल्कि यह कि साजिद और उसके वालिद साहब दोनों ही बिजनिस के किसी सिलसिले में पूना गए हुए हैं, और आज तीसरा रोज़ हो गया है, इतने बड़े बंगले में हम दोनों जनी ही हैं, और फिर रात का मामला ही और होता है बड़े शहर में, और साथ ही 'दीनू' (घर का एक अधेड़ उम्र का नौकर) भी छुट्टी लेकर अपने घर गया हुआ है, वरना हमें उसका भी बड़ा सहारा होता है, ज़रा कुछ ही बड़ी उम्र का है न, फिर घर का सबसे पुराना नौकर है, और इस वास्ते मुझे उनके कमरे में सोना पड़ता

है, क्योंकि बिजनिस वालों के यहाँ बीस तीस का कैश तो पड़ा ही होता है, और फिर तुम जानते हो·····वो मुस्कराकर बोली—उनका कमरा तो फर्म का ब्रांच औफिस है, बैंकों के काग़ज़, एकाउन्ट के रजिस्टर 'बहियाँ सब यही पड़ी हैं।

तो कब तक लौटेंगे—वे,

अब तो वो शायद कल ही आ जाएंगे, क्यों क्या कुछ कहना था तुम्हें साजिद से।

नहीं कहना क्या था, आज 'ड्रीम होटल' की 'ओपनिंग सैरेमनी' थी, यही सोचकर आया था कि अगर साजिद का प्रोग्राम हुआ तो मैं भी चला चलूंगा, क्योंकि जिसने यह होटल खोला है वो हमारा क्लास फैलो था, और वैसे भी हमारी कुछ अच्छी पटती थी उससे, इस वास्ते लिहाज की वजह से कुछ शरम आती है न जाने पर।

हां इन्वीटेशन कार्ड तो यहाँ भी आया था पर जाये कौन, दोनों में से कोई भी तो यहाँ नहीं है।

इनकी बातों की आवाज़ को सुनकर मुमताज़ ने अपने कमरे की गैलरी पर खड़े होकर देखा तो लेखक को अपनी अम्मी के साथ बातें करते देख उसके चेहरे पर रौनक़ खेल उठी।

झट से आँचल को सम्भालकर वो तेजी से सीढ़ियाँ उतरते हुए सामने आ गयी, आदाब के लिए अदा से गोरा सा हाथ उठा और नज़ाकत से पलकें थोड़ी नीचे झुकीं उसके सामने बैठती हुई बोली—कब आए आप—,

अभी महज दस पन्द्रह मिनट पहले।

तो मुमताज़ की अम्मी रुक गईं, बात फिर जारी करते हुए बोलीं—तुम ही चले जाओ वहाँ हर एक से मेलजोल रखना अच्छा होता है।

लेकिन मेरा इरादा तो पहले ही नहीं था, और फिर साजिद भी यहाँ नहीं है, साथ ही मुझे तो वैसे ही ऐसी जगह जाते हुए खामखवाह बोरियत होती है।

कहाँ मम्मी? जानते हुए भी अनजान बन कर पूछा मुमताज़ ने।

वहीं····ड्रीम होटल की 'ओपनिंग सैरेमनी' की बात कर रहे थे।

और सुनकर मुमताज लेखक की तरफ देखकर पलकें झपका के कहीं और देखने लगी।

तब खामोशी को तोड़ते हुए उसकी अम्मी बोली— तो ऐसा करो, तुम और मुमताज चले जाओ, दोनों का साथ भी हो जाएगा और दोनों तरफ से बात भी निभ जाएगी।

सुनकर मुमताज के दिल में मधुर घण्टियां सी बज उठीं, और उस को जवाब देने का मौका दिए बगैर उससे पहले ही बोल उठी—प्रोग्राम का टाइम क्या लिखा था उसमें·····मम्मी ! हाय, क्या भोलापन था उसके पूछने के अन्दाज में।

शायद साढ़े सात का लिखा हुआ था·····, इशारा लेखक की तरफ था, पूछने को।

जी····,

खैर अभी तो सात बजने में भी कुछ मिनट बाकी हैं, और तब तक तो मैं तैयार भी हो जाऊँगी कह कर मुमताज ऊपर अपने कमरे में दौड़ गई।

घूमने फिरने की बातों में तो बहुत होशियार है, कहा उसकी मम्मी ने।

और इसी तरह दोनों फिर इधर उधर की बातों में उलझ गए, बातें होती ही ऐसी बला हैं कि वक्त को इस तरह गुजार देती हैं कि पता भी नहीं लगता।

इधर ये अपनी बातों में मस्त थे और उधर मुमताज हसीन ख्वाबों के समुद्र में उठती भावनाओं की लहरों के साथ ख्यालों की नाव में बही जा रही थी, और मेकअप करने में भी खोयी हुई थी। कह रही थी अपने आप से, मर्द भी बड़े चालाक होते हैं, बातें और बहाने बनाना तो इनसे सीखे कोई, यूं भोले से बनकर बात करते हैं जैसे दुनियादारी का तो इन्हें कुछ पता ही नहीं होता बेचारों को, बड़े सीधे होते हैं।

समझाने लगी अपने आपको, साजिद के न होने पर कह दिया हम भी नहीं जायेंगे ताकि अम्मी ही अपने आप कह दें—जा मुमताज को ही ले जा,

बात यूं न कही तो यूं कह ली, कान किसी भी तरह पकड़ ले, चाहे सीधे से तो चाहे घुमाकर। मक़सद तो वही है।

पूछने लगी अपने दिल से ·····, मेरे साथ जाने की बात सुनकर फिर चुप क्यों हो गये वो, फिर क्यों नहीं कहा कि अब मैं नहीं जाऊँगा, इस वास्ते न, कि दिल की बात जो पूरी हो गई थी, वरना तो फरमा रहे थे, मुझे तो बोरियत होती है ऐसी जगहों पर जाते हुए, तो फिर अब वो बोरियत दूर हो गई क्या, खुद ही मुस्करा पड़ी·····, कहने लगी—साथ मिल जाये गर हसीनों का, तो मंज़िल की परवाह क्या ?

और जल्दी से 'टिप-टॉप' होकर वो नीचे आई।

अम्मी उसकी और लेखक दोनों ही बातें करने में व्यस्त थे।

उसके आते ही वह भी खड़ा हो गया और मुमताज की 'आपा' भी, अपनी बेटी का इतना निखरा हुआ रूप देखकर वो अपने आप पर गर्व करने लगी, चांद सा गोरा चेहरा और गालों पर गुलाल सी लाली खेल रही थी, काली-काली लम्बी पलकों वाली कजराली आंखें सितम ढा रही थीं, फड़फड़ाते पतले २ सुर्ख होठ कमल की पंखुड़ियों में खूबसूरती चुराकर लाये थे शायद। और आधुनिक ढंग पर बँधे बाल तो उसके सौन्दर्य में चार चाँद लगा रहे थे। सिल्क की बेशुमार कीमती साड़ी जो तेज़ रोशनी में सितारों की तरह झिलमिला रही थी, ऐसे लग रहा था कि जैसे वो शीशे की गुड़िया हो।

कहने लगीं वे—मौसम बादलों से ढका हो तो वक्त का तो अन्दाज ही पता नहीं लगता, अभी सवा सात बजे हैं और लगता ऐसे है, जैसे रात काफी हो गई हो।

दोनों को साथ २ देखकर उन्होंने अपनी नजरों में तोला इन दोनों को·····
·····मगर किस निगाह से और किस मक़सद के एवज़ में, यह उनका दिल ही जाने।

दोनों ही हॉल से बाहर आकर बरामदे को पार करते हुए बाग़ के बीचों-बीच बने लान पर चलने लगे। जैसे ही बाग़ के बीच में बने 'फाउन्टेन' के पास पहुँचे, मुमताज ने बढ़कर उसके चारों ओर लगी गुलाब की पौध से हाथ बढ़ा

कर एक खिला-अधखिला फूल तोड़ लिया उसने, और वापिस उसके पास आती हुई बोली—फूल भी एक कितनी खूबसूरत चीज बनाई है खुदा ने, और उसने उसके हाथ में थमा दिया उसको।

और वह फूल की पंखुड़ियों को अंगुलियों से संवारता हुआ बोला—मेरे ख्याल से तो खुदा ने खूबसूरती से ज्यादा कोमलता पर ध्यान दिया होगा, कितना नाजुक जिस्म होता है फूल का।

सुनकर मुमताज़ चुप हो गई, उसके तो कहने का आशय ही कुछ और था, पर कह न पाई दिल की बात, वरना मेकअप करते वक्त उसे बालों का सूनापन ध्यान आया था और दिल ने इस बात को सोचकर एक जवाँ अंगड़ाई ली थी कि फूल की खूबसूरती बयान करके वो अपने बालों में लगाने को कह देगी या खुद उसके कोट के काज में अटका देगी·······कितना मधुर सपना था यह उसका। पर उसकी बात सुनकर उसका दिल अपनी दिलेरी न दिखा सका और बात दिल की परतों तले ही खिसक कर इक अरमान बनकर रह गयी।

बात को मौजूदा हालत पर लाती हुई बोली—'कार तो वे लोग ले गये हैं।'

'लेकिन टैक्सियाँ तो साथ नहीं ले गये······' लेखक ने उसकी बात का छोर पकड़कर पूरी कर दी।

और मुस्करा पड़ी मुमताज़ इक अदा से।

और नज़र थी उसकी उसके हाथ में खेलते हुए उस खुशक़िस्मत फूल पर।

'ड्रीम होटल' के सामने ही दोनों टैक्सी से उतरे, तो देखा एक अच्छी खासी रौनक नजर आ रही थी वहाँ, छोटे २ रंगीन बल्बों से तिमंजली इमारत की सारी ग्राउंड ढकी हुई थी, होटल के सामने बना छोटा सा बग़ीचा रोशनी में जगमगा रहा था। इमारत की बीच की मंजिल पर ट्यूब से लिखा 'Dream Hotel' का साइनबोर्ड काफी बड़े साइज में था।

जैसे ही दोनों अन्दर दाखिल हुए, गेट पर ही उसका दोस्त, यानी कि

होटल का प्रोप्राइटर मि० अशफाक बड़े अन्दाज से उससे लिपटकर मिला। बोला—मुझे यक़ीन नहीं था कि तुम आओगे, इसी वास्ते मैंने स्पेशली तुम्हारे दौलतखाने पर कार भेजी, और जब पता लगा कि जनाब वहाँ हैं नहीं तो मैं पूरी तरह निराश हो गया कि अब आना मुश्किल है आपका, और फिर शायद आपको याद रहा भी हो या नहीं।

और उससे जवाब पाये कि इससे पहले उसकी नजर पास खड़ी मुमताज़ पर पड़ी तो लेखक की तरफ प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हुए पूछने लगा—आप······?

ओह ! यह है अपने साजिद साहब की 'सिस्टर'······।

'रीयली ! ···, आई० एम० वैरी ग्लैड टू मीट यू······' कहा उसने और अपना इन्ट्रोडैक्शन देते हुए बोला—मुझे मौहम्मद अशफाक़ अहमद कहते हैं और साजिद तो मेरा बहुत 'फास्ट फ्रेन्ड' है···· क्या आपका नाम जान सकता हूँ··· अगर आपको ऐतराज न हो।

जी ··, मुझे मुमताज बानो कहते हैं··· ···उसने मुस्कराहट के साथ बड़ी फ्रेन्कली जवाब दिया। कहने लगी—मुझे भी आपसे मुलाक़ात करके बहुत खुशी हुई।

बजाय लेखक से पूछने के उसने मुमताज़ से सवाल किया, 'साजिद साहब क्यों नहीं आये'—, और खो गया मुमताज की झील सी गहरी आँखों में······।

और मुमताज ने भी गुलाब सी मुस्कराहट अपने चेहरे पर लाते हुए. अपनी कमान सी भौंह पर नजर का तीखा चढ़ाकर कुछ ऐसे बांके निशाने से मारा कि उसके दिल के पार हो गया, अपने सुर्ख लबों पर हल्के से जीभ फेरते हुए बोली—वो दो तीन रोज से वालिद साहब के साथ किसी काम से पूना गये हुए हैं।

तभी तो नहीं आ सका कोई भी, शायद आप जानती हों, आपके वालिद और हमारे वालिद साहब काफी पुराने और जिगरी दोस्त हैं।

जी हाँ, कई बार घर में आपके वालिद साहब का और आपका क़िस्सा छिड़ा है, पर आपसे मिलने का मौक़ा आज पहली बार मिला है।

शुक्रिया, बन्दा नवाज़ की तरफ से, उसने अपनी टाई की नॉट को ठीक करते हुए अपने क़ीमती सूट को संवारा।

लेखक इन दोनों के बीच हो रही बात को और बात करने के अन्दाज को चुपचाप देख रहा था, और साथ ही गुलाब के उस फूल की नर्म पंखुड़ियों को भी संवार रहा था।

बात को अगला मोड़ देते हुए अशफाक़ बोला—क्या यह फूल हमारे लिए लाये हो..........या अपना दिल बहलाने को......, मुझे मालूम है कि तुम्हें प्रकृति से बहुत ज्यादा प्यार है।

लेकिन प्रकृति की बनाई हुई चीजों को हमें नष्ट करने का कोई हक़ भी नहीं होता और फिर फूल..........जो इतना नाज़ुक, इतना मासूम और हसीन होता है..... इसको मसलना तो वाक़य ही एक गुनाह है, .. , खुद ही सोचिये, जिसका जिस्म इतना नर्म है, उसका दिल कितना नाज़ुक होगा, और मेरे ख्याल से यह उसी के पास रहना चाहिए जो इसकी क़द्र कर सके और हिफा-ज़त से रख सके—, कहकर लेखक ने फूल को उसके कोट के काज में लगा दिया।

तो मुस्कराते हुए वो बोला—तो क्या आपको यक़ीन है कि मैं इस खूबसूरत फूल की हिफाज़त कर सकूंगा।

लेकिन मेरे ख्याल से यह फूल यहाँ लगकर अपने निखार के रंग पर आ गया है तो अब हिफाज़त करना तुम्हारा फर्ज है।

बहुत खूब, कहा उसने—बात तो वाक़य ही तौलकर करते हो तुम कि लाजवाब हो जाना पड़ता है। अच्छा, बैठिए न आप लोग ....।

बैठते ही इनके 'रिस्पैशन सरवेन्ट' दो कोका कोला पेश कर गया।

मुंह से मुँह लगाए दोनों की नजरें होटल की 'डैकोरेशन' का निरीक्षण कर रही थीं। काफी बड़ा सा हॉल था वह, जिसके सामने ही कुछ ऊँचाई पर स्टेज बनी हुई थी। चारों तरफ सजा हुआ फर्नीचर आला दरजे का था, दीवारों पर लगी मरकरी की ट्यूबें एक रंगीन नजारा पेश कर रही थीं। सब के कपड़ों के रंगों में इन ट्यूबों की रोशनी के मिश्रण से एक नया ही रंग

पैदा हो गया था, झिलमिलाते कपड़े गिरगिट की तरह रंग बदल रहे थे, मचलती जवान तितलियाँ बड़ी अदा और लचक से इधर-उधर मंडरा रही थीं, भीनी २ खुशबू से सारा हॉल महक रहा था। हसीनों की नाजुक हंसी और क़हक़हे हर तरफ गूंज रहे थे।

खाने पीने का इन्तजाम बीच वाली मंजिल पर किया गया था। सबको ऊपर चलने को कहा गया बड़े अच्छे ढंग से प्रबन्ध था।

प्लेटों और चम्मचों की खनखनाहट का ही बोलबाला था हर तरफ, और साथ ही हल्के २ क़हक़हे और हल्की २ हंसी का बाजार भी गरम था, आखिर लड़कियों की जुबान कैसे चुप रह सकती है। कचर-कचर ऐसे हो रही थी जैसे ढेर सारी चिड़ियाँ आपस में लड़ती हुई चहक रही हों। 'सरवेन्ट्स' भाग दौड़ कर बड़ी तेजी और होशियारी से 'सर्विस' कर रहे थे। खुद अशफ़ाक़ भी हर एक को खुश करने की कोशिश कर रहा था।

और जब खाने पीने का दौर खत्म हुआ तो उसके बाद अशफ़ाक़ के कुछ मित्रों ने चन्द मिनटों के लिये उसकी कामयाबी और खातिरदारी के शुक्रिया में कुछ लब्ज़ कहे और स्वयं उसने भी कुछ मिनटों के लिए सबके आने के अहसानमन्दी में कुछ लब्ज कहे।

इसके बाद फिर से 'फस्ट फ्लोर' पर नाच गाने यानी मनोरंजन का प्रोग्राम पेश होना था।

और, सब लोग जब नीचे आकर बैठ गए तो सामने की स्टेज पर संगीत की तरंगें फूटने लगीं।

संगीत की आवाज़ में कुछ ऐसा मिठास और मस्ती होती है कि इन्सान झूमने लगता है, संगीत की लय कुछ तेज़ होती जा रही थी खुद साज बजाने वाले भी अपनी तानों पर झूम रहे थे, एक से एक मधुर आवाज़ वाला साज था वहां और साथ ही बजाने वाले भी।

तभी 'स्टेज इन्चार्ज' ने माइक पर आकर कहा, आज ड्रीम होटल की 'ओपनिंग सैरेमनी' जिस खुशी से मनाई गई है उसी महकते आलम में पेश है 'एन्टरटेन्मैन्ट' के प्रोग्राम का बेहतरीन तोफा......'मिस बामला' का दिलरुबा

डांस······ 'ड्रीम' सी इस खूबसूरत जवानी की दिलरुबा अदाओं पर फ्रांस के मशहूर 'मैलोडियस होटल' में एक नौजवान शहीद हो गया ····, देखिएगा आप भी ···मगर दिल को सम्भाल कर ।

एक हल्की सी मुस्कुराहट फैल गई हाल में ।

तभी साज की आवाज़ तेज होते ही तबले की ताल पर थिरकती हुई एक खूबसूरत गोरी सी भूरे बालों वाली हसीना आन पेश हुई, संगीत ने एक अंग्रेजी धुन पकड़ ली, और वो नाजनीन आइने से चमकते फर्श पर फिसलने लगी ।

ओफ ! ड्रेस भी क्या पहन रखी थी उस कातिल ने, 'लेडीज स्वीमिंग ड्रेस' की तरह 'अन्डर वियर' उसकी जांघों से चिपका हुआ था और बाकी बदन पर कपड़ों के नाम पर सिर्फ एक झीनी सी हल्के रंग की बाडिज थी पर वो भी इस अदा से बंधी हुई थी कि उसके एक तिहाई गुलाबी उरोज उसकी सीमा से बाहर थे, हाथों में कोहनी तक के दस्ताने पहन रखे थे उसने ।

देखते ही जवानों के दिल तड़प कर रह गए, औरत के जिस्म के यह खूबसूरत अंग भी बड़ी खुशनसीबी की घड़ियों में नजर आते हैं कभी, मचलते दिल को थामा हुआ था किसी तरह जवान छोकरों ने, लेकिन 'एडवान्स फैमिली' से 'बीलोंग' करने की वजह से एक बार वो अपने मजरूह दिल से कह न सके 'हाय' !

सचमुच 'ड्रीम सी' खूबसूरत थी, वो मरकरी की ट्यूबों की रोशनी में उसके जिस्म का एक २ अंग स्पष्ट दीख रहा था, घुंघराले भूरे २ रेशमी बाल पश्चिमी सभ्यता के अनुसार 'बाबकट' फैशन से कटे हुए थे, छलकता हुआ यौवन गजब का क्या सितम ढा रहा था उसका । उभरा हुआ सीना और फिर इस आलम में, कितना खूबसूरत लग रहा था यह जवानों के दिलों से पूछता कोई उस वक़्त ।

नज़र हटाये न हटती थी वहाँ से ।

और वह ज़ालिम थी कि 'इंगलिश ट्यून' पर अपनी कमर को लाजवाब लचकाव देते हुए अपने सीने को और अदा से उभारते हुए अपनी नंगी बाहों

को ऊपर उठा देती, संगमरमर की वो जानदार और शानदार प्रतिमा अपने नंगे जिस्म का हर अंग बड़ी बेशर्मी से उभार रही थी, मगर इसे आजकल बेशर्मी कहाँ कहा जाता है बल्कि सभ्यता का जामा पहनकर सारा ऐब ढक दिया जाता है।

लड़कियाँ भी तो बड़ी बेशर्मी से डांस को बड़ी तन्मय होकर देख रही थीं, मुमताज़ ने एक बार शरमाई नज़र से लेखक की तरफ देखा और अचानक लेखक की निगाह भी उससे टकरा गई, तो दोनों ही की निगाह झुक गयी।

तबले की थाप बड़ी जोर की थी और फिर संगीत की आवाज़ भी कुछ कम मस्ती लिए हुए न थी, तो फिर 'मिस वायला' ही किसी से कम क्यों रहती। शराब के नशे में झूमती सी वो अदाएं पेश किए जा रही थी, अपने बालों को बड़े स्टाइल से गालों पर लाकर पीछे झटक देती, और सारा शरीर लचक सा जाता।

और इस मस्ती को दुगना करने के लिये शराब की बोतलों की सीलें खुल गयीं, रंगीन जाम खनक उठे, छलकती जवानी का शबाब मचल रहा था और देखने वाले शबाब की मदहोशी को शराब की जलन से मिटा देना चाह रहे थे, सिगरेट का कश जवान इतना लम्बा लगाते कि धुए से दिल फुक रहा था, सिगरेटों के धुंए के बादलों से सारा हाल भरा हुआ था।

सचमुच यह सब एक सपना सा लग रहा था।

तभी अशफाक़ मुमताज़ के पास आकर बोला—'लीजिए न, एक पेग।

'नो, 'थैंक्स' 'आई डोन्ट ड्रिन्क'।

खैर आपके लिए तो एक स्पेशल 'थ्री एक्स' का लाना पड़ेगा—, उसने लेखक की तरफ देखते हुए कहा।

नहीं, रहने दो, मूड नहीं।

छुपाओ मत, मैं जानता हूँ सब, तुम्हारी यह बहानेबाज़ी।

कहकर वो चला गया। मुमताज़ लेखक के चेहरे की तरफ देख रही थी, पता नहीं क्या सोच रही थी।

और उधर वो नाज़नीन स्टेज से उतरकर अब हॉल में लगी मेजों के बीच

यानी कि बैठे हुए लोगों के इर्द-गिर्द आकर अपनी अदाए बिखेरते हुए मंडराने लगी, बैठे हुए किसी जवान के कन्धे से अपने नंगे बाजू सटा देती तो किसी के सामने आकर अपने आपको कमान सा लचका देती, तो कोई उसकी अदा पर फिदा होकर उसके चेहरे पर धुएँ का बादल बिखेर देता तो वो बड़ी बांकी अदा से अपने गालों पर छाये बालों को झटका देकर पीछे कर देती। जैसे वो जानती थी कि अक्सर आदत होती है सिगरेट पीने वाले दिलवालों कि जवान छोकरी का चेहरा अपने नजदीक पाकर उस पर धुएँ का गुब्बार छोड़ना अपनी चाल समझते हैं।

तभी 'सर्विस सरवेन्ट' ने तश्तरी से एक कोका कोला की बोतल और एक पैग लाकर मेज पर रख दिया।

मुमताज ने कोका कोला की बोतल अपने आगे सरकाते हुए कहा—यह पीने की आदत आपकी भी है।

आदत थी तो नहीं पर बन गई है।

और वो हसीन परी उसकी टेबल के नजदीक आ गई थी, अपने नंगे बदन को थरकाते हुए म्यूजिक की ट्यून पर उसने अपने नुकीले सीने को बांहें ऊपर उठाकर इस क़हर सी अदा से उभारा कि बेशर्मी वो दिखा रही थी और गालों पर पसीना मुमताज के आ गया, और वह शोख तितली अपना एक-एक अंग तबले की जोरदार थाप और म्यूजिक की जानदार आवाज़ पर फड़का रही थी।

जिधर वो मुड़ती सबकी नजर उधर ही घूम जाती, किसी की भी निगाह उसके बदन से हटने को न चाह रही थी, शायद चेहरे से ज्यादा लोगों की आँखें उसके जिस्म पर टिकी थीं और शायद नाम मात्र को उसके बदन पर टिके हुए झीने कपड़ों को भी चीरकर उनकी निगाहें छुपे हुए जिस्म के हिस्सों को देखने की कोशिश कर रही थीं।

वो गोरी-गोरी नंगी जाँघें लोगों की नजरों का निशाना बनी हुई थीं और फिर कमर की लाजवाब कटाई...... एक 'रोमांटिक' और गुदगुदी पैदा करने वाला कारण बनी हुई थी। सीने की सुडौल उभारों को संभालने का असफल

प्रयत्न करती हुई वो बेचारी बेकसूर बाडिस ख्वामख्वाह जवानों की निगाहों में चुभ रही थी, लेकिन जब 'बायला' खुद ही बदन को सुकोड़ते हुए झुककर अपने उरोजों को बिलकुल स्पष्टतः दर्शा देती तो भला बेचारी बाडिस का इसमें क्या कसूर, और यह हरकत वो एक दफा नहीं बल्कि कितनी बार कर चुकी थी, आखिर मर्द मरता किस चीज पर है और फिदा किस अदा पर होता है वो अच्छी तरह जानती थी, और हाथ को ऊपर उठाते वक्त उसका हाथ नंगे पेट से ऊपर उठकर उरोजों की गोलाई और उभार को छूता हुआ जब सीधा हो जाता तो जवानों का दिल कसक उठता, पता नहीं उसकी इस हरकत से उनके दिल में क्यों सिहरन सी पदा हो जाती।

शराब के रंगीन जामों से हुई लाल-लाल आंखों से गुलाब की सी उस गुलाबी कली के शबाब को भी गोगबाग जाम में घोलकर पी जाना चाहते थे, उसी के रूप और जवानी का नशा ही इतना जबरदस्त था कि एक घूंट गले से उतार लेने पर दूसरा घूंट लेने को नजर नीचे न झुकाना चाहती थी पैमाने पर, इस वास्ते कि कहीं इस पल भर में वो कोई ऐसी अदा न बिखेर दे कि उनकी तरसती आँखें देखती रह जाएँ।

फिसलती, थिरकती वो शोख गोरी हसीना फिर स्टेज पर पहुंच गई।

काफी देर तक उसने अपनी कातिल अदाओं से लोगों को अपनी तरफ आकर्षित किये रखा।

और जब यह डान्स खत्म हुआ तो टाइम करीब सवा ग्यारह का हो चुका था।

प्रोग्राम भी अब खत्म कर दिया गया था।

अशफाक गेट पर खड़ा सबको विदाई दे रहा था।

मुमताज और लेखक भी गेट की तरफ बढ़े, उसको शुभ कामनाओं की भेंट करते हुए दोनों ने जाने की इजाजत मांगी।

मुस्कराहट से जवाब देते हुए उसने लेखक को 'कष्ट के लिए धन्यवाद' जैसे स्टेरटाईप शब्द कहे और मुमताज की तरफ अग्रसर होते हुए बोला—आइए न कभी हमारे यहां, और फिर यह होटल तो आपका अपना ही है।

जब कभी भी आपको वक्त मिले कभी आने की तकलीफ करके हमें कुछ खिदमत करने का मौका दें।

भला यह क्या आप फरमाते हैं, कोई गैर वाली बात तो है नहीं, अच्छा अब इजाज़त दें......, वक्त बहुत हो चुका है।

कह कर दोनों आगे बढ़ गये।

होटल की बाउन्ड्री से जैसे ही दोनों बाहर निकले, मुमताज़ ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा—बादल तो बिल्कुल काले स्याह छाये हुए हैं, और हवा भी ठण्डी चल रही है।

खैर, टैक्सी स्टैण्ड से कोई न कोई टैक्सी मिल ही जाएगी, कहकर दोनों तेजी से कदम बढ़ाने लगे, मुमताज़ ने अपनी चाल की रफ्तार कुछ तेज करके लेखक के साथ २ रहने का प्रयास करते हुए बोली—टैक्सी स्टैण्ड भी तो अभी कम से कम आधा मील दूर है यहाँ से, और रात के वक्त फोन भी तो नहीं किया जा सकता कहीं से भी। खुदा करे तब तक तो बारिश न आए।

इन अलफ़ाज़ों का उसके मुँह से निकलना ही था कि हवा के एक तेज झोंके के साथ छम २ करती बारिश की मोटी २ बूंदें टप २ गिरने लगीं।

ओफ या खुदा........, वो बोली—बारिश को भी अभी आना था।

आना ही तो था उसे...और जब उसने भी बुला ही लिया तो वो बरसती भी क्यों न।

बादल अपनी जीत पर गरजने लगे और बिजली चमक २ कर इठलाने लगी, मूसलाधार बारिश शुरू हो गई।

दोनों ही फुटपाथ की साइड पर ही लगे एक पेड़ के नीचे आने को तेजी से कदम बढ़ाने लगे....., पास ही उसके स्ट्रीट पोल भी चमक रहा था........, दो मोटी २ ट्यूबें रोशनी बिखेर रही थीं।

दरख्त के पास पहुँचते भी यह दोनों काफी भीग गए थे, मूसलाधार बारिश में पेड़ के नीचे अपने आपको बरसात से बचाने का असफल प्रयत्न कर रहे थे, ये दोनों। पर बारिश इस कदर जोर पर थी और साथ ही हवा के तेज झोंके मिलकर पूरी तरह भिगोने की कोशिश कर रहे थे।

पेड़ भी तो पानी से टपकने लगा था।

मुमताज़ आँधी और तूफान से उलझ कर बिखर गये भीगे बालों को गालों पर से हटाती हुए बोली—अगर पता होता तो वहीं होटल से ही फोन करके टैक्सी मंगा लेते।

लेकिन इस बात का पता थोड़े ही न था कि बारिश इस तरह एक दम अचानक हम पर हमला कर देगी।

बारिश के तेज झोंके थपेड़ों की तरह आ रहे थे, कभी इधर से तो कभी उधर से, सारी सड़क पर चन्द मिन्टों में ही पानी, नदी की तरह बहने लगा।

एक तो यह "एरिया" ही ऐसा कि ट्रेफिक इधर से कम ही गुजरता था और फिर रात के वक्त और ऐसे वक्त तो गुजरना बिल्कुल ही बन्द था, सुनसान सी पड़ी थी सड़क सारी, साँय-साँय करती हवा अपने पूरे जोबन पर थी।

दोनों ही पूरी तरह भीग चुके थे, मुमताज की साड़ी पानी से भीगकर और भारी हो गई। यूं तो भीग कर, उसके जिस्म से चिपका हुआ ब्लाउज भी उसे तंग कर रहा था आखिर पहनती भी तो इतना चुस्त हैं। जैसे कभी उतारना ही न हो।

सुनसान सड़क को देखकर मुमताज का दिल धक्-धक् सा कर रहा था। धड़कनों की वजह एकान्त में लेखक के साथ होने की नहीं थी बल्कि अंधेरी रात और फिर सूनापन चारों तरफ फैला हुआ था......इसी कारण वो घबरा रही थी।

पर एक आदमी का साथ होने से वो कुछ चिन्तित भी न थी।

कन्धे पर भीगे आंचल को संवारते हुए मुमताज ने गोरे गालों पर पड़ रही बारिश की फुहार को हाथों से पोंछा, काश! लेखक मुमताज के हर हावभाव को ध्यान से देखता......, कितनी खूबसूरत लग रही थी वो इस आलम में...., बारिश में धुलकर वो यूं लग रही थी जैसे वो चाँदनी में नहाकर, आयी हो, अपनी कमलनाल सी गोरी २ उंगलियों में बार २ पानी की बूंदों को गालों

पर से मिटाती लेकिन वो बेशरम शबनम की सी बारिश की बूंदें फिर उसके गालों को चूमने लगतीं, और बालों की उलझी कड़ियाँ बड़ा परेशान कर रही थीं, उसे।

बिजली की जोरदार गड़गड़ाहट में मुमताज सिहर गई, चमक इस कदर तेज और जोर से हुई थी कि गरज काफी देर तक आसमान में गूंजती रही।

डर कर वो लेखक के बिल्कुल करीब आ गई थी, उसकी बाँह पर हाथ रखते हुए बड़े बोझिल स्वर में बोली—जाने यह बारिश अब कब रुके .... ।

और लगता था उसकी बेताबी और बेकरारी का पैमाना छलक उठा था, आवाज में यह भारीपन.........खुद का करीब आना, और फिर इस तरह उस की बाजू को छूना, इसके मायने थे कि वो सब्र नहीं कर सकी थी।

तब लेखक ने धीरे से कहा—क्या कहा जा सकता है, और उसने अपनी बाँह सीधी कर ली।

हवा की साँय-साँय बड़ी अजीब सी लग रही थी और साथ ही वातावरण में एक ठण्डक पैदा हो गई थी। सरसराती हवा के तेज झोंके बारिश की बेलगाम बूंदों के साथ खिलवाड़ कर रहे थे, पास ही सड़क के किनारे लगा स्ट्रीट पोल भी मध्यम हो चला था कोहरे-से में छुप कर, बारिश का वेग अब भी जोरों पर था।

मगर लगता था यह भीगी बारिश यह ठण्डक मुमताज के बदन में आँच पैदा कर रही थी, लगता था कि जैसे वो सुलग रही हो, और शायद वो सोच रही थी कि लेखक इस तरह खामोश क्यों है, यह भीगी वादियाँ यह एक दम सूनापन और फिर इस आलम में इतनी करीबी ...... वो इन बातों का और इस मधुर मौके का फायदा क्यूं नहीं उठा रहा, वो क्यूं खामोश सा खड़ा है, इस तरह का उसका बेरुखापन शायद मुमताज को अखर रहा था, लेकिन मालूम होता था कि उससे कहीं ज्यादा उसका हुस्न पिघल जाने को बेताब था। सरसराती हवा का कम्पन उसके बदन में सिहरनसी पैदा कर रहा था, अपनी लड़खड़ाती टाँगों पर अपना जिस्म सम्भालकर लेखक के जरा और

करीब आके उसे छूने की कोशिश करते हुए अपने भीगे चेहरे को उठाकर सुलगे होंटों को फड़फड़ाते हुए बोली—जाने क्यों...... मुझे डर सा लग रहा है इस जगह पर यूं अकेले में।

डर किस बात का है......, मैं जो तुम्हारे साथ हूँ......, प्यार भरे लब्जों में बोला—अब तो बारिश भी हल्की होती जा रही है, थम जाए जरा और तो बस चलते हैं, कहकर उसने मुमताज़ की पीठ पर हाथ रख दिया, उसका यह स्पर्श मुमताज़ के जिस्म में बिजली की कोंध पैदा कर देने वाला साबित हुआ, अपने आपको कुछ उसके सहारे खड़ा करते हुए बोली—पता नहीं बदन क्यों टूट सा रहा है और फिर ठण्ड भी तो अपने पूरे शुमार पर हो गई है।

इतना ही कहा था मुमताज़ ने कि तभी सड़क पर हल्की रफ्तार से आती हुई एक टैक्सी गुजरी, तो लेखक ने बुलन्द आवाज में पुकारा—टैक्सी !!!

कुछ ही दूरी पर टैक्सी रुक गई, उसके कन्धों को हिलाते हुए लेखक ने कहा—लो भगवान ने तुम्हारी सुन ली, आओ टैक्सी रुक गई है।

अपने आपको सम्भालकर मुड़कर उसने अलसाई पलकों को खोलकर देखा करीब ही टैक्सी खड़ी थी, डगमगाते कदमों से वो उसके साथ बढ़ी।

कमाल है व्हिस्की का पैग तो लेखक ने पिया था और कदम मुमताज़ के लड़खड़ा रहे थे।

शायद टैक्सी का इस तरह बीच में आ टपकना उसे कुछ अच्छा नहीं लगा था...... मगर क्यूं......, यह तो वही जाने या खुदा को पता होगा।

दोनों को लेकर टैक्सी लेखक की बताई मंजिल की तरफ दौड़ने लगी।

पानी से गीली सड़क पर टैक्सी फिसलती सी बढ़ी जा रही थी। बारिश की बूंदें टैक्सी की लाइट में झिलमिला रही थीं।

मुमताज़ अगली सीट की बैक पर माथा अपने हाथों पर टिकाये झुकी हुई थी। साड़ी का भीगा भारी आँचल पीठ से फिसलकर बाजू पर झूल रहा था, झुकी हुई ...... थी मुमताज़, और फिर इस तरह लापरवाही से ......तो पीठ से उसका ब्लाउज खिंचकर काफी ऊपर उचक गया था, गोरी २ पीठ पर बारिश की बूंदें खेल रही थीं, लेखक की नजर जब उसकी तरफ झुकी तो क्षण

भर में ही कहीं और उचक गई, उसने आहिस्ता से उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा—क्यों तबियत ज्यादा खराब हो गई है······ ।

जी·····, जी नहीं, उसने बड़ी अदा से झूलती लटाओं वाला खूबसूरत चेहरा कुछ अदा से उसकी तरफ उठाया और साड़ी के पल्ले को कन्धे पर सही तरह रखते हुए बोली—पता नहीं, कुछ हल्की सी हरारत मालूम होती है, बारिश के साथ ठण्ड भी तो कुछ कम नहीं······, कुछ रुक कर मुस्कराहट से बोली—आपको तो लग नहीं रही होगी······, कहकर उसने गुलाबी होठों को दाँतों तले दबा लिया । हाय ! क्या अन्दाज था यह कहने का और क्या अदा थी भीगी पलकों को झुकाने की ।

लेकिन मैंने तो सुना है, औरतों को तो यूं भी ठण्ड नहीं लगती········, लेखक ने बात ही बदल दी ।

लड़कियों को या औरतों को······उसने फिर शरारत भरी निगाह से कहा —यानी के शादीशुदा को या 'अनमैरिड' को ।

यह तो मैं नहीं जानता······बहरहाल औरत जात की बात कर रहा हूँ और वो भी महज कहे-सुने पर वरना तजुर्बा भला मुझे कैसे हो सकता है ।

और मुमताज़ सिर्फ मुस्करा दी ।

तभी टैक्सी बंगले के गेट पर आकर रुक गई ।

दोनों, दोनों तरफ से उतरे, टैक्सी ड्राइवर को बिल चुकाकर जब लेखक मुमताज़ के करीब पहुँचा तो मुमताज़ बोली—टाइम भी पौने एक का हो गया है, और दोनों अन्दर दाखिल हुए······ ।

जैसे ही वे बरामदे में पहुँचे सामने ही मुमताज़ की अम्मी आती हुई दिखाई दीं, बरामदे की बत्ती का स्विच आन करते हुए बोलीं—ओह ! तुम तो दोनों ही पानी से बिलकुल तर हो ।

जी, हुआ भी बहुत बुरा······, जैसे ही होटल से निकल कर कुछ ही दूर पहुँचे थे कि एक दम बारिश बड़े जोर से आ गई, और करीब पौन घण्टा सड़क के किनारे ही एक पेड़ के नीचे खड़े रहे, मेरी तो जान ही सूख रही थी 'आपा', अगर यह साथ न होते और अगर हम दो कोई लड़कियाँ होतीं तो डर के मारे ही जान निकल जाती हमारी तो—कहा मुमताज़ ने ।

ओफ''''', आते ही तूने तो दास्तान सुनानी शुरू कर दी है'''''पहले तुम लोग गीले कपड़े तो बदल लो ।

और बिना कुछ कहे मुमताज़ अपने कमरे की तरफ बढ़ गई, और उसकी अम्मी लेखक के गीले कोट को उतारने में मदद करती हुई बोली—तुम्हारी भी साथ में "ओपनिंग सैरेमनी" हो गई है, तमाम सूट पानी से भर गया है, अच्छा तुम बाथरूम में जाओ मैं तुम्हारे लिए कपड़े लाती हूँ, जल्दी करो वरना खामख्वाह में ठण्ड लग जाएगी ।

जैसे ही लेखक बाथरूम से बाहर आया, मुमताज़ भी सामने से आती दिखाई दी'''''वो अपने बालों को खोले हुए थी'''''काली २ जुल्फें उसके कन्धे और पीठ पर झूल रही थीं, और मुस्करा रहा था महताब सा मुखड़ा जुल्फों के अंधेरे में । उसकी अम्मी लेखक के कपड़ों को निचोड़ कर बरामदे में टाँग रही थी, वरना यह काम घर की नौकरानी भी तो कर सकती थी पर पता नहीं क्यों—, वो खुद ही अपने हाथों कर रही थी ।

नाइट ड्रेस में थी मुमताज़ और ऊपर एक लम्बा सा झीना गाउन पहन रखा था उसने ।

उसकी "आपा" पास आती हुई बोली—बारिश अब भी पूरी तरह थमी नहीं ।

तो फिर एक कप गरम २ कॉफी का तो पिला दो—कहा मुमताज़ ने, तो उसकी अम्मी बोली—मैंने पहले ही 'टी पौट' का स्विच ऑन कर दिया है, अभी 'बायल' हुई जाती है ।

कोई खास जरूरत तो नहीं थी'''''क्यों खामख्वाह इस वक्त तकलीफ करती हैं आप, कहा लेखक ने ।

लेकिन एक कप में क्या हर्ज है—बदले में शरारती निगाह से मुमताज़ ने जवाब दिया ।

तभी थोड़ी देर में नौकरानी ने 'कॉफी सेट' लाकर टेबिल पर रख दिया और मुमताज़ प्यालों में डालने लगी, उसकी अम्मी ने यूँ ही सरसरी तौर पर पूछा—होटल की "सैरेमनी" कैसी हुई ?

काफी अच्छा प्रोग्राम था—, मुमताज़ बोली—काफी बड़ी बिल्डिंग है, अच्छी मार्किट में है, कहकर उसने लेखक की तरफ कॉफी का कप बढ़ाया और साथ ही बोली—खाने और 'पीने' का प्रोग्राम और इन्तजाम भी अच्छी तरह था… ।

खाने को क्या २ था वहाँ ?

अब एक चीज हो तो गिनाऊँ भी आपको……, इतनी सारी थीं कि नाम भी याद नहीं, और उसने एक कप अपनी अम्मीजान की तरफ बढ़ाया तो वे बोलीं—नहीं २ मुझे तो 'नहीं पीनी तुम दोनों के लिए ही' बनाई थी मैंने ……… ।

अच्छा तो आधा कप ही ले लो……, मुमताज ने प्याला आगे बढ़ा दिया, वे कॉफी का एक कड़वा घूंट भरते हुए बोलीं—चाय और कोकाकोला तो बहुत उड़ी होंगी ।

और साथ में पीने को……पीने की असली चीज भी तो पेश की जा रही थी……एक तीखी और तिरछी निगाह से लेखक की तरफ देखते हुए कहने लगी—आजकल तो शायद जो इस तरह भरी सोसाइटी में जाम न उठाए वो बेवकूफ और "अनसिविलाइज्ड" कहा जाता है 'जैसे हम…… ।'

तो क्या लड़कियाँ भी पी रही थीं ? पूछा उसकी अम्मी ने……।'

लड़कियाँ ! वो एक फीकी हँसी हँसते हुए बोली—वो तो मर्दों से ज्यादा बाजी ले रही थीं । शायद स्टेज पर नाचती हुई "डान्सर" के डांस का सरूर उन्हें ज्यादा चढ़ रहा था ।

तुमने तो नहीं पी……इशारा उनका लेखक की तरफ था और लेखक के जवाब देने से पहले ही मुमताज बोल उठी—इन्होंने तो नहीं ली…… ।

नहीं ! एक पैग जबरदस्ती पीना पड़ा मुझे भी—लेखक ने मुमताज की बात काटते हुए झट से कहा ।

तो मुस्करा पड़ी मुमताज की अम्मी ! कहने लगी बेटी की तरफ देखकर—इसका कोई राज मुझसे छुपा नहीं है, यह पीता है या नहीं, तुमसे ज्यादा मैं जानती हूँ, तुम्हारे परदा डालने से कोई फरक नहीं पड़ता ।

और मुमताज़ खामख्वाह् में झेंप गई ।

और साथ ही बात का सिलसिला भी बीच ही में टूट गया । तीनों ही खामोश से हो गये ।

मुमताज़ ने कप को प्लेट में उल्टा करके रखते हुए कहा—अच्छा मम्मी ; अब तो हम सोने की तैयारी करते है, वक्त भी काफी हो गया है । कहकर वो कुर्सी से उठ खड़ी हुई और अपने स्याह गेसुओं को गालों से परे करते हुए पीठ पर गिरा दिया उन्हें ।

तब उसकी अम्मी लेखक की तरफ देखते हुए बोलीं—अब तुम भी आराम करो, थकावट भी हो गई होगी काफी । हां तो मुमताज......, ऊपर "[illegible]" कमरे में इन्हें बिस्तर ठीक करके दे दो·····वहीं सो जाएँगे ।

नहीं रहने दीजिए, क्यों तकलीफ देती हैं इन्हें, सोने दीजिए, मैं खुद ही सब ठीक कर लूंगा, आप भी आराम कीजिये, फिर कोई पराया तो हूँ नहीं कि आपको खामख्वाह् में तकल्लुफ़ करने की···।'

अच्छा २, आप आइये तो सही ····, कहती हुई मुमताज़ आगे बढ़ चली और पीछे २ लेखक ने कदम बढ़ाए·····पन्द्रह-वीस कदम चलने के बाद मुमताज़ रुक कर अपनी लहराती जुल्फों को झटक कर मतवाली अदा से गरदन पीछे घुमाकर अपनी हलाहल भरी आँखों की कजरारी पलकों को झपकाते हुए बोलीं—आप हर बात में तकल्लुफ़ की अहसानमन्दी की इबारत को क्यों दोहराते हैं, क्या आपका हमसे कोई रिश्ता नाता नहीं, या हमें आप गैरसा समझते हैं ।

यह आप क्या फरमाती हैं, मैं तो समझता हूँ कि प्यार से बढ़कर और कोई रिश्ता है ही नहीं दुनियाँ में, अगर हर इन्सान को प्यार करना आ जाए और दिल में दया का भाव हो तो आज यह लड़ाई-झगड़े इस दुनियाँ में बिलकुल खत्म हो जाएँ ।

बढ़ती जा रही थी मुमताज़ कदम बढ़ाते हुए और उसकी बात को सुन भी रही थी········, ऊपर जाने को पहली सीढ़ी पर जैसे ही उसने कदम रखा फिर तिरछी निगाह से देखा उसकी तरफ और बोली—लेकिन हमने तो सुना है कि लेखकों को प्यार करना कम आता है जरा ।

आपकी यह गलतफ़हमी है, लेखक चाहे कलम से वो बात लिख दे कि क्रान्ति की चिन्गारियाँ फूट पड़ें, चाहे नफरत का ऐसा भाव पैदा कर दे कि पढ़ने वाला हर इक की नजर से नफ़रत का भाव पढ़ने की कोशिश करने लगे, या किसी की मजबूरियों और बेबसियों का ऐसा दर्द भरा चित्र खींच दे कि पढ़कर बरबस आंसू छलक उठें, लेकिन यह मैं बता दू कि लेखक का दिल बड़ा नाजुक होता है, जरा सी बात अगर समाज में घटती है तो उसे सोचने पर मजबूर कर देती है।

चुपचाप मुमताज सीढ़ियाँ चढ़ती जा रही थी, 'रूम' की 'आऊट साइड गैलरी' पार कर वो अपने कमरे के सामने से गुजरते हुए अपने वालिद साहब के कमरे की तरफ बढ़ी, दरवाजे को खोलकर उसने लाइट ऑन की।

पलंग पर झुककर वो बिस्तर ठीक करने लगी। बिखरी जुल्फें कन्धों से फिसलकर उसके गालों को चूमते हुए सीने पर ढल जातीं और वो फिर पीछे झटककर काम में लग जाती।

बैठा हुआ लेखक उसके हर हाव-भाव को देख रहा था।

जब वो बिस्तर बिछा चुकी तो लेखक ने उठते हुए कहा—एक सिगरेट मिल सकेगी।

'और जलाने को माचिस भी मिल जायगी—,' मुमताज ने गालों ही गालों में मुस्कराकर बाकी बात की बड़े बेहतरीन तरीके से कड़ी जोड़ दी। मुस्कराते ही उसके इस तरह गालों के दोनों तरफ दो छोटे २ से खूबसूरत गड्ढे खिल उठे ···कितनी प्यारी लगती थी उसकी हँसी। बढ़कर उसने अल्मारी खोली और ५५५ का टिन और लाइटर उठा लाई। टिन उसके बिस्तर पर रख दिया उसने। सिगरेट निकालकर जब लेखक ने होठों में दबा ली तो हाथ बढ़ाकर उसने लाइटर माँगा तो वो बोली—उऽ हूंऽ·········, आपने तो सिर्फ सिगरेट की फरमाइश की थी।

लेकिन माचिस पेश करने का वादा आपने किया था।

तो आपको माचिस ला दूँ नीचे से······बढ़ने को हुई तो लेखक ने कहा—क्यों सीढ़ियाँ उतरने चढ़ने की तकलीफ करती हैं आप ?

क्यों ?······

खुदा ने औरत का जिस्म यूं ही नाजुक बनाया है, पच्चीस सीढ़ियाँ उतर कर जाओगी और फिर पच्चीस चढ़कर आओगी कहीं······

तो यूं कहिये कि आप अकेले में बोर होंगे इतनी देर।

बोर क्या होना है, बाकी सारी रात भी तो अकेला ही सोऊंगा तब कौन सा आप···

इतना ही कह पाया था कि तभी मुमताज की अम्मी दरवाजे से ही बोलीं—ठीक है न सब कुछ।

जी·····हाँ, देखकर उनको, लेखक बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, बिना जला सिगरेट अब भी उसके हाथ में था और टिन खुला पड़ा था बिस्तर पर, बोलीं वे—जलाने को लाइटर नहीं मिला।

नहीं ! है मम्मी ! भोली सी बनकर मुमताज ने कहा और हथेली पर रखा लाइटर उसने लेखक की तरफ बढ़ा दिया। और देखा अम्मी की तरफ इस निगाह से कि कह रही थीं नजरें कि क्या इसी वक्त बीच में ही आ टपकना था, हाय ! वो दिलकश बात भी तो पूरी न हो सकी।

और कोई खास बात न की उन्होंने, और मुमताज की तरफ इशारा करते हुए बोलीं—आओ जरा नीचे।

और दोनों नीचे चली गयीं।

लेखक ने सिगरेट सुलगाया और बिस्तर पर लेटकर धुएँ के बादल छोड़ते हुए पता नहीं कहाँ विचारों में खो गया। कभी ख्याल ड्रीम होटल की नाचती उस शोख कली के इर्द-गिर्द घूमने लगता तो कभी उसके नंगेपन के बारे में सोचने लगता, कितनी बेहया और बेशर्म थी वह, अपनी जवानी को किराये पर लोगों के सामने बिखेरती है और खूबसूरती से जवानों के दिलों में आग लगाकर अपने बदन के खूबसूरत अंगों से खिलवाड़ करने को आकर्षित करती हैं·····चन्द चाँदी के गोरे सिक्कों के बदले काली रात में अपने जिस्म के उभरे भागों को नोचने का अधिकार देती है, कागज के नोटों के बदले अस्मत का खजाना लुटाती है, ओफ ! प्यास भी तो नहीं बुझती, ताक फिर नई आसामी

को फंसाने में लगी रहती है, हर रात लोगों का बिस्तर गर्म करने पर भी कसक नहीं मिटती, चेहरे पर वहां कातिल अदा से खेलती हुई शरारत और मुस्कराहट नजर आती है।

नहीं ! उसने लेटे २ करवट ली और साथ ही विचारों ने भी पासा पलटा—. यह मुस्कराहट बेशर्मी की नहीं, बेबसी की होती है। कोई पूछकर देखे तो अस्मतफ़रोश का दर्दे-दिल का हाल ······क्या मजबूरियाँ हैं जो सिक्कों के बदले अपने आपको लुटाती हैं, क्यों वो अपने को मसलने का हक देती हैं किसी को और वह भी महज कुछ वक्त के लिए और उस वक्त में भी उनके चेहरे पर बिजली सी चमकती है जब उनके बदन को बेरहमी से कोई कामी कुत्ता टटोलता है, लेकिन कोई क्या जाने कि रात के गर्त में वो आँसू भी बहाती हैं अपनी बदनसीबी पर, और वो आंसू कितने कीमती होते हैं कोई जानना भी नहीं चाहता। औरत का अस्मत-फरोश बनने की जिम्मेदारी समाज पर है, उससे पहले समाज गुनाहगार है कि वो क्यों इस रास्ते पर चली, जरूर समाज की क्रूर जंजीरों ने उसे जकड़ा होगा, धर्म के ठेकेदारों के कानूनों से वो लड़ी होगी. समाज की भूखी नजरों में वो खटकी होगी, और समाज ही के दुश्मनों के हाथों में कसमसाई होगी, और समाज ने ही उसे 'वेश्या' नाम दिया होगा।

लेकिन, हाय रे समाज·········, जिस समाज ने उसे वेश्या बनाया, वही समाज कहता है कि इससे नफरत करो, लेकिन क्यों ? इसका जवाब नहीं दे सकता।

ओफ ! दुनिया भी क्या है, किसी तरफ से नहीं छोड़ती।

और वापिसी पर जब मुमताज लेखक के लिए दूध का गिलास ला रही थी·····तो उसके दिल में शरारत अंगड़ाई ले रही थी और दीवाना-दिल पता नहीं क्या सोच रहा था, सीढ़ियों पर कदम रखते ही वो क्षण भर को वहीं रुक गई, और याद आ गई उसे लेखक के एक उपन्यास की बात·····, जब रजनी दूध से भरा गिलास लेकर पहुंची अपने उनके कमरे में तो···"वो तपाई पर दूध रख कर बोली—जी ···आप यह जल्दी पी लीजिए वरना

ठण्डा हो जायेगा, और कह कर जब वो जाने लगी तो उसने लपक कर गोरी की चूड़ियों भरी बाँह पकड़ ली......तो चूड़ियां खनखना उठीं और वो बलखा कर बोली—हाय ! छोड़िये भी...... मुझे और भी तो कितने काम निपटाने हैं, तो वो बोला—एक छोटा सा हमारा काम भी तो निपटाती जाओ न,......वो क्या ? आँखों ने पूछा तो उसने जवाब दिया—अपने ही हाथों से पिलाती जाओ न,......, ओफ ! छोड़ो भी......यह बदतमीजी हमें पसन्द नहीं—, लेकिन उसने हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींच ही लिया, तो वो एक ही झटके में उसकी गोद में आ गिरी......तो फिर पहलू ही में सारी बात गुजर गई......और वो काम जो निपटाने थे......सुबह पर मुल्तवी हो गए ।...... सोच कर मुमताज़ शरमाकर दोहरी हो गई, और नजर उठी सामने ही तो और भी शरमा गई......पास ही सीढ़ियों के आखरी मोड़ पर संगमरमर की एक जवान औरत की मूर्ति बड़े कलात्मक ढंग से बनी हुई थी जिसके आवरण विहीन जवान सीने में एक मर्द अपना चेहरा छिपाये हुए था और वो बाहों में उसे सम्भाले हुए थी, दोनों ही घुटनों के बल बैठ कर एक दूसरे से लिपटे हुए थे ।

तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मुमताज़ ऊपर पहुँची, कमरे के दरवाजे में प्रवेश करते ही देखा उसने कि वो करवट बदलकर चुपचाप लेटा हुआ है और सिगरेट का धुआँ उड़कर बिखर रहा है, जाहिर है कि वो सोया नहीं है पहले तो उसका जी हुआ कि वो उस पर झुककर उसके कन्धों को छू दे और जब वो आहट से पासा बदले तो उसके बालों पर हाथ फेरते हुए कह दे—सो गए क्या ?......ओफ ! कितनी खुशनसीब रात है आज की यह ।

जैसे ही गिलास उसने मेज पर आहिस्ता से रखा तो एक हलकी सी ठक से आवाज हुई, तो लेखक ने झट उधर पलटते हुए कहा—कौन ? और मुमताज़ को सामने देख कर उसने तो कुछ नहीं कहा लेकिन मुमताज़ ने कहा—यह दूध पी लीजिए ।

लेकिन अब तो जी भी नहीं है और पेट में भी समाई नहीं है ।

आप पहले 'ना' तो जरूर कर देते हैं, अब पी भी लो न—,

तुम भी तो मजबूर करने की आदी हो।

ओफ ! हां, तो क्या अब आपको मुझे अपने हाथों से पिलाना पड़ेगा कह कर उसने जैसे ही गिलास की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि पहले उससे लेखक ने गिलास उठा लिया और कहने लगा—तुम्हारी अम्मी ख्याल बहुत रखती हैं।

तो क्या आपकी कुछ नहीं लगतीं—, दांतों में आँचल दबाकर कहा उसने।

लगतीं क्यों नहीं······बहुत नजदीकी रिश्ता है······कह कर उसने गिलास मुंह से लगा लिया और खाली गिलास मेज पर रखने ही जा रहा था कि मुमताज ने उसके हाथ से ही थाम लिया और तली में थोड़ा सा दूध बाकी बचा देखकर बोली—एक घूंट क्यों छोड़ दिया इसे भी······खैर रहने दो वरना आप फिर कहेंगे कि हर बार मजबूर करती हूं ···और मुस्करा पड़ी खुद ही—, अपने बिखरे बालों को गालों की सीमा से परे करते हुए एक मदभरी नजर से उसने लेखक की तरफ देखा, और शरारत ने फिर दिल में अंगड़ाई ली। सोचने लगी पूछूं वो अधूरी बात······, कि, बाकी सारी रात भी तो अकेला ही सोऊँगा तब कौन सा आप······लेकिन दिल तेजी से धड़क उठा, लेखक की सूरत देख कर जुबाँ ने बोलने से इन्कार कर दिया, और दिल······ की बात दिल ही में रह गई······एक बार फिर दिल को दिलासा दिलाई उसने कहने को उकसाया······लेकिन कुछ तो दिल खुद भी घबरा रहा था और साथ ही तभी उसकी अम्मी भी ऊपर आ गयीं······आते ही बोलीं—एक बात तो कहनी भूल ही गयी—अगर आज सरदी लग रही हो तो रजाई ला दूँ और मुमताज की तरफ देखकर बोलीं—तुझे अभी नींद नहीं आयी क्या ?

तो लेखक ने कहा—नहीं, बस अब आप आराम करो सब, कम्बल तो है ही यहाँ अगर सरदी लगी भी तो कम्बल और चद्दर इकट्ठी कर के काम पूरा हो जाएगा और वैसे भी सख्त जान हूं अच्छा अब आप भी आराम कीजिए—इशारा उसका मुमताज़ की तरफ था, और तब तक उसकी अम्मी जान जा चुकी थीं······, और पीछे २ इक अलबेली नजर से लेखक की तरफ देखते हुए मुमताज़ भी दरवाजे की तरफ बढ़ चली······।

अपने कमरे में आकर मुमताज़ ने दोनों बाहें ऊपर उठाकर सारे बदन को लचकाते हुए उसने एक मादक अंगड़ाई ली और उसने बदन पर से झीना सा रेशमी गाउन उतार दिया, कमरे का दरवाजा बन्द करके उसने अपने आप को पलंग पर गिरा दिया, बत्ती बन्द करके बैड लाइट को आन कर दिया उसने। हल्का सा ग्रीन बल्ब अंधेरे में सिर्फ चमक रहा था। करवट लेकर वो औंधी हो गई और दोनों गुदगुदे रेशमी तकियों में चेहरा छिपा लिया उसने, पता नहीं जुल्फें किस तरह बिखरी पड़ी थीं इधर-उधर।

रात खामोश थी बारिश थम चुकी थी···दूर आसमान पर शायद बादल की टुकड़ियाँ अब एक दूसरे के पीछे भाग कर आंख मिचौनी खेल रहे थे, ठन्डी पुरवाई एक मस्त अदा से हवा के झोकों के संग बह रही थी चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था हर कोई नींद में खोया सपनों के देश में घूम रहा था, पर पता नहीं मुमताज़ को नींद क्यों नहीं आ रही थी और वो खुद भी तो यही सोच रही थी कि नींद आज नाराज क्यों है।

यूं तो पलकें बन्द थीं मगर बारबार करवटें बदल रही थीं बेचैनी से, थोड़ा सा उठकर उसने अपने ऊपर चादर खींच ली और फिर औंधी लेट गई, ढीली ढाली नाइट ड्रेस में जवानी कसमसा रही थी, नंगी बाजुएँ चादर की ठंडक से सिहर उठीं और गाल तकिये की नर्मी पर सिहरन सी महसूस कर रहे थे, दोनों हाथों से तकिया सम्हाले हुए थी वो और जवानी से भरे दोनों उरोज गद्देदार बिस्तर को चूम रहे थे, अपने ही भार तले दबकर वो कसक से रहे थे।

नींद की न आने की परेशानी वो सोच रही थी और दिल आज की बहार के बारे में सोच रहा था कितना हसीन था यह दिन और कितनी खुशनसीब थीं वो घड़ियाँ जो लेखक के साथ गुजरी थीं सब एक सपना सा लगती थीं और वक्त भी ऐसे में कितनी जल्दी गुजर जाता है पता नहीं जमीं भी उस वक्त तेजी से घूमने लगती है या घड़ी की सुईयां अपनी रफ्तार बढ़ा देती हैं।

नजारा पेश हुआ उसकी भी नजरों के सामने होटल में नाचती हुई उस दिल-फरेब परी का, सोचने लगी कितनी बेशर्म थी वो ····मगर अदाएँ भी

तो लाजवाब थीं उसकी······ हर कदम पर जल्वे बिखेर रही थीं, ब्यूटी भी ज़ालिम की कितनी गज़ब की है, और नाचती भी कितने कमाल का है, कमर की लचक और उभरे सीने में थिरकन पैदा करने में वो बेमिसाल है, और आँखों के सामने हवालों के पर्दे पर वो सीन भी आये जब वो अपने नाज़ुक उरोजों को बाहें सुकोड़ कर थोड़ा सा झुक कर बिल्कुल नंगा कर देती थी और आख़िर उस वक्त जब वो उनकी टेबुल के बिल्कुल नज़दीक आ गई थी और एक क़ातिल अदा से थिरक कर उसने अपने गुलाबी उरोजों को नग्न करके एक अजीब सी थिरकन पैदा कर दी थी उनमें······ओफ उसकी घायल [illegible]······[illegible] उसने थोड़ा अपने बदन को ऊपर खिसकाया······ तो उसके सीने के [illegible] [illegible] [illegible] रह गए······और तकियों को और बाहों में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लगी, खुद के सीने में भी तो दर्द सा पैदा हो गया था, बेचैन सी होकर वो सीधी लेट गयी, हाथ सीने पर यूं ही [illegible] गया तो शरारत से बाज़ न आया, छू ही लिया उसने उभरे उरोजों को तो स्पर्श से तड़प उठी, बेचैनी सहन न कर सकी तो करवट ले ली उसने।

मगर ख्याल कहाँ पीछा छोड़ने वाले थे इतनी जल्दी, तो नारिश की मेहरबानी याद आ गई, और अपनी बेताबी भी, सोचने लगी—कितना संगदिल है ज़ालिम यह लेखक भी······और जी में आया उसके, कि दो चार [illegible] की लंबी गालियाँ सुना दे उसे, लेकिन दिल न माना सोचने लगी—, प्यार भी तो करती हूं मैं, मगर है बड़ा बुज़दिल······बारिश का समाँ हो और वो भी तन्हाई में······और साथ ही दो जवान दिल [illegible] बारिश की हर बूँद से क्यों न जिस्म में आँच पैदा हो, हर बूंद [illegible] शोला बन जाये, और जवानी को फिसलने बग़ैर कैसे रह सके।

सीधी सान का वो हसीं समां······सोचकर उसने फिर बेचैनी से करवट बदली, सोचने लगी गुज़री हुई उन रंगीन वादियों के पहलू को······और पूछने लगी अपने आपसे ही—क्या वो सचमुच बेताब हो गयी थी उस वक्त और चाहती थी कि अपने आपको उसकी बाहों में ढीला छोड़ दूं जिस्म को

उसके हवाले कर दूँ···सोचने लगी वो भी तो हाल-बहाल हो गए थे·····मर्द तो चाहता ही यही है कि लिफ्ट पहले औरत दे···तो उन्होंने भी तो बाहों में भर लेने को पीठ पर हाथ रख लिया था···मगर उस नामुराद टैक्सी को भी उसी वक्त आकर मजे में कजा पैदा करना था लेकिन विचारों की लड़ी दूसरी तरफ से जुड़नी शुरू हुई···काश ! वो टैक्सी न आती उस वक्त तो·········

तो···निश्चित था कि मैं उन पर पूरी तरह झुक जाती तो इस बेहोश आलस में कौन होश में रहता है···लगता था धड़कनें उनके दिल की तेज हो गयी थीं···मैं चेहरा ऊपर उठाती और अपने फड़फड़ाते होंठों से लड़खड़ाती सी टूटी आवाज में उनका दिल-फरेब नाम दोहराती···तो वो भी तड़प कर मेरे सुर्ख-सुलगते लबों को चूमकर जरूर कहते मेरी मु···म···ताज·····और लगता कि जैसे अंगारे सुलग उठे हों।

हाय ! उसके मुंह से एक आह निकली और बेताबो सी में तड़प कर वो करवट लेती हुई औंधी लेट गई···नर्म बिस्तर ने मसलकर उरोज भी जैसे हरारत में शरारत वाली बात पैदा करने लगे, बेचैन-सी होकर उसने नर्म तकियों को थोड़ा ऊपर को लेटे-लेटे ही उचक कर दोनों बाँहों में और कसकर दबा लिया और उनपर अपने गालों को रगड़ने लगी···पता नहीं क्या सोचकर उसने पलकें बन्द करके दबाकर तकिये को ही चूम लिया।

उफ ! जवानी भी एक मुसीबत है, सोचा उसने और खासकर उस वक्त जब किसी के प्यार में उलझ जाए—पता नहीं जिया उसका क्या चाहता था, क्यों वो इस तरह उतावली-सी हो रही थी, लगता था कि उभरी जवानी··· जवानी के आनन्द में पिघल जाने को बेकरार हो रही थी···शायद यही वजह ही हो सकती थी उसके इस तरह के दीवाने और बेगानेपन की।

इसी बेचैनी, बेकरारी और बेताबी में लेखक की हाल ही की कही हुई अधूरी बात ने उसके दिल में अंगड़ाई ली, अधूरा फिकरा फिर दोहराया उसके दिल ने···और क्या होना है, बाकी सारी रात भी तो अकेला ही सोऊँगा तब कौन सा आप··············।

और फिर दिल का घायल पंछी इस जुमले के पीछे उड़ने लगा···सोचने

लगी—आखिर आगे वो क्या कहना चाहते थे…और क्या हो सकता है इस अधूरी बात का बाकी हिस्सा , खुद ही पूरा करते हुए अपने दिल से बोली—शायद यह हो सकता है कि…तब कौन-सा आप मेरे साथ सोएँगी…यही तो ठीक बैठता है जुमला…क्योंकि उन्होंने कहा है कि अकेला ही सोऊंगा…, जालिम—, एक मिनट यह बात जरा पहले ही खत्म कर देते तो क्या बिगड़ जाता तुम्हारा …क्यूं यह दीवाना दिल दर्द में तड़प कर करवटें बदलता……हाय ! काश, उनके साथ एक ही पलंग पर सोने…, और आगे धड़कता दिल कह न पाया… सांसें भी तो तेज हो गयी थीं खामख्वाह में । औंधी पड़ी हुई वो तकिये पर गाल रगड़ रही थी ।

तड़प कर एक तकिये को अपनी बाँहों में भर कर करवट बदल ली उसने…और सीने से लगाकर और जोर से दबा लिया उसे अपने उरोजो से… पता नहीं क्या राहत सी मिली उसे इस तरह । नर्म तकिये को सीने में छुपा कर लेटे-लेटे ही उस पर गाल रगड़ने लगी ।

और मालूम नहीं इसी तरह के ख्यालों में खोयी वो नींद में बेसुध हो गयी ।

१४

लेखक अपने कमरे में बैठा, मेज पर बड़े मजे में पांव फैलाए अपने बजट का हिसाब लगा रहा था ।

उसके हाथ में गिनती के सत्ताईस रुपये थे, और सोच रहा था वो कि इन रुपयों से अभी ग्यारह रोज पूरे करने हैं, क्योंकि एक पब्लिशर्स से पिछले हिसाब में दो, सवा दो सौ रुपया लेना था उसे और उसने अगले माह की चार तारीख को देने का वायदा किया था और आज तेईस तारीख थी ।

सोच रहा था…वो, कि अब क्या किया जाए, किस तरह से पूरा हो ।

और दूसरी तरफ सोच रहा था कि इन पिछले दो तीन माह से टैक्सी के खर्चे बढ़ गए हैं, और वजह इसकी थी⋯मुमताज. खुद ही से कहने लगा क्यों उस अमीर बाप की बेटी को लिफ्ट देते हो, उसके लिए तो रुपये कागज के टुकड़ों की तरह हैं और अपने लिए यह जिन्दगी का सहारा है, उन्हीं के लिए इतना परिश्रम इतनी मेहनत करनी पड़ती है, फिर इतनी जबरदस्त मंहगाई में पैसे की कीमत भी तो कितनी घट गयी है, चीज तो कुछ हाथ में आती नहीं और पैसा इतना खर्च हो जाता है कि समझ में भी नहीं आता।

और फिर इधर एक डेढ़ माह से किसी पत्रिका वाले ने कहानी की 'डिमान्ड' भी नहीं की, क्योंकि अगर दो एक कहानियां महीने में लग जाएं तो जरा आर्थिक स्थिति की तरफ से कुछ फिक्र कम हो जाती है। और अगर खाने की चिन्ता न हो तो⋯उपन्यास भी अच्छे स्टैण्डर्ड का लिखा जा सकता है वरना तो घसीटाशाही वाली बात करनी पड़ती है।

और तभी दरवाजे पर ठक-ठक की आवाज हुई वह खड़ा हो गया वो और दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए सोचने लगा कौन हो सकता है⋯क्या 'मुमताज' मस्तिष्क ने एक क्षण में यह सब सोच डाला।

जैसे ही उसने दरवाजा खोला तो नजरों ने सामने खड़े हुए साजिद को देखा।

तो बोला—आज तो बड़े दिनों में इधर आने की इनायत फरमाई है तुमने, और मैं भी यही सोच रहा था कि आज दोपहर से यह जो बादल छाये हुए हैं यह किस खुशी की एवज में बरसने का इन्तजार कर रहे हैं खैर आइए!

साजिद ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—वाकयी हो तुमसे मुलाकात हुए को काफी दिन हो गए हैं जब कभी तुम उधर आते भी हो तो मैं घर पर नहीं होता या कभी बाहर गया हुआ होता हूँ। खैर छोड़ो इन बेमतलब की बातों को, यह बताओ कि आजकल क्या हो रहा है।

होना क्या है⋯⋯फीकी सी मुस्कराहट से उसने कहा—हम भी वही हैं और अपना काम भी वही है मगर जमाना बड़ी तेजी से बदल रहा है⋯⋯

और जमाने के बदलने से तुम भी जरूर कुछ बदले होगे···।

यही तो कह रहा हूँ कि राइटर तो नहीं बदले जमाना बदल गया है···।

और जमाने के बदलने के साथ-साथ तुम्हारे लिखने में भी तबदीलियां जरूर हुई होंगी।

क्यों नहीं समाज ही का तो असर पड़ता है हर लेखक पर।

तब साजिद ने बात का टॉपिक बदला, कहने लगा—अरे हां, 'ड्रीम होटल' की ओपनिंग सैरेमनी कैसी रही, मैं तो बाई-चांस बम्बई में ही नहीं था।

बस यह समझ लो कि सब कुछ 'ड्रीम' ही था, कोरी दिखावट और बनावटीपन हर चीज में झलकती थी।

लेकिन सुना है कि प्रोग्राम बड़े गजब का था साजिद ने कुछ दिलचस्पी लेते हुए कहा।

यानी खासकर तुम्हारा मतलब उस डान्सर से है जिसने उस रात दिल खोलकर अदाएँ बिखेरी थीं।

'हाँ·············'।

मगर वाहियात की भी एक हद होती है मगर वो शरम और हया की सरहद से बहुत दूर थी···न कोई हिचक उसकी आँखों में थी न बेशर्मी को वो कोई चीज समझ रही थी, उसके पास कला जरूर है मगर वो उस कला को उल्टा इस्तेमाल कर रही थी, यह माना कि वो इस कदर तेजी से डांस कर सकती है कि देखने वाले की पुतलियां भी उसके हर भाव को नहीं पकड़ सकतीं मगर उसके साथ ही थिरक कर और बदन को सिकोड़ कर अपने सीने के उभारों को नंगा करके दिखला देना कला नहीं बल्कि कला के नाम पर कलंक है। पहली बात तो यही कि उसने माशाअल्लाह ड्रेस भी तो ऐसी पहन रखी थी कि जिस्म का हर अंग रह रह कर झांक रहा था।

अरे यार! तुम तो बीसवीं सदी में आकर भी तेरहवीं सदी की बातें करते हो, जब कि लेखक को तो बाईसवीं सदी की बात करनी चाहिए—साजिद ने बात को उल्टा।

ठीक है! कौन-सा हमारे कहने से कोई रुक जाएगा, मगर इतनी बेशर्मी

भी ठीक नहीं, और फिर ऐसे मौके पर इस तरह का वाहियातपन नहीं पेश करना चाहिए, पता नहीं कौन किसके साथ आया होता है। कोई बाप अपनी बेटी को साथ लिए आया होता है तो न तो बाप ही उस तरफ देख सकता है न बेटी ही नजर उठा सकती है।

अच्छा छोड़ो इस बात को, तुम तो पूरी क्रिटिसाइजिंग पर उतर आये हो।

और बातों ही के दौरान में साजिद ने तफरीह के तौर पर घूमने-फिरने की बात पेश की और फिर वह लेखक को जबरदस्ती ईवनिंग शो में भी ले गया हालांकि उसने बहुत मना किया लेकिन साजिद ने आदत के मुताबिक उसकी हर बात का विरोध करते हुए यही कहा—तुम्हें पता नहीं घर आने की बहुत जल्दी पड़ी रहती है, जैसे घर पर बीबी-बच्चे इन्तजार में बेकरार हो कर बैठे हों।

१५

'देखो नौशाबा......', यह ठीक नहीं, इस तरह बिना इजाजत किसी का खत पढ़ना, ...मुमताज़ ने उसकी कलाई पकड़ी हुई थी और उसकी मुट्ठी में दबा हुआ खत लेने को उससे छीना-झपटी कर रही थी।

खत मुमताज़ का था, खत क्या प्रेमपत्र कहिए, जिसे उसने बड़ी फुरसत में लेखक के नाम अपनी मुहब्बत का पैगाम का कलाम पेश करके लिखा था, और सोचा यही था कि जब भी एक आध दिन बाद उसके ख्वाबों का राजा आयेगा तो किसी तरह दिल थामकर वो उसके हाथ में अपनी मुहब्बत का वसीयतनामा थमा देगी, चूंकि खुद वो जानती थी कि मुंह से एक तो वो कुछ खास कह नहीं पाती दिल की लगी को, और कुछ वो भी तो ऐसे हैं कि बात को बेबात बना देते हैं, और जवाब भी लाजवाब होते हैं। मगर रात को वह आधा खत लिखकर ही बेचारी थक गई थी और जिसे दोपहर को खाली

वक्त में पूरा करके तकिये के नीचे रख दिया था उसने, और न ही उसे कोई ख्याल था इस नाजुक बात का, कि तीसरे पहर जब नौशाबा उसके यहाँ मामूली तौर पर आयी तो "वाई-वी-वे" तकिये के नीचे से झाँकते हुए नीले से कागज पर उसकी नजर पड़ गई, और जब खोलकर उसने पहली ही दिल फेंक लाइन ..., "मेरे दिल की दुनिया के रूमी शहजादा......, आदाब !" पढ़ी तो मुमताज खत को उसके हाथ से छीनने को उस पर झपटी, तो नौशाबा पलंग पर लेट गई और खत को हाथों में दबाकर औंधी हो गई, और मुमताज उसके ऊपर थी, और दोनों तरफ से गुदगुदा रही थी उसे, पर वो थी कि हाथ को ढीला ही न कर रही थी, और एक दम मौका देखकर वो पलंग से उतरकर खड़ी हो गई, तो मुमताज उसकी कलाई पकड़े·····कुछ नराजगी और नर्मी से उससे कह रही थी—'दे दो न नौशाबा, 'तुम्हें हमारी कसम।'

'देखो जी कसमें उठाने वाली बात तो हम जानते नहीं, सिर्फ तुम्हारी दिल्लगी और दिल की लगी के बारे में कुछ जानना चाहते हैं। और देखना चाहते हैं कि कितनी हद तुम्हारे दिल में इश्क की आग है, मुहब्बत का पाठ कहाँ तक पहुंच गया है, प्यार की बातें कितनी रंगीनी पर हैं ? बस ! महज पाँच मिनट की इजाजत फरमाएँ आप, खते मुहब्बत को आपकी कदमबोसी के वास्ते बराए-इज्जत पेश कर दिया जाएगा।

देखो नौशाबा, यह उसूल के खिलाफ है, चाहे किसी का कैसा भी खत हो, बिना पूछे पढ़ने का किसी को हक नहीं होता—मुमताज ने आखिरी दाव लगाया, उसूलों को पेश करके, मगर चंचल और बातूनी नौशाबा कहाँ मानने वाली थी—झट से बोली—अपनी इस गुस्ताखी के लिए वाकय ही हम कसूर-वार हैं, मगर गुस्ताखी करने से रह भी नहीं सकते, इस वास्ते आप सजाए जुर्म फरमा सकती हैं, मगर हम खत को पढ़े बगैर नहीं रह सकते।

और इससे पहले कि मुमताज कुछ कहे उसने मुड़े हुए कागज को खोल कर ठीक किया और पढ़ने लगी......, और अभी वही पहली लाइन ही पढ़ी थी उसने कि मुमताज फिर झपटी, मगर नौशाबा बार बचा गई और थोड़ा उससे हटकर कहने लगी—देखो जी, ज्यादा ही होशियारी दिखाई अगर आप

ने तो सच, कहे देती हूं कि यह खत अभी आपकी "आपा-साहिबा" के हवाले कर दूंगी······ताकि पता तो लगे उन्हें कि, जनाबे माशूका-ए लेखक साहब कितनी बेचैन, बेताब और साथ ही कुछ बेशर्म भी हैं।

ओफ ! हो ऽ·····, नौशाबा—, क्यों परेशान करती हो।

अब तो दो ही बातें हैं—या तो यह खत मैं पढ़ूंगी या तुम्हारी अम्मीजान, बोलो कौन-सी शर्त मंजूर है। और खत हवा में लहरा रहा था।

तो खामोश सी खड़ी मुमताज उसकी तरफ देखे जा रही थी, और एक दम मौका देखकर वो फिर खत पाने को झपटी, मगर नौशाबा भी कुछ कम न थी, झट से संभल गई, और फिर से दोनों आपस में जूझ गयीं, छीना झपटी में दोनों आपस में उलझी हुई थीं, मुमताज कह रही थी······आज तुमसे लेकर ही रहूँगी और जवाब में नौशाबा कहती—देखती हूँ, आज तू कैसे ले लेगी ?

दोनों आपस में टकरा रही थीं कि तभी मुमताज की आपा ऊपर आ गई, उनको इस हालत में देखकर कहने लगीं—क्यों ? यह छीना झपटी हो रही है छोटे बच्चों की तरह।

सुनते ही दोनों अलग हो गयीं···, और उस वक्त मुमताज का चेहरा देखने लायक था······घबराहट से पसीना छूट रहा था उसका······धड़कता दिल और तेजी से धड़कने लगा था, और जब उसकी अम्मी ने नौशाबा के हाथ में मुड़ा हुआ पर्चा देखकर हल्की मुस्कराहट से कहा—

आखिर ऐसी क्या खास बात लिखी थी इस परचे में कि तुम दोनों एक दूसरे पर हावी हो रही हो—, जरा देखूं·····, तो मुमताज की सूरत पर इन्द्र-धनुषी रंग खेलने लगे, भय से दिल धड़क उठा, उसे लगा कि जैसे वो बिलकुल नंगी होकर लेखक से लिपटी हुई हो और इस नाजुक आलम में उसे उसकी अम्मी ने अचानक आकर देख लिया हो।

'तो'······पहले तो नौशाबा भी घबरा गई, एक पल तो सोच भी न पाई कि क्या कहे·····, मगर दूसरे ही क्षण सम्भल गई, कहने लगी मीठी-मुस्कराहट से-कोई खास नहीं, एक गजल लिखी हुई है, मुमताज कह रही थी मैं पढ़कर सुनाऊँगी और मैं कह रही थी कि नहीं मैं पढ़ूंगी, और कागज को यूँ ही हाथों में मरोड़ने लगी।

तो वे कहने लगीं……, एक फीकी मुस्कराहट से—"लाओ दोनों का झगड़ा खत्म कर दूं, मुझे दो, मैं ही पढ़ दूं।"

'……जी………, हिचक गई नौशाबा और मुमताज़ का तो दिल धक् से रह गया, लगता था कि बस अब दिल की धड़कन रुकने वाली है।

'………कि तभी न जाने नौशाबा के दिल में बात कैसे आ गई, बड़ी संजीदगी से बोली—मगर यह तो हिन्दी में लिखी हुई है।

ओह ! फिर तो मैं नहीं पढ़ सकती, खैर मुझे पढ़कर लेना भी क्या है, तुम लोग ही जानो, मैं तो यह पूछने आई थी तुमसे कि अब तुम्हारी 'आपा' की तबीयत का क्या हाल है, बुखार वगैरा हल्का हुआ या नहीं, मेरा तो उधर आना ही नहीं हो सका।

जी, अब तो पहले से काफी अच्छी हैं।

अच्छा, मैं अभी नौकरानी के हाथ चाय भिजवाती हूँ—, कहते हुए वे कमरे से बाहर हो गईं।

और तब जाकर मुमताज की जान में जान आई, उसके हाल का यह बेहाल देखकर नौशाबा ने कहा—कहिए मेरी जान, आज तुम्हें कितना बचाया, वरना तो तुम्हारा पत्ता ऐसा कटता कि बस……तुम भी इश्कबाजी का सारा पाठ भूल जातीं, अगर आज यह खत उनके हाथ लग जाता तो………हुजूर का हाले दिल ब्यान हो जाता।

मुमताज अभी तक खामोश सी खड़ी हुई थी, पता नहीं दिल में क्या सोच रही थी, तब नौशाबा ने उसे छेड़ते हुए कहा—कहिये अब तो इजाजत है खत पढ़ने की या अब भी आपको कोई एतराज है।

नौ…शा बा……, वो थके से स्वर में बोली—क्या तुम भी रह सकतीं, कहती हुई वो उसके नजदीक आ गई, आँखों में अब भी उसके इन्कारी थी, तो नौशाबा ने उसकी कमर में हाथ डालकर उसे भी अपने पास पलंग पर बिठा लिया, कहने लगी—क्यों—, अगर हमें भी हालेदिल का पता लग गया तो क्या हो जाएगा, पढ़कर देखें तो सही—, वो खत पढ़ने लगी—

"मेरे दिल की दुनिया के हसीं शहज़ादे……, आदाब।"

आज बड़ी बेकरारी और बेसब्री को बरदास्त न कर सकने की वजह से बावरे दिल का हाल बयान कर रही हूँ ··, मालूम नहीं मुझे खुद को भी कि मुझे तुमसे मुहब्बत क्यूं हो गई है यूं तो मेरे दिल में प्यार उस दिन से ही अंगड़ाई लेने लगा था, जिस दिन मुझे यह मालूम हुआ था कि आपका आना-जाना हमारे यहाँ होता है······तो आपकी हर कहानी और उपन्यास को पढ़कर यही सोचती थी कि वो कौन-सा खुशक़िस्मत वक्त होगा जब आपसे मैं मिल पाऊँगी और जब आपसे मुलाक़ात हुई तो ···ए, दिल ···, तुम दिल के दिले निशां बन गये, और यह दीवाना दिल कुछ ऐसा तड़पा तुम्हारे लिए कि दिन का चैन खत्म हो गया और रात का आराम ····, कहूं भी क्या, बताते हुए भी तो शर्म आती है—, पता नहीं, तुम्हारे ख्यालों की बेहोशी लिखूं या मद-होशी·····कुछ समझ में नहीं आता, होता कुछ ऐसा ही है कि इस बेहोश आलम में करवटें बदलते २ मालूम नहीं किस तरह नर्म तकिया बाहों में घिर कर सीने से लग जाता है, और इसी नर्मी पर सारी रात औंधी होकर सोई रहती हूं मगर सुबह पसीने से गीला अपना सीना देखकर खुद को अपने आप से शरम आने लगती है, लेकिन यही हाल हर रात होता है, सोचती हूं······ क्या मुहब्बत ऐसी ही होती है, क्या प्यार इसी को कहते हैं, बस यूं ही रात गुजर जाती है, और जब भी आपसे मुलाक़ात हो जाती है तो तरसती आँखें कुछ देर के लिए पलक झपकना भी भूल जाती हैं ··, आपकी खूबसूरत सूरत को चाहती हैं यह आँखें कि कभी नजरों से दूर न हों, और दो बातें करके दिल मोरनी की तरह नाचने लगता है, निगाहें भी प्यार का अन्दाज समझती हैं और दिल भी मुहब्बत में धड़क कर आपसे प्यार की दास्तान सुनाने को धड़कता है मगर न जाने जुबान ही एन मौके पर क्यों नहीं कह पाती ·······, लेकिन आपके चले जाने पर दिल का दर्द और बढ़ जाता है·····मैं सच कहती हूँ आपसे कि अब मुझसे यह जुदाई यह दूरी और तनहाई नहीं सही जाती, जिस्म को बेताबी रह २ कर पिघल जाने को कसक उठती है, जी चाहता है कुछ ऐसा कि बदन को बाहों में संभालकर कोई इतनी कस कर जकड़ ले कि मैं छटपटा उठूं, सीने के उभार मसल कर रह जाएँ, सुर्ख लबों पर कोई तपते

होंठ रखकर इनकी आग को ठण्डा करदे, साँसों की गर्मी किसी की गर्म साँसों में मिलकर एक हो जाए। ऐ ……संगेदिल समझती हूं मैं भी तुम्हारे इश्क के इशारों को, मगर तुम शायद मौके का फायदा उठाना नहीं जानते…… …वो बरसात की रात……, मैं तो सचमुच बहक गई थी मगर तुम न जान पाये और फिर उसी रात ……, हम दोनों करीब २ थे, तन्हाई भी थी और डर भी नहीं था किसी का, दो दिल भी करीब थे और दोनों के कमरे भी पास-पास थे……महज दूरी थी तो वो थी कमरों के बीच की एक दीवार की। काश ! उस रात को तुम एक रंगीन रात बना देते तो हम दोनों के सिवा कोई न जान पाता, शायद अंधेरे में तो खुदा भी न देख पाता कि क्या हो रहा है, मैं तुमसे यही पूछती हूं कि क्या ऐसा मौका तुम जल्दी नहीं ला सकते……सच ……मैं तो रह नहीं सकती अब।

और आखिर मैं क्या लिखूं—, अपनी मुहब्बत का वास्ता देकर कहती हूं कि अपनी मदहोश मुमताज को जितनी जल्दी हो सके अपने आप में समेट लो।

—सिर्फ तुम्हारी
मुमताज !

ओफ ! एक गहरी साँस लेकर नौशाबा बोली—खुदा खैर करे…… …, तुम तो वाकय ही मुहब्बत करने लगी हो, और वो भी बिल्कुल शीरी-फरियाद की तरह।

और मुमताज शरम से लाल सुर्ख हो गई थी, मुड़े से कागज को मुमताज के हाथों में देते हुए बोली—लो इश्के-वसीयत, इसे जरा इत्र में महका कर देना अपने उनको, ताकि कुछ इसकी महक और कुछ बालों की खुशबू से बस वो भी कच्चे धागे से बंधे चले जाएंगे।

चल हट न ……सारा खत तो देख ज़रा, मोड़-तोड़ कर क्या कर दिया है—कहा मुमताज ने।

हाय ! हमें इसका सख्त अफसोस है, मगर सोचो तो अगर तुम्हारी अम्मी पढ़ लेतीं तो……फिर लिखा भी तो उर्दू में ही हुआ है वो, मुझे भी मजबूरन

खत को इस हालत में करना पड़ा, वरना मैं भी देख रही हूं कि लिखाई भी क्या लाजवाब लिखी है तुमने कि कातिब भी देखते रह जाएँ, जिओ मेरी जान, कह कर उसने मुमताज़ के गले में दोनों बाँहें डाल दीं और उसके "लिप्स" की 'किस' लेने को झुकी तो मुमताज सम्भाल न पाई उसके बोझ को तो पलंग पर गिरकर लेट गई, और अपने सीने पर झुकी नौशाबा को कन्धों से पकड़कर पीछे करते हुए बोली—हटो भी न तुम्हें तो हर वक्त बस शरारत ही करने की पड़ी रहती है।

मगर मेरी जान...कहते हुए उसने झुक कर उसके लबों को चूम ही लिया, बोली, तुम इतना नाराज क्यों हो जाती हो। उसी तरह झुकी वो उसके सुलगते होठों से अपने तपते होठों को सटाए फुसफुसा कर बोली—कुछ ही दिन तो और हैं हमारे हिस्से में, तुम्हारे इन नर्म होठों और सुर्ख गालों को चूमने के, वरना फिर तो इन पर हर रात तुम्हारे साजन की मोहरें लगा करेंगी।

ओफ ! ओ.....ऽ....., अब हट भी न, सारा बोझा ऊपर डाल रखा है तूने तो,—वो नाजुक बदन की हसीन हसीना बोली।

उठ कर नौशाबा ने जैसे ही आँचल संभाला कि तभी नौकरानी अन्दर आई, 'टी-सैट' को तश्तरी सहित मेज पर रखकर जाने को जब वो मुड़ी तो मुमताज़ ने उसी तरह लेटे २ कहा—चाय बनाने में इतनी देर कैसे लग गई ?

जी...दूध जो घर में रखा था वो खराब हो गया था फिर दीनू बाजार से लाया, इस वास्ते कुछ देरी हो गई।

अच्छा—जाओ—मुमताज ने हुक्म चलाया।

रौब तो अच्छा गाँठ लेती हो—, नौकरों पर.......नौशाबा ने उसे छेड़ते हुए कहा,—कहीं ऐसा न हो कि तुम उन पर भी वैसे ही रौब डालने लगो, वो तो बेचारे बड़े सीधे से लगते हैं।

'क्यों नहीं—, रौब के बिना काम ही कहाँ चलता है, आजकल की दुनियां में, फिर वो कौन सा इस दुनियाँ से कहीं बाहर हैं.....,

'.....तब तो खुदा बचाए तुम से उन्हें, मैं तो फिर यही दुआ करूंगी

कि तुम्हारी शादी तो उनसे क्या ही हो, तुम्हारी परिछाईं से भी खुदा उन्हें दूर रखे……,

हाय ! नौशाबा ! ऐसा न कहो मेरी जान—, उठ कर वो उससे लिपट गयी, बिल्कुल बच्चों की तरह, कहने लगी—वरना मैं सारी जिन्दगी जलती रहूंगी, घुट २ कर मर जाऊंगी, उनकी मुहब्बत को रटते २ ही दम तोड़ दूंगी उनके प्यार में तड़प २ कर जान दे दूंगी, मैं तो सारी उम्र……बस उनके कदमों में गुजार दूंगी—,

'क्या……सचमुच ?

'हूं ऽ……'

'यकीन तो नहीं आता इन हुस्नवालियों पर, जुबान की तो बड़ी मीठी होती हैं यह और दिल की एक दम चालबाज़ !'

मगर मुझे तो उनकी मुहब्बत की कसम……, सच कहती हूँ मुझे उनके प्यार के सिवाय और कुछ नहीं चाहिए ।

तुम तो सचमुच लैला ही बन गई हो, अपनी गोद में पड़ी मुमताज़ के गालों पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहने लगी—कहो तो तुम्हारी अम्मीजान से जल्द-से-जल्द शादी की सिफारिश कर दूं ।

'हाय !……क्या दिल की लगी को कह दिया है तूने जालिम, मैं तो यही चाहती हूँ कि बस ! कल ही सुहागरात हो जाये और मैं उनके पहलू में बेलिबास होकर सारी रात मचलती रहूँ ।'

'हा ऽऽऽ……बेशर्म ! नौशाबा ने कहा—शरारती कहीं की, ऐसी बात कहते हुए शरम भी नहीं आती तुझे तो ।

शरम और शरारत की बात पूछती हो—कहते हुए वो उससे हटकर बिस्तर पर लेट गयी, तो नौशाबा चाय बनाने लगी, और मुमताज़ अपने सीने पर खेलती मोतियों की माला के दानों को दांतों तले दबाते हुए कहने लगी—शरारत की एक बात सुनाऊं तुम्हें, अपने 'कालिज होस्टल' की । और उसके हां करने पर कहने लगी—हमारे यहां एक लड़की थी—रजनी, बड़ी खूबसूरत और एडवांस किस्म की थी वो । हर एक से छेड़खानी

करती रहती थी, मगर उसको रात में जल्दी सो जाने और सुबह देर से उठने की आदत बड़ी जोरों की, तो एक रात हम सब लड़कियों की राय पर उसके सोती हुई के मैंने सारे कपड़े उतार दिये।

हा ऽऽ……, चल हट मैं नहीं सुनती ऐसी बातें—नौशाबा ने नाराज सा होते हुए कहा।

लेकिन बात तो सुनो न पहले—और कहने लगी—हमने उसके बाक्स को भी ताला लगा दिया था और जब सुबह वो उठी तो……कहते २ मुमताज़ खुद हल्के २ हँस रही थी—वह अपने आपको इस तरह पाकर बड़ी गुस्से से भर गयी, तो लड़कियों ने उसे जबरदस्ती बिस्तर से नीचे उतार दिया, और उसके बदन पर चूटियाँ काटतीं, और वो थी कि एक कौने से दूसरे कौने में भागती फिर रही थी, जिधर भी दौड़ती उसी तरफ लड़कियां उसे गुदगुदाने लगीं, कभी वो गुस्से से भर कहती—मैं प्रिंसीपल से तुम्हारी शिकायत कर दूंगी, तो एक ने बढ़कर कहा—जाइये सरकार इसी आलम में जाइए—, उन पर रौब भी पूरा पड़ेगा और सबूत भी मिल जाएगा हमारे खिलाफ।

अच्छा बाबा सुन ली तुम्हारी दास्तान, और तुझें वहां सिवाय शरारतों के और काम ही क्या रहा होगा, वरना पास न हो जाती—और कह कर चाय का कप उसके हाथ में थमा दिया उसने।

तो मुमताज़ ने वापिस उसके हाथों में देते हुए कहा—पहले मुझे उठ तो लेने दो।

१६

मुमताज़ अपने कमरे में बैठी सोच रही थी कि खाली वक्त को कैसे गुजारा जाये, कोई काम ही उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि जिसमें वो उलझ जाये, फिर घर पर भी तो कोई न था, इतने बड़े बंगले में वो अकेली

थी, सिर्फ गेट का पहरेदार और एक माली के सिवाय सारे नौकर भी छुट्टी लेकर अपने २ घर गये हुए थे दो चार रोज के लिये, शायद कोई बड़ा त्यौहार था उन दिनों। साजिद तो 'आउट-आफ-स्टेशन' था और उसकी अम्मी और अब्बा हुजूर दोनों ही किसी उत्सव में गये हुए थे।

जब इन्सान खाली हो तो उसे चाहने पर भी कोई काम करने को नहीं सूझता, यही बात वो भी सोच रही थी, पलंग पर यूं ही बेकार सी बैठी थी वो, उठकर उसने एक पत्रिका उठाई और उसमें खो जाने की कोशिश करने लगी, मगर कहीं २ हास्य-व्यंग्य, और इधर उधर की बातें पढ़कर ऊब गयी।

तब उसे ख्याल आया क्यों न वो उस खत की दोबारा नकल करले इस सुनहरे मौके में—, सोचने लगी, मुई नौशाबा ने सारा काम ही बिगाड़ दिया खत को मरोड़, तोड़ कर। वरना कल आये थे……तो मूड में भी थे, आखिर मेरे कमरे में जो बैठे थे, क्यों न मूड सही होता, और उस वक्त वो मुहब्बत की दास्तां का पुर्जा पेश कर देती—, मौका भी तो कितना शानदार था…… तो—? …, सोच न सकी आगे वो।

तकिये के गिलाफ से उसने वो पर्चा निकाला और सीने के बल लेट कर उसने चेहरे को कोहनियों के बल हाथों में थामा हुआ था, और वो खत उसकी नजरों के सामने था, मगर कलम उठाने को भी तो जी न चाह रहा था, सोच रही थी—, कौन दोबारा इतना लम्बा खत फिर लिखने बैठे, उंगलियाँ भी दुखने लगेंगी, फिर अभी कल तो वो आये थे, एक दो दिन तो उनके आने की उम्मीद भी नहीं की जा सकती, तो फिर ऐसी जल्दी क्या है, कल लिख लेंगे।

और वह लेखक की फोटो को बिस्तर के नीचे से निकाल कर निगाहों से उसे दिल पर उतारने की कोशिश करते हुए कहने लगी—जालिम—, तुमने मुझे बहुत बुरी तरह दीवाना बना रखा है, पहले तो मैं मजाक ही समझा करती थी इसे कि प्यार करने वालों को रात भर नींद नहीं आती और करवटें बदलते २ ही रात गुजर जाती है, पर हमें तो दिन में भी चैन नहीं पड़ता रात की तो बात ही निराली है।

ओफ ! खुदा कसमे·····, कह कर उसने करवट बदली और फोटो को हाथ में लेकर कहने लगी—क्या बतायें तुम्हें अपने मजरूह दिल का हाल, यूं तो दिन में भी अपना हाल बेहाल होता है मगर रात को तो न जाने क्यों सारा बदन मचलनेसा लगता है, पता नहीं क्या हो जाता है दिल को भी, एक अजीब सी मस्ती छा जाती है·····जी चाहता है कि बस ! सारे कपड़े उतार फेंकू और बिल्कुल नंगी होकर ठंडे २ नर्म से बिस्तर पर औंधी होकर सोयी रहूँ, या गुदगुदे तकिये को बाहों में भर कर सीने से लगाकर दबोचे रहूँ·····और पूछने लगी वो उस बेजुबाँ तस्वीर से·····, ऐसा क्यूं होता है····· मगर खुद ही कह उठी—तस्वीर क्या जवाब दे बेचारी·····, तस्वीर के देवता सामने हों तो पूछूं—,

इतना ही कहा था उसने कि तभी माली की भारी सी भर्राई आवाज नीचे से सुनाई दी—बीबी जी कोई साहब आइन रहैं·····छोटे सरकार को पूछत रहिन—,

क्या शोर मचा रखा है·····वो गुलाबी गुस्से से जरा कुछ तेज आवाज से कहती हुई कमरे से बाहर गैलरी में आयी तो नीचे हाल में लेखक को देखकर आगे कुछ कहती हुई जवान एक दम खामोश हो गई, सिर्फ इतना ही कह पायी—'आप'··· !·····!!·····!!!

जैसे आंखों को यकीन न आया हो।

'आइये·····न उसने मुस्कराहट से वहीं खड़े २ हाथ फैलाकर कहा, दिल यूं नाच उठा उसका जैसे बादल को देखकर मोरनी नाच उठती है, और झट से वो वापिस कमरे में मुड़ गयी, जल्दी से उसने वो फोटो और दिल-दास्तां के खत को पलंग के नीचे की तरफ निवार में छुपा दिया, और दिल कह रहा था—पूछ लो न, मगर दिल भी पूरी रफ्तार पर धड़क रहा था।

तेजी से फिर वो बाहर आयी और तब तक वह भी सीढ़ियां करीब चढ़ चुका था, आखिरी सीढ़ी को कदमों से रौंदता हुआ वो कमरे के बाहर की गैलरी पर आ गया। मुमताज दरवाजे की मोतियों की झालर को अपने गोरे २ हाथों से एक तरफ करते हुए उसे अन्दर आने का आमन्त्रण देते हुए

कहने लगी—आज आप बिल्कुल ठीक ठाक हैं न, या कहीं……, मेरा मतलब है आप कहीं गलती से तो नहीं आ गये या रास्ता भूल गये हों—,

नहीं, 'मुमताज़'—, यह बात नहीं…, उसने मुस्कराकर कहा, मुझे याद है कि मैं कल भी आया था और फिर आज भी आपके सामने हूँ……शायद यह चांस पहली बार हुआ है……क्यों ?

लेकिन मुमताज ने कहाँ सुनी थी पूरी बात—, वो तो वहीं अटक कर रह गई थी……, जब उन्होंने आज तक पहली बार उसे …'मुमताज' कह कर पुकारा था वरना आज तक तो तुम और आप कह कर ही बात का सिलसिला जुड़ा था……'मुमताज' उसके दिल में इस लब्ज ने जैसे हूक भरदी हो, एक नजर, बिल्कुल एक टक सी उसकी निगाहें उसके चेहरे पर टिकी थीं और दिल तो यूं चाह रहा था कि बस ! वो अपने होठों से एक बार फिर उसी अन्दाज से कह कर पुकारे—, नहीं, 'मुमताज़'।

उसको खड़ा देख कहने लगी—'अरे, आप बैठिए तो सही, खड़े क्यों हैं।

'आप भी तो बैठिये न कहा उसने और खुद भी बैठ गया।'

आज जैसे मुमताज को यकीन नहीं आ रहा था……कि क्या वो सचमुच उसके सामने ही बैठे हैं…अभी तो उसने याद किया था और पलक झपकते ही वो सामने आ गए।

लेखक ने पूछा—आज क्या घर पर कोई नहीं है, कोई भी तो नजर नहीं आ रहा।

जी……आपने ठीक ही कहा है, मुमताज़ ने कुछ अपने बड़े २ नेल पालिश से चमकते नाखूनों की तरफ देखते हुए और कुछ उसकी तरफ देखते हुए कहा—अम्मी और अब्बा हजूर किसी के यहाँ दावत में शरीक होने को गये हैं और भाईजान तो बाहर गए हैं और मजे की बात यह है कि घर के तमाम नौकर भी छुट्टी पर हैं, कहते हुए उसके चेहरे पर सेब की तरह लाली खिल उठी थी, थोड़ा मुस्करा कर कहने लगी—बैठे हैं आज बिल्कुल तन्हाँ इन वीरान वादियों में, इन्तजार था कि कोई बागबाँ तो मिले।

ओह ! तो आप शायरी भी करने लगीं।

देखिये यह 'आप-आप' कह कर मत पुकारा कीजिए मुझे, क्या आप मुझे 'तुम' कह कर नहीं बुला सकते, मुमताज ने शोखी सी नज़ाकत से नाराज सा होते हुए बिल्कुल उसी तरह कहा जिस तरह राइटर लोग अपने उपन्यासों में अपनी हीरोइन का नज़रिया पेश करते हैं, उसके नाराज होने का या रूठ जाने का।

पहले खुद तो नजर अन्दाज फरमायें जरा अपने कहने के अन्दाज पर, खुद भी तो हर बात में 'आप' कह कर पुकारती हो, तो फिर कैसे न हर इज्जत के लहजे का जबाब बा-इज्जत दिया जाये।

'मगर मैं आपसे छोटी भी तो हूं'—कहने के साथ २ उसने फिर अदा से अभिनय करते हुए कहा—'तो फिर भला मैं क्यूं न 'आप' कह कर पुकारूँ, मगर आप, क्या मुझे 'तुम' कह कर नहीं पुकार सकते, अगर इससे आपको कुछ ओछापन लगता है तो आप मेरा नाम लेकर क्यों नहीं पुकारते, छोटा सा तो मेरा नाम है—, 'मुमताज़'

मगर......,

कुछ कहना ही चाहता था कि मुमताज़ बोल उठी—हर बात में अगर-मगर की टांगें तो जरूर अड़ाते हैं आप।

बात कट जाने से दोनों ही मुस्करा पड़े।

अच्छा तो आप ठण्डा पियेंगे या गरम! मुमताज़ ने खड़े होते हुए कहा, साड़ी के नाज़नीन पल्ले को वो अपनी उंगलियों पर लपेट रही थी, इस तरह करने से उसका पल्ला कन्धे से ढलता हुआ बाजू पर झूलने लगा, उभरा हुआ सिसकता सीना, साँसों की सरगर्मी से उठता बैठता बिल्कुल स्पष्ट हो रहा था, मगर पता नहीं उसने इस बात को अहसास करते हुए भी पल्ले को कन्धे पर क्यों नहीं संवारा, सीना भी कितना लाजवाब खूबसूरत था उस कातिल का, पतली सी कमर की लाजवाब कटाई से ऊपर उभरा हुआ सुडौल सीना कयामत ढा रहा था।

क्यों खामख्वाह की तकलीफ करती हैं आप भी, कहा उसने और खड़ा होते हुए कहने लगा—मैं तो जरा साजिद से मिलने आया था महज़ दो चार

मिनट के लिए, मगर आप फरमाती हैं कि वे घर पर ही नहीं, तब खैर ! आप अब अगर जाने की इजाजत दें, तो ज्यादा बेहतर होगा ।

इतनी जल्दी ! इधर आए और उधर चल दिये, इक मीठी सी अदा बिखेरते हुए उसने लाइट का स्विच आन कर दिया, ट्यूबों की झिलमिलाती रोशनी की तरह वो भी मुस्करा रही थी, अपने लबों पर रौनक की बहार बिखेरते हुए वो बोली—क्या हमारे पास दो चार मिनट को बैठना गवारा नहीं कर सकते, या हमसे मिलकर कोई बात करना नहीं चाहते आप ।

ओफ ! यह आप क्या फरमाती हैं, एक फीकी सी हंसी उसके चेहरे पर खेल गई । कहने लगा—बल्कि यह कहिये कि आपसे मिलकर तो बेहद खुशी होती है, आपके चेहरे पर सदाबहार रौनक देखकर तो न मुस्कराने वाले आदमी के चेहरे पर भी मुस्कराहट खेलने लगती है, लेकिन एक बात और है, आप हर बात का मतलब उलटा मत लगाया करिये, मसलन, अभी मैंने आपसे जाने की दरख्वास्त की, तो आप इसका मतलब नाराजगी से लगाने लगीं ।

मगर आप भी तो हद करते हैं, नाज़नीन कौन सा कम थी, अदा उसके हर अन्दाज में थी । उसने इस फिकरे को बड़े भोलेपन से कहा और अगले जुमले को जोड़ते हुए करारी चितवन से उसने दिल में उतर जाने वाली मदहोश तो क्या बेहोश कहिए, नजर से उसकी तरफ देखा, बोली—आते बाद में हैं और जाने की आपको पहले से जल्दी पड़ी रहती है । अच्छा, आप दो मिनट बैठिये, मैं अभी चाय तैयार करके लाई, और बिना उसकी तरफ देखे वो कमरे से बाहर चली आई ।

तेजी से सीढ़ियों को पार करती हुई वो किचिन में पहुँची, और चाय तैयार करने में व्यस्त हो गई । लेकिन दिल उसका, बुरे हाल से धड़क रहा था, सोच रही थी शायद ! कि आज घर में वो बिलकुल अकेली है, और ऐसे मौके में उसके दिल का दरोदोनार उसके साथ है । इन्हीं बातों के साथ-साथ उसके हाथ काम में लगे हुए थे और दिल इन्हीं बातों में लगा हुआ था, सोच रही थी, दिल की धड़कन इतनी तेज हो जाती है, जब अपनी मुहब्बत के

जजबात की बात करती हूँ। वरना ऐसे मौके में तो जी चाहता है कि बस उनसे बुरी तरह लिपट जाऊँ, और वो मुझसे शरारत करने लगें, मगर………, पता नहीं हिम्मत क्यों नहीं पड़ती।

हाँ, तो अपना वो खत पकड़ा दो चुपके से उनके हाथ में, पढ़कर सब समझ जायेंगे और रास्ता आसान हो जाएगा। मगर वो तो बिलकुल ही मुड़ा-तुड़ा है, दिल ने विपरीत पासा पलटा।

कोई बात नहीं ! यह आवाज भी दिल की थी।

खैर देखा जायगा, उसने अपना सुझाव पेश किया और जल्दी से चाय लेकर वो ऊपर पहुँची।

देखा उसने कि—वह प्यानो पर रखी उसकी डायरी को उलट-पुलट रहा था, जिसमें मशहूर शायरों की गजलें लिखी हुई थीं।

टेबुल पर चाय रखकर उसने कहा—आइये……

लेखक उस डायरी को उलटते-पलटते हुए नजदीक आया और कुर्सी पर बैठते हुए बोला—इसमें मेरी दो एक गजलें ऐसी भी हैं जिन्हें मैंने किसी मुशायरे में सिर्फ कही थीं मगर मैंने आज तक किसी मैगजीन या अखबार में प्रकाशित करने को नहीं दीं, तो वो गजलें आपके पास कहाँ से आ गयीं।

तब मुमताज ने जुल्फों की घटा में घिरे चेहरे को कुछ आहिस्ता से उठाया, कहने लगी—अगर आपकी यह गजलें कहीं प्रकाशित नहीं हुईं तो क्या हुआ आपने किसी मुशायरे में पढ़ी तो हैं, बस ! वहीं से मिल गईं।

खैर छोड़ो इस बात को, उसने मुमताज के हाथ से चाय का कप लेते हुए कहा—आप यह बताइये कि अब आप आगे पढ़ने का इरादा रखती भी हैं या नहीं।

फेल तो आपने कर ही दिया है अब पढ़कर क्या करूँगी। नजाकत ने बड़े नाजनीन अन्दाज में कहा।

मैंने क्या फेल पास करना है किसी को। कहते हुए वह मुस्करा पड़ा। सबकी किस्मत सबके पास है, कोई अपनी मेहनत पर यकीन करता है तो कोई किस्मत पर विश्वास करता है, किसी दूसरे का इसमें क्या हाथ हो सकता है।

आपने पहली मुलाकात और पहले ही दिन तो कहा था, कि अगर मैं फेल हो जाऊँ तो फिर तो आपको दुबारा पढ़ना पड़ेगा या नहीं, बोलिये कहा था या नहीं।

तो अब आप कहने का भी कुछ हर्जाना लेना चाहती हैं तो वो वैसे ही बता दो।

तो क्या आपका मतलब है कि आपको यूं ही छोड़ दूंगी। मुमताज़ ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा—आपका क्या ख्याल है?

'आप ही बता दें तो ज्यादा बेहतर होगा।

तो अब साल भर आपको मुझे पढ़ाना पड़ेगा। मुमताज़ ने बड़ी अदा से बांकी नजर से देखते हुए कहा।

यह बात झूठी है, कहा उसने और कप को प्लेट में उल्टा रखते हुए बोला—यह पढ़ाना किसी को अपने बस से बाहर है और साथ ही वो उठ खड़ा हुआ, कहने लगा—अच्छा अब इजाज़त दें।

लेकिन ऐसी भी जल्दी क्या है। मुमताज़ ने कुछ हड़बड़ाते हुए कहा—थोड़ी देर तो और बैठिये न, चले जाना, हम कौन सा आपको जबरदस्ती रोक लेंगे।

न जाने यह दो बातें भी उसने किस तरह कह डाली थीं। दिल उसका अपने पूरे दम से धड़क रहा था, आगे क्या कहे वो कुछ सोच नहीं पा रही थी, साड़ी का आंचल ढलने को बार २ मचलता और वो थी कि घबराहट में कुछ भी सोच न पा रही थी।

तब तक वह उसके कमरे के दरवाजे से बाहर जा चुका था और कुछ न सोच, वह भी उसके पीछे २ हो चली, उसके पीछे २ वो भी तेजी से सीढ़ियां उतरने लगी।

जगमगाते हॉल में दोनों पहुंचे। आगे वो था और दो कदम पीछे मुमताज़ थी।

कि तभी न जाने क्या विचार आया मुमताज़ के दिल में, कि वो······तेजी से उससे दो कदम आगे बढ़ गई और उसके सामने, उसका रास्ता रोककर

खड़ी हो गई। कहने लगी—आप तो न जाने क्यूं हर वक्त हमसे खिंचे २ से रहते हैं! और जानकर भी अनजान बन जाते हो। उसकी आंखें लेखक की आंखों में ढल रही थीं, चेहरे पर एक चमक सी थी और आवाज में कहने का एक बेहतरीन लहजा, कि फिल्म स्टार मीना कुमारी भी क्या मुकाबला करेगी उससे, बड़ी कशिश सी, दिलेनिशां आवाज में कहती जा रही थी—हम तो हर वक्त आपकी सूरत के दीदार के दीवाने से रहते हैं और हरदम बात करने को बेताबी सी छाई रहती है, दिल की धड़कन हर दम आपका ही नाम लेकर दम भरती है, आपके आने की हर आहट का बेकरारी से इन्तजार करती हूं, न दिन को चैन रहा है, न रात की नींद, सब कुछ मैं आप पर लुटा चुकी हूं और मैं सच कहती हूं······उसने शराब में बहककर बोलने के अन्दाज में कहा—

'मैं······आपसे प्यार करती हूं!'

और अब तक उससे मिली हुई नजरें झुक गई थीं, तब लेखक ने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। शायद सिहर उठी थी वो, और मुमकिन है लेखक भी, और मुमताज़ के चेहरे को अपने हाथ से ऊपर उठाते हुए उसकी कटीली समुद्र सी गहरी आंखों में झांकते हुए बोला—'क्या सचमुच मुहब्बत करती हो?'

और उठी हुई मुमताज़ की नजरों का पर्दा इकरारी का अन्दाज पेश करके झुक गया।

तो वह उसके इस शोख अन्दाज पर मुस्करा उठा, और शर्म के मारे मुमताज़ उसके सीने से लग गई, और तब उसने भी बांहों में भर लिया उसे।

शायद लेखक के लिए यह एक पहला ही मौका था उसकी जिन्दगी का, कि एक जवान लड़की और वह भी इतनी नाजुक और फिर हसीन, उसके सीने से इस तरह लगी हो।

और मुमताज के लिए भी शायद यह पहला ही अवसर था कि वो किसी मर्द की बांहों में इस तरह घिरी थी।

तब लेखक ने उसके कन्धों को पकड़कर कहा—क्या, वाकय ही सचमुच तुम मुझसे प्यार करती हो।

'हां'……उसने जबान से काम लिया।

मगर जानती हो, जिसे तुम प्यार कह रही हो, यह प्यार प्यार नहीं है, बल्कि इसे 'इश्क' कहते हैं।

आप चाहे कुछ भी कह लीजिए, मगर मैं इतना जानती हूं कि मैं, आपके प्यार में दीवानी हो गई हूं, सच मानिये।

दिन-रात आपके ही ख्वाबों में खोई रहती हूं, पता नहीं कल्पनाओं के कितने महल हर रोज बनाती हूं और रेत के टीले की तरह गिरा देती हूं।

मैं मानता हूं कि ये सब बातें बिलकुल सही होंगी, मगर क्या तुमने मेरी आंखों में भी कभी झांकने की कोशिश की है, क्या कभी मेरे दिल को भी पढ़ने की कोशिश की है, लेकिन यह आज मालूम हुआ कि तुमने मुझे समझने में बहुत भूल की है……,

जी !…………, उसने एकदम हैरानगी की नजरों से देखा। जैसे उसने कोई भयानक दृश्य देख लिया हो और वो लड़खड़ाकर पीछे हट गई हो।

हां, मुमताज, तुम वास्तव में आज तक अपने आपको धोखा देती रही हो, मुझे यकीन न था कि तुम जैसी समझदार लड़की भी अपने आपको ख्यालों और ख्वाबों में भटका सकती है।

यह आप क्या कहते हैं, मुमताज को जैसे अपने कानों पर यकीन न आया, उसको अपने आप पर शक सा हो गया कि वो कहीं नींद की खुमारी में ख्वाब तो नहीं देख रही, लेकिन जब एक कदम बढ़कर लेखक ने उसके दोनों हाथ थामे तो उसे स्पर्श पाकर यकीन हो गया कि यह कोई सपना नहीं, वास्तविकता है। उसने बड़ी सादगी से कहा—मुमताज…… , तुम भोली ही नहीं—, साथ नादान भी हो, एक पढ़ी-लिखी समझदार लड़की होकर भी तुम ……आज तक अपने आपको ख्यालों में भुलाकर अपना जी बहलाती रही हो, और वो भी मुझे केन्द्रबिन्दु बनाकर।

पथराई सी आंखों से मुमताज एकटक उसकी सूरत इस तरह देख रही

थी जैसे वो उसे पहचानने की कोशिश कर रही हो, और सोच रही थी कि, कहीं कान धोखा तो नहीं खा रहे, या वो खुद होश में नहीं है, एक तो वो आज मुहब्बत की बात जुबां पर ला नहीं पा रही थी और जब धड़कते दिल पर किसी तरह काबू पाकर उसने कुछ कहा भी तो, जवाब ऐसा मिला कि रही सही धड़कनें भी बन्द होती महसूस होने लगीं उसे, आखिर पूछ ही बैठी—कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही हूँ ?······

नहीं······, उसने उसके दोनों हाथों को छोड़ते हुए कहा—तुम सपना नहीं वास्तविकता देख रही हो, अपनी भूल के कोहरे के बादल हटते हुए देख रही हो, कि जिस गर्द के पीछे आज तक तुमने अपने आपको छिपाकर रखा है वो धूल के बादल हट रहे हैं ।

नहीं—, आप झूठ बोल रहे हैं·······, रात के हर ख्वाब में आपने मेरी गहरी स्याह अलकों को सम्भाला है, मेरे चेहरे को छुआ है, मुझे अपनी बांहों में सँभाला है, मुझसे प्यार के वादे किये हैं ।

लेकिन असलियत और ख्वाब में कितना फर्क होता है यह तुमने नहीं समझा, हर बात को अगर······

और इससे पहले ही मुमताज़ उसकी बात को काटती हुई बोली—नहीं, मैं सच कहती हूँ !·······, मैं आपके प्यार में पागल हो गई हूँ·······, आपने मुझे अपनी मुहब्बत में दीवाना बना डाला है·········, हर पल आपके प्यार में तड़पती रही हूँ·········, दिन रात आपकी मुहब्बत में अपने आपको सुलगाती रही हूँ ·········, उसने लेखक के दोनों हाथ पकड़कर उसे झिझोर डाला और चीख सी पड़ी—मैं चाहती हूँ कि—, आप मुझसे शादी कर लें·······जिन्दगी भर को अपने आपमें मिला लें, मुझे आप, अपने आपमें समेट लें ।

मुमताज़ !······, आज उसको हर बात में उसका नाम पुकारना पड़ रहा था, कहने लगा—सब कुछ मुमकिन हो सकता है, तुम्हारी हर बात सही हो सकती है, लेकिन असलियत यही है कि मैं तुम्हारे लायक ही नहीं हूँ—,

नहीं, ऐसा मत कहो—, मैं सच कहती हूँ मैं आपको जी-जान से चाहती हूँ और चाहती हूँ कि एक इतने बड़े कलाकार के कदमों में रहकर कुछ खिद-

मत कर सकूं.........आपके लिए अपने आपको मिटा देना भी मंजूर है ? लेकिन एक बार आपका असीम प्यार पाना चाहती हूँ......, बस एक बार...सिर्फ एक बार !

ओफ ! तुम यह कैसी नादानी की बातें कर रही हो, हर बात का अंजाम और बात का पहलू तो देख लेना चाहिए पहले, यह तो सोचो......

नहीं ! मैं तो बस यह कहना चाहती हूँ कि......मैं आपसे शादी करने को बेकरार हूँ।

लेकिन इसके बारे में तुमने चुनाव ठीक नहीं किया, मैं सचमुच तुम्हारे लायक नहीं।

'लेकिन वजा क्या है......?'

'वजा ही नहीं, कुछ रुकावटें भी हैं, पहली बात तो यह कि कुछ खास बातें ऐसी भी हैं कि मैं तुमसे शादी करना भी नहीं चाहता, और फिर दूसरी बात यह कि तुम मेरे लायक नहीं और मैं तुमसे निभा नहीं सकता, पहले आप मेरी बात सुन लें......' उसने मुमताज को कुछ कहने से टोका। अपनी बात को जारी रखते हुए कहने लगा—'तुम एक अमीर खानदान की लाड़ली बेटी हो, तुम्हारे वालिद साहब का लाखों का कारोबार और जायदाद है, करोड़ों के बैंक बैलेन्स के मालिक हैं और मैं शायद उनके सामने खड़ा होने की औकात भी नहीं रखता।'

रहने दो इन बेकार की बातों को। इन बेबुनियाद बातों पर मैं यकीन नहीं करती।

लेकिन अपने आपको अंधेरे में रखना भी कोई अक्लमन्दी नहीं, मैं एक अकेला अनजान राही हूं पता नहीं किस गुमनाम मंजिल की तरफ मेरे कदम बढ़ रहे हैं, मेरे सर पर किसी का साया नहीं, दुनिया में शायद मुझसे खून का रिश्ता रखने वाला कोई नहीं है।

लेकिन—, मैं आपके खानदान से नहीं, सिर्फ आपसे शादी करना चाहती हूँ, मैं नहीं जानना चाहती कि आप किस खानदान से ताल्लुक रखते हैं, मैं सिर्फ आपसे शादी करना चाहती हूँ, केवल आपके प्यार को पाना चाहती हूँ,

नहीं जानना चाहती कि दौलत आपके पास है भी या नहीं, किसी जायदाद के आप मालिक हैं या नहीं, इससे मुझे कोई वास्ता नहीं, सिर्फ तुम्हीं को चाहती हूँ, तुमसे ही रिश्ता जोड़ना चाहती हूँ।

लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि तुम हर बात में अपने आपको धोखा देकर असलियत से परे क्यों रखना चाहती हो—, शादी सिर्फ औरत मर्द का प्यार पा लेने से ही पूरी नहीं हो जाती, सिर्फ इसे शादी नहीं कहते कि बदन के जलते शोलों को वासना की प्यास बुझाकर ठण्डे कर दिये जाएँ, शादी सारी उम्र को निभाने का एक साध होती है, क्या तुम इस लेखक की जिन्दगानी का हर पहलू जानती हो, कि जिसे दुनिया सिर्फ नाम से जानती है, उसकी सही हालत क्या है, उसकी परेशानियाँ और जज़बात क्या हैं जिनसे वो हर पल लड़ता है, मुझसे शादी करके सिर्फ प्यार पाना ही चाहती हो न, लेकिन जानती हो, यह प्यार का उतावलापन जवानी की गर्मी खत्म होते ही दूर हो जायगा, और उसके बाद सीने की सख्ती से सिर उठाकर जब आर्थिक सख्तियों से झूझना पड़ेगा तो सारा प्यार तानों में बदल जायगा।

नहीं, यह बात नहीं होगी—, मैं एक कलाकार की भावनाओं को जानती हूँ, उसकी 'फीलिंग्स' की कीमत भी जानती हूं और साथ ही उसके विचारों की कद्र करना भी जानती हूँ··· , "आपके सिर्फ एक प्यार भरे लब्ज़ के बदले मैं अपने आपको लुटा देने को तो क्या, मिटा देने को भी तैयार हूं·····" बोलो न, उसने लेखक के दोनों हाथ पकड़ लिये········ उसके हाथों को अपने हाथों से दबाती हुई बोली—कुछ तो जवाब दो न ······क्या मेरी बात पर आपको यकीन नहीं आता। आप तो साइक्लोजी के एक माने हुए फिलॉस्फर हैं········ क्या मेरी इन मुहब्बत भरी तरसती आँखों में आपको कुछ नहीं दिखाई देता ?·· ······ वो सचमुच अपने आपको उस वक्त भुला चुकी थी··········नहीं सोच पा रही थी वो क्या कह रही है और क्या कहने जा रही है········, इसी मदहोशी में उसकी साड़ी का पल्ला सीने पर से फिसलकर बांहों के सहारे झूल रहा था, उसका नर्म सीना बिलकुल कमर तक बिना आंचल के झलक रहा था, और वो थी कि उसी तरह अपनी आवाज में सोज़ का लहजा पेश

किये कहती जा रही थी—जरा देखो न·········मेरी आँखों से दिल की किताब को·········, हर पन्ने पर आपकी मुहब्बत की दास्तान लिखी हुई है·········, हर लब्ज में मुहब्बत की आह तड़प २ कर खिसक रही है।

मुमताज़ ! जरा अपने होश-हवास से बात करो, मैं······,

पहले तो मेरी बात का जवाब दो न·········, क्या आपको मुझसे मुहब्बत नहीं है ?

नहीं !······!!······!!! वह चीख सा पड़ा, जैसे बार २ मुमताज़ के मुंह से मुहब्बत—मुहब्बत—मुहब्बत का लब्ज सुन-सुन कर वो तंग आ गया हो।

उसी तरह अपनी आवाज की तेजी को जारी रखते हुए कहने लगा—तुम्हें शर्म नहीं आती इस तरह की बातें अपनी जुबान पर लाते हुए, क्या अहसास नहीं हो रहा है तुम्हें कि तुम क्या कह रही हो, जबान-दराजी करती जा रही हैं साहबजादी, जानती भी हो कि मुहब्बत क्या होती है, जाओ, अपने कमरे में आराम करो, लगता है आज तुम्हारा दिमाग सही नहीं है, या तुमने आज कुछ पी-भी ली है······कह कर उसने मुमताज की तरफ एक कड़ी नजर डाली, और जैसे ही चलने को मुड़ा, मुमताज ने फिर उसका हाथ पकड़ लिया, कहने लगी—आज आप को गलतफहमी हो गई है, मैं जो भी कह रही हूँ सोच समझकर कह रही हूँ, बल्कि आपके जवाब पर मुझे शक हो रहा है कि कहीं मैं गलत तो नहीं सुन रही हूँ, आज मैं आपसे अपनी जिन्दगानी का फैसला कर लेना चाहती हूँ कि आपने जो मेरे दिल में मुहब्बत की आग जला······,

मैं कहता हूँ यह मुहब्बत का सड़ा हुआ लब्ज अपनी जुबान पर मत लाओ मेरे सामने।

लेकिन मैं कहती हूँ पहले मुझे अपनी बात पूरी कर लेने दो,—, बोली—जिस मुहब्बत को आप आज सड़ा हुआ लब्ज कह रहे हैं, क्या यही मुहब्बत आपके दिल में, मुझसे पाने की इच्छा नहीं है ?

'नहीं !······, उसने छूटते ही कहा।

आप जरा सच्चे दिल से कह दो आप मुझसे मुहब्बत नहीं करते ?······,

नहीं ! एक बार नहीं, बल्कि हजार बार भी नहीं……! नहीं……!! नहीं……!!! का लब्ज़ दोहरा सकता हूँ।

'क्या आप मुझसे शादी नहीं कर सकते ?

'हरगिज नहीं !……,

'आखिर क्यों नहीं ?, क्या कमी है मुझमें……जरा यह तो बतादो,—कहा मुमताज़ ने……।

अगर तुम सचमुच जानना चाहती ही हो, तो सुन लो……, मैं तुम्हें अपनी बहन मानता हूँ।……,

'बहन !'……, मुमताज़ की जबान से यह लब्ज यूं निकला जैसे सितार का तार अचानक टूट गया हो।

'……हाँ, बहन……, जिस तरह तुम साजिद की पाक बहन हो, बिल्कुल वही जगह तुम्हारे लिये मेरे दिल में भी बनी हुई है, सच कहता हूँ……,

नहीं !!! मुमताज अपने पूरे जोर से चीखी कि सारा हॉल गूंज उठा…, आगे कुछ मत कहना……मैं नहीं सुनूंगी तुम्हारी बात !

और इधर उसकी अम्मी और अब्बा हजूर भी बाहर से लौट आए थे, बरामदे को पार करते वक्त उनके कानों में लेखक की बात कुछ अस्पष्ट सी होकर टकरा रही थी, लेकिन हाल में कदम रखने से पहले… मुमताज की जोरदार 'नहीं' की आवाज ने उनको वहीं रोक दिया, दरवाजे से बाहर ही बायीं तरफ की खिड़की के पर्दे की ओट से देखा कि अन्दर हॉल में मुमताज़ और लेखक खड़े हैं……, सुना उन्होंने भी……

कि वह कह रहा था—लेकिन सही मायनों में असलियत यही है कि मैंने जिस रोज तुम्हें पहली बार देखा था, तो तुम्हारी चमकती आँखों में मैंने प्यार की एक बड़ी प्यारी झलक देखी थी, और उसी वक्त दिमाग तुम्हारी शक्ल को देख कर यही सोचने लग गया था, कि क्या यह लड़की तुम्हें इक छोटी बहन का प्यार नहीं दे सकती, इस मासूम सी सूरत पर कितना भोलापन है कि जिसके चेहरे पर ही प्यार की इतनी प्यारी झलक है……उसकी पाक मुहब्बत कितनी खूबसूरत होगी, और यकीन करना मुमताज़……मेरा दिल उसी वक्त

तड़प उठा था कि तुम्हें एक बार अपने मुंह से बहन कहकर पुकारूँ और तुम्हारे हाथों को चूम लूं……लेकिन जानता था कि एक मुस्लिम धर्म की लड़की……और खास कर ऊंची जाति की, किसी गैर आदमी के सामने बिना पर्दे के आना तक तो गवारा करती नहीं……

बस और कुछ मत कहो…, मुमताज जैसे सुन न सकी हो उसकी यह बात, कहने लगी—अपने इन लब्जों को वापिस ले लो, और बिल्कुल उसके करीब आकर उसने लेखक के मुंह पर अपनी कांपती हुई उंगलियाँ रखदीं तो लेखक ने उसका हाथ पकड़कर आहिस्ता से दबा लिया अपने हाथ में। अपने अधूरे फिकरे के दूसरे पहलू को जोड़ते हुए कहने लगा,—तब भला मैं तुम्हें छूने की हिम्मत किस कैसे कर सकता था, और फिर खुद सोचो, कि साजिद जिसने मेरे सामने तुम्हें बिना पर्दे के आने की इजाजत दी, और साथ ही बात करने की भी……तो उसने भी मुझपर कुछ यकीन करके ही ऐसा किया होगा, और यही नहीं……मैं तुमसे कई बार अकेले में भी मिला हूँ……तन्हाई में भी हमारी बातें हुई हैं……तो जरा सोचो तो सही—, इतनी छूट और इतना यकीन अगर तुम्हारे वालिद साहब को मुझपर है तो क्या मैं इतना कमीना हूं कि उसका नाजायज फायदा उठाकर तुमसे इश्कबाजी करूँ, जिसके भाई ने……मुझे अपना दोस्त नहीं, भाई ही समझकर अपनी बहन का तआरूफ मुझसे कराया हो, तो क्या मैं इतना गिरा हुआ हूँ कि उसकी बहन को गुमराह करूँ……,

'लेकिन आप जरा दिल की सही हालत बताए कि क्या आपने कभी भी मेरे सामने प्यार जताने की कोशिश नहीं की ?……

'बिल्कुल नहीं !……

मैं कहती हूँ आप झूठ बोल रहे हैं……एक दिन शायद आपने चाय के लिए इन्कार कर दिया था तो मैंने कहा था कि हम तो आपसे इतना प्यार करते हैं और आप हैं कि उसका अहसास भी नहीं करते तो आपने जवाब यही दिया था कि कौन कहता है कि हम आपसे प्यार नहीं करते……, अब बताइए, क्या अब भी आप अपनी बात को पलटना चाहते हैं।

'पलटना नहीं, बात का सही मतलब समझाना चाहता हूँ—'कि जरा

आप भी मुझे यह बता दें कि क्या सिर्फ प्यार का मतलब……वासना और इश्क से ही है, एक मां भी तो अपनी बेटी से प्यार करती है, एक बाप भी अपनी बेटी को जीजान से चाहता है, एक भाई और बहन भी तो आपस में प्यार करते हैं—, तब तुमने प्यार का मतलब इतना उल्टा क्यों लगा लिया, हाँ……अगर मैंने तुमसे कभी बदतमीजी की हो तो बता दो, या कभी तुमसे इस तरह के प्यार के अन्दाज से बात कही हो, बल्कि मैंने कई बार महसूस किया है कि तुम्हारी बातों में कहने का लहजा कुछ इस तरह का था कि जिनसे प्यार और इश्क की वैसी ही झलक सी चमकती थी, जिसका पर्दाफाश आज हुआ है, लेकिन ऐसी बात सोचकर मैं अपने आपको ही धिक्कारता कि हर बात का उल्टा मतलब लगा लेना ठीक नहीं, और फिर मेरे दिल में कभी ऐसी बात का कोई विचार नहीं उठा था, तो भला मैं तुम्हारे प्रति इतनी गलत भावना कैसे बना सकता था।

यही तो बात मैं पूछना चाहती हूं कि आप जानकर भी अनजान बने रहे और जानबूझकर मुझे आपने अंधेरे में क्यों रखा ? आपकी बातों से साफ जाहिर है आप मेरी मुहब्बत का अन्दाजा लगा चुके थे ……, आप… ।

एक मिनट जरा मैं तुम्हारी बात काट देना चाहता हूँ कि आपका यह इल्जाम लगाना भी सरासर गलत है, मेरे ख्याल से आपको अच्छी तरह याद होगा, कि जब हमारी और आपकी दूसरी बार मुलाकात हुई थी—, तब उस वक्त भी मुझे आपकी बातों के अन्दाज और हावभाव से मेरे दिमाग में भी कुछ अस्पष्ट सी झलक पैदा हुई थी कि शायद हमारी और आपकी मुलाक़ात का आपने कुछ उल्टा मतलब लगाया है, तब अपने इस शक को दूर करने के लिए मैंने आपसे एक सवाल बड़ी संजीदगी से किया था—, कि क्या आप कभी गलतफहमी का शिकार हुई हैं……, तब—, मुझे याद है कि आपका जवाब यही था कि—आज तक तो नहीं हुई, न ही कभी आइन्दा होने की गुंजाइश है, तब आप ही बताइए……कि अगर मैं आपकी भावनाओं और प्यार को उल्टी तरफ लेकर कभी पूछता, कि क्या आप मुझसे मुहब्बत करती हैं—, मेरे लिए यह कितने पाप की बात होती, सच कहता हूँ मुमताज, ईश्वर गवाह है कि मैंने तुम्हारे लिए अपने दिल में कभी ऐसी गन्दी बात नहीं सोची……।

और मुमताज जड़वत सी खड़ी थी, बिल्कुल खामोश, एक पत्थर की मूर्ति की तरह, आँखों से झर २ आँसू टपककर गालों पर ढल रहे थे, लगता था कि जैसे उसमें जान ही न रही हो।

बाहर खड़े उसके अब्बा और अम्मी भी पर्दे की ओट से यह नजारा देख कर अपने आँसू न रोक सके, वे भी खामोश खड़े थे एक बुत की तरह, चाह कर भी उनके कदम न उठ सके......उस कलाकार के सामने जाने की हिम्मत न हो सकी।

हर तरफ खामोशी सी छाई हुई थी, कोई भी सोच नहीं पा रहा था कि क्या किया जाए, और क्या कहा जाए।

तभी एक मिनट बाद लेखक के कदम मुमताज की तरफ बढ़े...... , उसने मुमताज के दोनों कन्धे पकड़ कर उन्हें दबाते हुए कहा—रोक लो इन आँसुओं को, यह आँसू बहुत कीमती होते हैं इन्हें यूं ही बहा देना ठीक नहीं।

इतना कहना ही था उसका ....., कि बजाय आँसू रुकने के और तेज हो गये, वो अपने आप पर काबू पा न सकी, और एक दम अपने आपको लेखक के सहारे छोड़कर उसके सीने में सिर को छिपाकर बिलख पड़ी, आँसू बाढ़ की तरह बह निकले, और उन कीमती मोतियों से लेखक की कमीज भी सीने पर से गीली हो गई, उसकी इस नादानी पर लेखक का जी भी भर आया, उसने मुमताज का चेहरा आहिस्ता से अपने हाथों में थाम लिया। सिसकियों और गर्म आँसुओं का दौर पूरे जोर पर था, उसने प्यार से उसके आँसुओं को पोंछते हुए कहा—मुमताज ! तुम एक समझदार लड़की हो, जरा दिमाग से सोचो तो, कि आज तक तुमने ख्यालों की दुनिया में बहका कर अपने आपको गलतफहमी में रखा है, मेरी यही ख्वाहिश है कि तुम किसी ऊँचे घराने की बहू-बेगम बनकर अपने और उनके खानदान का नाम रोशन करो, यह बातें सब नासमझी और बेवकूफी की होती हैं, मेरी नजर में तुम देवी और फरिश्ते से बढ़ कर हो......मेरे दोस्त की पाक बहन हो, जिससे आँख से आँख मिलाना भी एक बहुत बड़ा गुनाह है........, और फिर यही कहूँगा कि अगर मैंने कभी तुमसे हँस कर बात की हो तो गलत नवाजी की नजरों से नहीं। मैं सच कहता

हूँ……, मैं तुमसे बहन के प्यार को पाने के लिए आज भी तरस रहा हूँ, बोलो न मुमताज, क्या तुम मुझसे एक बहन की तरह प्यार नहीं कर सकतीं……… क्या भाई और बहन का रिश्ता कुछ कम रिश्ता है, मुझे अपना साजिद ही समझो………अब इन आँसुओं को यूं ही मत बहाओ……तुम्हें हमारी कसम…… रोक लो अपनी आँखों को यूं बहने से, मैं किसी के बहते आँसुओं को नहीं देख सकता, और फिर यह कीमती मोती भी मेरी वजह से बरबाद हो रहे हैं……न जाने तुम भी कितनी नादान हो, मैं भला तुम्हारे लिए कर ही क्या सकता हूँ जो तुम अपने आपको मुझे सौंप देने के सपने देखती रही हो. मैं सच कहता हूँ मुमताज……मुझसे ज्यादा आराम की नींद शायद तुम्हारे घर के माली और नौकर सोते हैं ···वो भी अपनी ड्यूटी बजाकर अपना फर्ज पूरा करके एक तरफ हो जाते हैं, और एक लेखक की जिन्दगी में कितनी……।

बस ! ……और कुछ मत कहना आगे, सिसकती हुई मुमताज ने अपना हाथ उसके मुँह पर रख दिया, और उसके गले में दोनों बाहें डालकर उससे बच्चों की तरह लिपट गई, अपने चेहरे को थोड़ा पीछे करके लेखक की तरफ अपनी गीली अलसाई आँखों से देखते हुए अपनी हिचकियों को बस में करती हुई बोली—बल्कि मैं आपसे माफी माँगती हूँ कि एक फरिश्ते की तरह पूजने लायक इन्सान के प्रति मैंने कितनी गलत बात सोची, मुझे ख्वाब में भी यह उम्मीद न थी कि आपकी नजरों में एक……, चाह कर भी वो अपनी हिच-कियों पर काबू न पा सकी, और बात पूरी करने से पहले वो फिर रो पड़ी, लेखक ने उसे अपनी बाहों में भर कर कहा—इसमें भला इस तरह जार-जार रोने की बात क्या है, तुम आज बहुत परेशानसी हो गई हो, जाओ थोड़ी देर के लिए आराम करो, जी हल्का हो जाएगा तो परेशानियाँ दूर हो जाएंगी, जाओ ···, कह कर लेखक ने अपनी बाहों से उसे आजाद कर दिया, और आहिस्ता से मुमताज की बाहें भी उसके गले से हट गयीं, सिसकती हुई मुमताज अपनी नम आँखों से उसे एक टक देख रही थी कि लेखक ने फिर आहिस्ता से कहा··· जाओ…… न, थोड़ी देर के लिए सो जाओ।

सुनते ही मुमताज ने अपनी पलकों को एक दम बन्द कर लिया, उनमें कैद

आँसू तेजी से गालों पर बह निकले, और तब वो दूसरे क्षण मुड़ गई, पल भर में ही सीढ़ियाँ चढ़ कर अपने कमरे में पहुँच गई, लेखक ने एक नजर उस के कमरे की तरफ देखा, साफ जाहिर था कि पलंग पर गिरते ही वो फिर सिसक उठी थी, चूंकि रोने की दबी हुई आवाज नीचे तक साफ सुनाई दे रही थी, क्षण भर तो लेखक सोचता रहा कि वो क्या करे......, कुछ समझ में न आया उसकी।

तब उसने अपने कदमों को वापिस बाहर की तरफ मोड़ लिया आहिस्ता २ कदम बढ़ाकर सर झुकाते हुए वो दरवाजे से बाहर आया, पता नहीं किस विचार में खोया हुआ था, सर झुकाए वो बरामदे में चला जा रहा था और मुमताज़ की अम्मी और अब्बा के बिलकुल पास गुजरा, लेकिन उसे कुछ खबर न थी, न ही उन्होंने लेखक को बुलाया, उसी तरह चुपचाप वो कदम बढ़ाता हुआ जानी-पहचानी लॉन पर चला जा रहा था।

रात खामोश थी........, मगर दिलों में हलचल सी मची हुई थी, मुमताज़ की अम्मी और अब्बा ने एक दूसरे की आंखों में देखा और खुद-ब-खुद दोनों की नजरें झुक गयीं, आहिस्ता से थके कदमों से वे लोग हॉल में पहुंचे........, मुमताज़ की सिसकियों की आवाज वहाँ तक साफ सुनाई दे रही थी, उसकी अम्मी रह न सकीं और जल्दी से सीढ़ियां चढ़कर ऊपर पहुंचीं। उसके कमरे में कदम रखते ही उन्होंने देखा कि औंधी पड़ी मुमताज हिचकियां ले रही थी.........., आहिस्ता से पलंग पर बैठकर उन्होंने मुमताज की पीठ पर हाथ रखा, स्पर्श पाकर वो चौंक उठी, सिर उठाकर उसने अपनी अम्मी को देखा, तो झट से आँसू पोंछ डाले उसने, पूछने लगीं वे—इस तरह रोने की भला क्या बात थी......।

कुछ नहीं अम्मीजान ! उसने अपना चेहरा साड़ी के छोर से साफ किया।

मैंने सब सुन लिया है मुमताज, लेकिन मैं तो यह कह रही हूँ कि इसमें यूँ रोने की बात क्या है..........., उसको समझने में तुमने ही नहीं, हमने भी गलती की है, लेकिन क्या पता था कि उसका जवाब ऐसा होगा कि जिसके खिलाफ एक लब्ज भी नहीं कहा जा सकता।

अम्मी ! ……", वो उनसे लिपटकर फिर सिसक पड़ी, पता नहीं दिल में कौन सा गुब्बार था कि जो इतने आंसू बहाकर भी नहीं निकला, मां के सीने में सिर छिपाए अपने आपको आँसुओं में डुबोए जा रही थी। उसकी अम्मी ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—अब बस भी करो न।

इतने में उसके अब्बा हजूर भी आ गए थे ऊपर, अपनी बेटी का यह हाले-ए-बेहाल देखकर बड़ी संजीदा आवाज में बोले—इस इन्सान के जज़बातों की जितनी कद्र की जाए उतनी ही थोड़ी है, दुनिया देख लेने वाला यह बूढ़ा इन्सान भी उस शख्स को नहीं पहचान सका, और तुम तो कल की बच्ची हो, उसकी आँखों की चमक और आवाज के बोल का सही अन्दाजा लगा लेना बहुत मुश्किल है। उसके इस जवाब के आगे इस बूढ़े का सर भी उसके पाक कदमों में झुक जाने को बेकरार हो गया है, उससे आँख मिलाकर बात करने की हिम्मत मैं समझता हूँ कि मुझमें भी नहीं रही। अब तुम खुदा के वास्ते चुप हो जाओ, क्यों अपनी सेहत पर बुरा असर डालती हो।

आओ मुँह-हाथ धो लो, उसकी अम्मी ने उसके सिर को अपने सीने से हटाकर, उसके आँसुओं को पोंछा, उसे सहारा देकर उठाते हुए बोली—तुम फिक्र क्यों करती हो, शादी तुम्हारी पसन्दगी पर ही होगी, चाहे जहाँ भी हो, हमारी चांद सी बेटी में कोई बताए तो जरा कि कमी क्या है।

सहारा देकर उसकी अम्मी उसे कमरे से बाहर लाई और सीढ़ियों को पार करके हॉल में पहुंचकर उन्होंने उसे बाथ रूम में जाने को कहा।

खामोशी से कदम बढ़ाती हुई मुमताज आज्ञा का पालन करने को बाथ रूम की तरफ जाने लगी।

१७

जब से मुमताज के साथ यह घटना घटी, उसकी जिन्दगी के हर पहलू में एक बहुत बड़ी तबदीली आ गई, पता नहीं, क्यों वो अपने आपको दूर नहीं

रख सकी इन बे मतलब ख्यालों से। और पता नहीं, लेखक के मुंह से ऐसी बात सुनकर एक दम सीरियस सी रहने लगी, कोई धोखा नहीं दिया था उसने, या कहीं उसने उसकी बेइज्जती नहीं की, न ही कोई कड़ी बात कही थी कि वो एक दम गुम-सुम सी रहकर सारा-सारा दिन खामोशी में ही गुजार देती, न किसी से बात करती न हँसकर कभी जवाब देती।

वही मुमताज थी, जो बिन बात के ही खामख्वाह बोलती रहती थी, और घर भर के नौकरों को भगाये रखती थी, मगर अब वो सारा दिन कमरे में अकेली चुपचाप पड़ी रहती, पता नहीं क्या सोचती रहती वो, उलझी सी जुल्फें चेहरे पर झूलती रहती सारा दिन, मगर उसे ख्यालों की उधेड़बुन से ही फुरसत कहाँ मिलती थी कि वो बालों को सुलझा ले, और एक दिन तो पता नहीं क्या फितूर उसके दिमाग में आया कि उसने अपने करीब आठ सूत लम्बे खूबसूरत चमकते नाखूनों को काटकर फेंक दिया, मामूली सी बात है कि इन नाखूनों को इतना लम्बा करने के लिए उसने कम से कम एक साल तक इनकी देखभाल की होगी और टूटने से बचाया होगा। लेकिन यह सारी मेहनत और खूबसूरती पाँच मिनट में ही उसने अपने हाथों खत्म कर दी।

उसकी अम्मी काफी समझाती उसको मगर इस जिद्दी लड़की के सामने वे भी खामोश हो जातीं, लेकिन फिर भी घर का हर सदस्य उसको इन अजीब ख्यालों से दूर रखने की कोशिश करता।

उस दिन घर पर वो अकेली थी, और खुद बोर भी हो रही थी, आखिर थी तो इन्सान ही न, चाहे वो कितनी ही सीरियस रहने लगी थी, मगर फिर भी चाहती यही थी कम से कम उसके कानों में आवाज तो पड़ती रहे किसी न किसी की। मगर अकेले में सिवाय खुद से बात करने के वो और कर ही क्या सकती थी, या अपने आपको ख्यालों में डुबो दे यही एक चारा था।

मगर क्या कहे अपने आपसे, या क्या सोचे, वो खुद न जान पा रही थी, सोचते २ वो खुद परेशान सी हो चुकी थी, हर विचार का केन्द्रबिन्दु ही लेखक की कही हुई बातें थीं, आखिर कब तक इनको सोचती, जब कुछ न सोचने

को मिला तो मजरूह दिल से हालेदिल के तड़पते हुए हालात का सिसकता हुआ नगमा बड़ी सोज भरी आवाज में वह निकला, खिंची हुई खुद-ब-खुद वो प्यानो की तरफ बढ़ गई और अपने आप उंगलियाँ प्यानो की रिट्ज पर चलने लगीं, आवाज यूँ भी उसकी बड़ी सुरीली थी, और गम का नगमा, फिर ऐसा जो दिल की गहराइयों से फूटा हो, उसकी लरजती आवाज से एक २ लफ्ज इस तरह दर्द लिए निकल रहा था जैसे कटे हुए जख्म से लहू चू पड़ा हो, शुरूआत की कड़ी थी.....।

"मेरा दिल बहारों का एक फूल था जिसे बागवाँ की नजर लग गई।"

और गाते वक्त उसे किसी चीज की फिक्र नहीं थी, हर अगली लाइन पर आवाज थोड़ी और ऊपर उठ जाती, और वो थी कि आँखें बन्द किये बेखबर थी, लगता था जैसे कि दिल का सारा गम वो आज ही निकालेगी, दर्द भरी आवाज कमरे में गूंज रही थी, बंगले की खामोश दीवारों से उसकी आवाज टकराकर लौट जाती, जैसे ही वो गम का नगमा खत्म हुआ, उसकी प्यानो पर चलती उंगलियाँ रुक गयीं, एक मिनट तक तो वो बिल्कुल खामोश सी बैठी रही, न पलकें झपकीं उसने, न हाथ से कोई हरकत की और दूसरे ही मिनट वो वहाँ से उठ खड़ी हुई, और जैसे ही वो पीछे को मुड़ी, दरवाजे पर लेखक को खड़ा देख ठिठक गई मगर एक दम अपने आपको सम्भालकर कहने लगी—आ जाइये न, और जबरदस्ती चेहरे पर मुस्कान लाते पूछने लगी—कब आये आप ?

पाँच दस मिनट हो गए होंगे, ज्यादा से ज्यादा।

ओफ तो इतनी देर आप खामोश क्यों खड़े रहे ?

देख रहा था कि तुम्हारी आवाज में इतनी कशिश है कि मेरी तो क्या, किसी परिन्दे की भी पर को फड़फड़ाने की हिम्मत नहीं हो सकती थी उस वक्त। और यह आज ही मालूम हुआ कि तुम्हारी आवाज लाजवाब आकर्षण तो है ही, साथ ही दिल को छू लेने वाला दर्द और सोज भी है।

'मगर दिल में सोज पैदा भी तो हो सकता है।'

'यही तो तुमसे मैं पूछना चाहता हूँ कि तुम्हारी आवाज में इतना दर्द क्यूँ

है, चूंकि वही आवाज दूसरे के दिल को छू सकती है जो खुद के जजबातों से सिसक कर फूटी हो, आखिर तुम्हारी जिन्दगी में किस चीज की कमी है।

'एक सोज की ही कमी थी......, अब उसे भी पाने की कोशिश कर रही हो, यह जरूरी नहीं जिसके पास दुनिया के सभी ऐश-ओ-आराम हों वो हर हालत में खुश ही होगा, बल्कि यूं कहिए कि कभी उसका दिल भी करता है कि जिन्दगी के किसी पहलू में एक ऐसा ज्वार-भाटा भी हो जो उसे जिन्दगी के अंधेरे और उजाले से वाकिफ कराता रहे, वो भी जान सके कि दुनिया में गम भी एक चीज है चिन्ता भी किसी चिड़िया का नाम है, दर्द भी इसी दुनिया की एक नियामत है।"

लेकिन इन बातों को इतनी गहराई तक सोचना फिलास्फी की डिग्री लेने तक तो ठीक है लेकिन जिन्दगी में हर वक्त इस तरह के ख्यालों को लाकर एक जलजले की हालातें पैदा करना ठीक नहीं।

'मगर इन्सान की जिन्दगी भी तो खुदा ने ऐसी बनाई है कि वो खुद भी हर पहलू से गुजरने को चाहती है,—मगर बैठिये तो सही, आप भी अभी तक खड़े हैं, आप खुद बतलाइये कि आपकी तबीयत अब ठीक है न।

मेरी तबीयत को क्या हो गया था, जो ठीक होने को आपको पूछने का कष्ट कराती......, लेखक ने पूछा।

लेकिन परसों ही तो मम्मी कह रही थीं, कि दो, चार रोज से आपकी तबीयत कुछ ठीक नहीं, और मुझसे कह रही थीं कि जाकर जरा पूछ आऊं।

ओह ! बात का इशारा पाते ही वह समझ गया, कहने लगा, हां यूं ही मौसम की खराबी चल रही है आजकल जरा नजला जुकाम ने अपने जोर की आजमाइश की थी और इनकी मदद के लिए हल्की सी हरारत ने भी अपना रंग दिखाया एक आध दिन, लेकिन ऐसी कोई बात नहीं, बड़ी सख्त जान हूँ, यह छोटे-मोटे नजले जुकाम क्या असर दिखाएंगे, बेचारे। लेकिन फिर तुम आयीं क्यों नहीं।

'इस काबिल ही कहाँ हूं कि आपकी खिदमत में पेश हो सकूं........फिर आपने बुलाया भी कब है, मुमताज ने ताना मारा।

तब तो परमात्मा से यही दुआ किया करूँगा कि मैं ऐसा बीमार पड़ूँ कि मुमताज भी मेरी खूब खिदमत करे और मैं कभी अच्छा न हो सकूं ताकि तुम्हारे दिल में खिदमत न करवाने का कोई शिकवा बाकी न रहे।

'ऐसा मत कहिये, उसने झट से उसके मुंह पर हाथ रख दिया, उसके सामने जमीन पर घुटनों के बल बैठकर उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर कहने लगी—बल्कि मैं तो यह चाहती हूँ कि आपकी महज एक छोटी सी ख़िदमत के लिए अपने आपको मिटा दूं, मगर मुझ बदनसीब की ऐसी खुश-किस्मती कहाँ! कह कर उसने अपना सर उसके हाथों पै रख दिया था।

तुम हर बात में यह खुशकिस्मती और बदक़िस्मती को लेकर क्यों चलती हो, इन्सान को सिर्फ अपने आप पर भरोसा रखना चाहिए, क़िस्मत पर नहीं, मगर मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूं कि तुम इधर कुछ दिन से काफी बदल गई हो।

दुनिया के साथ २ इन्सान को भी बदलना पड़ता है।

मगर दुनिया एक दम इस तरह नहीं बदलती कि जिस तरह तुम बदल गई हो। आखिर साल में मौसम भी चार मरतबा तबदील होते हैं, मगर इस तरह नहीं कि आज अगर बहुत कड़ी सर्दी है तो कल इतनी गर्मी हो जाए कि बर्फ भी घुलकर पानी बन जाए, हर मौसम आहिस्ता २ तबदील होता है, न ही दुनिया एक दम यूं एक रात में बदल जाती है कि सुबह उठकर देखो सभी के रहने सहने के ढंग बदल गए हैं।

'मगर हर एक की दुनिया भी तो अलग अलग होती है, कोई क्या जाने कि दिल की दुनिया एक रात में तो क्या एक पल में भी बदल सकती है, कह कर मुमताज जमीन से उठ कर खड़ी हो गई और उसकी तरफ से थोड़ा मुँह फेरकर बोली—दिल की दुनिया न जाने जिन्दगी में कितनी बार तबदील होती है कि देखने वाला यही कहता है कि अब तो आप बहुत बदले २ नजर आते हैं।

लेकिन अगर आप खता मुआफ करें तो क्या मैं एक बात पूछ सकता हूँ कि आपके दिल की दुनिया में ऐसी क्या हलचल मची थी कि आप इस कदर बदल गयी हैं या आपको बदलना पड़ा है।

लेकिन हर बात बताई भी तो नहीं जा सकती ।

और अगर मैं गलत नहीं हूँ तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि जिस दिन हमारी आपकी बात आपकी गलतफहमी को दूर करने के बाबत हुई थी शायद आप उस दिन से ही इतनी तबदील हो गई हैं......, कह कर उसने मुमताज के दोनों कन्धों पर अपने हाथ रख दिये और उसका चेहरा अपनी तरफ करते हुए बोला—बोलो—, क्या यह सच नहीं है ?

जब आप वजह का सबब जानते ही हैं तो मुझसे इकरार कराने को क्यों मजबूर करते हो ।

लेकिन मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या अब तक मेरी कही बात का तुम्हें यकीन नहीं आया......, क्या तुम यह समझ रही हो कि मैं तुमसे मजाक करता आ रहा हूँ इतने दिन से, तुम जरा सोचो तो कि तुम्हें मेरे दिल की असलियत का पता लग करीब दो माह होने को आए हैं और तुम आज तक अपने आपको मेरी बात का और वो भी मेरे मुंह से कही हुई का यकीन अपने दिल में नहीं बिठा सकीं जरा देखो तो अपनी तरफ कि तुम्हारी सेहत पहले से कितनी हलकी हो गई है, अपने आपको सम्भालो मुमताज़, यह ख्याल और ऐसे ख्याल जो जिन्दगी से सीधा वास्ता रखते हों, बहुत बुरे होते हैं, इन्सान इनको अगर सोचता रहे हर समय, तो हासिल तो कुछ होता नहीं बल्कि इन्सान खुद एक बर्फ के टुकड़े की तरह खुद ब खुद घुलता रहता है, खुदा की रहमत से तुम्हारे पास किसी चीज़ की कमी नहीं । कोई दुःख नहीं, घर का हर इन्सान तुम्हारी इतनी कद्र करता है, फिर ये ख्याल कैसे हैं जो तुम्हें हर वक्त घेरे रहते हैं ।

एक टक मुमताज़ उसके चेहरे की तरफ देखे जा रही थी, कहने लगी—, आपकी कई दफा कही हुई इन बातों से अपने आपको समझाती हूं अपने जजबातों को काबू में रखने की पूरी २ कोशिश करती हूँ......खुद से हर वक्त यही कहती रहती हूं कि आखिर क्या मिलेगा इन बेबुनियाद बातों से, मगर मैं सच बताऊँ आपको......उसने लेखक की आंखों में देखते हुए कहा—यह नादान दिल नहीं मानता मगर !......कहना ही था उसका कि अपने आपको

वस में न रख सकी, कि रुंधे गले से सिसकियां फूट ही पड़ीं, और उसके सीने में अपने सिर को छुपा लिया उसने, उसने उसके सिर पर प्यार से हाथ रख कर कहा—क्यूं अपने आँसुओं को यूं हर वक्त खामख्वाह बहा देती हो, उसके चेहरे को अपने हाथों में लेकर उसने आसूं पोंछे, उसको अपनी ओर आकर्षित करते हुए बोला—'जानती हो, दिल हमेशा इन्सान को गलत सलाह देता है, सही बात के लिए इन्सान को दिमाग से सोचना चाहिए, और इन बेफिजूल बातों से अपने आपको दूर रखने के लिए हमेशा अपने आपको किसी काम में लगाये रखना चाहिए ताकि इधर उधर सोचने का मौका ही न मिले ।"

यही तो बात है कि आपको सामने देखती हूं तो अपने आपको सौ बार लानत भेजती हूँ कि क्यूँ ऐसी बातों की तरफ ध्यान देती हूँ । सच कहती हूँ आपके इस असीम प्यार की कीमत मैं किसी भी हाल में नहीं चुका सकती······,

'लेकिन जानती हो, प्यार की कीमत भी कभी हुआ करती है, प्यार का बदला प्यार से चुकाकर ही उतारा जा सकता है ।

'तब बताइये मैं किस तरह चुका सकती हूँ कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ ।

तुम प्यार करना सीख लो मुमताज़ मगर ऐसा प्यार जिसमें स्नेह हो, ममता की भावना हो, एक लगाव हो, मगर वासना की बदबू न हो, और यह तभी हो सकता है जब तुम्हारा मन स्थिर हो, तुम्हारे चेहरे पर हर समय मीठी मुस्कान हो, और हर वक्त कुछ पाने की लालसा न हो, बल्कि देने की लालसा हो ।

मैं तो सब कुछ दे देने को तैयार हूँ अपने आपको भी—, तो बताइये कैसे अपने आपको बस में रख सकूं ।

अगर सचमुच तुम्हारी यही भावना है मुमताज, तो तुम मुझे अपने चेहरे की यह उदासी और यह खामोशी दे दो, यह उदासी और खामोशी तुम्हारे चेहरे पर अच्छी नहीं लगती, सच कहता हूँ मुमताज़······,

यह सब तुम मुझे दे दो, तुम्हें याद होगा कि एक दिन तुम मुझसे एक शर्त हार गई थीं जिसमें जीतने वाले की मर्जी थी कि वो हारने वाले से चाहे जो माँग ले, आज उसी शर्त का मैं तुमसे मुआवजा माँग रहा हूँ कि यह सूना और वीरानापन, जो तुम्हारी जिन्दगी में आ गया है वो तुम मुझे भीख में दे दो, बोलो न, क्या एक बहन होकर भी तुम अपने भाई को अपने दर से खाली जाने दोगी।

नहीं! उससे मुमताज़ लिपट सी गई, ऐसा मत कहिए, खुदा आपको हर बला से महफूज़ रखे, इन्सान की जिन्दगी में धूप छांव तो आती रहती हैं आपके प्यार के अहसानों के बोझ तले मैं पहले ही बहुत दब चुकी हूँ—, अब और मुझ पर अहसान मत करो······वरना मैं कहीं घबरा ही न जाऊँ। हां—, आपकी बात को पूरा करने की कोशिश जरूर करूँगी, मैं खुद ही इन परेशानियों को निकाल बाहर करूंगी, खुद को भी तो अहसास होता है कि क्या मिलेगा इन बातों से। उसने अपने आँसुओं को खुद ही पोंछ कर चेहरे पर मुस्कराहट की एक हल्की सी रेखा खींचते हुए कहा—आपकी हर बात को अमल में लाने की हर मुमकिन कोशिश करूंगी। उसने अपनी गीली आँखों को पोंछा और मुस्कराहट से बोली—आपके लिए चाय बना लाऊं जरा। सिर्फ दस मिनट लगेंगे।

तुम इतनी मेहमाननवाजी न किया करो, मैं कोई पराया तो हूँ नहीं, कि तुम्हें तकलीफ जरूर ही करनी चाहिए।

मगर इसमें महमाननवाजी कैसी है, यह मेरा कोई अपना अलग से बना हुआ घर तो है नहीं, यहाँ जैसा मेरा अधिकार है वैसा ही आपका भी है।

यह कह कर मुमताज़ कमरे से बाहर चली गयी।

उसके इस जवाब पर वह कुछ न कह सका।

उसके सीढ़ियाँ उतरने की खट् खट् की आवाज आ रही थी।

१८

इन्सान की जिन्दगी में कुछ ऐसी बातें भी गुजरती हैं जिनके बारे में अगर आदमी न भी सोचना चाहे तो भी वे मजबूर कर देती हैं कि उनके बारे में जरूर सोचा जाए यही बात लेखक के साथ भी कश-म-कश कर रही थी कि वो जितना मुमताज की हालातों पर गौर न करना चाहता था उतना ही उस का ध्यान उस तरफ खिंच जाता वो उसके बारे में सोचने लगता कि वाकय ही मुमताज़ गलतफहमी का पर्दाफाश होने से बेचैन हो गयी है, उसका चेहरा जिस पर हर वक्त रंगीं तबस्सुम रह २ कर शरमाती रहती थी आज उसके चेहरे पर से वो सारी रौनक गायब हो गयी है..... शायद उसको यकीन नहीं था कि उसके एक तरफा मुहब्बत का अन्जाम यह होगा, और दूसरे ही पल उसने अपने आपसे सवाल किया कि जब वो उसकी आँखों में मुहब्बत की झलक देख चुका था और इस बात का भी अन्दाजा लगा चुका था कि वो उसको लेकर इश्क के ख्वाब देखती है तो क्यों न उसको उसने पहले से ही सावधान कर दिया या ऐसा बर्ताव क्यों नहीं किया कि जिससे उसको इस बात का अहसास हो जाता कि वो उससे प्यार नहीं करता—, वो यूं चुपचाप खामोश क्यूं रहा, जानकर भी अनजान क्यों रहा और क्यों उसके मचलते भावों को बातों में लपेट कर टालता रहा,......उसने अपने आपसे एक सवाल किया कि क्या वो भी उससे मुहब्बत करना चाहता था, कि अभी तक इस बात पर शायद गौर करता रहा हो कि वो उसके प्यार को कबूल करे या न करे ।

नहीं ! उसने अपने आपको झिझोर डाला, यह बात जरूर है कि उसके उठते जजबात और दिलरुबा बातों को देखकर मेरे दिल में भी उसके लिए कभी भावनाएं जरूर जागी थीं, जिन्होंने कई दफा मुझे खामोश कर दिया ...लेकिन मेरे दिल ने उससे प्यार मुहब्बत का वास्ता रखने की सलाह कभी नहीं दी, और यही वजह थी कि मैंने उसकी हर ऐसी बात को काट कर अपनी रुखाई का मसला पेश किया है, लेकिन क्या पता था कि वो नादान लड़की

फिर भी अपने दिल में खामोश मुहब्बत पालती रहेगी, और अपने आपको धोखे में रखकर ख्यालों से अपना जी बहलाती रहेगी।

और वही ख्याल अब गलत साबित हो जाने के कारण उसके दिल को इस तरह बेचैन कर देंगे कि वो अपनी मासूम भावनाओं में तड़प कर बात-२ पर आँसू बहा देगी, ओफ ! उस दिन भी तो कह रही थी, कि अपने आप को समझाती तो बहुत हूँ, लेकिन क्या करूँ—, यह नादान दिल नहीं मानता मगर।

लगता है वो अपने आपसे हार गयी है, पता नहीं उसका दिन कैसे गुजरता होगा और रात कैसे कटती होगी, जरूर वो रात के अंधेरे में अपनी आँखों के कीमती मोती लुटाती होगी, तभी उसकी आँखें हर वक्त सूजी-सूजी-सी रहती हैं—लेकिन कैसे समझाए कोई किसी के दिल को। जब खुद ही इन्सान अपने आपको नहीं समझा सकता, तो किसी दूसरे के कहने से क्या असर हो सकता है, लेकिन मालूम होता है कि उसके न चाहने पर भी उसका दिल भटकता रहता है इधर उधर की बातों में—तभी तो रात में भी उसको ऐसे अजीब-ओ-गरीब ख्वाब आते हैं, और कल रात ही की बात उसके दिमाग में घूम गयी, कि रात के करीब पौने तीन बजे मुमताज़ के यहाँ के उस बूढ़े नौकर दीनू ने उसके कमरे का दरवाजा खटखटकाया—तो वो परेशानी से उठकर बाहर आया और दरवाजा खोलकर जब उसने दीनू को देखा तो एक दम घबरा गया, एक दम पूछ बैठा—इतनी रात गये तुम यहाँ ?···कहो खैरियत तो है······?

तब नौकर ने आहिस्ता से शान्त स्वर में कहा वैसे तो सब ठीक है बाबू जी, मगर अभी-अभी मुमताज़ बिटिया ने कोई डरावना सपना देखा है, जिससे आधी रात को बड़ी जोर से चीख पड़ी, सारा बंगला आवाज से काँप उठा था उस वक्त और चिल्लाकर बोली—'नहीं-नहीं'···मालकिन ने जल्दी से ऊपर जा कर उसको सम्भाला, और पूछने लगी, क्या हुआ, तो कहने लगी वो···मैंने एक बहुत भयानक सपना देखा है, और आपका नाम लेकर जोर-जोर से पूछने लगी—आप ठीक हैं न ? और अभी तक यही कह रही हैं—कि उनको यहाँ बुला लाओ, उनको कुछ हो न गया हो, सब घर वालों ने समझाया है कि वो बिलकुल

ठीक ठाक हैं, सुबह बुला भेजेंगे, मगर वो अभी आपसे मिलने की जिद कर रही हैं, इसी वास्ते हजूर ने आपको लिवा लाने के लिए कार भेजी है और इस अंधेरी रात में भी आपको आने की अर्ज के साथ-साथ तकलीफ की मुआफी के लिए अर्ज की है, अगर आप चलें तो ज्यादा बेहतर है, सच मानो, बिटिया पसीने से तर बतर हो गयी है।

सुनकर उसने एक गहरी साँस ली, और कहने लगा, अच्छा मैं अभी चलता हूँ—तुम दो मिनट की इन्तजारी करो। आओ अन्दर आ जाओ, कह कर वो वापिस अन्दर मुड़ गया, और नौकर हिचकते हुए थोड़ा अन्दर आकर खड़ा हो गया।

कपड़े बदल कर वो नीचे आए और कार में बैठ गए। शोफर चलने ही की इन्तजार में था, उनके आते ही कार बैक करके तेजी से ले उड़ा।

रात के खामोश अंधेरे में कार काफी तेज रफ्तार पर रास्ता तय कर रही थी, सड़क चूंकि खाली सी पड़ी थी, इस वास्ते मंजिल तक पहुँचने में कोई ज्यादा देर नहीं लगी।

कार से उतर कर वो लम्बे-लम्बे कदमों से बाहर के बरामदे में पहुँचा, पीछे-पीछे नौकर भी तेज चाल से आ रहा था, जैसे ही वो हाल में पहुँचा मुमताज के अब्बा हजूर बड़ी बेचैनी से टहल रहे थे, उसको आया देख वो लपक कर उसकी तरफ बढ़े, उसके कन्धे पर हाथ रख कर बोले—आ गए तुम, सच खुदा कसम बड़ी तकलीफ दी तुम्हें आज, लेकिन क्या करूँ बहुत मजबूरी थी, कहते हुए वो उसी तरह उसके कन्धे पर हाथ रखे सीढ़ियों की तरफ बढ़े, कह रहे थे—पता नहीं मुमताज ने कैसा डरावना सपना देखा है कि एक दम घबरा-सी गयी है और यही रट लगाए हुए है कि तुम्हें सचमुच कुछ हो गया है, और बार-बार हमारे सबके समझाने पर भी नहीं मानी, तो कहने लगी मैं खुद जाऊँगी इसी वक्त, उन्हें जरूर कुछ हुआ है, और हम भी डर गये, कि खुदा नजरे रहम रखे, कहीं उसका सपना सच ही हो, इसी वास्ते आधी रात को तुम्हें इतनी तकलीफ दी···सीढ़ियां चढ़कर वे मुमताज के कमरे के दरवाजे तक आ गए थे। दरवाजे पर लटकती चमकते मोतियों की झालर

को हटाकर वे लोग अन्दर आए, उसको आया देख मुमताज़ की अम्मी ने उसका सर अपने सीने पर से हटाते हुए कहा—ले देख, वो आ भी गया है, कितनी परेशानी हुई होगी।

अपनी अलसाई बोझिल पलकों को खोलकर मुमताज़ ने लेखक की तरफ देखा, उसको आते देख साजिद चुपचाप कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ, पलंग के पास पड़ी इस कुर्सी पर लेखक जैसे ही बैठने लगा, मुमताज़ ने आहिस्ता से कहा—वहाँ नहीं, यहाँ जरा मेरे पास बैठो···।

उसने क्षण भर को सोचा और बिना एक लब्ज भी जुबाँ से कहे वो पलंग के एक कोने पर उसके पास बैठ गया, बैठी हुई मुमताज़ ने थोड़ा उसकी तरफ झुक कर उसके कन्धों को छूकर कहा—आप बिल्कुल ठीक हैं न, और वो उसके हाथों और चेहरे को छूने लगी।

मैं बिल्कुल ठीक हूँ मुमताज़, उसके उसने दोनों हाथ पकड़ कर अपने चेहरे से लगाते हुए कहा—तुम्हें सपना देख कर वहम हो गया है मैं बिल्कुल ठीक हूँ······।

कहीं झूठ तो नहीं कह रहे हो, अपनी आँखों से देखकर और हाथों से छू लेने पर भी मुमताज़ को जैसे यकीन नहीं आया।

आँखों से देख लेने पर भी क्या तुमको यकीन नहीं आया, उसने धीरे से कहा, लेकिन तुम यह बताओ कि तुमने सपना क्या देखा था, कि तुम अपना यकीन भी खो बैठी थीं।

सपना! मुमताज़ ने उसकी तरफ से निगाह झुकाकर एक गहरी साँस ली, एक मिनट को बिल्कुल खामोशी छा गयी, सबकी नजरें उसके चेहरे पर लगी हुई थीं, रात की गहरी चुप्पी को तोड़ते हुए मुमताज़ बोली—मुझे एक बड़ा अजीब-सा ख्वाब आया था अभी।

मैंने देखा, कि मैं और आप किसी अनजान रास्ते पर जा रहे हैं, बातों ही बातों में पता नहीं मैंने आपसे क्या करने को कहा कि आपने मानने से इन्कार कर दिया, और मैंने बिना सोचे समझे एक बड़े से तेज खन्जर से आप का कत्ल कर दिया है, और जब मैंने अपने हाथों को लाल सुर्ख खून में रंगे

देखा तो सर से पांव तक कांप गयी, और जोर से कांप उठी, साथ ही चिल्ला कर बोली—नहीं, नहीं, यह खून मैंने नहीं किया—ओफ ! मैंने भी क्या सपना देखा यह, और मुझे यह वहम हो गया कि कहीं आपको किसी वजह से भी कुछ हो न गया हो ।

अपने आप पर भरोसा रखो मुमताज़ और दिल में हर वक्त एक ही के बारे में मत सोचा करो, तुम तो दिन में पाँच मरतबा नमाज़ पढ़ने वालों में से हो, तुम्हारे दिल में तो कम से कम ऐसे ख्यालात नहीं आने चाहिएं, लेकिन खैर छोड़ो इन फिजूल की बातों में, सपनों पर यकीन नहीं करना चाहिए, और हल्की-सी मुस्कराहट लाते हुए बोला—कहते हैं कि अगर सपने में कोई मर जाए तो उसकी उम्र लम्बी हो जाती है, इसलिए इसके वास्ते तो चिन्तित होने की बात ही नहीं, उसने यह बात कही तो सबने हल्की-सी मुस्कराहट से उसका साथ दिया, स्वयं मुमताज ने भी चेहरे से उदासी हटाते हुए कहा—आपकी जान की खैर तो मैं खुदा से हर रोज माँगती हूँ कि आप जैसे महान आदमी इस दुनिया में रोज पैदा हों—एक गहरी साँस लेकर बोली, रात के इस वक्त आपकी नींद भी खराब की और साथ ही तकलीफ भी दी, इसके लिए मैं सच ही आपसे माफी चाहती हूँ ।

अच्छा अब सब लोग सो जाओ, और तुम साजिद के कमरे में सो जाओ, मुमताज के अब्बा हुजूर लेखक की तरफ इशारा करते हुए बोले—इसके कमरे में दूसरा पलंग खाली पड़ा होगा।

और बाकी रात लेखक ने वहीं गुजारी ।

ख्यालों की इस दुनिया से लेखक जब वापिस लौटा तो उसे याद आया कि उसे तो अभी बहुत से काम निपटाने हैं—कहाँ वो गुजरी बातों में खो गया था ।

सोचकर उसने अपने आपको जागृत सा किया, और बाहर जाने के लिए शेव बनाने की तैयारी करने लगा ।

१९

आइने के सामने बैठी मुमताज अपने बालों को संवार रही थी, मगर हमेशा की तरह ख्याल उसके पता नहीं कहां २ घूम रहे थे, कभी बालों पर चलता ब्रुश रुक गया, आइने में अपनी ही सूरत से नजरें मिलाकर खामोशी से खुद को देखने लगी, कहने लगी—, अपने आपसे—, एक दिन ऐसा ही हुआ था कि जब वो बाल संवार रही थी तो ऐसे मौके पर अचानक लेखक आ गया था, और वो इसी कमरे में बैठा हुआ था, साथ ही उसके चेहरे की परछाईं आइने में दिख रही थी, पूछने लगी अपने आपसे..........., कि बाल संवारते वक्त उसने अपना आंचल क्यों नीचे गिरा दिया था, तुम यही चाहती थीं न कि तुम्हारे मद भरे उरोजों को वह शीशे की परछाईं में देख ले, तुम्हारे दिल में उसको पाने का प्यार अंगड़ाई ले रहा था न ? मगर तुम क्या जानो कि उसके दिल में क्या था ; बस रहने दो.........., अपने दिल से कहने लगी—गुजरे जमाने को याद करके इन्सान का दिल हमेशा आपे से बाहर हो जाता है, और वो आइने के सामने से उठकर बालों को बांधने लगी, सांसें न जाने क्यों अपने आप तेज हो गई थीं, तभी नौकरानी ऊपर आई और उसकी तरफ देखते हुए कहने लगी—'बीबी जी ने कहा है कि आपका बिस्तर झाड़ दूं, सारा दिन सलवटें पड़ी रहती हैं।' कहकर नौकरानी ने तकिया हटाकर चादर उठानी चाही कि मुमताज जल्दी से बोली—ठहर जरा पहले और पलंग के पास जाकर बिस्तर के नीचे से एक लिफाफा उठाकर नौकरानी की तरफ उड़ती नजर से देखा उसने, जो बड़े गौर से देख रही थी, तो मुमताज ने वो लिफाफा बड़ी लापरवाही से ड्रेसिंग टेबुल पर फेंक दिया, मगर वो मेज पर न गिरकर नीचे गिर पड़ा, मगर मुमताज ने देखकर भी परवाह न की और बाल बाँधने में व्यस्त हो गई, नौकरानी बिस्तर उठाकर नीचे ले गई और पांच-सात मिनट बाद झाड़कर ऊपर लाई, बिस्तर बिछाकर जब वो नीचे जाने लगी तो मुमताज ने उसे पीछे से आवाज देकर रोका, नौकरानी दरवाजे तक पहुंच गई थी और वहीं से आहिस्ता से घूमकर उसके सवाल का इन्तजार

करने लगी, तब मुमताज़ ने एक हुक्म के अन्दाज से कहा—'आइन्दा से इस तरह हमारे कमरे में आने की गुस्ताखी कभी मत करना, पहले दरवाजे तक थोड़ी दस्तक या आने की इजाजत मांगनी चाहिए, पता नहीं कोई किस हाल में बैठा है।

बीबी जी माफ करना, नई नौकरानी हूं............ आपके उसूल का पता नहीं था।

यह सिर्फ हमारा ही उसूल नहीं, हर शरीफ खानदान का उसूल है कि एक बेटी भी अगर अपनी माँ के कमरे में दाखिल होती है तो किसी भी तरह वो अपने आने की आहट का अंदाज पेश करके अंदर जाती है, यह हो सकता है कि उसकी माँ ऐसी किसी हालत में हो कि लड़की के सामने न आना चाहती हो, समझी—, अब तुम जाओ।

कहकर मुमताज़ खामोशी से कमरे का दरवाजा देख रही थी, जो अब नौकरानी के चले जाने पर सूना हो गया था, बालों को वो बाँध चुकी थी, लेकिन पता नहीं वो क्यों इसी तरह एकटक नजर दरवाजे पर टिकाए सोच में डूबी हुई थी, कहने लगी खुद से—क्यों वो इतनी तबदील हो गई है, किसी से भी ढंग से बात नहीं करती, हर एक से रुखाई से क्यों पेश आती है, आज तक उसने किसी नौकर या नौकरानी को अपने कमरे में आने से नहीं टोका, आज क्यों उसने इस नई नौकरानी को टोक दिया, मगर दिल ने कोई जवाब नहीं दिया, अपनी नजर को दरवाजे से हटाया उसने तो वो घूमकर जमीन पर पड़े लिफाफे पर जा पड़ी, उसको सब पता था कि इसमें क्या है, झुककर उसने वो लिफाफा उठा लिया और आहिस्ता से कदम बढ़ाकर वो पलंग पर आकर बैठ गई—, क्या सोचा था मुमताज़ तुमने और क्या हो गया है, दिल ने उसके उसे समझाया, अब भूल जाओ अपनी इन बेमतलब की बातों को, तुम्हारी तमन्ना अब कभी पूरी नहीं हो सकती, किसी भी हाल में तुम्हारे दिल में जिसकी चाह है, वो नहीं मिल सकता, मंजिल और रास्ते सब अलग-अलग हैं, क्यों खामख्वाह अपने आपको गुमनाम गलियों में भटकाती हो, जिस मंजिल को तुम पाना चाहती थीं अब वो कभी नहीं मिल सकती। तड़प कर

रह गया उसका दिल, उसने लिफाफे में से वो खत निकाला जो उसने लेखक के नाम अपनी मुहब्बत का पैगाम लिखा था, जिसे नौशाबा ने पढ़ने की जिद में मुट्ठी में दबाकर मसल दिया था, खुला हुआ खत उसके हाथ में था मगर उसकी इतनी हिम्मत नहीं हो पा रही थी कि नजर झुक जाए और पहली लाइन भी पढ़ ले, सांसें तेजी से चल रही थीं और दिल कह रहा था, नहीं मुमताज अब उनके प्रति ऐसे किसी भी लब्ज को अपनी जुबाँ पर मत लाना जिससे तेरी नाकाम मुहब्बत का नक्शा पेश होता हो, दबा लो अपने दिल की लगी को अपने दिल में ही, सुलग भी उठे तो धुआँ न निकलने पाए, उसने कसकर अपनी पलकों को बन्द कर लिया और दो मोटे २ आँसू उसके गालों पर से फिसलते हुए हाथ में पकड़े खत पर गिर पड़े। खत को अपने दोनों हाथों से दबा लिया उसने, अपने दिल को समझाने लगी—क्यों बार २ यह भूली-बिसरी बातें याद आ जाती हैं, सिवाय आँसू बहाने के और कोई अंजाम नहीं होगा इसका, आहिस्ता से वो उठ खड़ी हुई और धीरे २ कदम बढ़ाते हुए वो खिड़की के पास आ गई।

हाथ में पकड़े खत की तरफ बिना देखे उसने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले और इसी तरह मूक मुद्रा में उसने वो कागज के टुकड़े खिड़की से बाहर फेंक दिये। हवा के झोंके में कागज के छोटे-छोटे टुकड़े इधर-उधर बिखर गए और मुमताज उन्हें एकटक देख रही थी और दिल से कह रही थी, उनकी हर ऐसी याद को दिल से मिटा देना होगा जिससे दिल तड़प उठता हो या अरमान मचल उठते हों, कागज के टुकड़े उड़ते-पड़ते सड़क पर इधर-उधर बिखरकर उड़ गए, कहने लगी—काश दिल में बसी हुई वो खामोश यादें भी इसी तरह मिट जाएँ जिस तरह कागज के टुकड़े गुम हो गए हैं तो कितना अच्छा हो, घूमकर उसने खिड़की की तरफ पीठ कर ली, आंचल से आँखों को पोंछा, और वापिस पलंग पर आकर बैठ गई। लिफाफे को जिसमें लेखक की तस्वीर थी, उठाकर उसने बिस्तर के नीचे सिरहाने रख दिया। उदासी सी चेहरे पर छाई हुई थी और कुछ करने को काम था नहीं उसे कि उसमें ही उलझ जाए। बेचैन सी होकर वो कमरे में टहलने लगी, तभी

उसे सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने और हल्की सी मिली-जुली हंसी की आवाज सुनाई दी, तो संभालकर अपने आपको उसने होश में लिया, दरवाजे की तरफ बढ़ ही रही थी कि तभी नौशाबा ने दरवाजे में कदम रखते हुए कहा—इजाजत हो तो, बेगम साहिबा के कमरे में आ जाएँ और कहने के साथ २ वो मुस्कराती हुई अंदर आ गई।

मुमताज़ ने बरबस चेहरे पर मुस्कराहट लाते हुए कहा—मना किसने किया है, और तभी उसकी नजर नौशाबा के पीछे २ कमरे में दाखिल होने वाली लड़की पर पड़ी।

दोनों के हाथ एकसाथ जुड़ गए, मुमताज उसके चेहरे को देखकर सोच में पड़ गई, कि देखा तो है कहीं मगर कुछ भूल सा गया है और दिमाग पर जोर देकर सोचने लगी, मगर चेहरे पर मुस्कराहट और महमाननवाजी की मुस्कान थी, उसने एक उचटती नजर नौशाबा के चेहरे पर डाली, तो झट से आदत के मुताबिक नौशाबा ने मुमताज से हँसकर कहा—पहचाना नहीं उन्हें, यह हैं मिस मंजु, एक बार इनसे होटल में मुलाकात हुई थी, बड़ी तारीफ करती हैं यह भी 'उनकी'......समझी।

ऐसी बात नहीं, मैंने पहचान लिया है, मुमताज़ ने अपनी कमजोरी को छिपाते हुए कहा—आप बैठिए तो !

सोफे पर दोनों जनी बैठ गयीं और मुमताज पलंग पर, तो नौशाबा बोली—आज रास्ते में मिल गयीं ये, तो बड़ी मुश्किल से फंसाकर यहां तक लाई हूं, वरना यह फरमा रही थीं, मुझे शरम आती है, किसी के घर जाने में।

भला इसमें शरम की क्या बात है, मुमताज़ ने कहा।

अजी हर जगह अपनी अदाएँ दिखाती हैं, नवाबजादी, उसके जवाब देने के बजाय नौशाबा ने कहा—वैसे तो सारा दिन कालिज के छोकरों को अपने चारों ओर इकट्ठा किए रखती हैं और यहाँ आने में शरम लगती है।

क्या आप पढ़ती हैं ? पूछा मुमताज ने।

जी हाँ, मंजु बोली—आजकल एम० ए० में हूं, पिछले साल 'प्लक' हो गई थी।

मगर कालिज का पीछा तो छोड़ना नहीं है इनको, फेल होकर भी प्राइवेट फार्म नहीं भर सकतीं, जब कि यूनिवर्सिटी की मेहरबानी समझो कि लड़कियाँ वैसे भी प्राइवेट इम्तहान दे सकती हैं, लेकिन जिन्हें कालिज की दीवारें तोड़नी हों, वे चाहे फेल हों या पास......क्या फर्क पड़ता है।

देखो नौशाबा, तुम हर वक्त उल्टी-सीधी मजाक करती रहती हो। कभी-कभी मजाक का नतीजा बहुत बुरा निकलता है। मुमताज़ ने उसे टोका।

ओफ! तो आप भी तो तरफदारी करना सीख गयीं और वो भी इस अन्दाज़ से, कहीं तुम्हारे साथ तो ऐसा मजाक नहीं हुआ कि......, मामला कुछ गड़बड़ हो गया हो।

अगर हो भी गया हो तो—, तो तुम कौन सा संवार लोगी, मजाक के सिवा तो तुम्हें कुछ सूझता नहीं।

ओफ! हाँ, आजकल तो तुम शायरी भी करने लगी हो, और बातें भी अन्दाज से करना सीख गई हो, लेकिन एक बात है मुमताज़ की तरफ़ आँखें नचाकर नौशाबा बोली—सुना है कि चाहे लाख किसी शायर का साथ रहता हो, मगर शायरी वो कर सकता है दर्दभरी और दिलरुबा, जिसने दिल पर चोट सही हो कभी।

बात कह रही थी नौशाबा और सुन रही थी मुमताज़ और मंजु—, मगर बात तो खत्म हो चुकी थी, लेकिन मुमताज़ उसी तरह थोड़ा सर झुकाए एकटक उसी तरह देखती हुई खामोश बुत सी बनी बैठी थी, जब एक मिनट तक भी मुमताज़ न हिली-डुली, तो नौशाबा ने मुस्कराकर कहा—कहाँ खो गई हो, जनाबेआला, क्या शायरी का कोई मिसरा याद आ गया है।

ओह! नहीं, मुमताज़ ने अपने आपको संभाला, कुछ नहीं यूं ही एक ख्याल आ गया था, और नौशाबा को अगले सवाल का मौका दिये बगैर उसने दोनों की तरफ देखते हुए कहा—आपके लिए कुछ खाने को तो लाऊं, मैं भी कैसी हूँ आये को पूछा ही नहीं, फिर तुम पहली बार तो आई हो आज, उसने मंजु की तरफ देखते हुए कहा और दरवाजे की तरफ बढ़ चली।

थोड़ी सी देर बाद वो ऊपर आ गई और नौशाबा से आते ही बोली—एक बात तो बताओ, तुम इतने दिन तक आई क्यों नहीं, वरना पहले तो एक दो हफ्ते में एक आध बार जरूर आ जाती थीं तुम।

अगर इतनी ही उदासी थी तो फोन ही कर देतीं......, और एक क्षण को चुप रहकर उसने चेहरे पर मधुर मुस्कान बिखेरते हुए कहा—क्यों कोई खास काम था ?

नहीं तो—, उसने हल्के से कहा और तभी उसके कानों में हल्की सी आवाज आई किसी के बातचीत करने की तो बिना कुछ कहे वो कमरे से निकल कर गैलरी में आई, तो देखा उसने नीचे कि लेखक घर के नौकर से कुछ पूछ रहा था कि एकदम मुमताज़ सीढ़ियां उतरकर नीचे आ गई।

उसको देखकर लेखक ने अपने दोनों हाथ जोड़ दिये और मुमताज के हाथ खुद-ब-खुद जुड़ गए, उसके करीब आकर बोली—क्या नाराजगी है हमसे कुछ, कि इधर आना ही छोड़ दिया।

यह भला कैसे हो सकता है, दरअसल मैं करीब दस रोज तो 'आऊट आफ स्टेशन' रहा हूं और अभी कल आया हूं, क्या आपको साजिद ने नहीं बताया, अभी दो-तीन दिन पहले ही तो हमारी मुलाक़ात अचानक ही अहमदाबाद में हुई थी।

बताते कैसे, वो तो हफ्ते भर से बाहर से वापिस ही नहीं आये—, खैर, आप यह बताइये, आप नीचे बैठेंगे या ऊपर, चूंकि बात यह है कि मेरे कमरे में नौशाबा और उसकी एक सहेली मंजु बैठी हैं, अगर आपको ऐतराज न हो तो आप आ जाइये।

मुझे तो कोई ऐतराज नहीं, बहरहाल उनको बुरा जरूर लगेगा, और मैं जानता हूं कि मेरी मौजूदगी में वो तुमसे कोई हंसी मजाक की बात नहीं कर पाएँगी, इसलिए आप ऊपर चली जाइये, मैं नीचे ही......

बात अभी अधूरी ही थी उसकी कि मुमताज़ की अम्मी अपने कमरे से बाहर आ गईं, करीब आकर बोलीं—लगता है अब तू हमसे दूर २ होता जा रहा है।

आपको तो खामख्वाह वहम हो जाता है, असलियत तो आप पूछती नहीं, ताना पहले दे मारती हैं, लेखक ने हंसकर कहा—आपने पूछा भी आते ही, कि मैं कैसा हूं, मर गया हूं या जिन्दा हूँ, आप........

ऐसी बात क्यों कहते हैं आप, मुमताज ने उसकी बात काटी, तो उसकी अम्मी बोलीं—जी हाँ, जनाब के घर से दो बार पता करवाया, मगर वहां तो दरवाजे पर ताला रौनके-अफरोज हो रहा था।

लेकिन यह तो मेरी बात का जवाब नहीं, मैंने तो आपसे अब की बात कही है, कि आते ही मुझे देखकर तो नहीं पूछा आपने।

लेकिन तुमसे बातों की बाजी हम कहाँ जीत सकते हैं, मुमताज की अम्मी बोलीं।

अच्छा, अब आप बताइए कि आपकी तबीयत ठीक है न ?

मेरी तबीयत तो तेरी तबीयत से जुड़ी हुई है अगर तू अच्छा है तो मैं भी ठीक ठाक हूं।

और अगर खुदा न खास्ता मैं मर जाऊं तो।

भला मैं जिन्दा कैसे रह सकूंगी।

'तो आपको एक बात बताऊँ—, यह तो आप खुशकिस्मती समझिए मेरी या आपकी दुआएं, कि मैं आज आपके सामने खड़ा हुआ नजर आ रहा हूँ, वरना तो अपना नामोनिशां ही मिट गया था।

क्या कहा ? मुमताज की अम्मी ने पूछा।

जी हाँ सच कह रहा हूं—, उसने इतना कहकर मुमताज की तरफ देखते हुए कहा—तुम जाओ ऊपर, तुम्हारी फ्रेंड्स ऊपर बैठी हैं।

नहीं ! पहले आप बात बताइए, उसने घबराकर कहा।

बात यूं ही हुई थी, उसने कहना शुरू किया, कि अहमदाबाद में सड़क पर सोचता हुआ चला जा रहा था, मगर पता नहीं बात क्या थी वो, और मुझे कुछ खबर नहीं थी, कि कोई मुझे पीछे से पुकार भी रहा है या नहीं, मैं बेसुध सा सड़क पार करने को बढ़ा चला जा रहा था कि तभी एक आदमी ने मुझे सामने से बड़ी जोर से पीछे की तरफ धक्का दिया, मैं और वो लड़खड़ा

कर बस एकदम पीछे हट गए। मैंने देखा कि हमारे पीछे हटते ही एक 'लोडेड' ट्रक बड़ी जोर से ब्रेक मारता हुआ करीब दस कदम पर रुक गया।

ओफ ! या खुदा, मुमताज़ और उसकी अम्मी, दोनों के मुंह से एक साथ निकल पड़ा, मुमताज़ की अम्मी बोलीं—'उस इन्सान की खुदा करे लाख बरस की उमर हो', कहकर उन्होंने लेखक के हाथ पकड़ लिये, कहने लगीं—तुम्हारी तो लाख बरस की उमर है, कुछ नहीं होगा तुम्हें।

'आपको चोट तो नहीं लगी कहीं ?' पूछा मुमताज ने।

जी नहीं बिलकुल सही सलामत बच गया हूँ, वरना सच कहता हूँ—, ट्रक के इस तरह एकदम रुकने से सड़क पर उसके फिसलते टायरों की मोटी-मोटी लकीरें पड़ गई थीं, अगर मैं सचमुच उसके नीचे आ जाता तो मेरी लाश से भी पता न लगता कि मैं कौन हूं, यूं भी परदेश में था, कमेटी वाले उठाकर कहीं फूंक देते और क्या हो सकता था, वैसे·····

बस चुप कर, मरें तेरे दुश्मन, क्या जिन्दगी इतनी सस्ती होती है, एक माँ के दिल से पूछकर देख कि औलाद कितनी प्यारी होती है।

लेकिन यह देखा जाता है अक्सर कि लेखक की मौत के बाद उसकी कद्र दुगनी हो जाती है, वैसे चाहे वो भूख से तड़प २ कर मर गया हो, मगर कोई क्या जाने कि वो कैसे मरा होगा, लेकिन उसके मर जाने के बाद लोगबाग उसकी स्मृति में हजारों रुपया भी खर्च करके उसके नाम का जश्न मनाते हैं। अरे, तुम अभी तक यहीं खड़ी हो, लेखक ने मुमताज की तरफ देखते हुए कहा, —आप ऊपर जाइए न, क्या सोच रही होंगी आपकी सहेलियाँ कि अच्छी हैं आप कि उनको बिठाकर खुद नीचे चली आई हैं।

जी—, जाती हूं, मुमताज ने खामोश निगाहों से उसकी तरफ देखते हुए कहा और आहिस्ता से पीछे की तरफ मुड़कर सीढ़ियों की तरफ बढ़ चली, ऊपर आकर गैलरी में एक मिनट को रुककर देखा उसने कि लेखक उसकी अम्मी के साथ, कमरे में चला गया था।

जैसे ही वो कमरे में आई, नौशाबा ने छूटते ही कहा—कहाँ रह गई थीं बेगम साहिबा आप।

जरा नीचे थी, उसने खोई २ सी आवाज में कहा ।

और वो चाय जो आ रही थी, नौशाबा ने संजीदगी से कहा ।

चाय ! क्या कहा, नौकरानी दे नहीं गई क्या अभी तक, झल्लाकर वो उठ खड़ी हुई ।

जी हां, मामला तो ऐसा ही है, शायद नौकरानी भी घर के किसी नौकर की बीबी मालूम पड़ती है, या इश्क का चक्कर होगा, कि बेचारी बातों में उलझ गई होगी ।

मैं अभी पूछती हू—, कहकर झट से कमरे से निकलकर गैलरी में आई और जोर से बोली—सबीना—ऽऽ—,

एक क्षण की खामोशी के बाद नौकरानी सबीना नीचे हॉल में आकर पूछने लगी—क्या हुआ ।

ऊपर आओ जरा, मुमताज ने रौब से कहा और वापिस कमरे में घूम पड़ी, नौशाबा और मंजु चुपचाप बैठी थीं, नौशाबा एक पत्रिका के पन्ने पलट. रही थी और मंजु पता नहीं क्यों अपनी घड़ी देख रही थी ।

पल भर में नौकरानी आन पेश हुई, उसके बोलने से पहले ही मुमताज ने गुस्से से भरकर कहा—कहाँ मर गई तू—, अभी तक तेरे से चाय बनाकर नहीं लाई गई ।

जी चाय !—, चाय तो बीबी जी अभी देकर गई हूं करीब पन्द्रह मिनट हो गए हैं ।

उसका कहना था कि नौशाबा और मंजु की हंसी छूट पड़ी, दोनों हंस पड़ीं, नौशाबा ने कहकहा लगाते हुए कहा—सच ! बड़ा प्यारा है तुम्हारा गुस्सा भी ।

मगर मुमताज के चेहरे पर कोई परिवर्तन न हुआ इस मजाक का, वो उसी तरह खामोश सी खड़ी थी, उसने नौकरानी से धीरे से कहा—तुम जाओ ।

हुक्म पाते ही नौकरानी कमरे से बाहर चली गई ।

क्या बुरा मान गई मेरी······जान ! उसके चेहरे पर खामोशी देखकर भी नौशाबा अपनी आदत से बाज न आई ।

देखो नौशाबा, मुमताज़ ने धीमी आवाज में कहा—मजाक भी हर वक्त अच्छी नहीं लगती।

यह कहो कि अपनी झेंप मिटाने के लिए यह शोख अदा दिखा रही हो, हम जानते हैं कि तुम ऐक्टिंग करने में माहिर हो, लेकिन हजूर की यह अदाएं हमारे सामने नहीं चलेंगी।

लेकिन जवाब में मुमताज़ उससे कुछ न बोली वो मंजु की तरफ देखते हुए बोली—आपने चाय पी ली है न ? वरना इसका क्या पता कि वह आपसे भी कहीं शरारत पर उतर आई हो।

जी ऐसी बात नहीं है, दरअसल यह मजाक भी मेरी स्कीम पर हुआ है, मैंने ही ऐसा करने को कहा था, मुझे आशा है कि आपने बुरा नहीं माना होगा।

बुरा मानने की भला क्या बात है इसमें मुमताज़ बोली।

अगर बुरा न मानो तो एक बात मैं भी कहूं.........नौशाबा ने बड़ी मायूस सी बनकर कहा।

तुम्हें इजाजत देना खतरे से खाली नहीं होता, यह मैं जानती हूं, तुम जरूर कोई उल्टी-सीधी बात कहोगी, इस वास्ते अच्छा यही है कि तुम चुप रहो, मुमताज़ ने उसकी बात का जवाब दिया।

लेकिन मैं भी तो कहे बगैर नहीं रह सकती।

तो फिर पूछना ही क्यों चाहती हो, इजाजत के लिए। लेकिन खैर कहो, तुम क्या कहना चाहती हो, मुमताज़ ने कहा।

सिर्फ अपनी छोटी सी गलतफहमी दूर करना चाहती हूं, नौशाबा ने बाँकी अदा से मुमताज़ की तरफ देखते हुए कहा—अगर मैं गलत नहीं हूं तो क्या यह सही नहीं कि अभी हाल ही में तुम नीचे अपने उन लेखक साहब से बातचीत नहीं कर रही थीं, और शायद साथ ही तुम्हारी अम्मी की आवाज भी थी।

तो इसमें ऐसी गजब की कौनसी बात थी कि तुम अपने आपको कहने से रोक नही सकीं।

यह मैंने कब कहा था तुमसे, मैंने तो यही फरमाया था कि एक अपनी गलतफहमी दूर करना चाहती हूं और वही अपनी नहीं, बल्कि यह हलचल तो इन मेम साहिबा के दिल में हो रही थी।

देखो मुमताज, मंजु ने उसकी बात काटते हुए कहा—तुम्हारी यही आदत बुरी है।

अच्छा कह दो तुम, कि जब मुमताज नीचे उनसे बातें कर रही थी तो मैंने कहा था कि यह आवाज उन्हीं की है कि जिनसे तुम अपनी बरसात की शाम की मुलाकात की कहानी सुनाया करती हो अक्सर, तो तुमने कहा था कि नहीं और कहने लगी—अच्छा पूछना तो सही।

नहीं, अगर कहो तो बुला भेजूं मुमताज ने मंजु की तरफ देखते हुए कहा।

नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।

तो क्या वो अभी नीचे बैठे हैं ? पूछा नौशाबा ने।

क्यों, तुम्हें मिलना है क्या ? मुमताज बोली।

जी नहीं ! दरअसल यह सवाल भी इनके दिल का है, शरारत से नौशाबा सोफे पर बैठी २ थोड़ा खिसककर पीछे हो गई उसके।

नहीं—, अगर तुम्हारा मूड इतना ही जौली हो रहा है तो तुम्हारे उनको बुला दूं।

'मगर माफ करना, शर्त हार जाओगी, वो तो इस शहर में ही नहीं हैं.........'

'हूं, तो तुम कौन सा कम हो, पक्की माशूका हो, सारा पता रखती हो.........'

मंजु दोनों का मुंह देख रही थी, क्या समझ सकती थी भला।

'—कि नौशाबा ने झट से कहा—उनकी चर्चा करो जो घर में हैं, बाहर वालों की क्या कहती हो।'

जवाब देना चाहते हुए भी मुमताज खामोश रही, वो नहीं चाहती थी कि उसकी बेकार बातों का जवाब देकर खामख्वाह बात का सिलसिला बेसिर पैर

की बातों से जोड़ा जाए, वो कोई दूसरी बात कहने जा रही थी कि नौशावा ने फिर कहा—बात जरा सोचकर कहना, चूंकि सुना है जुबां से निकली बात पराई हो जाती है।

नौशावा—, अगर तुम थोड़ा चुप रहना सीख लो तो सच मानो तुम्हारी सब आदतें हर एक को अच्छी लगेंगी, मुमताज ने निहायत खामोशी के साथ कहा।

यही तो मैं सोच रही हूं कि तुम यह चुपचाप सी बातें क्यों कर रही हो, क्या किसी उलझन में पड़ गई हो, या उनसे कोई ऐसी-वैसी बात कह बैठी हो कि वो तुमसे नाराज हो गए हों—, वैसे भी घबराने की कोई बात नहीं, नाजनीनों की नाराजगी में भी एक नशा होता है कि पूछो मत, सुना नहीं तुमने कभी, शायर ने भी कहा है—किसी के मनाने में लज्जत जो पाई कि—, फिर रूठ जाने को जी चाहता है।

नौशाबा—, तुम अपनी हद से बढ़ती जा रही हो, इन्सान को बात वहां तक करनी चाहिए, जहां तक उसका उसे जवाब मिलता रहे।

'तो यह कहो कि तुम लाजवाब हो गई हो, जानेमन, हम भी सब समझते हैं—, यह बड़ी गुमसुम और नादान बनने की अदा किसी और के सामने पेश करना, अच्छा, हम तो चलते हैं, दिल तुम्हारा कहीं और है आज।' कहकर वो खड़ी हो गई तो मंजु भी उठ गई।

क्या जा रही हो ? पूछा मुमताज ने।

कबाब में हड्डी आ जाने से सारा मजा किरकिरा हो जाता है—, इस वास्ते सोचा है फिर कभी आ बैठेंगे तुम्हारी महफिल में और साथ ही दरवाजे की तरफ दोनों बढ़ चलीं, पीछे २ मुमताज भी चुपचाप चली आई।

नीचे बरामदे तक आकर उसने दोनों को रुखसत किया और वहीं खड़ी हुई वो दोनों को जाते हुए देखने लगी, नौशावा की कही बात उसके दिल में करवट लेने लगी—, यह मिस मंजु, जो तुम्हारे उन लेखक साहब से बरसात की एक शाम की मुलाकात की कहानी सुनाया करती हैं अक्सर।

बरसात की शाम—, और मुलाक़ात, मुमताज़ के दिल ने इस हालात का

नक्शा बनाया, तो अपनी वो बात याद आ गई उसे, जब वो और लेखक बरसात की एक रात को सड़क के किनारे अंधेरे से में खड़े टैक्सी की इन्तजार कर रहे थे, तो उसके बदन से शोले निकल रहे थे, गर्म जजबात रह-रहकर पिघल जाने को बेचैन हो रहे थे और उनका बदन उनसे लिपट जाने को तड़प उठा था, अपने आपको जब वो रोक न सकी तो उसके हाथों को छूकर बहाना पेश करते हुए बोली थीं मुझे सर्दी लग रही है—, कि किसी तरह वो बांहों में संभाल ले, क्यों यही बात थी न मुमताज़, तुम यही चाहती थीं न कि वो तुम्हारी महजबी से जुल्फें जरा अन्दाज से हटाकर वो अपने चेहरे को नजदीक लाकर अपने होठों और तुम्हारे रुखसारों के बीच के फासले को दूर कर दें—, नहीं २ उसने अपने आपको सचेत किया, अच्छा हुआ कि उसी वक्त टैक्सी आ गई, वरना मैं सचमुच बहक गई थी, और पता नहीं क्या नतीजा निकलता, नौशाबा और मंजु दोनों ही कब की लॉन पार करके सड़क पर पहुंच कर ओझल हो चुकी थीं, वो वापिस अपने कमरे में जाने को मुड़ गई, हॉल में पहुंची तो देखा कि लेखक और उसकी अम्मी दोनों ही आपस में बातें करते हुए बढ़े चले आ रहे थे, तो मुमताज़ नजदीक आते हुए बोली—क्या आप जा रहे हैं ?

सोचा तो यही है—, आप फरमाइए ।

कहना क्या है, कुछ खास तो नहीं ।

वो चली गई हैं क्या ? उसकी अम्मी ने पूछा ।

'जी, अभी गई हैं ।'

मैं तो समझी थी कि तुम भी शायद उनके साथ चली गई हो ।

'—जी नहीं, अगर जाती, तो भला कहकर न जाती ।'

आजकल तेरा यह घूमना फिरना एक दम बन्द क्यों हो गया है, न कहीं बाहर जाती है न किसी से हंसकर बात करती है, हर वक्त अकेली बैठी २ पता नहीं क्या २ सोचा करती है, हमें भी पता है इसकी वजह, मगर वो ऐसी गज़ब की नहीं है जितना सितम तूने अपने ऊपर ढा रखा है ।

कुछ भी तो नहीं है—, मुमताज़ ने बात को आगे बढ़ने से रोकते हुए कहा ।

तो फिर हर वक्त चेहरे पर यह उदासी और बातों में खोया २ सा पन क्यों रहता है, सिर्फ यही वजह है न कि तेरी शादी इससे नहीं हुई—,

मगर पगली, वो जरा रुक कर बोली एक बात तो सोच जरा कि दुनिया में शौहर तो हर लड़की को मिल जाता है मगर भाई नहीं, उस लड़की के दिल से जाकर पूछ तो जरा कि जिसका भाई नहीं होता, कितनी तड़पती होगी वह, फिर तेरे तो दो भाई हैं, तो कितनी खुशनसीब है तू, तुझे किसी बात की फिक्र नहीं, कोई चिन्ता नहीं, फिर क्यों तू अपने आपको इस तरह से परेशान किये रखती है।

मगर मुमताज खामोश रही, न नजरें उठीं, न जुबान खुली। आप इसे कुछ न कहा करिये, कहा लेखक ने और मुमताज के कन्धे पर हाथ रखते हुए बोला—तुम खुद सब कुछ समझती हो, हर बात को जानती हो, बल्कि हर अन्जाम को भी जानती हो फिर क्यों अपने आपको उलझनों में डाले रखती हो, तुम तो···।

इतना ही कहा था उसने कि तभी नौकरानी अन्दर आयी, कहने लगी बीबी जी, सामने वाली कोठी से जरीना की अम्मी आयी हैं।

अच्छा ! कह दो, चली आओ—, और तब वापिस उनकी ओर घूमती हुई बोली—तुम लोग ऊपर चले जाओ, मुस्कराहट में इशारा लेखक की ओर था, वो पर्दा जरा ज्यादा करती है।

आइए ! मुमताज ने आगे बढ़कर कहा, और दोनों सीढ़ियों की ओर चढ़ गये।

ऊपर आकर मुमताज ने पूछा—चाय पीजिएगा, नहीं रहने दो, अभी नीचे जब बैठा था तो पी थी ।

सिर्फ एक कप—, वो भी मेरा साथ देने को, मुमताज ने कहा, क्यों आपने नहीं पी—पूछने लगा।

तो पहले आप मुझे एक बात बता दीजिए कि मैं आपसे बड़ी हूं या छोटी हूं—,

मैं समझ गया हूं कि क्या मकसद है इस सवाल का।

तो फिर—,

'मगर कोई गुनाह तो नहीं'

'लेकिन अच्छा नहीं लगता कि आप हर बात में 'आप' कह कर पुकारा करें—, इससे परायापन सा लगता है, थोड़ा करीब आ गयी उसके और उसके हाथों पर अपने हाथ रखकर बोली —अगर आँखों का नूर नहीं बन सके तो कम से कम दिल से दूर तो मत करो मुझे—, अपने, और झुकी उठी नजर उससे मिली तो पता नहीं क्यों आँखें छलक उठीं, उसने पलकों को दबाकर आँसुओं को रोकना चाहा मगर सुलगता दिल सिसक ही पड़ा।

मुमताज ! तुम सचमुच पागल हो जाओगी एक दिन—, अगर बात २ पर यूं आँसू बहाने लगोगी, कहकर उसने मुमताज को अपनी बाहों में भर लिया, मुमताज का सिर आकर उसके कन्धे पर टिक गया, बहुत चाहा मुमताज ने कि अपनी रूलाई को रोक ले मगर पता नहीं कब से दिल में दबी पड़ी थीं वो चिन्गारी कि सुलग पड़ीं।

मुमताज ! उसने हौले से कहा और उसका चेहरा अपने हाथों में लेकर कहने लगा—तुम्हें यह क्या हो गया है, क्या तुम अपने आपको बस में नहीं रख सकतीं, एक प्यार की बात अगर तुमने कह भी दी तो इसमें इस तरह रो पड़ने की भला क्या बात थी, अगर तुम मेरे मुंह से भी प्यार की बात सुनना पसंद करती हो तो सच कहता हूं मुमताज, मैं तुमसे असीम मुहब्बत करता हूं..., यह बात मैं, यकीन मानो खाली जुबां से ही नहीं, दिल से कह रहा हूं कि मैं तुमसे दिली मुहब्बत करता हूं—, सच मानो मेरे भी दिल में बहुत अरमान हैं, बहुत सी बातें हैं, जिन्हें मैं किसी से कहना चाहता हूं, लेकिन मैं समझता हूं कि तुम्हारा दिल क्यों दुखी है, क्यों तुम हर बात पर फूट पड़ती हो।

'नहीं मैं बिल्कुल ठीक हूं मुझे कोई गम......,

मैं सब जानता हूं कि तुम्हें कोई गम नहीं है, कोई दुःख नहीं है, लेकिन यह सब बातें ऊपर की हैं, तुम्हारे अन्दर क्या है, यह तुम जानती हो, मगर काफी हद तक इसकी वजह मैं भी समझता हूं।

तब आप ही बताइए मैं क्या करूं, अपनी सिसकियों को बस में करने की कोशिश करते हुए बोली—अपने दिल में कभी बुरी बात नहीं आने देती, कभी ऐसी बात पर गौर नहीं करती जिससे कुछ हासिल न होता हो, मगर पता नहीं फिर भी क्यूं दिल विचारों में खो जाता है, आपकी मुहब्बत में दिल लाख, कोशिश करने पर भी भटक जाता है, सच कहती हूं मैं अपने आपको रोकने की बहुत कोशिश करती हूं मगर फिर यह सब खुद-ब-खुद हो जाता है मुझे खुद एक परेशानी सी लगती है।

कहकर जब वो चुप हो गयी तो लेखक ने उसी की साड़ी के पल्लू से उस की आँखें पोंछीं और उसकी ठोड़ी को थोड़ा ऊपर उठाकर कहने लगा—इन सब बातों का एक छोटा-सा हल है और आसान भी—, कि, तुम मुझे भाई कहकर पुकारा करो, तुम्हारे दिल में उठने वाले तमाम गुब्बार अपने आप खत्म हो जाएंगे, तुम्हारा दिल तुम्हें ही कोसेगा अगर तुम इधर-उधर की बातों में भटकोगी तो। बोलो……।

सुनकर बात को मुमताज ने दोनों आँखें बन्द कर लीं, चेहरे पर गुलाबी मुस्कराहट फैल गयी, उसने आहिस्ता से अपनी घनी पलकों को खोला, और प्यार से उसकी तरफ देखने लगी।

कह दो न एक बार''तुम्हारे मुंह से मैं यह लब्ज सुनने को कब से बेचैन हूं……, बड़ी उम्मीद के साथ मैंने आज यह बात तुमसे कही है।

और मुमताज के होठ फड़फड़ा रहे थे खामोशी से, नजरें लेखक की निगाहों से मिली हुई थीं।

तो उसने उसे थोड़ा झिझोरकर कहा—कहो न……,

तब मुमताज के फड़फड़ाते होंठों ने आहिस्ता से कहा—भाई जान''! और एक क्षण तो नजरें उसी तरह मिली रहीं और दूसरे ही पल वो उससे लिपट गयी, लेखक ने भी उसे अपनी बाहों में ले लिया, उसके कन्धे पर सर टिकाए मुमताज ने फिर दबी सी आवाज में कहा, मेरे अच्छे भइया।

लेखक आहिस्ता से उसे अपने से अलैहदा करते हुए कहने लगा—कहीं भूल तो नहीं जाओगी, अपने इस बदनसीब भाई को, ऐसा न हो कि'',

यह आप क्या कहते हैं''', बदनसीब तो मैं हूं कि जो—,

बस अब तुम भी अपनी बात को यहीं खत्म कर दो, मैं जानता हूं कि तुम क्या कहने जा रही हो।

अच्छी बात है छोड़ो इन बातों को, कहा मुमताज ने और बाहर जाने को हुई तो उसने पूछा—कहाँ चलीं तुम—,

जरा चाय लाने को—,

रहने ही दो''''''मूड ही नहीं अब पीने को,

क्यों ? वो वापिस पलटी।

तुमने आँसू जो इतने पिला दिए हैं, हंस दिया वो।

देखो, नहीं तो मैं फिर रो पड़ूंगी अगर आप ऐसी बात कहेंगे तो, मुमताज ने नाराजसी होते हुए कहा।

लेकिन मैं चुप करना भी जानता हूं—, अच्छा अब मैं चलता हूं''''''''''', और जाने को आगे बढ़ गया, दरवाजे से बाहर आया तो पीछे २ मुमताज भी थी, जो कहती आ रही थी—, अगर एक कप पी लेते तो क्या देर हो जाती, और जब वो सीढ़ियों तक पहुंच गया तो मुमताज ने उसके जाते हुए का हाथ पकड़ लिया कहने लगी—कल आइएगा न ?''''''

अगर तुम कहो तो, उसने उसकी तरफ घूमकर कहा।

जरूर आना—, भोली सी आवाज में मुमताज बोली।

अच्छा कहकर उसने मुमताज की आंखों में देखा और सीढ़ियाँ उतरने लगा।

जब वो पांच-छः सीढ़ियाँ उतर चुका तो मुमताज ने अपनी जगह पर खड़े खड़े कहा—अगर न आए तो—?

तो, उसके पाँव वहीं रुक गये, उसकी तरफ निगाह घुमाकर बोला—तो तुम चली आना।

लेकिन फिर मैं कल नहीं परसों आऊँगी—,

अच्छा ! उसने धीरे से कहा, जिसे शायद ही मुमताज़ सुन पाई हो और तेजी से सीढ़ियाँ उतर गया।

मुमताज़ वहीं खड़ी उसे जाते हुए को देख रही थी।

२०

और तीसरे दिन सचमुच मुमताज़ ही लेखक के यहाँ पहुंची। दरवाजे को खटखटाया उसने जब तो लेखक ने दरवाजा खोलकर सामने देखा तो कह उठा, अरे तुम……

जी हां, कहकर वो अन्दर आ गई और कहने लगी—सोचा, अगर आप को अपना वादा याद न रहा हो तो कम से कम हम तो अपना वादा पूरा कर दें।

ओह ! लेकिन एक बात है, यह दुनियां कुछ ऐसी है कि अगर लाख दफा किसी की खातिरदारी करता रहे, तब तो ठीक है, लेकिन कभी एक बार वो खातिरदारी के लिए हाजिर न हो सके तो बस, पिछली सब पर पानी फिर जाता है।

अच्छा, तो अब आप ताने मारना भी सीख गए हैं, मुमताज़ ने मुस्कराहट से कहा।

पहले तुम बैठ तो जाओ, फिर तकरीर कर लेना, कहकर उसने अपनी कुर्सी की तरफ इशारा किया।

नहीं, मैं यहीं बैठ जाऊंगी, वो बिस्तर की तरफ बढ़ी और बिछी हुई चादर को थोड़ा ठीक करके उस पर बैठ गई, कहने लगी—एक बात पूछूं आप से।

क्यों, घर से पहले ही सोचकर चली थीं तुम क्या, कि जाते ही सवाल पूछूंगी, न किसी की खैर-खैरियत बताई, न कोई और बात।

जी नहीं ऐसी बात नहीं, एक बात मैं घर से और सोचकर चली थी कि आज आपके साथ चाय भी पीऊंगी, और………

और अगर मैं पिलाने से इन्कार कर दूं तो, उसने मुमताज़ की बात काटते हुए कहा।

तो मैं जबरदस्ती पीऊँगी, यह भी भला कोई बात है, लेकिन इससे पेश्तर मैं कुछ और कहूं पहले आप मेरी एक बात का जवाब दीजिए, और कहने लगी, आप बैठ तो जाइये।

और जब वो कुर्सी पर बैठ गया तो मुमताज़ कहने लगी—बात दरअसल यह पूछना चाहती हूं कि आपने जैसा बताया था कि अहमदाबाद में खुदा न खास्ता आपका ट्रक से 'एक्सीडेंट' होने लगा था, तो आप यह बताइए कि आप का बचाने वाला कौन था ?

बचाने वाला कौन था……

जी हां, मेरा मतलब है कि वो आदमी था या औरत ………, उसने बड़ी संजीदगी से पूछा ।

लेकिन तुम ऐसा क्यों पूछ रही हो ?

क्यों कोई खास वजह है क्या, जो आप बतलाना नहीं चाहते, उल्टा सवाल कर दिया मुमताज़ ने ।

लेकिन इससे तुम्हें क्या हासिल होगा ?

जो आपको झूठ बोलकर हुआ है ।

अब समझा, कि तुम्हारा मकसद क्या है, आखिर तुम मेरे मुंह से यही कहलवाना चाहती हो न, कि मुझे बचाने वाली एक जवान लड़की थी ।

तो फिर आपने झूठ क्यों बोला था ?

तो इसकी वजह भी पूछना चाहती हो, एक क्षण को हंस पड़ा वो, कहने लगा—जानती हो, जिस तरह तुम अपनी अम्मी से कोई ऐसी बात जो जरा शर्म की हो, नहीं कह सकतीं, उसी तरह मेरा भी वही रिश्ता है जो तुम्हारा है, लेकिन हां, यह बात तुम्हें साजिद ने ही बताई होगी, क्यों आ गया है क्या वो ।

'जी हां, मगर हां, यह बात उन्होंने मुझे नहीं अम्मी को बताई थी, चाहे आप पूछ लेना, नहीं अम्मी ने मुझसे कही थी ।'

तो इसका मकसद है कि तुम जासूसी कर रही थीं ?

और जवाब में मुमताज़ हौले से मुस्करा दी ।

धीरे से उठकर वह नीचे जाने लगा तो मुमताज़ ने पूछा—कहां चल दिये आप ?

जरा नीचे तक ।

नहीं आप रहने दीजिए, मैं सच कहती हूं चाय तो पीकर सीधा ही इधर चली आ रही हूं, आप खामख्वाह में तकल्लुफ मत कीजिए।

इसमें तकल्लुफ कैसा है, और नीचे चला गया, नीचे आकर पल भर को वो रुक गया, पता नहीं क्या सोच रहा था वो, तभी कुछ विचार करके वो होटल में चला गया और सीधा मैनेजर के कमरे में चला गया, जैसे ही दरवाजा खोला उसने, सामने ही मैनेजर बैठा, मेज पर रखे रजिस्टर पर झुका हुआ था, उसके आने की आहट पाकर वो अधेड़ उम्र का व्यक्ति बोला—ओह, आओ बरखुरदार, और जल्दी से रजिस्टर के पन्ने उलटकर एक नजर डालकर बोला—सिर्फ एक सौ इकतालीस रुपये अस्सी पैसे हैं हजूर के नाम।

जी, माफ करना, मैं बिल अदा करने नहीं, एक अर्ज करने आया हूं।

कि एक 'सैट स्पेशल टी' ऊपर भेज दूं, मैनेजर ने बड़ी अदा से कहा।

'जी ....', लेखक ने सर झुकाकर बड़ी आहिस्ता से कहा।

जी, क्यों नहीं, जी, हम यहाँ नौकर किसके बैठे हैं, राशन पानी तो हमें गवर्नमेंट से मुफ्त मिल जाता है बाँटने को, जहाँ तक सवाल है हमारी तनख्वाह का, हमें लेकर करनी ही क्या है, मेहरबानी है गुरुद्वारे वालों की, कि खाना सुबह-शाम बड़े प्रेम से बंटता है।

नहीं मैनेजर साहब, सच कहता हूं कल भी उसी पब्लिशर के पास गया था, उसने फिर परसों का वादा कर लिया है, मैं सच कहता हूं, उसके यहां से पैसा लाने पर पहले आपका हिसाब 'क्लीयर' करूंगा, बाद में ऊपर जाऊंगा।

कह तो यूं रहे हो जैसे हम पर कोई अहसान करोगे, चले आते हैं नवाब बनकर।

मैनेजर साहब, क्या आपको मेरी बात का यकीन नहीं, मैं सच कहता हूं आज एक बहुत खास मेहमान आया है, वरना मेरी 'इन्सैल्ट' हो जाएगी, आप चाहे आज के दुगने चार्जेज दर्ज कर लें, लेकिन आज की इनायत और ....

हाँ-हाँ क्यों नहीं, मुझे भी मालूम है जो मेहमान आपके यहाँ आये हैं, बड़ी तगड़ी आसामियां फंसा रखी हैं, शेवर्लेट की दूधिया कार, और कार के रंग से ज्यादा दूधिया रंग की छोकरी, और........

जबान सँभालकर बात करो मैनेजर, वरना अंजाम बुरा होगा।

ओह, होऽ, तो आप घूरना भी जानते हैं, अच्छा जाइए अपना रास्ता देखो, परसों अगर पैसे न पहुंचे तो ऊपर वाला सारा तबेला नीलाम करा दूंगा और फिर से रजिस्टर पर झुककर बड़बड़ाने लगा—बड़े बने हुए हैं हिन्दुस्तान के ग्रेट राइटर, नाम बड़े और जेब खाली।

और वह सर झुकाए बाहर चला आया, होटल से बाहर आया तो होटल का बूढ़ा नौकर उसके करीब आकर बोला—'क्या बात थी बाबू।

कुछ नहीं बनवारी, लेखक ने फीकी हंसी हंसकर कहा—यूं कुछ मामूली बात थी।

नहीं बाबू, छिपाओ मत, मुझे सब पता है, नौकर ने संजीदगी से कहा—वैसे तो बाबूजी अनपढ़ हूं लेकिन आदमी के चेहरे को पढ़ना जानता हूं।

तुम अपना काम करो बनवारी, इस दुनियां मे बहुत सी बातें ऐसी होती हैं जिन्हें आदमी दूसरे से कहना तो चाहता है, मगर कह नहीं सकता, अच्छा! कहकर वो अपने कमरे की सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया। ऊपर आकर उसने मुमताज़ को अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा—क्या बताऊं तुम्हें, और एक फीकी सी हंसी हँस दिया, बोला—आज बदकिस्मती से होटल वाले का तमाम दूध खराब हो गया है, कहता है कि नौकर को लेने भेजा है और किसी के यहाँ से, आ जाए वो......, तो ही चाय भेज सकूंगा।

तब तो यह अच्छी बात है, मैं तो आपसे पहले ही मना कर रही थी, अब बोलिए, लेकिन हाँ, एक बात कहूं आपसे, उसने चेहरे पर मादक मुस्कान बिखेरते हुए कहा—कहीं आपकी नीयत तो नहीं खराब हो गई।

नहीं मुमताज़, मेरी नीयत तो बिलकुल दुरुस्त थी, लेकिन मैं......, इतना ही कहा था उसने कि उसकी आवाज वहीं रुक गई।

तभी एकदम उठकर मुमताज़ उसके नजदीक आ गई और उसके सीने पर हाथ रखते हुए कहने लगी—मैंने तो यूं ही मजाक किया है, और आप हैं कि हर बात को सोचने लग जाते हैं, बड़े प्यार से उसने उसके दोनों हाथ पकड़कर अपने कन्धे पर रख लिये, उसकी आँखों में झांकते हुए कहने लगी—आपका

प्यार भरा इक लब्ज भी मेरे लिए बहुत है, क्या दुनियां में सिर्फ खातिरदारी और मेहमाननवाजी ही सब कुछ है, इन्सान उसी के पास जाता है जहाँ उसकी इज्जत होती है, जो आने वाले की क़द्र करना जानता हो, उससे प्यार से बात करना जानता हो, फिर मैं, आप……, हमारी तो बात ही दूसरी है, सबसे बढ़कर खुशनसीबी तो मेरी है कि मैं एक ऐसे इन्सान की बहन हूं जिसे दुनियां जानती है, किसी से बात करते वक्त मुझे कितना फख्र महसूस होता है जब मैं उससे कहती हूँ कि मैं आपकी बहन हूं और आप मेरे भाई हैं।

इतनी ही बात कही थी मुमताज ने कि लेखक की नजर सामने सीढ़ियों पर चढ़ते हुए बनवारी पर पड़ी जिसके हाथ में चाय की तश्तरी थी, और वो लगभग दरवाजे तक आ चुका था, तो वह उसकी ओर तेजी से बढ़ा और कहने लगा धीरे से—यह किसने भेजी ?

और बनवारी ने तब तक तश्तरी तहजीब से मेज पर रख दी थी, मगर जुबां खामोश थी, रखकर वो चुपचाप दरवाजे की तरफ बढ़ गया और लेखक उसके पीछे २ था, पहली सीढ़ी पर जब बनवारी ने कदम रखा तो उसने दबी आवाज से पूछा—तुम बोलते क्यों नहीं बनवारी, मैं पूछता हूं यह चाय किसने भेजी है ?

कुछ ऐसी बातें भी होती हैं, जिन्हें आदमी दूसरों से कहना तो चाहता है मगर कह नहीं सकता, लेकिन कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जिन्हें आदमी दूसरों की मौजूदगी में कह नहीं सकता, अच्छा बाबूजी, आप आराम से चाय पीजिए और घर पर आये मेहमान की पूरी तरह से खातिरदारी कीजिए।

फिर भी इन्सान का दिल मेहरबान होता है, मैनेजर रहमदिल है, देखो न बनवारी, मेरी बहन काफी दिनों के बाद मेरे घर आई है, और मैं ऐसा बद-नसीब हूं कि उसकी कुछ खिदमत भी नहीं……

क्या कहा, तुम्हारी बहन है वो, बनवारी ने आँखें फाड़कर हैरानगी से दबी आवाज में कहा, और जल्दी से कमरे में घुसकर मेज पर रखी चाय की तश्तरी उठा ली और वापिस ले जाते हुए कहने लगा—तब तो मैं यह चाय नहीं पिलाऊँगा, बड़बड़ाता हुआ तेजी से सीढ़ियाँ उतर गया, बात को कुछ

जबान सँभालकर बात करो मैनेजर, वरना अंजाम बुरा होगा !

ओह, हो, तो आप घूरना भी जानते हैं, अच्छा जाइए अपना रास्ता देखो, परसों अगर पैसे न पहुंचे तो ऊपर वाला सारा सबेला नीलाम करा दूंगा और फिर से रजिस्टर पर झुककर बड़बड़ाने लगा—बड़े बने हुए हैं हिन्दुस्तान के ग्रेट राइटर, नाम बड़े और जेब खाली।

और वह सर झुकाए बाहर चला आया, होटल के बाहर आया तो होटल का बूढ़ा नौकर उसके करीब आकर बोला—'क्या बात थी बाबू।

कुछ नहीं बनवारी, लेखक ने फीकी हंसी हंसकर कहा—यूं कुछ मामूली बात थी।

नहीं बाबू, छिपाओ मत, मुझे सब पता है, नौकर ने संजीदगी से कहा—वैसे तो बाबूजी अनपढ़ हूं लेकिन आदमी के चेहरे को पढ़ना जानता हूं।

तुम अपना काम करो बनवारी, इस दुनिया में बहुत सी बातें ऐसी होती हैं जिन्हें आदमी दूसरे से कहना तो चाहता है, मगर कह नहीं सकता, अच्छा ! कहकर वो अपने कमरे की सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया। ऊपर आकर उसने मुमताज को अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा—क्या बताऊं तुम्हें, और एक फीकी सी हंसी हँस दिया, बोला—आज बदकिस्मती से होटल वाले का तमाम दूध खराब हो गया है, कहता है कि नौकर को लेने भेजा है और किसी के यहाँ से, आ जाए वो......, तो ही चाय भेज सकूंगा।

तब तो यह अच्छी बात है, मैं तो आपसे पहले ही मना कर रही थी, अब बोलिए, लेकिन हाँ, एक बात कहूं आपसे, उसने चेहरे पर मादक मुस्कान बिखेरते हुए कहा—कहीं आपकी नीयत तो नहीं खराब हो गई।

नहीं मुमताज, मेरी नीयत तो बिलकुल दुरुस्त थी, लेकिन मैं......, इतना ही कहा था उसने कि उसकी आवाज वहीं रुक गई।

तभी एकदम उठकर मुमताज उसके नजदीक आ गई और उसके सीने पर हाथ रखते हुए कहने लगी—मैंने तो यूं ही मजाक किया है, और आप हैं कि हर बात को सोचने लग जाते हैं, बड़े प्यार से उसने उसके दोनों हाथ पकड़कर अपने कन्धे पर रख लिये, उसकी आँखों में झांकते हुए कहने लगी—आपका

प्यार भरा इक लब्ज भी मेरे लिए बहुत है, क्या दुनियां में सिर्फ खातिरदारी और मेहमाननवाजी ही सब कुछ है, इन्सान उसी के पास जाता है जहाँ उसकी इज्जत होती है, जो आने वाले की क़द्र करना जानता हो, उससे प्यार से बात करना जानता हो, फिर मैं, आप..........., हमारी तो बात ही दूसरी है, सबसे बढ़कर खुशनसीबी तो मेरी है कि मैं एक ऐसे इन्सान की बहन हूं जिसे दुनियां जानती है, किसी से बात करते वक्त मुझे कितना फख्र महसूस होता है जब मैं उससे कहती हूँ कि मैं आपकी बहन हूं और आप मेरे भाई हैं।

इतनी ही बात कही थी मुमताज ने कि लेखक की नजर सामने सीढ़ियों पर चढ़ते हुए बनवारी पर पड़ी जिसके हाथ में चाय की तश्तरी थी, और वो लगभग दरवाजे तक आ चुका था, तो वह उसकी ओर तेजी से बढ़ा और कहने लगा धीरे से—यह किसने भेजी ?

और बनवारी ने तब तक तश्तरी तहजीब से मेज पर रख दी थी, मगर जुबां खामोश थी, रखकर वो चुपचाप दरवाजे की तरफ बढ़ गया और लेखक उसके पीछे २ था, पहली सीढ़ी पर जब बनवारी ने कदम रखा तो उसने दबी आवाज से पूछा—तुम बोलते क्यों नहीं बनवारी, मैं पूछता हूं यह चाय किसने भेजी है ?

कुछ ऐसी बातें भी होती हैं, जिन्हें आदमी दूसरों से कहना तो चाहता है मगर कह नहीं सकता, लेकिन कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जिन्हें आदमी दूसरों की मौजूदगी में कह नहीं सकता, अच्छा बाबूजी, आप आराम से चाय पीजिए और घर पर आये मेहमान की पूरी तरह से खातिरदारी कीजिए।

फिर भी इन्सान का दिल मेहरबान होता है, मैनेजर रहमदिल है, देखो न बनवारी, मेरी बहन काफी दिनों के बाद मेरे घर आई है, और मैं ऐसा बद-नसीब हूं कि उसकी कुछ खिदमत भी नहीं......

क्या कहा, तुम्हारी बहन है वो, बनवारी ने आँखें फाड़कर हैरानगी से दबी आवाज में कहा, और जल्दी से कमरे में घुसकर मेज पर रखी चाय की तश्तरी उठा ली और वापिस ले जाते हुए कहने लगा—तब तो मैं यह चाय नहीं पिलाऊँगा, बड़बड़ाता हुआ तेजी से सीढ़ियाँ उतर गया, बात को कुछ

समझ न सका लेखक, तो तेजी से वो भी उसके पीछे २ सीढ़ियां उतर गया, आखिरी नीचे की सीढ़ी पर उसे धर दबाया, पूछने लगा—यह सब क्या माजरा है, बताते क्यूं नहीं यह चाय किसने भेजी है, और इस तरह वापिस ले जाने का क्या मकसद है।

चाय तो यह मैं अपने पास से लाया हूं, मैंने तो सोचा था कि माल तो अच्छा है, लड्डू न सही, कम से कम चूरा तो मिल जाएगा हमें भी······

कमीने—, जलील, तुझे शरम नहीं आती अपनी बूढ़ी जबान से ऐसी जलालत की बात करते हुए, जी तो चाहता है कि तेरी जबान हमेशा के लिए बन्द कर दूं, लेकिन तेरी उम्र का लिहाज आता है—, उसने आँखें लाल करते हुए कहा—उस जितनी तो तेरी बेटियाँ होंगी, कुछ तो शरम कर।

'यकीन तो नहीं आता मुझे, मैंने दुनियां देखी है इन आँखों से।' बनवारी बोला।

'तो तुमने गलती कर दी आज पहचानने में।'

'यही तो कह रहा हूं कि गलत बातें करते हैं आज लोग, जो सीधे रास्ते से नहीं फंसती, उसे बहन बनाकर हलाल किया जाता है आजकल, मुँह से भैया और हाथ से सैया वाली बात अमल होती है आजकल तो···' बनवारी ने अपने पान से रंगे दांत चिढ़ा दिये।

मगर जानते हो पाँचों उंगलियाँ एक सी नहीं होतीं और कहकर वो ऊपर चला आया।

यह सब क्या तमाशा हुआ था अभी, उसके आते ही मुमताज़ ने पूछा।

कुछ नहीं मुमताज, उसने संजीदगी से कहा—यह दुनियां बड़ी धोखेबाज और दिलफरेब है, और भोली भाली मुमताज़ की सूरत की तरफ देखा उसने, और हल्के से हंस दिया, कहने लगा—'मिलावट की चाय लाया था कमीना।'

'क्या मतलब ?' नादान मुमताज़ ने पूछा।

'चाय में जो असली चीज होती है, यानी कि दूध, वो नकली था, मतलब यह कि दिखने में वो सफेद था, लेकिन असल में वो काला था।'

'समझ में तो आई नहीं आपकी बात।'

तुम जैसी नादान भला समझेंगी भी क्या, उसने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—वो दूध पाउडर का दूध था, उसमें मिलावट थी, एक धोखा था।

ओह ! मुमताज़ अपने रेशम से बालों को अपने चेहरे से हटाकर जोर से हंस दी, उसके मोतियों से सफेद दांत श्वेत कमल की पंखुड़ियों की तरह खिल उठे, न जाने उसे इतनी हँसी क्यों आ गई थी, हंसते २ वो बिस्तर पर बैठ गई, मगर उसकी हंसी फिर भी न रुक सकी, तो अधलेटी सी होकर उसने तकिये में मुंह छिपा लिया।

'आखिर इतनी खुल खुल कर हंसने की भला क्या बात थी ?' उसने कहा।

तब वो बिस्तर पर पूरी लेट गई और अपने बालों को अपने उभरे सीने पर संवारते हुए बिना लेखक की तरफ देखे कहने लगी—आप भी कितने गर्म मिजाज के आदमी हैं, नौकर से तो यूं लड़ने लग गए थे, जैसे उसे ही चाय की जगह पी जाने का इरादा हो, और फिर हल्के से हंस दी वो।

तो तुम देख रही थीं क्या ऊपर से।

और क्या नहीं, और वो एकदम पलटकर औंधी लेट गई, तकिये को थोड़ा अपने सीने के नीचे दबाकर चेहरे को थोड़ा ऊपर उठाकर उसकी तरफ देखते हुए कहने लगी—वैसे एक बात है, नौकर बेचारा ईमानदार जरूर है, सच्ची बात आपसे कह दी उसने।

उसकी यह बात सुनकर मुस्करा दिया वह आहिस्ता से। भला क्या कहता वो उससे।

चुपचाप मुमताज खामोश निगाहों से उसकी तरफ देख रही थी और वो भी पता नहीं चुपचाप बैठा क्या सोच रहा था, दो-चार मिनट तक भी जब उसने कुछ बात न कही, तो मुमताज़ ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा—एक बात पूछूं आपसे।

'क्या' उसने लापरवाही से कहा।

आप किसी मंजु नाम की लड़की को जानते हैं क्या ?

मंजु ·······कौन है वो, मैं तो उसका नाम ही आज सुन रहा हूं।

आप नहीं जानते उसे, मुमताज थोड़ा उचककर लेट गई। तकिये पर कोहनियाँ टिकाकर उसने हाथों में अपना चेहरा थाम लिया, बड़ी अदा से कहने लगी—ओफ होऽ…………, वो तो बेचारी आपके बड़े गुण गाती है, यही नहीं, बड़ी शोखियों से अपनी वो अजीम मुलाक़ात की दास्तान सुनाती है, उसने लेखक की तरफ पलकें झपकाकर बड़े अन्दाज से कहा—कहती है बरसात की एक भीगी शाम थी, जब मैं आपकी इसी रोड पर चली आ रही थी, आपने मुझे पुकारा और मैं खिन्ची चली आई।

मगर क्या मेरे पुकारने का सबब नहीं बताया था उसने, पूछा उसने।

जी नहीं यह तो नहीं बताया था उसने, आप बता दीजिए अब।

बात दरअसल यह थी कि उस दिन जब मैं तुम्हारे यहाँ से आया, तो कुछ ही देर बाद बारिश शुरू हो गयी थी, और मैं यहाँ खिड़की के पास खड़ा कुदरत का मन्जर देख रहा था, तभी मैंने देखा कि यही लड़की जिसका जिक्र तुम कर रही हो, चली आ रही थी, बारिश भी अपने पूरे शुमार पर थी, और दूसरी बात यह कि इसके पास न कोई बरसाती थी न कोई छाता, परेशान तो यह वैसे ही हो रही थी, और असल बात यह थी कि इसके पीछे २ एक लड़का चला आ रहा था, जो इससे छेड़खानी कर रहा था, तब मैंने अहसास किया कि वो परेशानी महसूस कर रही थी, मगर किसी भी दुकान या कोठी के बरामदे में भी खड़ी नहीं हो सकती थी, चूंकि यह निश्चित था कि वो लड़का भी वहीं जरूर रुकता, उसकी इस परेशानी को सोचकर मैंने यूं ही बिना कुछ सोचे समझे नीचे जाकर बुला लिया, मेरा मकसद था कि मेरे इस तरह बुलाने से वो लड़का आगे चला जाएगा, और यहाँ ठहर नहीं सकेगा, वरना मेरे दिल में इसके सिवा और कोई गलत बात नहीं थी, बात खत्म करके उसने एक क्षण रुक कर कहा—क्या तुम्हारी फ्रेन्ड है, वो ?

जी नहीं, नौशाबा ने एक दिन मुलाक़ात करायी थी उससे, और हाँ, वो उठकर बैठ गयी, कहने लगी—अभी परसों जब आप आये थे तो वो मेरे कमरे में ही तो थी जब मैंने आपसे कहा था कि ऊपर ही चले आओ, और साथ में नौशाबा भी थी, लेकिन आप माने नहीं थे।

लेकिन मुझे क्या वास्ता था उससे, और वैसे भी लड़कियों की महफिल में और फिर वहाँ जहाँ कोई ऐसी जान पहचान न हो, आकर दखल-नवाजी करना जरा अच्छा नहीं लगता।

खैर छोड़िये इन बातों को, कहते हुए वो बिस्तर पर से उठ खड़ी हुई, खिड़की के नजदीक आकर नीचे सड़क की चहल पहल देखने लगी, लेखक वहीं कुर्सी पर बैठा न जाने क्या सोच रहा था, दो चार मिनट वो उसी तरह खड़ी रही, और पता नहीं क्या उसके दिमाग में आया कि धीरे से किसी गजल की पहली दो एक लाइनें गुनगुनाने लगी, लेकिन तभी उसे अपनी स्थिति का आभास हुआ तो एक दम खामोश हो गयी बल्कि थोड़ा झेंप भी गई, मुड़कर जब उसने पीछे की तरफ बैठे लेखक की तरफ देखा तो हौले से मुस्करा पड़ी गालों ही गालों में।

लेखक ने कहा—मुझे मालूम है कि तुम्हारी आवाज में बड़ी अच्छी कशिश है।

जी—, जी नहीं, यूं ही जुबाँ से एक दो लाइनें निकल पड़ी थीं, मैंने समझा कि मैं अपने ही कमरे में हूं, क्योंकि मेरे कमरे की खिड़की भी तो ऐसी है बिल्कुल वहाँ से भी सड़क का सारा नजारा साफ नजर आता है।

तब तक लेखक भी उठकर करीब आ गया था।

अच्छा अब मैं चलूँ—, मुमताज ने आँखों ही आँखों से इजाजत माँगी।

क्यों, कोई काम है क्या, आखिर इतनी जल्दी ही क्या है जाने की, वह बोला—थोड़ी देर और बैठ जाओ, चली जाना।

काम तो कुछ भी नहीं है, और हां, कहती हुई वो उसके करीब आ गई, कहने लगी—कल तो आइयेगा न, हमारे यहाँ, और उसने प्यार से लेखक के गले में अपनी गोरी २ मरमरी बाहें डाल दीं, बोली—कल मेरा 'बर्थ डे' है।

कल……? उसने हैरानी से पूछा—क्या सचमुच, लेकिन तुमने दो तीन दिन पहले तो बता दिया होता कम से कम……, ताकि—,

उसके कुछ कहने से पहले वो बोल पड़ी—मैं जानती हूँ अच्छी तरह कि आप जैसे लोग अक्सर बहाना बना देते हैं—'याद नहीं रहा था' चाहे उन्हें

अच्छी तरह याद रहा भी हो, अब तो नहीं कह सकेंगे, मुझे ख्याल नहीं रहा था, और देखो, उसने उसके गले से बाहें हटाकर ताना देने के अन्दाज में बोली— अगर आप न आये न, तो सच कहती हूँ आपसे फिर मैं कभी नहीं बोलूंगी, और उसकी तरफ पीठ करते हुए इसी अन्दाज में बोली--न ही मैं कोई बहाना सुनूँगी कि आपको किसी जरूरी काम से वहाँ जाना था, या मुझे आने की फुरसत नहीं मिल सकी।

वो तो सब ठीक है, लेकिन मुझे तुम्हारी सालगिरह की मुबारिक पर तोफा क्या देना होगा—पता नहीं यह सवाल क्यों पेश किया, उसने।

तोफा—, उसकी तरफ घूमकर मुमताज ने यह लब्ज दोहराया, और सोच कर कुछ कहने ही जा रही थी कि इतने में साजिद कमरे में आते हुए बोला— तोफा क्या देना चाहिए इसका फैसला मैं किये देता हूँ।

अरे तुम......, तुम कहाँ थे, लेखक ने उल्टा सवाल किया।

सीधा ही चला आ रहा हूं, घबराओ नहीं, मैंने सारी बातें नहीं सुनीं आपकी, अभी पहली ही सीढ़ी पर था कि आपकी बहन, यानी कि हमारी माँ की लाडली बेटी, मेरा मतलब है कि हमारे अब्बा हजूर की बेगम साहिबा की लड़की, जो हमारी भी बहन लगती हैं, इसकी आवाज......।

देखो भाईजान, तुम हर वक्त ही ऐसी छेड़खानी करते रहते हो, मुझे नहीं अच्छी लगती इस तरह की......।

पहले मेरी बात तो सुन लो हजूरे आला, साजिद ने भी उसकी बात काटते हुए कहा—पहले मुझे तोफा देने का फैसला तो सुना लेने दो मुझे।

मगर तुम बात सीधी तरह नहीं कह सकते, मजाक और यह छेड़छाड़ मुझसे नहीं, बल्कि अपनी भौशाबा से किया करो, मुमताज ने बड़ी बांकी अदा से कहा।

झेंप तो गया साजिद मगर और कुछ सूझता न देख कहने लगा—और कुछ खिदमत, और बिना उसको कुछ और कहने का मौका दिये, बोला—हाँ तो मैं कह रहा था कि इनको तोफा कैसा दिया जाए, यह एक जरा गौर करने की बात है, और वो अपने माथे पर उंगली रखकर सोच रहा था कि जवाब में क्या कहा जाए?

लेखक उसी तरह खड़ा हुआ खामोश था, शायद उसका दिमाग भी कुछ नहीं सोच रहा था इस बारे में ।

कुछ देर के लिए खामोशी सी छा गई ।

तो साजिद ने कहा—मेरी समझ में तोफा ऐसा होना चाहिए जो कुछ कीमती तो हो ही, साथ ही कुछ टिकाऊ भी हो, और साथ ही ऐसा भी होना चाहिए जो इसके इस्तेमाल में भी ज्यादा आये ताकि इसे तुम्हारी याद भी आ जाए भूले से और सबसे बड़ी बात तो यह होनी चाहिए उसमें कि वो तोफा इन्सान को कुछ सबक भी देता हो ।

लेखक ने सुनकर भी बात को, कुछ ज्यादा ख्याल न किया ।

और साजिद कुर्सी पर बैठते हुए बोला—हाँ तो बताओ न, तुम्हारी क्या राय है, इशारा लेखक की तरफ था ।

मगर आपको अपनी राय देने के लिए किसने कहा था,—लेखक के बजाय मुमताज़ ने कहा ।

और मैंने कौन सा आपसे पूछा है, साजिद ने कहा—आप खामोश ही रहिये ।

लेकिन मेरे ख्याल से तोफा कीमती हो या न हो, मगर ऐसा जरूर होना चाहिए जो एक याद बनकर रह जाए, चाहे वो किसी चीज के बजाय जुबाँ से कही हुई सिर्फ एक बात ही क्यों न हो ।

वाह ! क्या बात पेश की है तुमने, आखिर तुमसे बातों की बाजी में कौन जीत सकता है, अच्छा तो इसी बात पर हो जाए गरमागर्म चाय का एक-एक कप, और खुद छूटते ही बोला—'तुम लोग तो पी चुके होगे शायद, और बिना किसी के जवाब को सुने कहने लगा—अच्छी बात है, तो फिर कॉफी ही सही, जरा बुलाना तो अपने नीचे वाले होटल के छोकरे को, लेखक हड़बड़ाकर कुछ कहने वाला था कि वो उससे पहले ही कुर्सी पर से उठता हुआ बोला—मैं ही बुलाता हूँ उसे, और सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया ।

लेकिन जरा सुनो तो""", उसने उसे पीछे से आवाज दी ।

मगर तेजी से उतरते हुए सीढ़ियों को, साजिद ने सुनी ही कहां थी ।

हर बात में जल्दी करते हैं, क्या कहना था आपको, पूछा मुमताज ने ।

अब कुछ नहीं कहना मुझे, खुद मैनेजर ही समझा देगा सब, उसने कहा—कह तो दी यह बात उसने, लेकिन दिल में उसके तूफान उठ रहा था, हकीकत वो जानता था कि साजिद को मैनेजर क्या कहेगा, और यह भी निश्चित है कि साजिद आगे कुछ कह नहीं पाएगा, मगर उसकी इतनी हिम्मत न हुई कि वो नीचे चला जाए, परेशानी के बादलों ने उसे जब आ घेरा तो उसने इनको धुएँ के बादलों में उड़ा देना चाहा उसने, जेब में उसने जल्दी से हाथ डाला मगर बेबस होकर खाली का खाली हाथ बाहर वापिस आ गया, सिगरेट भी तो नहीं थी जेब में एक भी, और वो अपने पर ही मुस्करा दिया ।

तभी खामोश सा साजिद ऊपर आया, लेखक और उसकी नजरें आपस में मिलीं, तो दोनों ही की निगाहें झुक गयीं, जैसे दोनों ही कसूरवार थे, मुमताज जो अब तक दीवार पर लगे एक कैलेन्डर के पास खड़ी तारीखों का पता नहीं क्या मेल जोल कर रही थी, घूमकर साजिद की तरफ बोली—आपको यह पीछे से आवाज दे रहे थे, मगर आप हैं कि हवा की तरह उड़ते हैं ।

और जवाब में साजिद चुप ही रहा ।

दो एक मिनट के बाद ही बनवारी कॉफी सेट तस्तरी में लिए कमरे में दाखिल हुआ, मेज पर रख कर वो खड़ा हो गया, तो लेखक ने घुटी सी आवाज में कहा—जाओ—, यहाँ खड़े क्यों हो ?

और बनवारी सिटपिटाकर मुमताज की तरफ से नजर घुमाते हुए कमरे से बाहर चला गया ।

तब साजिद ने मुस्कराहट से कहा—अरे, तुम लोग यूं चुपचाप क्यों बैठे हो, न कोई बातचीत न कोई मजाक, मुमताज........, तुम कॉफी तैयार करो, इस तरह बैठी २ क्या सोच रही हो ?

मैं........, मैं क्या सोच रही हूँ, खामोश तो आप दोनों बैठे हैं, उल्टा मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा कि आज यह चुप्पी क्यों है, कुछ बात भी तो हो आखिर ।

मेरे ख्याल से, लेखक साहब किसी कहानी के प्लॉट के पीछे दौड़ रहे होंगे, साजिद ने बातचीत का सिलसिला किसी तरह जोड़ा ।

और मुमताज़ ने भी उसी अदा में कॉफी तैयार करते हुए कहा—लगता तो ऐसा ही है।

तब लेखक ने एक गहरी सांस ली और बात के जवाब में बोला—जिन्दगी भी तो इंसान की, कहानी के किसी पलॉट से कम नहीं है, कहानी का पलॉट तो कहीं न कहीं आकर खत्म हो ही जाता है मगर जिन्दगी कहानी की इतनी लम्बी है कि जिसका कहीं भी, अन्त नहीं होने को आता।

साजिद की उचटती नजर जब लेखक से टकरा गई तो एक टक मिलकर वो अपने आप झुक गई।

तब मुमताज़ जो सर झुकाये कॉफी तैयार कर रही थी, कहने लगी—तो लिख डालिये न जिन्दगी का फसाना भी।

उसकी इस भोली सी बात को सुनकर लेखक हौले से मुस्करा दिया, कहने लगा—यह भी इंसान की एक आदत है कि वो दूसरों की जिन्दगी की कहानियों को तो लोगों से सुनता फिरता है मगर अपनी बातों का पर्दाफाश नहीं करता।

आपसे मैंने कितनी बार कहा है कि हमसे ऐसी उलझी बातें न किया करो, कहकर उसने कॉफी का प्याला लेखक की तरफ बढ़ा दिया, घनेरी पलकों को उठाकर उसने उसकी तरफ जब देखा, तो पाया कि प्याला सम्भालने को लेखक का हाथ नहीं बढ़ा, तो सुर्ख लबों पर मुस्कराहट बिखेरती हुई बोली—लो न।

इतनी तकलीफ करने की क्या जरूरत है, तुम्हारे बराबर में ही तो बैठा हूँ, सामने रख दो न।

और अगर मेरे हाथों से ले लोगे तो क्या हर्ज हो जायगा?

लेकिन मेरी बात पर तुम्हें क्या एतराज है?

यह लीजिये, कहकर उसने प्याला प्लेट सहित मेज पर कुछ नाराजगी से इस तरह रखा कि थोड़ी सी कॉफी प्याले से छलक कर प्लेट में आ गई, और साथ ही उसने साजिद के सामने भी कॉफी उसी तरह रख दी।

इसमें यूँ बुरा मानने वाली क्या बात है, साजिद ने कहा।

मैंने कब कहा है, मुमताज़ ने जवाब दिया।

मुंह से नहीं तो, हाथों से तो कहा है, साजिद बोला।

और जवाब में मुमताज खामोश रही, या शायद उसके पास कहने को कोई जुमला नहीं था, वो पलकें झुकाए चुपचाप बैठी थी।

यही सवाल अगर मैं तुमसे पूछूं तो......, क्या तब भी तुम्हारा जवाब खामोशी ही है, लेखक ने कहा।

बात को सुन तो लिया मुमताज़ ने, मगर कुछ बोली नहीं, लेखक ने बात ही कुछ इस ढंग से कही थी कि मुमताज़ मुस्कराये बगैर न रह सकी, और जब मुस्कराहट होठों पर खिलने लगी तो मुमताज़ ने होठों को प्याले से लगा दिया, मगर कॉफी कुछ ज्यादा गर्म थी कि होठों से लगते ही उसने जलन महसूस की तो उसने झट से होठों को हटा लिया, और दाँतों तले लबों को दबा लिया उसने, निगाहें नजाकत को फिर भी झुकी हुई थीं, बालों की एक घुंघराली लट उसके माथे से फिसलकर गालों पर झूलने लगी, लेकिन उसने बालों की इस गुस्ताखी पर कोई एतराज नहीं किया।

मुमताज़ ......! लेखक ने आहिस्ता से उसका नाम ले पुकारा, कहने लगा—जानती हो, दिल को यूं ही बेबात पर जलाने से किसी का कुछ नहीं जाता, अपना खून ही जलता है।

मैं जानती हूं......, मुमताज़ ने रूखा सा जवाब दिया।

'यह मैंने कब कहा है कि तुम नादान हो, मगर तुम फिर भी जानकर अनजान क्यों बनी हुई हो ?

अरे छोड़ो भी तुम क्यों हर बात को लेकर चिपट जाते हो, साजिद ने अपनी राय पेश की।

मुमताज़ ने थोड़ी सी नजर उठाकर साजिद की तरफ देखा मगर मुँह से कुछ न बोली, तीनों ही कॉफी के कुछ कड़वे कसैले घूंट अपने गले से नीचे उतारने में व्यस्त हो गए, बात का किसी ने भी सिलसिला नहीं जोड़ा, चूंकि जब तक किसी टॉपिक को छेड़ा न जाए, कोई बात शुरू हो ही नहीं सकती तब तक।

कॉफी का प्याला प्लेट में उल्टा रख करके, साजिद ने घड़ी पर निगाह डाली, और उठता हुआ बोला—अच्छा, अब चलने की इजाजत दें।

सुनकर मुमताज़ भी खड़ी हो गई।

कोई ज्यादा देर तो नहीं हुई, कहता हुआ लेखक भी उठ खड़ा हुआ।

यह तो मैंने नहीं कहा, बहरहाल फिर भी, कुछ देर तो हो गई है, और तीनों ही नीचे आ गए।

ड्राइविंग सीट पर साजिद जब बैठ गया तो मुमताज़ ने भी बैठने को दरवाजा खोला, लेखक ने कुछ पास आते हुए कहा—क्या वाकई नाराज हो।

खुले दरवाजे पर मुमताज़ का हाथ वहीं रुक गया, कुछ धीरे से उसने अपनी सुराहीदार गरदन उसकी तरफ घुमाई, लेकिन नजर उठकर मिलते ही मिली न रह सकी, शरमाकर मुमताज़ ने निगाह नीचे कर ली, शायद होंठ कुछ कहने को हिले भी, मगर कुछ आवाज न पैदा कर सके, लेकिन पता नहीं क्यों चेहरे पर गुलाबी सी लाली खेल गई, इससे ज्यादा वो और इन्तजार न कर सकी, और झट से कार में बैठ गई, उसके बैठते ही दरवाजा एक हल्की आवाज से बन्द हो गया।

साजिद बैठा मुस्करा रहा था, पता नहीं किस पर।

मुमताज़ के बैठते ही, एक हलका सा झटका लेकर कार आगे बढ़ गई, लेखक भी मुस्करा दिया मुमताज़ के बचपने पर।

वापिस अपने कमरे में जाने को जब लेखक मुड़ा तो वो अभी दो चार कदम ही चला था, तो होटल के मैनेजर ने अपने चश्मे को नाक पर ठीक करते हुए कहा—आओ बरखुरदार, जरा इधर भी तशरीफ लाइए और बिल की रसीद भी लेते जाइए।

तो उसने आवाज सुनकर अपना सर उठाया और धीरे से अपने दिल में बुदबुदाया, बिल की रसीद, और कदम उस ओर बढ़ गए, आगे २ मैनेजर और पीछे २ वो था।

वो समझ गया था कि बिल साजिद ने ही अदा किया होगा, चूंकि जब वो नीचे कॉफी का आर्डर देने आया होगा तो जरूर इस मैनेजर के बच्चे ने सारी

बात बड़े जोर शोर से कही होगी, तब वो भला कैसे सहन कर सका होगा ?

अपने कमरे में आकर मैनेजर ने जब रसीद बुक खोली तो लेखक ने कहा —तुमने उससे पेमेन्ट क्यों लिया—, जब मैंने तुमसे परसों का वादा कर लिया था।

अरे मियाँ—, क्या उस्ताद आदमी हो, बड़ी २ तगड़ी आसामियाँ फंसा रखी हैं, जो बड़े रौब से सारा बिल भी 'पे' कर गया और ऊपर से पचास रुपये एडवान्स भी जमा करा गया, आखिर माल भी तो तुम्हारा क्या गजब का था।

मैनेजर; लगता है तुम अपनी माँ, बहन और बेटियों को किराये पर चढ़ाने का काफी अच्छा तजुर्बा रखते हो।

जबान सम्भालो वरना......, मैनेजर कांपता हुआ बोला—तुम पहले इधर रसीद लाओ, उसने उसके हाथ से रसीद ले ली, कहने लगा—मेरे ख्याल से तुम्हारी माँ बहनें बहुत ज्यादा खूबसूरत भी होंगी।

कहकर वो बाहर आ गया और मैनेजर वहीं खड़ा २ पता नहीं क्या-क्या कह रहा था।

२१

आज मुमताज का जन्म दिन था, लेखक इस बात को सोच रहा था कि वो जाए या न जाए, चूंकि वो अपनी हकीकत जानता था कि जेब में पूरी तरह हड़ताल हुई थी, और अगर वो जाने की बात सोचता है तो उस अमीर बाप की बेटी के लिए एक कीमती तोफे का होना निहायत जरूरी है, इन्हीं बातों की उलझन में वो सुबह से घिरा हुआ था, और अब दोपहर ढल चुकी थी मगर वह किसी फैसले पर न पहुंच सका था, जैसे २ सांझ बढ़ती जा रही थी वैसे २ वो परेशान सा होता जा रहा था, और कोस रहा था वो भगवान को कि क्यों

उसने उसे ऐसी रोजी दी है जहाँ आने वाले कल का कुछ पता नहीं होता, और कितना अजीब है वो, कि वक्त पर इन्सान को अक्सर धोखा देता है।

आखिर उसने यही फैसला किया कि वो और थोड़ी देर बाद घर से चला जाए और काफी रात गए किसी पार्क वगैरा में बैठा रहे ताकि अगर कोई यहाँ तक आया भी, तो ताले के दर्शन करके वापिस चला जाएगा, फिर कल बात सोची जाएगी, यह सोचकर उसने एक गहरी सांस ली जैसे एक बड़ी आफत से रिहाई मिली हो उसे।

यह प्रोग्राम बनाकर जैसे ही वो निश्चिन्तता से चारपाई पर से उठा कि तभी नीचे कार के मधुर हार्न की आवाज आयी, आवाज कुछ जानी पहचानी सी लगी उसे, झट से उसने खिड़की का पर्दा हटाकर देखा तो दिल धक् से रह गया, नीचे शेवरलेट की दूधिया कार उसको सलाम कर रही थी, ड्राइवर सीधा ऊपर आया, तो लेखक ने मुस्कान से उसका स्वागत किया, वो कहने लगा—छोटी मालकिन ने यह चिट्ठी भेजी है।

उसने वो कागज का पुर्जा उसके हाथ से ले लिया, वो जानता था कि इस में क्या लिखा होगा, उसको खोले बगैर उसने ड्राइवर का नाम लेते हुए कहा—कहो शाम बाबू, तुम कैसे हो।

अगर आपने कोई खास तबदीली देखी होगी तो वो यह ही हो सकता है कि आज उनके 'बर्थडे' पर हमें भी एक गर्म सूट बख्शीश में मिला है जो इस वक्त मेरे बदन पर मौजूद है।

ठीक है प्यारे, यही दुनिया है, कोई बख्शीश देता है और कोई लेता है, बैठो तुम खड़े क्यों हो।

जब वो चारपाई पर बैठ गया तो, लेखक ने पूछा—कुछ और कहा था ?

जी, नहीं, ड्राइवर ने कहा।

तब उसने वो कागज खोला—, लिखा था।

देखिये—, यूं तो मैं आपसे सच मानिए, अब भी नाराज हूं लेकिन फिर भी आपसे दरख्वास्त करती हूं कि आप अभी चले आइए, सुबह से आपका

बेकरारी से इन्तजार कर रही हूं, बस और क्या लिखूं—, इतना ही काफी है।

—मुमताज़

वह अब मजबूर हो गया था, सोच रहा था कि जाने में कोई एतराज तो नहीं है मगर वो नजराने की बात उसकी बात के आगे बेबात ही 'फुल स्टाप' लगा देती, उसके सामने वो नजारा घूम गया, कि जब सब लोग मुमताज को एक से एक कीमती 'प्राइज' पेश करते हुए 'हैपी बर्थ डे' की मुबारिकबाद देंगे तो वो.........,

यहाँ तक आकर बात रुक गयी, कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे, और कुछ कर भी क्या सकता था, सबसे बड़ी बात तो पैसे की होती है, और वही उसके पास नहीं था।

तब उसने ड्राइवर से कहा, शाम बाबू क्या ऐसा नहीं हो सकता कि तुम वापिस चले जाओ और जाकर कह देना कि वो घर पर नहीं थे, सच कहता हूं कि आज मुझे एक बहुत जरूरी काम है, मैं इसी उलझन में हूं कि किधर जाऊँ।

यह कैसे हो सकता है, जब, कि छोटी मालकिन तो नीचे कार में बैठी हुई हैं।

क्या कहा, वो कार में ही हैं—, उसने हैरानगी से पूछा, और उसके सिर हिलाने पर वो जल्दी से सीढ़ियों की तरफ बढ़ा, पीछे २ ड्राइवर भी आ गया।

कार के नजदीक आकर उसने पिछला दरवाजा खोला, तो मुमताज़ ने आहिस्ता से अपना चेहरा उसकी तरफ उठाया, पता नहीं वो क्यों संजीदा सी बैठी हुई थी, उसने धीमी आवाज में कहा—अगर तुम मुझसे नाराज हो तो क्या ऊपर आना भी गवारा नहीं कर सकतीं, आओ.....लेखक ने हाथ बढ़ाया।

तो मुमताज़ ने अपना पतला सा नाजुक हाथ उसके हाथ में दे दिया और चुपचाप सम्भल कर कार से नीचे उतर आयी।

उसी तरह खामोशी से जब वो ऊपर आ गयी तो लेखक ने कहा—क्या सचमुच कल मैंने ऐसी कोई हरकत कर दी थी कि तुम अभी तक नाराज हो, मैं इसके लिए सचमुच माफी चाहता हूं, सच कहता हूं तुम······,

मुमताज़ जो एक टक खामोशी से उसके चेहरे को देख रही थी, पता नहीं क्यों उसकी आंखें नम हो गयीं, और उसकी बात को काटते हुए वो सिर्फ इतना ही कह पायी—'नहीं' और उससे नादान बच्चों की तरह लिपट गयी, शायद वो इसी आलम का इन्तजार कर रही थी, या उसके आँसू इसी वक्त तक के लिए रुके हुए थे कि वो बिलख पड़ी।

तुम पागल तो नहीं हो गयी हो कहीं, कहकर उसने मुमताज़ को बाहों में सम्भाल लिया, मगर वो थी, कि उसने यह बात सुनी ही कहाँ थी, आज फिर न जाने क्यों आँसुओं का बांध टूट गया था, उसका। उसके सीने में मुंह छिपा कर वो अपने दिल में छुपे गम को आँसुओं में ढाल कर बहा रही थी, उसको इस बात का ख्याल न था कि उसकी साड़ी का पल्लू उसके बस से बाहर होकर जमीन पर गिर गया था और वो कमर से ऊपर तक बिना आँचल के थी, लेखक को यह बात जरा बुरी इस वास्ते महसूस हुई, चूंकि जब उसने मायूस मुमताज़ को सहारा देने के लिए उसकी पीठ पर हाथ रखा तो ब्लाउज की बैक साइड की कटिंग इस अन्दाज से हुई थी कि आधी से ज्यादा पीठ बीचों बीच से बिल्कुल नंगी थी, फिर दूसरी बात यह कि ब्लाउज भी शायद आधे गज में ही बनाती है यह कि वो कमर से काफी ऊंचा होता है कि कोई पाक रिश्ते वाला जवान लड़की की कमर पर भी तो हाथ नहीं रख सकता। मगर इन बातों की गहराई में न जाते हुए उसने प्यार से उसका आँसुओं भरा चेहरा अपने हाथों में थामकर ऊपर उठाया, कहने लगा—क्या तुम अपने दिल में छुपी बातों को जबान से बयान नहीं कर सकतीं, जानता हूँ मैं अच्छी तरह कि तुम्हारे दिल के वो गुब्बार अभी तक पूरी तरह निकले नहीं हैं, मगर मैं तुमसे पूछना यह चाहता हूँ कि क्या तुमने कभी अपने दिल को समझाया है ? क्या तुमने कभी अपने आपसे यह सवाल किया है कि तुम जो सोच रही हो, आखिर उसका नतीजा क्या निकलेगा।

सब कुछ सही है जो आपने कहा है, लेकिन कभी २ न जाने क्यों दिल उन्हीं पुरानी वीरान बातों में खो जाता है, लाख रोकने पर भी पता नहीं फिर भी क्यों हर बात के बाद खुद-ब-खुद अगली कड़ी जुड़ती चली जाती है, और नतीजा यह होता है कि मैं अपने आप में खो जाती हूँ, दिल और दिमाग पर एक अजीब सी खामोशी छा जाती है, उसने साड़ी के पल्ले को सम्भाला और गीली आँखों को पोंछते हुए एक गहरी साँस लेकर कहने लगी—आप अब चलिए न ।

लेकिन एक बात तो बताओ पहले, उसने उसके चेहरे को जरा सा ऊपर उठाते हुए कहा—आज ऐसी कौन सी बात थी आखिर, जिसने तुम्हें इतना परेशां और पशेमां कर दिया है, कि तुम्हारे आँसू भी बह निकले ।

क्या करियेगा पूछकर, कहकर उसने लेखक की तरफ से घूमकर उसकी ओर पीठ कर ली, कहने लगी—मजरूह दिल की हालत बयान करना मेरे बस से बाहर है, मैं न जानती थी कि वो ख्वाब जिसमें मैंने अपनी तमन्नाओं के शोखरंग भरे थे ।

वो सिर्फ एक झटके से ही काँच के महल की तरह टूट जाएंगे ।

'मगर हमने तो सुना यही है कि दूसरे से कह देने पर दिल का गम कुछ हल्का हो जाता है—वो बोला ।

'सिर्फ सुना ही तो है आपने, महसूस तो नहीं किया कभी, शायद दिल में कोई गम या सदमा नहीं होगा आपके ।

'दिल में गम तो बहुत हैं मुमताज़, मगर सुनने वाला कोई नहीं, और दर असल बात यह है कि वो गम ऐसे भी हैं जो किसी से कहने के लायक भी नहीं हैं, लेकिन हां, अगर तुम कहो तो तुमसे कुछ कहूं अपने दिल का हाल-ए-बेहाल ।

'जब आपने खुद ही कहा है कि वो किसी से कहने के लायक नहीं हैं तो फिर मुझ से क्यों कहना चाहते हो ।

'ताकि तुम भी अपने दिल का हाल कह सको ।

छोड़िये इन बातों को, आप जल्दी से चलने की तैयारी करिये, मुमताज ने मौजूदा हालत की बात को रफा-दफा करने के लिहाज से कहा ।

मगर वह इस बात पर कहाँ खामोश हो जाने वाला था, उसने मुमताज के करीब आकर उसकी बाहें पकड़ कर कहा—क्या वो बात इतनी संजीदा है कि तुम मुझसे कहना भी गवारा नहीं समझतीं।

आप भी हर बात को क्यों खोद २ कर पूछते हो, हो सकता है कि वो बात ऐसी हो कि जिसे शायद मैं न बताना चाहती हूँ, मुमताज ने बड़े शान्त स्वर में कहा।

लेकिन इतना तो मैं भी जानता हूं, कि वो बात जिसे तुम गुल करना चाहती हो, मुझसे जरूर ताल्लुक रखती है, चूंकि साफ जाहिर है कि वो मैं ही बदनसीब हूं जिसकी वजह से तुम्हारे चेहरे की मुस्कराहट मायूसी में बदल गयी है।

जब आप इतनी हकीकत जानते हैं तो फिर क्यों मेरे दिल के नासूर को छूते हो।

लेकिन फिर भी तुम आखिर छिपाना क्यों चाहती हो ?

कहा तो है कि यूं ही एक पुरानी याद आ गई थी दिल के आइने पर, कि देखकर उसे दिल खामोशी से रो दिया था, उसने एक सर्द आह सी साँस ली और बात को पूरा करते हुए बोली—'आखिर दिल ही तो है, भूले से भटक जाए तो रोकना इन्सान के बस से बाहर हो जाता है।'

कहकर जब वो चुप हो गयी तो लेखक ने कहा—तुमने बात को इतना घुमा फिराकर अन्जान मंजिल पर लाकर खत्म किया है, क्या इससे अच्छा यह नहीं है कि तुम दिल की बात चन्द लब्जों में कह देतीं।

पहले तो मुमताज खामोश रही एक दो मिनट को, फिर एक मजे हुए कलाकार की तरह आवाज में लय पैदा करती हुई बोली—दिल की बात कह देना इतना आसान नहीं होता, मगर फिर भी अगर आप मजबूर करते हैं तो वो बात जिसको आप जानना चाहते ही हैं तो वो यह है कि, कहते हुए उसने बात रोककर एक बार उसकी तरफ अपनी स्याह पलकें उठाकर देखा और पलकों को फिर झुकाते हुए बोली—'आज के दिन अब्बा हुजूर ने अपनी इकलौती बेटी की सगाई आपसे करनी तय की थी, यह आखिरी जुमला उसके हलक से

बड़ी मुश्किल से निकला, कहकर जब वो चुप हुई तो उसने देखा कि लेखक एक दम निश्चल बुत की तरह खड़ा हुआ न जाने क्या सोच रहा था, जैसे उसके पास अब कहने को कोई बात न बची हो, या शायद वो इस जवाब के आगे लाजवाब हो गया हो, वो खुद सोच में पड़ गया कि यह कैसी बात पर आकर बेबात ही बात आकर रुक गयी है, कि आगे बढ़ाया भी नहीं जा सकता बात को।

'लेकिन मुमताज़,—उसने अजीब सी छा गई खामोशी को तोड़ते हुए कहा—तुम बात का अन्जाम भी तो अच्छी तरह जानती हो, फिर क्यों अपने आपको परेशानी में डालती हो।

मैं जानती भी हूं कि इस बात का नतीजा सिवाय परेशानी और उदासी के कुछ नहीं निकलेगा, लेकिन मैंने आपसे अभी कहा था कि इस नादान दिल को बस में करना बहुत मुश्किल ही नहीं कभी २ नामुमकिन भी हो जाता है। न जाने कहते २ उसकी आँखें फिर नम क्यों हो गयीं।

लेखक ने बात को और आगे बढ़ाना अच्छा न समझा बल्कि उसने मुमताज़ की बाहें पकड़ कर जरा दबाते हुए कहा—तुम घबराती क्यों हो, तुम्हारी सगाई तो क्या शादी भी बहुत जल्दी ही कराने की बात मैं आज ही घर जाकर कहूंगा, और वो……, मेरा मतलब जो तुम्हारे खाविंद साहब होंगे, ऐसे होंगे कि तुम सारा दिन उनके पीछे २ फिरती रहोगी, फिर नहीं परेशान करेंगे तुम्हें यह खामख्वाह के ख्वाब।

सुनकर यह बात मुमताज़ झेंप सी गई, मगर पता नहीं कैसे उसने चेहरे पर कोई मुस्कराहट नहीं आने दी।

तब उसने उसके गले में बाहें डालकर शरारत भरी लय से कहा, छोड़ो भी इन गुफ्तगू की बातों को, और देखो, अब मुस्करा दो जरा।

मुमताज़ ने धीरे से निगाह उठाकर उसकी तरफ देखा, और एक ताने के से स्वर में बोली—आपने मुझे क्या अपने नाविलों की हीरोइन की तरह समझा है, जो हीरो के प्यार भरे महज एक जुमले पर मुस्करा देगी, आप खुद ही सोचिये जो पिछली रात से अपनी गुजरी बातों की आग में सुलगती रही

हो, जलती रही हो, और वो आग जो कि ज्वालामुखी कीतरह सीने में फट रही हो तो सिर्फ पानी के एक छींटे से भला कैसे बुझ सकती है, जो दिल बेचैनी में करवटें ले लेकर बेहोश हो गया हो, वो बातें जो गुजरे हालातों को ना चाहते हुए भी बार २ आँखों के सामने ला लाकर मेरा मजाक उड़ाती रही हों, वो ख्याल जो समुद्र की लहरों की तरह मुझे अपने आपमें बहा कर ले जाते रहे हों और वो ख्वाब जो मुझे गुमराही की गलियों में को गुजार कर गुमनाम मंजिल पर लाकर पूछते रहे हों, कि मुमताज तुम हमारी कैद से अब कभी रिहा नहीं हो सकतीं, वो जजबात जिन्होंने चेहरे की रौनक छीन ली हो और दिल का सुकून, वो लड़की क्या आपकी एक छोटी सी बात पर कसे मुस्करा......, इतना ही कहा था कि वो लेखक के सीने से लगकर फूट पड़ी, कसकर उसने लेखक को अपनी बाहों में भर लिया, कि सहारा देने को उसने भी उसे अपने आप में समेट लिया, मुमताज ने हर अगला जुमला कुछ रोष से कहा था कि सचमुच वो उसके दिल की सदा थी, गला कहते २ आवेश में रुंध गया था और आँखें छलक उठी थीं कि वो बात भी पूरी न कर सकी।

लेखक ने उसके बालों को सहलाते हुए कहा—तुम रो-रोकर पागल हो जाओगी मुमताज़।

अच्छा ही है कि पागल हो जाऊं—'कम से कम इन बातों को भूल तो जाऊँगी।'

मुमताज—, तुम कभी २ बात को बिना सोचे ही कह डालती हो, अच्छा अब चुप हो जाओ, कहते हुए उसने मुमताज की आँखें उसी के आँचल से पोंछ दीं।

तब वो भी उससे अलग होते हुए बोली—आप कपड़े बदल लीजिए यही बात शायद लेखक कहने ही वाला था कि उसने ही कहकर उसे खामोश कर दिया, चुपचाप लेखक चलने की तैयारी में लग गया, लेकिन देर भला क्या लगनी थी, उसे कौन-सा कपड़ों का चुनाव करना था, एक ही तो अच्छा-सा सूट था उसके पास काले रंग का। जिसे वो किसी खास जगहों पर अपनी इज्जत की सलामती के लिए इस्तेमाल करता था।

जल्दी से तैयार होकर मुमताज़ और वो नीचे आए, शोफर बेचारा सिगरेट के धुएं से हवाई किले बनाता हुआ उनका इन्तजार कर रहा था, उनको आया देख झट से उसने पिछला दरवाजा खोलते हुए सिगरेट को पांव तले मसल दिया।

उनके बैठते ही ड्राइवर ने दरवाजा बन्द करके कार स्टार्ट कर दी, दोनों ही खामोश बैठे हुए थे, किसी ने भी बात को शुरू नहीं किया, लगता था दोनों ही किसी गहरी बात के सोचने में लगे हुए थे, और कार पूरी रफ्तार से सड़क के स्याह सीने पर दौड़ती हुई मन्जिल की तरफ बढ़ रही थी, कुछ ही मिनटों में वो कार फाटक के पास आकर रुक गयी, जहाँ और भी बहुत सी कारें जो एक से एक ज्यादा कीमती और न्यू-मॉडल की थीं, खड़ी हुई थीं, ऐसे मौकों पर ही तो अपनी शान-ओ-शौकत दिखाई जाती है लोगों को, चाहे पहना हुआ चमकीला सूट किसी ड्राई-क्लीनर से किराये पर लिया हुआ हो और कार पड़ौसी से माँगी हुई हो, लेकिन आएंगे इस ठाठ और बाट से कि जैसे कोई गवर्नर हो, इनकी भी कार जब फाटक के पास आकर रुकी तो दरबान ने बिजली की सी गति से आकर कार का दरवाजा खोला और अदब से जरा पीछे को हट कर खड़ा हो गया। इस वक्त तो शोफर भी अपने आपको किसी शहजादे से कम नहीं समझ रहा था आखिर शेवरलेट की गाड़ी उसके हाथ में थी, तब भला वो क्यों दरवाजा खोलता, कार को एक तरफ पार्क करके वो भी कोठी में दाखिल हुआ, फाटक से लेकर और कोठी के अन्दर बरामदे तक यानी तमाम उस खूबसूरत बगीचे में रोशनी का बेहतरीन इन्तजाम था, पेड़ों की उलझी शाखाओं में भी रंगीन बल्ब झाँक रहे थे यही नहीं कहीं तो हरी २ घास पर भी छोटे २ बल्ब बिखरे पड़े थे, बैठने का बड़ा शानदार इन्तजाम था, कि बगीचे के बीचोंबीच बने उस छोटे से फब्बारे के चारों तरफ काफी दूर तक गोलाई में सोफा सैट और 'इजीचेयर्स' मय 'टेबल्स' के लगे हुए थे लेकिन दिन अभी पूरी तरह ढला नहीं था कि वो बल्ब और ट्यूबें जलने को बेकरार से नजर आ रहे थे।

आने वालों का ताँता सा बंधा हुआ था, और 'रिसैप्शन' के लिए मुमताज

की अम्मी, अब्बा और उसके भाईजान तीनों ही इधर-उधर भागे फिर रहे थे।

मुमताज़ और लेखक फाटक में दाखिल होते ही कोठी के दायीं ओर वाले कमरे से कोठी के अन्दर चले गए, यानी सीधे बरामदे वाले रास्ते से अन्दर नहीं गए, कमरों में से लांघते हुए ये लोग 'हॉल' में पहुँच गए।

तब मुमताज़ बोली—आइए उधर आ जाइए, अभी से बाहर जाकर क्या करियेगा।

शायद वह भी यही सोच रहा था कि अब खामख्वाह में बोरियत होगी, अच्छा ही हुआ कि वो अन्दर आ गए, चुपचाप दोनों ऊपर आ गए।

पलंग पर बैठते हुए लेखक की नजर दीवार पर लगी घड़ी पर पड़ी जो पौने छः बजा रही थी, इस बात की तश्रीह करने के लिए उसने अपनी रिस्ट-वाच पर नजर डाली जो उससे मुस्तफिक थी।

खड़ी क्यों हो, बैठ जाओ न, लेखक ने पलंग पर ज़रा एक तरफ सरकते हुए कहा, चूंकि कमरे में कोई और कुर्सी या सोफा तो था नहीं, चूंकि सभी नीचे महमाननवाजी के लिए इस्तेमाल हो रहे थे।

नहीं आप बैठे रहिए, मैं तो जरा बाथरूम जा रही हूँ, कह करके वो कपड़ों की अलमारी की तरफ बढ़ गयी, लेखक ने फिर कोई गौर न किया उस पर, और सिगरेट सुलगाकर धुंए के छल्लों से खेलने लगा।

बाहर बगीचे में हो रहे शोर और कहकहों की मिलीजुली आवाजें यहाँ तक आ रही थीं, और वैसे भी ग्रामोफोन रिकार्डों का शोर भी कुछ कम न था, लेखक अपने से ज्यादा इस वक्त मुमताज़ के बारे में सोच रहा था कि क्या उसके दिल पर वो सोजे-मुहब्बत की बातें इक जख्म बन कर रह गई हैं या एक दाग। सोचते हुए उसने सिगरेट का एक गहरा कश खींचा कि धुएँ से उसका दिल जल सा गया, ऐसा लगा उसे कि शायद मुमताज़ का दिल भी इसी तरह जल रहा होगा।

तभी मुमताज़ कमरे में दाखिल हुई, लेखक की नजर आखिर उधर उठ ही गई, देखा उसने……कि एक दम काले रंग की चमचमाती सिलकन साड़ी की

सलबटें सही करते हुए ड्रेसिंग टेबुल की तरफ बढ़ रही थी, चेहरे पर अब भी 'सोज' सा था, मगर खुदा की रहमत समझिए कि इस स्याह साड़ी में इसका सफेद संगेमरमर सा बदन, बादल की ओट में झाँकते हुए महताब की तरह लग रहा था।

तभी लेखक उठ कर खड़ा हो गया, तो मुमताज जो ड्रेसिंग टेबुल के स्टूल पर बैठने ही वाली थी कि लेखक की परिछायीं आइने में उठते हुए देख कर एक दम वो भी खड़ी हो गई और बोली—आप कहाँ चले ?

जरा नीचे, ताकि तुम अपना काम आराम से कर सको।

यह आपने क्या कहा है भला, मैं भी समझती हूँ कि आखिर कहने का तुम्हारा खास मकसद क्या है यही न कि आपके सामने मेकअप करने में मुझे हिचकिचाहट या शर्म लगेगी, लेकिन मुआफ करना भाईजान ! कुछ रुककर मुमताज ने बाकी बात को बड़े सलीके से पूरा करते हुए कहा—आपकी मौजूदगी से मुझे कोई हर्ज नहीं होगा।

लेकिन डरता हूं कहीं तुम भूली बातों में न खो जाओ, कह कर वो उसकी तरफ एक सरसरी उचटती नजर से देखकर कमरे से बाहर आ गया, और सुनकर मुमताज जैसे लाजबाब हो गई थी कि जवाब में कुछ भी न कह पायी, जैसे वो सचमुच पिछली यादों में खो गयी हो।

लेकिन अभी वह कमरे से बाहर ही निकला था और मुमताज ने अपने को सम्भाला था कि उसकी अम्मी कमरे के दरवाजे तक पहुंच चुकी थी और सामने ही लेखक को पाकर बोली—तुम कब आये ? और मुमताज की तरफ निगाह उठाकर बोली—वरना मैं इसे अभी भेजने वाली थी।

लेकिन अब यह बहुत समझदार हो गयी हैं आपके कहने से पहले ही इन्होंने आपके दिल की बात पूरी कर दी है, कहा लेखक ने।

अरे सच ! तो क्या ये खुद ही लेने गई थी, वो खुशी से आखें फैलाती हुई बोलीं—चलो, खुदा का शुक्र है कि आज फिर दूसरी बार यह गई तो, तुम्हारे यहाँ, वरना कल तो इसे मैंने धकेलकर कार में बिठाया था कि जा अपने 'बर्थ डे' का बुलावा खुद ही जाकर दे वरना हममें से कोई भी बुलाने नहीं

जाएगा और जब उनको इस बात का पता लगेगा तो हम कह देंगे कि मुमताज ने मना किया था कि उनको न बुलाया जाए तब इस बात पर तो यह राजी हुई थी लेकिन बेचारी को वहम पड़ गया होगा कि कहीं आप उसके बुलाने पर भी न आए तो हम सब क्या कहेंगे वो इस वास्ते खुद ही लेने भी पहुँच गयी।

लेकिन वाकय ही सच भी है अगर यह सिर्फ पन्द्रह बीस मिनट और न आतीं तो मैं कहीं और जा चुका होता जहाँ से आज तो क्या मैं कल भी न आ पाता, उसने बहाना बनाया।

ऐसी कौन सी जगह जाना था, वो पूछने लगीं।

ऐसी ही बात थी कुछ, उसने अधूरा सा जवाब दिया।

लेकिन फिर मैं आपसे अच्छी तरह निपटती, मुमताज ने हल्की सी मुस्कराहट से कहा।

ज्यादा ही कुछ कहतीं तो मैं आपसे माँफी माँग लेता, इससे तो बढ़कर और कोई बात नहीं थी।

अच्छा बाबा! अब तुम लड़ो तो मत, मुमताज की अम्मी ने बात को खत्म करते हुए कहा—तू अभी तक तैयार भी नहीं हुई, पता है बाहर कितनी सहेलियाँ बैठी हैं इन्तजार में, कहकर वो कमरे से बाहर चली गईं, तो लेखक भी बाहर जाने को हुआ तो मुमताज ने कहा—आप कहाँ चले—, क्या मैं तन्हाई में यूँ घबरा न जाऊंगी।

बिना उसकी बात का जवाब दिये वह फिर पलंग पर बैठ गया, और मुमताज 'मेकअप' करने में मशगूल हो गई।

करीब पन्द्रह मिनट बाद वो जब फारिग हुई तो उसके करीब आती हुई बोली आइये अब नीचे चलें।

दोनों जब नीचे आए तो अभी वे लोग 'हॉल' में ही थे कि मुमताज के अब्बा हजूर आते हुए दिखाई पड़े, आते ही बोले—कमाल कर दिया भई तुमने तो, इशारा लेखक की तरफ था, आकर के लड़कियों की तरह अन्दर बैठ गए हो तुम तो, आओ, बाहर की दुनियाँ देखो, तुम्हें मैं एक २ से

मिलाऊं·····, बड़े आदमियों की मुलाकात बड़े आदमियों से होनी ही चाहिए, आओ मिलाऊँ तुम्हें—, बड़े २ सेठों से, मिल मालिक, बड़ी २ कम्पनियों के मैनेजर, डायरेक्टर्स, इस्पैकुलेटर्स, फाइनेन्सर्स, स्टॉकिस्ट'स, फिल्म-प्रोड्यूसर्स, प्रोफेसर्स, न मालूम कितने लोग आए हुए हैं, आज की दुनियाँ में तो शरीफों से तो क्या बदमाशों से भी थोड़ा बहुत तवारूफ रखना चाहिए न मालूम किस वक्त कैसा काम आन पड़े।

लेकिन मेरी तो दुनियाँ ही इन सबसे अलग है, यहाँ तो जितने कम जानकार हों उतना ही अच्छा है, तन्हाई और खामोश वादियां···,

छोड़ो इन पुराने किस्सों को, हर वक्त न दिमाग को फालतू बातों में फसाए रखा करो, आज की दुनियाँ अन्दर से और है और बाहर से कुछ और। जमाने के साथ चलने में ही अक्लमन्दी होती है, और हां तुम बेटी—, तैयार हो गयीं, जल्दी से बाहर चलो तुम लोग, वहाँ तुम्हारे बिना अच्छा खासा शोर मचा हुआ है और अब जल्दी से केक पर छुरी चलाओ ताकि प्रोग्राम कुछ आगे बढ़े चूंकि आजकल वक्त बड़ा कीमती है और बिजनैसमैन के लिए तो बहुत ही ज्यादा, और वैसे भी हरएक के पास टाइम कम है आजकल। सुन कर मुस्कराते हुए दोनों बाहर की ओर चल दिये।

दोनों जब बरामदे की सीढ़ियाँ उतर कर लान में पहुँचे तो हर एक की नजर उधर ही उठ गयी, दो चार कदम चलने के बाद ही उसकी पाँच सात फ्रेन्ड्स ने उसे घेर लिया, सभी एक से एक हसीन और कमसिन थीं, नजाकत और शोखी हर एक के अंग में उभरी हुई थी, न जाने उनमें से एक जो जरा उन सबसे कुछ ज्यादा हसीन थी लेखक को देखकर एक पल को क्यों ठिठक गयी न जाने इसी एकपल में दोनों की नजर कैसे टकरा गयी थी कि नाजनी कुछ झेंप गयी, इन सहेलियों में नौशाबा भी थी जिसने बड़ी चंचलता से कुछ आँखों के इशारों से और कुछ सिर को थोड़ा हिलाकर अदाब का अन्दाज पेश कर दिया था, तभी साजिद ने करीब आकर कुछ लखनवी अन्दाज से आदाब बजाते हुए लेखक से फरमाया—मैंने कहा बन्दानवाज की तरफ से भी आदाब अर्ज के लिए शुक्रिया फरमाएं।

आपने यह आदाब हमें पेश किया है या हमारी ओट में किसी और पर नवश-ए-बाजी की है, आखिर शायर ने भी तो यही कहा है—, कि,

दिल की बात जुबां पर आती है किसी जवाज के वायस
कि—, कहने को ए-सनम कोई बहाना तो मिले ।।

वाह ! क्या बात पेश की है आपने, मुमताज ने हौसला—अफजाही की और साथ ही बाकी लड़कियाँ, यानी सिर्फ नौशाबा को छोड़कर बड़ी शोखी से खिलखिला उठीं, नौशाबा कुछ शरमा गयी थी और साजिद भी कुछ झेंप गया था तब लेखक मुमताज का साथ छोड़कर साजिद के साथ हो लिया, दो एक कदम चलने के बाद साजिद ने कुछ दबी आवाज से कहा—मियाँ, तीर बड़ा निशाने पर मारते हो तुम, और बात ऐसी कहते हो कि जवाब देना तो अलग रहा खामोश खड़ा रहना भी मुसीबत बन जाता है।

क्या करूं आदत से मजबूर हूं—, उसने मीठी मुस्कराहट से कहा, दोनों बढ़ते २ महफिले रौनक तक आ गए, शामियाने की टैम्परेरी दीवार के घेरे में की दुनिया ही अलग नजर आ रही थी, दिन और रात का रिश्ता लगता था कि जैसे यहां टूट चुका था, इतनी तेज रोशनी थी कि दूर खड़ी हुई किसी हसीना के गोरे २ गाल पर लगा महीन सा काला तिल तक साफ नजर आ रहा था वहां, हर तरफ कहकहों और हसीनों की नाजुक हंसी गूंज रही थी, कई जवान लड़के सिगरेट के धुएं के गुब्बार के धुंधले परदे में से हसीन और बाकी खूबसूरती को दिल जला २ कर देख रहे थे आखिर ये लड़कियाँ भी तो आजकल की क्या क्यामत भरी ड्रेस पहनती हैं कि जिस्म की हर ऊँचाई निचाई और गोलाई चुस्त लिबास की कैद में सिसकती हुई नजर आती है, यूं तो नन्दा जी भ्रष्टाचार को हिन्दुस्तान से खत्म करने के लिए पूरी तरह कमर कसे हुए हैं मगर हमारे ख्याल से उन्होंने आज की हसीन लड़कियों के जवाँ लिबास पर कभी गौर नहीं फरमाया कि इन झीनी ड्रेसों से कि जिनसे अल्हड़ जवानी सम्भाले जवान लड़कियों के उभरे सीने रह २ कर ऐसे झांकते हैं कि जैसे कोई माशूका परदे की ओट से छुपकर अपने आशिक का शौक-ए-दीदार करती है, यही नहीं, कमीजों की एकदम नंगी बाहें, जिनकी बगल से भी कटाई इस

अन्दाज़ से की होती है कि बाँह के जरा सा ऊपर उठने पर ही नाजुक नितम्बों को दबोचे बेकसूर बाडिस तक के दर्शन बड़ी शान से हो जाते हैं और फिर कमीज के गले की कटाई को कोस करके क्या करियेगा कि अगर कोई लड़की झुक करके जमीं पर से कोई चीज उठाये तो बस क्या करियेगा पूछकर कि गले की गुफा से वो नजारा सामने आ जाता है कि जैसे कभी आपने देखा हो किसी पहाड़ी इलाके में कि जब स्नो-फॉल के दिनों में बरफ तले नोकदार पहाड़ियाँ दब जाती हैं, चूँकि आँचल के नाम पर तो सिर्फ गोल २ लिपटा हुआ एक मरा साँप ही होता है, और फिर झुकना भी तो इतना आसान नहीं है चूँकि कमीज और शलवार दोनों ही इतनी कसकर चिपकी होती हैं कि झुकने पर अस्सी फीसदी तय है कि कमीज की सिलाई उधड़ जाएगी, क्या यह सब बातें नैतिक भ्रष्टाचार को बढ़ावा नहीं देतीं, क्या यह सब नजारे नैतिक पतन के प्रतीक नहीं हैं, जहाँ एक ओर रिश्वतखोरी, चोर बाजारी स्मगलिन को भ्रष्टाचार समझ कर इनको देश से खत्म करने पर जोर दिया जा रहा है क्या वहाँ जरूरी नहीं कि नैतिक चरित्र को गिराने वाली बातों को भी खत्म किया जाए, मगर हिन्दुस्तान से रिश्वतखोरी, चोर बाजारी, स्मगलिन सब कुछ दूर हो सकती है लेकिन यह हमारा दावा है कि हिन्दुस्तान से यह नंगापन कभी दूर नहीं होगा, यह चुस्त लिबास और चुस्त होंगे, यह गले की कटाइयों की नोंक और नीचे होंगी, यहाँ तक कि......, आज पश्चिमी देशों के नंगे लिबासों को जिन्हें हम बेशर्मी का खिताब देते हैं वही लिबास आज से ज्यादा नहीं सिर्फ दस साल के बाद पूरे भारत की जवान लड़कियों के बदन पर होगा, बल्कि यह कहिए कि ये उनसे भी दो कदम आगे होंगी, सड़कों पर घूमती हुई लड़कियाँ उस लिबास में नजर आया करेंगी जिस लिबास में आजकल के मॉडर्न होटल और क्लब'स में छलकती जवानियाँ चन्द मिनटों के लिए स्टेज पर आती हैं, वरना यह वही हिन्दुस्तान है जहाँ आज के पचास साल पहले जब एक लड़के की सत्तरह या अठारह साल की उम्र में अमूमन हर हालत में शादी हो जाया करती थी तो सुहाग रात यानी कि पहली रात को जब एक माँ अपने बेटे को बहू के कमरे में जाने को कहती थी तो वो

नादान लड़का बड़े भोलेपन से पूछता था कि वहाँ जाकर मैं करूंगा क्या, माँ ! लेकिन आज··· , आज तो दस साल के बच्चे को इतना भी मालूम होता है कि माँ के पेट से बच्चा किस रास्ते से बाहर आता है।

यही सब नजारे तो यहाँ भी कयामत ढा रहे थे हसीन तितलियाँ बड़े अन्दाज से जुल्फों की उलझी लड़ियाँ रुखसारों पर से हटाकर हर बात पर हंस रही थीं, हर एक की नजर हुस्न को निगाहों से पी जाने की कोशिश कर रही थी, यहाँ तक शादी शुदा भी बगल में बैठी अपनी बीबी से नजर बचाकर किसी नाजुक जिस्म की नाजनीन की तरफ हसरत भरी निगाह से देख लेते थे बेचारे।

और तभी कुछ देर बाद बर्थडे की 'सैरेमनी' अदा करने को मुमताज 'बर्थडे केक' के करीब आ गई और सब मेहमान उसको घेर कर खड़े हो गए, मुस्कराते हुए, मुमताज ने, पर कहा नहीं जा सकता था कि वो मुस्कराहट असलियत में खुद-ब-खुद उसके चेहरे पर आ गई थी या जबरदस्ती उसने होठों पर खुद तब्बस्सुम की रंगत बिखेरी थी, चाहे कुछ भी रहा हो, लेकिन उसने मुस्कराते हुए केक पर लगी बीस मोमबत्तियों को फूंक मार कर बुझा दिया और मेहमानों ने वही रटे, रटाए डायलॉग्स बोलने शुरू कर दिये— हैपी बर्थ डे टू यू, और होठों को उसी तरह रंगीन मुस्कराहट से तर रखते हुए मुमताज ने केक के कई टुकड़े कर दिये, और एक छोटा सा टुकड़ा उठाकर उसकी अम्मीजान ने उसके मुंह में रख दिया, साथ ही सब मेहमानों ने जोर से तालियाँ बजाकर अपनी ड्यूटी पूरी कर दी।

सब मेहमानों तक उस केक का एक २ हिस्सा पहुँचाने के लिए मुमताज की अम्मीजान उसके छोटे २ टुकड़े करके प्लेटों में रखने लगीं, घर के नौकर नौकरानियाँ और भाड़े पर बुलाए गए होटलों से वेटर्स भाग दौड़कर अपनी फुर्ती दिखाने लगे, साजिद, उसकी अम्मी और अब्बा हुजूर साथ ही मुमताज सभी इधर-उधर के कामों में उलझे हुए थे।

और आ पहुँची तभी मुमताज लेखक के सामने, हाथ में एक छोटी सी प्लेट थी उसके, कहने लगी—ये लीजिए···,

तुम्हें खिलाऊँ या मेहमानों की महमाननवाजी करूं......,

जी नहीं, आपकी खिदमत में लाई हूं

लेकिन आप तो मुझसे नाराज हैं, फिर यह—,

नाराज न होती तो फिर घर से क्यों बुलाकर लाती,

किया तो वाकई आपने अहसान है मुझ पर, आखिर यहाँ तक पहुंचने में टैक्सी वाले को तीन चार रुपये तो देने ही पड़ते, चलो वही बच गए आपकी मेहरबानी से ।

आपको तो बस जली कटी सुनाने में ही मजा आता है, अच्छा अब पकड़िये भी न प्लेट को, कहकर उसने प्लेट उसके हाथ में थमा दी और तेजी से वापिस मुड़ गई, करीब दस बारह कदम वो चली होगी मुश्किल से कि उसकी फ्रेन्ड्स की भीड़ ने उसे घेर लिया, और बोली वही नाजनीन जिसकी नजर अभी लेखक से टकरा गयी थी अनजाने में ही, कहने लगी—हमें भी तो अपने नाजुक हाथों से...।

चल हट ! शरम नहीं आती तुझे इस तरह की बातें करते हुए ।

अजी हमें कहाँ आता है वो बांकेपन से शरमाना, वो अदा तो तुममें है अभी उनसे किस स्टाइल से बातें हो रही थीं..., कि वल्लाह कहे या सुभान-अल्लाह ।

देखो तस्नीम ! हर बात को गलत सोचना, कभी २ इन्सान को बहुत बड़ा धोखा दे जाता है ।

हाँ भई अब तो फिलास्फी की बातें तो करोगी ही, आखिर साथ जो ऐसे का है—, हमारा भी तवारूफ करा दो न जरा, बेफिक्र रहना, अपनी जुल्फों की लड़ियों में नहीं बाँधूगी उन्हें कहीं तुम......,

मुझे नहीं मालूम कुछ भी, कहकर मुमताज आगे बढ़ने को हुई तो नौशाबा ने उसकी बांह पकड़ ली और दूसरे हाथ से उसकी कमर में हाथ डालकर अपनी तरफ खींचते हुए कहने लगी—कहो तो तुम्हारा तवारूफ उनसे मैं करवा दूं अगर......,

ओफ हो—, छोड़ो भी यह क्या बदतमीजी है, मुमताज ने कमर पर

से उसका हाथ हटाते हुए कहा—जब भाईजान ने तुम्हें सलाम किया था तब तो तुम चूं भी नहीं कर सकीं और अब बड़ी बढ़-चढ़ कर बातें बना रही हो।

इस महफिले रौनक में मंजु भी थी जो काफी देर से बोलने का मौका ढूंढ रही थी, मुमताज़ की बात सुनकर नौशाबा थोड़ी झेंप गयी थी तो मंजु ने झट से बीच में टपकते हुए कहा—बेचारी को शरमाना बहुत आता है, अगर थोड़ी सी शरम तुम नौशाबा से उधार ले लो तो इसको भी तुम्हारी तरह चहकना आ जाए।

सुनकर सारी लड़कियाँ खिलखिला कर हंस पड़ीं और मुमताज़ के चेहरे पर पसीने की बूंदें सी झलक उठीं, नजर एक दफा थोड़ी सी उठी भी मगर झुककर रह गयी, नौशाबा ने अपना तीर छोड़ा कहने लगी तस्नीम से—अरे, तुम्हें सिर्फ तआरूफ ही तो करना है उनसे, वो मैं कराए देती हूं, कह दूंगी उनसे जाकर कि आपको मुमताज़ बुला रही है और फिर आगे हम सब निपट लेंगे—,

देखो नौशाबा मैं......,

बस तुम चुप रहो कहकर नौशाबा चल दी तो मुमताज़ ने पीछे से कहा—सच कहती हूं मैं साफ इन्कार कर दूंगी—,

चाहे कुछ ही कर लेना हम कह देंगे कि आपके सामने अब झूठ बोल रही हैं......, कहती हुई नौशाबा दो चार कदम आगे बढ़ गयी।

ओफ! तब मैं यहां खड़ी भी नहीं होती, कह कर के मुमताज़ आगे बढ़ने को हुई तो तस्नीम ने पकड़ लिया, 'कहाँ जाओगी बच कर।

छोड़ो न, कह कर उसने एक झटके में ही बाजू छुड़ा ली और तेजी से वहाँ से हट गई, हर तरफ कहकहों और बातों का बाजार गर्म था, वेटर्स जिन्हें यहाँ सरवेन्ट्स कहना चाहिए Quick Service कर रहे थे, और तभी भीड़ सी में से गुजरते हुए लेखक और नौशाबा बढ़े चले आ रहे थे, लड़कियाँ अपने आप को 'बिजी' सी रखने के लिए आपस में यूं ही उड़ती सी बातें करने लगीं, और जब लेखक करीब आ गया तो सब पर एक निगाह डालकर उसने नौशाबा से पूछा—कहां हैं मुमताज़।

अरे—, कहाँ चली गई, उसने आंख के इशारे से पूछा तस्नीम से, तो वो मदभरी मुस्कान होठों पर बिखेरते हुए बोली—हमें क्या पता—,

और तभी वेटर ने आकर के मेज पर से ढका हुआ कपड़ा हटा दिया और उसके पीछे खड़े दो तीन सरवेन्ट्'स ने 'टी सेट' मेज पर रख दिये।

शायद उधर हो—, लेखक कहते हुए बढ़ने को हुआ तो झट से नौशाबा बोली—आ रही होगी अभी, पता नहीं एक दम कहाँ चली गई।

लीजिए—, बढ़कर के तस्नीम ने चाय का कप उसके सामने कर दिया। आखें बड़ी अदा से झपका दीं उस नाजनीन ने कि लेखक की नजर भी यह अदा देखने को टिक ही गई उस पर, आहिस्ता से उसने चाय का कप प्लेट समेत उसके हाथों से ले लिया, और लेकर के बोला—मुझे शुक्रिया तो करना चाहिए आपकी इस मेहरबानी का, लेकिन अधूरा ! चूंकि चाय आपके घर की नहीं है, सिर्फ आपकी इस तकलीफ का शुक्रिया अदा कर सकता हूँ।

सुनकर के सारी लड़कियाँ खिलखिला उठीं जैसे कहीं धीमे २ बरसते बादलों में बिजली चमक उठी हो।

तो तस्नीम ने बड़े शोख अन्दाज से सुर्ख लबों पर जीभ फेरते हुए कहा—तो फिर आइये न किसी दिन हमारे यहाँ, ताकि आपसे पूरा शुक्रिया वसूल कर सकूं।

लेकिन……, कहते २ वो रुक गया।

लेकिन क्या ?……, नौशाबा ने बात की कड़ी जोड़ते हुए—शायद आप सोचते होंगे कि जान न पहचान और तू मेरा महमान, लाइए वो दिक्कत आपकी मैं पूरी कर दूं……, और बिना एक पल भी रुके झट से बोली—आप हैं मिस तस्नीम, खार में गुलिस्ताँ सा महकता हुआ एक आलीशान बंगला है और वालिद साहब का मशीनरीज में इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का बिजनेस रंगों पर है और आपका नाम, पता बताना शायद जरूरी नहीं है……,

नौशाबा ने जब यह मुलाकात की बात कराई तो तस्नीम हल्के से मुस्करा दी, न जाने क्यों—,

और हाँ, नौशाबा जैसे चौंकते हुए बोली—एक बात तो बतानी भूल ही गई मैं आपसे—, कि आप एक अच्छी शायरा भी हैं।

सच—, यह तो बहुत खूबी की बात है—,

जी नहीं! खामख्वाह में तारीफों का पुल बांध रही है यह, कभी मूड बन आए तो दो चार लफ्ज जोड़ देती हूं वरना इस फन के हम काबिल ही कहाँ हैं—, तस्नीम ने बड़ी सादगी से कहा।

मंजु जो यूं ही खामोश खड़ी थी, लेखक की निगाहों ने उसे जब देखा तो पूछ ही बैठा—कहिए आप कैसी हैं।

जी बिल्कुल ठीक हूं……, उसने जवाब दिया।

क्या आप इन्हें जानते हैं……, नौशाबा ने बनते हुए पूछा।

जी हां, जानने से ज्यादा शायद मैं इन्हें पहचानता अच्छी तरह हूं।

इस बात पर फिर एक दफा लड़कियों की मुस्कराहट हवा में उड़ गई, सभी चाय के कप सम्भाले चुस्कियों का मजा ले रहे थे, खाने पीने के दौर में हर कोई अपनी २ बातों में मस्त था, कि तभी साजिद लेखक के करीब आते हुए बोला—क्या बात—, आज तो बड़ी गर्मागर्म बातें हो रही हैं—, और उड़ती सी उसकी नजर ने नौशाबा को देख लिया।

तो लेखक ने बड़े शोख से कहा—, माफ कीजिएगा, अच्छा हो कि आप यहां से चलते फिरते नजर आयें चूंकि हमारे पास इस वक्त कोई खाली कप तो बचा नहीं कि आपको चाय पेश करके गर्मागर्म महफिल में शामिल कर लिया जाए।

और बस फिर क्या था, बाकी लड़कियाँ तो क्या नौशाबा भी हंसे बगैर न रह सकी, और सब हंसीं भी इस तरह कि जैसे पागल हो गई हों, मगर साजिद के चेहरे पर बदलते हुए 'टैक्नीकलर्स' देखने लायक थे, कि फिर उसकी जुबां से एक लफ्ज भी न निकल सका, पल भर को तो, मगर फिर भी चलते २ बोला—, ऐसी बात भी नहीं मैं खाली कप भी ला सकता हूं और यहाँ खड़ा भी हो सकता हूँ……,

लेकिन एक खता और माफ करना, वो यह कि अब तो यहाँ किसी केतली में चाय भी नहीं बची, लेखक ने कहा।

और तमाम महफिल एक मरतबा फिर खिलखिला उठी, मगर अब साजिद वहाँ रुक नहीं सका।

और यह सब लोग फिर इधर उधर की बातों में खो गए, हंसी मजाक का रंग चारों तरफ से बिखर रहा था, कि तभी लेखक की नजर कुछ दूर खड़ी हुई मुमताज पर पड़ी, जिसके चेहरे पर एक उदासी सी छाई हुई लग रही थी, न जाने वो दो चार लड़कियों में खड़ी हुई भी खामोश सी लग रही थी, जैसे कहीं दूर देखते हुए कुछ ढूंढ़ रही थी, लेखक ने जब उसे इस हालत में देखा तो जल्दी से कप-प्लेट को मेज पर रख कर उस तरफ बढ़ने को हुआ कि तभी मुमताज के अब्बा हजूर उसके करीब आते हुए बोले — वाह ! मियां, तुम यहाँ छुपे खड़े हो, मैं तुम्हें सारा उधर देख आया हूँ जहां सारे आदमी बैठे हुए हैं, लेकिन मुझे क्या पता था कि तुम यहाँ लड़कियों का दामन पकड़े बैठे हो, जरा शरम नहीं आती तुम्हें तो लड़कियों के साथ चीं-चीं करने में, आओ जरा इधर मेरे साथ—, कह कर वो उसके कन्धे बाजू रख के दूसरी तरफ ले गए और लेखक मुस्कराहट और शरमाहट के साथ उनके साथ हो लिया, चलते २ वो बोले—तुम भी अजीब हो, कहाँ झक मारने खड़े हो जाते हो, छोकरियों के साथ।

चलते २ वे दोनों मुमताज के करीब आ गए, और तभी आ पहुंची उसकी अम्मीजान भी, पूछने लगी कहाँ चला गया था तू ?

क्या जवाब दिया जाए इसका, इस बात पर लेखक अभी गौर फरमा रहा था कि साजिद ने करीब आकर बात पूरी करते हुए कहा—जनाब अपने लिए कोई बीबी पसन्द कर रहे थे लड़कियों की महफिल में खड़े हुए।

अच्छा ? हसती सी बोलीं वो, कहने लगीं—क्या सचमुच कोई पसन्द आयी है, अगर कोई आई तो बता दो……, मैं अपने आप निबट लूंगी।

छोड़ो भी तुम लोग भी कैसी मजाक करते हो, साजिद के अब्बा हजूर बोले, उससे यह तो पूछा नहीं कि तुमने कुछ खाया भी या नहीं, लगे बेफिजूल की बातें करने। और लेखक की तरफ देखते हुए बोले—तुम्हारे साथी उधर तुम्हारा इन्तजार कर रहे थे, आओ—, कहते हुए वे दोनों आगे बढ़ गये, और

इन्हीं बातों के दौरान उन्होंने लेखक का परिचय कई बड़े २ आदमियों से बड़ी शान से कराया, और लेखक भी बड़े अदब से उनके साथ पेश आया, और तभी उन्होंने एक बड़ी अट्रेक्टिव पर्सनेलिटी वाले सज्जन से उसे मिलाते हुए बोले—आप हैं फिल्म इन्डस्ट्री की एक बहुत बड़ी हस्ती, 'वन ऑफ दी ग्रेटेस्ट फिल्म प्रोड्यूसर्स—, मिस्टर ए० एस० साहनी,......, और आप हैं......, वो लेखक की बाबत कुछ कहने ही जा रहे थे कि साहनी साहब ने बात काटते हुए कहा—शर्मिन्दा मत कीजिए, मैं इनके नाम और सूरत से अच्छी तरह वाकिफ हूं लेकिन मुलाकात करने का अजीम मौका आज न जाने मेरी किस खुशनसीबी की वजह से मिला है कि वाकई मैं क्या कहूं......,

रहने भी दीजिए आप, क्यों इतनी तारीफ के काबिल बनाते हो मुझे, लेखक ने कुछ धीमी आवाज में कहा।

नहीं आप सच मानिए, साहनी साहब बोले—लिटरेचर और खासकर नाविल्स से मुझे बचपन से ही लगाव रहा है, हर वक्त कुछ न कुछ पढ़ने की एक आदत सी बनी हुई है मेरी, आपके ही नहीं बल्कि आज जो हमारे देश के प्रसिद्ध लेखक हैं मैंने उन सबके लिखे काफी नाविल्स पढ़ रखे हैं, जैसे ये हुए आपके मुँशी प्रेमचन्द, गुलशन नन्दा, आवारा गुरुदत्त, आदिल रशीद, गोविन्द सिंह, रईस अमृत जाफरी, कमल शुक्ल, सइद अमृत, राजेन्द्रसिंह वेदी, वगैरा जो अच्छे नावलिस्ट्स हैं उन सबका कॉफी लिटरेचर पढ़ने का सौभाग्य मिला है।

आपने शायद वैस्टर्न कन्टरीज का लिटरेचर भी काफी पढ़ा होगा, लेखक ने बात का रुख दूसरी तरफ पलटा—,

वाह ! साहब ये आप भला क्या फरमाते हैं, आजकल के प्रोड्यूसर्स डायरेक्टर्स चाहे यहाँ का लिटरेचर पढ़ें या न पढ़ें लेकिन वैस्टर्न कन्ट्रीज का लिटरेचर जरूर पढ़ते हैं और साथ ही हर इंगलिश फिल्म देखने की भी पूरी कोशिश करते हैं, वरना तो फिर आप जानते ही हैं कि फ़िल्मों में यह 'रंगीनी' जो आज करीब २ हर फिल्म में देखने को मिलती है, कहाँ से आएगी।

खैर इन बातों को तो आप ही अच्छी तरह समझ सकते हैं, लेखक ने कहा।

और तभी मुमताज़ उधर ही शायद किसी काम की वजह से आ पहुंची तो प्रोड्यूसर साहब ने उसे देख कर उसके अब्बा हजूर की तरफ इशारा करते हुए बोले—,

एक बात है..., आपकी बेटी कुछ 'सीरियस माइन्डेड' सी लगती हैं ।

जी नहीं..., आपने पहचानने में कुछ गलती कर दी है, वरना यह तो छोटे बच्चों से भी बढ़कर शरमाती है... ",

'कभी रही होगी, लेकिन शायद अब नहीं, वो बोले ।

'जी नहीं, अब तक यही हाल रहा है इसका, आप यकीन मानिये इस साल भी इसकी बेहूदा शरारतों की वजह से तीन बार कालिज से रेस्टीकेशन होते २ बचा है ।

आपके कहने पर अगर यकीन कर लिया जाए तो मैं मान सकता हूं कि यह सब सही होगा, लेकिन मेरी राय में या समझिए मेरे पहचानने में आपकी बात से शायद काफी हद तक मैं मुस्तफिक नहीं हूं, लेकिन खैर फिर भी, वो मुस्कराते हुए बोले—वाकई अगर ये आज सीरियस सी जताने की कोशिश कर रही हो तो मैं सचमुच इनकी अदा का कायल हूं चूंकि एक चंचल और छेड़खानी पसंद करने वाली लड़की अगर एकदम गुमसुम और चुपचाप सी रहने की कला भी जानती हो तो तब तो उसकी इस तारीफ पर भला कौन नहीं मुबारक देगा।

मुमताज़ जो अब तक खामोश खड़ी थी, कहने लगी—आपने काफी हद तक सही पहचाना है—, मैं कभी हद से ज्यादा चंचल और शोख भी थी लेकिन अब शायद मैं वो नहीं रही हूं जो कभी पहले थी ।

क्यों—, साहनी साहब ने पूछा ।

तो मुमताज़ ने एक गहरी साँस छोड़ते हुए कहा—सुना यही जाता है कि इन्सान में तबदीलियाँ वक्त की तबदीलियों के साथ जरूर हो जाती हैं ।

बिल्कुल ठीक कहा है आपने, प्रोड्यूसर साहब बोले—बल्कि यह कहना

चाहिए कि आपने एक काफी समझदारी की बात कही है, आखिर कब तक शरारतें और मजाक अच्छी लगती हैं उम्र के तकाजे के साथ ही सब कुछ अच्छा लगता है।

और उनके इस जवाब पर मुमताज़ हौले से मुस्करा दी अपने आपसे ही कहने लगी, अपनी २ समझ का भी फेर होता है, लेकिन उसने फिर कोई बात न कही जवाब में। तब उसने लेखक की तरफ इशारा करते हुए कहा—आप को अम्मीजान याद फरमा रही थीं।

क्यों—, पूछा उसने, मगर मुमताज की इस पर जब जबान न खुली तो प्रोडूयसर साहब की तरफ मुस्कराकर बोला—माफ कीजिएगा, कहकर हवा में हाथ हिलाते हुए वो आगे बढ़ गया, करीब दस कदम की दूरी पर ही मुमताज़ की अम्मीजान उन्हीं लड़कियों की महफिल में खड़ी थीं जहाँ से वो अभी गया था, पास आकर कहने लगा, क्या आपने मुझे—,

हां, बुला भेजा था, मगर अब वो काम ही खत्म हो गया है जिसे मैं तुझे कहने वाली थीं, उन्होंने बात यह इस अन्दाज और अदा से कही जैसे उन्होंने पहली रात को अपने शौहर की बाहों में कसक कर अदाएं दिखाई होंगी, लगती यूं भी जवान थी, लड़कियों की महफिल में खड़ी वे भी ऐसे ही लग रही थीं कि जैसे वो महज एक 'न्यूली मैरिड' हों, खैर जाने दीजिए इस बात को।

तब लेखक ने कहा—फिर भी कुछ काम तो आखिर होगा ही, बता देने में क्या हर्ज है सच कहती हूं कोई खास काम नहीं था, वो तो मुमताज यूं ही चुप सी खड़ी थी तो मैंने वैसे ही कह दिया था।

और समझ गया था लेखक भी बात के इशारे को, और कुछ न बोला ज़ुबाँ से, जेब से सिगरेट निकाल कर उसने होठों में दबाया और माचिस की सींख को मसाले पर रगड़कर जली हुई तीली से सिगरेट को सुलगाने ही जा रहा था कि साजिद ने करीब आकर कहा—एक बात की गुजारिश है, अगर इजाजत हो तो कहूं ?

लेखक ने उसी मुद्रा में उसकी तरफ देखा, और सिगरेट को सुलगाकर उसने सींख को पाँव तले मसलते हुए कहा—तो आप फिर आ गए।

पहले मियाँ बात तो सुन लिया करो, बाद में जरा गोली चला लिया करो, बात वो यह है कि मैं जरा आपके एक गीत के लिए 'अनाउन्स' करने जा रहा हूँ और आपको वारनिंग देने आया हूं कि आप गला खाँस कर दुरुस्त कर लें कहीं फिर बाद में शिकायत करने लगो कि मियाँ तुमने मेरी लड़कियों में तालियाँ बजवा दीं।

अरे यह गजब मत कर देना, सच कहता हूँ आज मूड.........,

वो तो बिल्कुल ठीक हो जाएगा जब मैदान में उतरोगे।

हाँ हाँ, आज तो हम जरूर सुनेंगे, हसीनों की महफिल में से दो चार इकट्ठी बोल उठीं, और इन सबमें शायद तस्नीम की आवाज सबसे ज्यादा बुलन्द थी।

नहीं सच कहता हूं मूड ठीक नहीं है इस वक्त।

और अभी तो आप बड़ी बढ़ चढ़कर बातें मार रहे थे और एक मिनट में अब कौन सी ऐसी खुशबूदार हवा चल पड़ी है जो आपके मूड को उड़ाकर ले गयी है।

तुम तो एक मिनट की बात करते हो, एक पल में भी क्या से क्या हो सकता है।

मैं इन बातों के बारे में कुछ नहीं जानता, जो कुछ कहना है, वो सबके सामने कहना, कहकर वो जाने लगा तो लेखक ने कहा—हर वक्त जिद भी अच्छी नहीं होती।

तो तस्नीम ने झट से कहा—आप भी तो खामख्वाह जिद करते हैं, कहकर उसने अपनी गरदन को बड़ी बाँकी अदा से उसकी तरफ घुमाया, और सिर को झटका कर अपनी घुंघराली जुल्फें बड़ी लापरवाही से गालों पर से हटाते हुए बोली—इतने दिलों की तमन्ना के आगे क्या आप अपने एक दिल को नहीं मना सकते, कभी २ आदमी को दूसरे की मर्जी के लिए भी बहुत कुछ करना पड़ जाता है।

और तभी लेखक की नजर कुछ दूर खड़ी हुई मुमताज पर पड़ी, जो बड़ी उदास और खामोश सी खड़ी शायद इधर ही देख रही थी, लेकिन लेखक की

निगाह उधर उठते ही वह अपनी नजरों को घुमाकर न जाने किस चीज पर गौर करने लगी।

और तभी साजिद की आवाज गूंज उठी, लेडीज एण्ड जैन्टिलमैन, प्लीज पे एटैन्टशन, इस आवाज को सुनते ही सबकी अधूरी बात वहीं रुक गयीं और सबकी आँखें उसकी तरफ घूम गयीं, तब साजिद हाथ में पकड़े माइक को अपने मुंह के करीब करते हुए कहने लगा—आपके सामने एक गजल पेश होने जा रही है, जिसे पेश करेंगे हम सबके अजीज दोस्त ····, और जब उसने लेखक का नाम लिया तो सब ओर से तालियों की गड़गड़ाहट ने उन्हें सबके सामने आने को मजबूर कर दिया।

तब तस्नीम ने बड़ी शोखी से कहा—देखिये इस महफिले रौनक में नाजनीनों की तादाद ज्यादा है, कहीं कोई बेचारी हाल-ए-बेहाल न हो जाए आपकी गजल पर जरा सम्भल के गाइएगा।

लेखक के कान तो उसकी इस बेतुकी बात को सुन रहे थे, मगर आँखें उसकी मुमताज की सूरत पर टिकी हुई थीं, पता नहीं क्यों वो इस तरह सबसे अलग और खामोश खड़ी हुई थी, वो छोटे २ कदम रखता हुआ बाग के बीचों बीच बने छोटे से फव्वारे से थोड़ा पीछे हटकर रखे हुए प्यानो के करीब आ गया, उसके स्टूल पर बैठते ही साजिद ने हाथ का माइक प्यानो की प्लेट पर रख दिया और मुस्कराता हुआ वहाँ से हट गया, लेकिन उसकी इस मुस्कराहट को लेखक की झुकी हुई नजरें देख नहीं सकीं।

इधर-उधर खड़े हुए लोगबाग सब उसकी तरफ देखने लगे अपनी बातों के दौर को खत्म करके। कुछ लड़कियाँ बगैर कोई आहट किये उसके करीब ही पीठ की तरफ इधर-उधर बिखर गयीं, तब लेखक ने सैटिंग के लिए एक बार प्यानो के तमाम रिट्ज पर उंगलियाँ तेजी से चला दीं, खामोशी और फिर माइक की वजह से आवाज चारों तरफ गूंज उठी, और उसी प्रकार उसने धीरे २ चलता हाथ बहुत आहिस्ता कर दिया।

रात की इन खामोश और बेहोशवादियों में प्यानो की एक बहुत ही हल्की और मीठी आवाज रात के वक्त बह रही किसी शान्त नदी की आवाज

की तरह हर तरफ बिखर रही थी, पास ही बना हुआ संगमरमर का छोटा-सा फव्वारा बड़ी अदा से पानी की बारीक धारों से खेल रहा था और उससे छूकर जाती हुई हवा भी ऐसे लग रही थी कि जैसे वो भी गुनगुना रही हो।

और तब लेखक ने आहिस्ता से सर उठाकर मुमताज की तरफ देखा जो आहिस्ता २ कदम रखती हुई उसकी तरफ से पीठ किये फव्वारे के पीछे की तरफ जा रही थी, और तभी लेखक ने धीरे से आवाज को एक लय से उठाया—,

'शमा जल जल के बुझ गयी,

कह रही थी मगर परवाने का इन्तजार है......,

और मुमताज़ के बढ़ते पाँव वहीं रुक गए; मगर गाने की आवाज नहीं रुकी, हर लब्ज के बाद दूसरा गूंज उठता और हर लाइन के बाद अगली लाइन मुमताज़ के कानों से टकरा जाती, लगता कि जैसे उसका हर लब्ज मुमताज़ के दिल पर एक नश्तर की तरह लग रहा था, जैसे वो चाहती थी कि जल्दी ही वो चुप हो जाए, मगर कश-म-कश इस बात की थी कि वो कानों पर हाथ भी तो न रख सकती थी वरना पहली ही लाइन सुनकर उसका दिल तो यूं चाहा था कि वो कानों पर हाथ रखकर चिल्ला पड़े—, बस कर दो इस नगमा-ए-सोज को।

मगर हालात कुछ ऐसे थे कि वो कुछ भी न कह सकती थी, लेकिन साथ ही लगता था कि जैसे लेखक भी इसे किसी को सुनाने की गर्ज से गा रहा था लेकिन आए हुए मेहमान तो सोच रहे थे कि आवाज में कशिश तो बड़ी बेहतरीन है, लेकिन कोई क्या जानता था कि यह किसी के मजरूह दिल की तड़पती हुई सदा भी है, लेकिन जिसके भी दिल की यह सदा थी वो भी तो सुन नहीं पा रही थी, सभी सुनने वाले साँस रोके उसकी आवाज का आनन्द ले रहे थे, किसी को शायद यह जानने की क्या जरूरत थी कि उसके पास खड़े हुए के चेहरे पर क्या रंग है, लेकिन इन सबमें नौशाबा की आँखें मुमताज़ का पीछा कर रही थीं, हालाँकि वो उससे कुछ दूर खड़ी थी मगर इतनी तेज लाइट में उसकी आँखें मुमताज़ के चेहरे की रंगत को पहचानने में भला कैसे

धोखा खा सकती थीं, जबसे आयी थी वो, यही बात सोच रही थी कि मुमताज़ के इन बदले २ आसारों का आखिर सबब क्या है, न वो उसके पास ढंग से खड़ी हुई न और सहेलियों के साथ अच्छी तरह पेश आयी, और अब ......, वही उदास सा चेहरा......, मगर बिना किसी वजह का पता लगे क्या अन्दाज लगाया जा सकता था।

लेखक गाये जा रहा था और मुमताज़ तड़प रही थी, और नौशाबा इन दोनों पर गौर फरमा रही थी, और देख रही थी कि मुमताज़ कुछ ऐसा महसूस कर रही है कि जैसे उसका दम घुट सा रहा हो और वो वहाँ से भाग जाना चाहती हो, और इसके लिए वो कोशिश भी तो कर रही थी, कि...... बढ़ते हुए जो उसके कदम रुक गये थे वो फिर हलचल करने लगे थे और देखा उसने कि मुमताज़ फव्वारे की गोलाई से घूम करके तमाम लोगों के पीछे की ओर से छुटी हुई खाली जगह पर से तेज २ कदम रखती हुई वो इस महफिल से निकलकर कोठी में चली गई थी।

और शायद अब गाने वाला भी आखिरी लाइनों को दोहराता हुआ चुप होता नजर आ रहा था।

उसके खामोश होते ही तमाम लोगों ने तालियां बजाकर अपनी खुशी जाहिर की, तभी एक तरफ से किसी की जोरदार आवाज आई—'वन्स मोर'।

तब लेखक ने माइक को उठाकर खड़े होते हुए कहा—आपने जो मेरी हौसलाअफजाही की है और खामोश रहकर मुझे कुछ कहने का मौका दिया है उसके लिए मैं शुक्रगुजार हूं, लेकिन अब यह कि मैं कुछ और भी कहूं उसके लिए माफी चाहूंगा, लेकिन हां, आपकी ख्वाहिश और अपनी अर्ज, मिस तस्नीम बानू की खिदमत में रखते हुए दरख्वास्त करूंगा कि वो यहाँ आने की मेहरबानी फरमाकर अपनी दिलनशीं आवाज से मेहमानों को खुश करें।

कहकर जब वो वापिस आया तो तस्नीम जो उंगलियों पर साड़ी के पल्ले को लपेट खोल रही थी, कहने लगी—यह आपने क्या कह डाला, मैं सच कहती हूं, मुझे तो इस वक्त कुछ भी याद नहीं।

और कुछ नहीं याद तो न सही, दो-चार फिल्मी गाने तो तुम्हें याद होंगे ही, कोई फिल्मी गाना ही सुना देना—कहा लेखक ने।

ओफ होऽ ! उसने परेशान सी होकर कहा—तो ऐसा ही करना पड़ेगा, कहा उसने और आगे बढ़ गई। माइक उठाकर कहने लगी—जैसा कि अभी माइक पर कहा गया कि मैं कुछ कहूं, लेकिन मुआफ कीजिएगा मैं कोई शायरा तो हूं नहीं कि आपकी खिदमत में कोई गजल कहूं, यूं तो आवाज भी कुछ खास नहीं, मगर फिर भी मैं एक फिल्मी गीत पेश करूंगी, बल्कि यह समझिए कि पेश करने की कोशिश करूंगी, फिल्म है 'मेरे सनम' और गीत के बोल 'जाइए आप कहां जायेंगे यह नजर लौटके फिर आएगी……'

कहते ही उसकी पतली २ उंगलियाँ रिट्ज पर फिसल गयीं।

तब साजिद ने लेखक को हल्के से कोहनी मारकर अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा—आज तुमने इसे फंसाया अच्छी तरह है।

घबराओ नहीं मियाँ, अभी तुम्हारा नम्बर भी लगाता हूं कि अब साजिद मियाँ आपके सामने कत्थक नृत्य पेश करेंगे।

तौबा मेरे बाप की ! ऐसा गजब मत कर बैठना, वरना……

और लेखक ने पीछे को मुड़कर इधर-उधर नौशाबा को देखने की कोशिश की मगर दिखाई नहीं दी, और तभी नजर उसकी बरामदे में गई, जहाँ से गुजरती हुई वो हॉल की तरफ बढ़ रही थी, और उधर तस्नीम की आवाज ने खामोशी को तोड़ा और गीत की लाइन—, जाइए आप कहाँ जायेंगे…………, को उसने बड़ी लय से उठाया, क्षण भर को तो नौशाबा भी ठिठक गई, जिसे लेखक ने भी स्पष्ट देखा, मगर वो रुकी नहीं और बढ़ती चली गई, शायद उसे गीत से ज्यादा सरोकार नहीं था, वो बढ़ती ही गई, हालांकि आवाज अंदर भी आ रही थी, मगर उसका मस्तिष्क लगता था कि कुछ और ही सोच रहा था कि उसके कानों में पड़ रही आवाज सिवाय एक शोर के और कुछ न था उसके लिए।

सीढ़ियाँ चढ़कर मुमताज के कमरे की तरफ बढ़ी, दरवाजे से झांककर देखा तो, मुमताज पलंग पर औंधी लेटी तकिये में मुंह छिपाये हौले २ सिसक

रही थी। वहीं दरवाजे पर ही उसके कदम रुक गये और दिमाग ने हाल ही गुजरे सब नजारों को एक के बाद एक को पेश करना शुरू कर दिया, कभी उसकी नजरों के सामने घूम जाता........, जब मुमताज प्लेट में केक का पीस रखे लेखक के पास गई थी देने को, और बड़ी शोखी से न जाने क्या २ बातें बनाकर उसके हाथ में थमाकर आई थी तो कभी उसके दिमाग में वो नजारा उभर आता कि जब तस्नीम ने उससे मुलाक़ात कराने की बात कही थी तो वो झेंप क्यों गई थी, लेकिन इन सबके बावजूद वो सबसे ज्यादा तो इसी बात को सोच रही थी कि आज मुमताज इतनी खोई २ सी क्यों है, न वो मजाक न छेड़छाड़, और फिर ढंग से बातचीत भी तो नहीं की उसने किसी से भी, साथ पता नहीं जब लेखक प्यानो पर अपनी गजल से खेल रहा था वो यूं मुँह फेरे वहाँ से हट क्यों गई, लेकिन असलियत से अनजान, नादान नौशाबा ने इसे सिर्फ एक नाराजगी समझा और अपनी आदत के मुताबिक मुस्कराहट लिए कमरे में दाखिल होते हुए बोली—इश्क की आग में जलने वालों का यही हाल हुआ करता है कभी शरारत तो कभी हरारत।

उसकी आवाज सुनकर मुमताज ने उसी तरह लेटे २ ही झट से आँख पोंछ लीं और सीधी होकर उसने अपने आपको सँभाला कि तभी नौशाबा उसके पास ही पलंग पर आकर बैठ गई, और लेटी हुई मुमताज पर झुककर उसके गालों पर से बालों की लट को अपने हाथ से परे करते हुए आहिस्ता मगर शरारत भरी आवाज में बोली—यह इश्क होता ही कुछ ऐसा है कि जो कभी बेकरारी में आँसू तक आँखों में ला देता है।

नहीं, मैं रो कहाँ रही थी, मुमताज बोली।

तो नौशाबा ने उसके इस भोलेपन से अपने निचले होंठ को दाँतों तले दबा लिया, साथ ही मुमताज पर थोड़ा झुक गई, यहां तक कि उसके साँसों की गर्मी मुमताज के चेहरे पर खेलने लगी, बोली—अपनी रुँधी हुई आवाज और इन नरगिसी आँखों के हाल को देखकर जरा एक मरतबा फिर कह दो, मैं कहां रो रही थी, मगर वो बात को एकदम दूसरा रुख देती हुई कहने लगी—आखिर आज तुम इतनी खोई २ सी क्यों हो मुमताज, क्या किसी से कोई झगड़ा हो गया है।

मगर मुमताज़ खामोश ही रही ।

तब नौशाबा ने उसके नर्म २ होठों पर उंगली फेरते हुए कहा—क्यों चुप क्यों हो गई मेरी जान ।

'देखो नौशाबा, हर वक्त मजाक अच्छी नहीं लगा करती ।

यह तो तुम्हारा पुराना डायलाग है, कोई नया मिसरा पेश करो, आखिर अब तो साथ भी ऐसे का है तुम्हारे साथ, जो बात का जवाब हर मौके पर ऐसे सोचकर देते हैं जैसे जवाब पहले से ही सोचकर रखा हुआ हो ।

मगर मुमताज़ फिर भी खामोश रही, न जाने वो बात का जवाब देना क्यों नहीं चाहती थी, शायद इसलिए कि कहीं बातों का सिलसिला न जुड़ जाए, लगता था कि वो तनहाई चाहती थी, लेकिन नौशाबा कहाँ मानने वाली थी, उसके उभरे उरोजों पर अपने बाज़ू का भार रखती हुई थोड़ा झुककर कहने लगी – अगर कहीं सचमुच कुछ नाराजगी हो गई हो किसी वजह से इन से, तो आओ मैं तुम्हारी रसाई करा दूं ।

मैं कहती हूं मेरा किसी से कोई झगड़ा-वगड़ा नहीं हुआ, परेशां सी होकर मुमताज़ ने कहा ।

तो फिर चेहरे पर यह खामोश वीरान सी फिजाएं क्यों हैं, यह खोई २ सी नजरें, यह परेशां सी जुल्फें, यह आवाज में बहकापन और अन्दाजों में अजीब सा अनोखापन, क्या एक सही हालात वाले इन्सान की निशानियां होती हैं, बताओ न मुमताज ।

हर बात को बताना भी जरूरी नहीं होता, और न ही हर बात को बताया जा सकता है, मुमताज ने बात कुछ इस तरह रुखाई से कही कि उसकी आवाज से और कहने के अन्दाज से ऐसा लगता था कि जैसे कहने का मतलब यह भी हो कि नौशाबा अब और कोई बात न पूछे, साथ ही वो वहाँ से चली जाए ।

लेकिन नौशाबा भी शायद मुमताज़ की इस आदत से वाकिफ थी कि जब कभी उसका मूड हो जाए तो ऐसे ही रुख से पेश आती है, मगर वो क्या जाने कि हर बार एक ही बात नहीं होती, उसी तरह वो उस पर झुकी फिर

बोली—खैर जाने दो इन बातों को, हमें क्या लेना-देना है कि तुम नाराज हो या नाशाद हो, किसी की तरफ से, मगर बताओ कि तुम हमसे तो नाराज नहीं हो न ?

एक बार तो मुमताज ने परेशान सी होकर अपनी बोझिल पलकों को उठाते हुए उसकी तरफ देखा जैसे यह एक बहुत ही मुश्किल काम हो, फिर किसी तरह कठिनाई से उसने कहा—'नहीं'।

खुदा का शुक्र है, उसने बड़ी शोखी से कहा, मगर वो भी मुमताज़ की बेरुखी को भांप गई थी कि वो इस वक्त बात करने के मूड में नहीं है, लेकिन जो इन्सान ढीठ हों उन्हें क्या फर्क पड़ता है, वो अपनी मजाक से फिर भी बाज कहाँ आते हैं, वही हाल नौशाबा का था, आवाज में बाँकपन का अंदाज लाते हुए बोली—यूँ तो आज तुम्हारे बर्थ डे पर एक-एक लाजवाब मिठाई खाने को मिली मगर सच मानो, उसने बात को रोककर होठों पर जीभ फेरते हुए कहा—मुँह भी मीठा नहीं हुआ बल्कि यह कहो कि पूरा मजा नहीं आया।

देखो नौशाबा ! मुमताज़ ने अपने सीने पर से उसका बाजू हटाते हुए कहा, हर मजाक अपने-अपने मौके पर अच्छी लगती है, यह मजाक यह छेड़-खानी यह बातें सब अपने २ मौके पर ही ठीक होती हैं लेकिन तुम हो कि जैसे कुछ समझती ही नहीं।

हाय ! मेरी जान, यही तो वो तुम्हारी कातिल बातें हैं जो हमारे दिल को बिना तीर के घायल कर देती हैं, नौशाबा ने इतना कुछ सुन लेने पर भी अपनी आदत का परिचय दिया, आखिर वो भी कुछ कम न थी, शरारत भरे अन्दाज में बोली—आखिर तुम ही बताओ, 'जब दिल बेकरार हो जाए तो इसे बस में कैसे किया जाए'—,

और जब सुना मुमताज़ ने तो दिल धक से रह गया, आँखें उसके चेहरे की तरफ उठकर टिक गयीं और होंठ; जैसे बिना कुछ कहे फुसफुसा उठे, वो अवाक् सी होकर उसके चेहरे की तरफ देखने लगी और खुद का उसका हाथ सीने पर काँप उठा जैसे वो तेज हो गयीं, दिल की धड़कनों को कुछ राहत

देने की कोशिश कर रहा हो, दिल से जैसे एक आह सी निकल गई, ओफ ! क्या बात कह दी थी नौशाबा ने, सोचने लगी—यही सवाल एक बार उसने अपनी मायूस मुहब्बत को ख्यालों और ख्वाबों की कैद से रिहा करने के लिए लेखक से किया था, लेकिन उसने किस सबब को पेशेनजर करके यह बात कही थी और आज नौशाबा ने किस मकसद से यह बात कही है; चाहकर भी वो इसके सवाल के आगे चुप रही।

तब नौशाबा ने झट से कहा—क्यों हो गयी न लाजवाब ! और बिना एक पल का सोचने का मौका दिये उसने झुककर बड़ी शोखी से मुमताज के होंठ चूम लिये !

ओफ होऽ……, तुम तो सचमुच ही बहुत बेशर्म हो गई हो, कहा मुमताज़ ने नाराज सी होकर और नौशाबा अपनी कामयाबी पर खिलखिलाकर हंस पड़ी, और देख रही थी मुमताज को जो अपने होठों को पोंछ रही थी। पलंग से उठकर नौशाबा ने उसी तरह मुस्कराहट से कहा—

अब क्या लुत्फ आएगा तुम्हारे इन सुर्ख होंठों से हमें, अब तो लगता है कि इन लबों की लाली का मजा तुम्हारे उन लेखक साहब की मेहरबानी है………

नौशाबा ……,ऽऽऽ…………मुमताज़ एकदम चीख सी पड़ी उसकी बात को काटते हुए; और पलंग से उठकर खड़ी हो गई, एकदम जैसे कांप सी गई हो वो, उसी तरह हाँपती और कांपती सी आवाज में बोली—आइन्दा से ऐसी गुस्ताख बात कभी अपनी जुबां पर मत लाना; भूल जाओ तुम उन सब पुरानी बातों को, और समझ लो कि न वो अब पहले वाली मुमताज़ रही न वो लेखक साहब।

और नौशाबा जो मुमताज़ की आवाज से सहम सी गई थी कुछ भी न समझ सकी मुमताज़ की इस अधूरी सी बात को, तो कहने लगी—क्या तुम उनसे प्यार नहीं करतीं।

नहीं, नौशाबा नहीं, मुमताज़ ने झल्लाकर कहा। साँसें उसकी अब भी तेजी से चल रही थीं, और बदन काँप सा रहा था; कहने लगी—'कभी २

इन्सान के साथ ऐसे भी मजाक करती है यह कुदरत कि दिल तो गम से भरा होता है मगर फिर भी जी चाहता है कि अपने आपका मजाक उड़ाने के लिए खुद ही खिलखिलाकर हंस पड़ें।''

और उसकी यह बात नौशाबा के लिए फिर एक पहेली सी बनकर रह गई, कुछ समझ न पाई कि आखिर मकसद क्या है; लड़खड़ाती आवाज में रुक रुककर कहने लगी—तुम तो उनसे प्यार......

'कभी करती थी' मुमताज ने बात को सही रुख पर आकर रोका, बोली—आज वो मुझसे एक औरत के बजाय........, कहते हुए उसने एक क्षण को बात रोकते हुए कहा—, एक बहन का प्यार पाना चाहते हैं, और बात खत्म होते ही उसने मुँह फेर लिया, शायद आँखों के मोती मचल उठे थे।

क्या...... ...? कहा, नौशाबा के हलक में जैसे बात अटक सी गई। कुछ कहने को उसके होंठ हिले भी, मगर न जाने क्यों खामोश हो रह गए, दोनों ही उसी तरह निश्चल खड़ी थीं, नौशाबा की ओर पीठ किये खड़ी मुमताज भी शायद अब और कुछ न कहना चाहती थी, और नौशाबा का भी इतना साहस न हुआ कि अपने से तीन-चार कदम दूर खड़ी मुमताज के सामने जा कर उसे कुछ हौसला अफजाही की बात कहे या अपनी बात के लिए माफी माँगे और कुछ न सोच, वो भारी कदमों से कमरे से बाहर आ गई, जिसका अहसास मुमताज ने भी किया, उसके चले जाने के दो मिनट तक उसी तरह अपनी जगह पर खड़ी रही, और तभी न मालूम उसके दिल में क्या ख्याल आया कि एक सर्द आह उसके मुँह से निकल गई, आंखों को पोंछकर उसने अपने आपको सँभाला और पीछे की तरफ मुड़कर देखा, कमरा खाली ही था।

गम और परेशानी के बोझ तले दिल छुट सा रहा था, जी तो चाहा उसका, कि ऐसी खामोश तन्हाई में कोई गम से बेहाल नगमा छेड़ दे ताकि दिल का बोझ कुछ हल्का हो जाए, मगर आज का मौका और वक्त ही ऐसा था वो अपने टूटे हुए दिल को सहारा देने को यह भी न कर सकती थी, तब वो धीरे से खिड़की के पास आयी और पर्दे की ओट से सड़क का नजारा देखने लगी।

कितनी ही मोटर-गाड़ियाँ इधर-उधर खड़ी थीं, कुछ चलने की तैयारी में आगे पीछे फिसलती हुई अपनी मंजिल की तरफ रुख कर रही थीं, शायद लोग बाग जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी उसकी नजर फुटपाथ पर लगे स्ट्रीट पोल की ट्यूब-लाइट तले एक जोड़े पर पड़ी, जिनकी दोनों की कारें एक दूसरे के विपरीत दिशा में मुँह किये खड़ी थीं, जाहिर था कि दोनों को अलग-अलग दिशा में जाना था, दोनों कारों के मध्य में की जगह पर खड़े अपनी प्यार भरी बातों में ही खोये हुए थे. दोनों ही एक दूसरे की आंखों में झांककर निगाह नीची कर लेते थे, लेकिन बातें क्या हो रही थीं इसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, न ही मुमताज कुछ सुन सकी, हालांकि उसका दिल इस दृश्य को देखकर जल सा रहा था, मगर फिर भी पता नहीं वो क्यों देखे जा रही थी, जैसे वो कुछ देर के लिए अपने आपको भूल सी गई थी, और तभी देखा उसने उसी तरह धड़कते दिल से कि पता नहीं क्या कहकर उस नौजवान ने उस हसीन लड़की का हाथ पकड़ लिया, और उस लड़की ने कुछ सहमकर, शरम कहिये या नजाकत से गरदन को थोड़ा सा झुका लिया, जैसे अपने आपमें सिमट गई हो, और शायद उसने अपने नर्म हाथ को उसकी मजबूत पकड़ से छुड़ाने की कुछ नाकामयाब कोशिश भी की, चूंकि दरअसल में वो कोई अपना हाथ छुड़ाना थोड़ा ही न चाहती थी, बल्कि यह तो अपनी अदा दिखाने का एक तरीका ही होता है महज, क्योंकि यह आदत किसी एक लड़की की नहीं, बल्कि हर लड़की की होती है जो किसी के इश्क में गिरफ्तार होती है; दिल से तो यही चाहती है कि इनका दिवाना उनके हाथों को दबाये रखे बल्कि साथ ही बड़े प्यार से सहलाकर यह भी कहे कि—सच तुम कितनी नाजुक हो, और वो अदा दिखाते हुए कहेगी—छोड़ो भी न—, मेरा हाथ, लेकिन खैर छोड़िये इस बात को। वो नौजवान भी अपनी कबूतरी का हाथ दबाये मजा ले रहा था, जुबां से ज्यादा निगाहों से बातें हो रही थीं, शायद वे बेचारे बहुत दिनों बाद मिले थे कि इस तरह एक दूसरे को तरसती निगाहों से देख रहे थे, और तभी नौजवान ने अपने हाथ से वो पतला सा हाथ रिहा करने की तैयारी की, एक हाथ से उसने अपनी कार का दरवाजा

खोला और दूसरे हाथ से उसने अपने नाज़नीन को अपना हाथ खींचने का मौका दिया, लड़की ने बड़ी आहिस्ता से अपना हाथ उसके हाथ से जुदा किया और आँखें उसी तरह उसकी अपने आशिक पर टिकी हुई थीं, जो कार में बैठ चुका था, कार के स्टार्ट करते ही उसने खोई २ सी खड़ी अपनी जान को हवा में हाथ हिलाकर बधाई दी।

और इससे आगे मुमताज़ न देख सकी और वहाँ से अपने आपको हटा कर दीवार से लग गई, जैसे वो अपनी कल्पनाओं में खो गई हो, या उसका दिल भी ऐसे प्यार और ऐसे दीदार के लिए तड़प उठा हो, सचमुच ही उसका दिल कह उठा था, काश ! उसको भी ऐसे दिन नसीब होते, और दूसरे पल उसके उसी दिल ने, जिसने अभी प्यार में डूबकर ऐसी सरसराती बात कही थी, एक दम कह उठा—मुमताज़, क्यों ऐसी बात सोचती हो और फिर उसी को लेकर जो अब तक दूसरे रास्ते पर खड़ा था, लेकिन दिल फिर उसका पुरानी बातों में खो गया, कभी उसने भी अपने दिल में ऐसी प्यार की घटनाओं को सोचा था, कि उसके इश्क के दिनों में कैसे २ प्यारे मन्जर होंगे, वो किस तरह बेकरारी और इन्तजारी की घड़ियाँ गुजरेंगी और मिलने पर कितने प्यार से रूठने की एक्टिंग करते हुए उल्हाना दिया करेगी, सोचते २ उसने अपने सिर को थाम लिया, और खुद ही कह उठी, मत बहकाओ अपने आपको मुमताज़ यह सब तुम खुद अपना ही मजाक उड़ा रही हो, यह सब ख्याल तुम्हारा मुंह चिढ़ा रहे हैं, और तभी दिल ने कहा—जरा वो मन्जर तो दोहरा दो एक दफा, जो तुमने आज के दिन के लिए मन-मन्दिर में संजोया था कि तुम्हारी सगाई की रस्म आज के दिन ही पूरी होगी और तुम किस तरह खुशी से पागल हुई परियों की तरह उड़ती फिरोगी, और किस तरह तुम उनसे नजाकत से पेश आओगी, और साथ ही''''', बस करो मुमताज बस करो, वो खुद ही कह उठी दिल में जैसे एक तूफान सा मचल उठा था उसके, जिधर भी वो देखती उसे अपनी ही खिलखिला कर हंसती हुई सूरत मजाक उड़ाती हुई नजर आती, उसे ऐसा लगा कि जैसे कमरे में खिलखिलाहट का एक शोर सा मच गया हो और तब वो बर्दास्त न कर सकी इस घुटन को,

और जल्दी से कमरे से निकल कर वो सीढ़ियाँ उतरने लगी तेजी से, जैसे उसे कोई पीछे से पकड़ रहा हो, आखिरी सीढ़ी उतरकर जैसे ही वो हाल की तरफ मुड़ी, सामने की तरफ से उसे लेखक आता दिखाई दिया, और दूसरे ही क्षण दौड़कर वो उससे लिपट गई, और उसके गले में बाहें डाल कर झूलती हुई बड़ी मदभरी आवाज में बोली—मुझे बचालो......, न जाने मैं क्यूं बहक सी रही हूँ, और दोबारा उसने अपने सर को उसके सीने में छुपा लिया।

और लेखक जो जानता था कि इस वक्त मुमताज़ का यही हाल होगा, और इसी बात की परख के लिए वो उसके ही पास आ रहा था कि वो रास्ते में ही मिल गई, उसने प्यार से मुमताज़ का चेहरा अपनी तरफ किया, कहने लगा—क्या तुम अपने आपको रोक नहीं सकतीं इन फिजूल की बातों में जाने से।

खुद ही तो आपने सीने में आग लगाई है और फिर पूछते हो कि यह आग बुझा नहीं सकती—, मुमताज़ ने बात बड़ी तीखी आवाज में एक उलाहना सा देते हुए कही, और लेखक उसकी नादानी पर मुस्करा दिया, और बात के आगे खामोश तो यूं हो गया जैसे वो गुनाहगार हो, और कह तो दी मुमताज ने भी मगर कह कर खुद ही पर खीज उठी कि आखिर उसने क्या कह दिया है, तब लेखक ने उसे बड़े अन्दाज से अलग करते हुए कहा—कभी २ शायद इन्सान ऐसी गलतियां भी कर बैठता है कि उसके लिए माफी तक नहीं मांग सकता।

मुमताज़ सर झुकाए आँसुओं को पोंछ रही थी और साथ ही लेखक की कही बात पर भी गौर कर रही थी, साथ ही सोच रही थी कि खुद उसने कैसी उल्टी बात कह दी है कि न जाने वो क्या सोच रहा हो, और तभी लेखक ने कहा—तुमने मेरी बात का जवाब नहीं दिया मुमताज़, तो उसने कहा—और दे भी कहाँ सकती हूं, कह कर खुद ही मुस्करा पड़ी, शायद अपने पर। मगर लेखक हैरान था कि आज मुमताज का मूड इतनी जल्दी खुश मिजाज कैसे हो गया है कि अभी जो दस मिनट पहले आपे से बाहर हो रही थी एक दम अपने आपमें कैसे सिमट गई है इतनी जल्दी, हो सकता है उसे

अपनी कही बात की भूल महसूस हुई हो कि उसने कैसी अजीब बात कह दी है मगर फिर भी उसके इतने जल्दी खामोश हो जाने की खास वजह को न जान सका, आखिर जान भी कैसे सकता है कोई किसी के दिल की बात। दोनों ही खामोश खड़े थे, न मालूम क्या सोच रहे थे तभी साजिद भी उधर आता दिखाई दिया, थोड़ा करीब जब वो आ गया तो लेखक ने मुमताज की तरफ रुख करते हुए कहा—अगर आप की इजाजत हो तो मैं चलने की तैयारी करूँ।

मगर इतनी जल्दी......, मुमताज एक दम घूमी।

जल्दी तो कोई ज्यादा नहीं है मुझे, मगर वक्त जल्दी से गुजरता जा रहा है......इसकी तो कदर करना जरूरी है कम से कम।

और हौले से मुस्करा पड़ी वो, कहने लगी तभी शायद आपने तोफे के तौर पर घड़ी पेश की है ताकि मैं भी वक्त को पहचानना सीखूं......,

मैंने —, लेखक ने एक दम कहा।

लेकिन मुमताज ! साजिद ने बात को संभालते हुए कहा—खुशी के किसी मौके पर अगर एक भाई अपनी बहन को कोई चीज पेश करता है तो क्या उसे भी कहीं दूसरे लोगों की तरह एक तोफा समझा जाता है।

और मुमताज तो सर उठा न सकी इस बात पर मगर जब लेखक और साजिद की नजर मिली तो एक पल बाद ही लेखक ने उसके चेहरे से नजर हटा ली।

तब मुमताज ने कहा—मैं इसके लिए आपसे माफी माँगती हूं कि मुझे ऐसी बात नहीं करनी चाहिए थी, पता नहीं आज मुझे क्या हो गया है कि हर बात उल्टी सीधी ही निकल रही है जुबाँ से। बल्कि यह कहिए कि आपकी इस अजीम निशानी के लिए शुक्रगुजार भी नहीं कर सकती।

लेकिन शुक्रगुजार की बात तो तभी पैदा होती अगर मैंने तुम्हें यह दी होती—,

तब भी क्या हुआ, आपने मुझे दी या साजिद के जरिये मुझ तक पहुँचाई, लेकिन असल में आई तो मेरे पास ही।

अब छोड़ो भी इस बहसबाजी को, कहा साजिद ने, दोनों ही एक बात

को लटका कर खड़े हो जाते हो, मैं तुमसे यह कहने आया था उसने नजर लेखक की तरफ घुमाई, कि आपको बाहर अम्मीजान बुला रही हैं।

और तब लेखक बिना कुछ और कहे वहां से हट गया।

और जब बाहर आया तो सामने ही मुमताज की अम्मी आती दिखाई दीं, करीब आकर कहने लगीं, आखिर तुझे इतनी जल्दी क्या है जाने की, और फिर अब जाना जरूरी भी कौन सा है—, देख तो साढ़े ग्यारह बज गए हैं, अब यहीं सो जाना।

नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं, वैसे भी कौन सा मैं बारह बजे रात तक सड़कों पर नहीं घूमता रहता।

अच्छा ठहर! अगर तुझे जाना ही है तो साजिद से कहती हूं कि तुझे जरा छोड़ तो आए घर तक—,

नहीं २ रहने दीजिए इस वक्त,

'क्यों'

देखिये न कितने लोग आए हुए हैं—, सबको रुखसत करना, इधर उधर के काम—, आप ऐसी छोटी २ बातों पर तकलीफ न किया करें, फिर मैं कोई पराया थोड़े ही न हूं, कह कर वो एक हल्की सी हंसी हंस दिया जो बिल्कुल बनावटी थी, कहने लगा—कल फिर आ धमकूंगा।

और वो उसके चेहरे की तरफ़ देख रही थी, सिर्फ, शायद बात भी पूरी नहीं सुनी थी उन्होंने, और देख रही थी उसका उखड़ा हुआ मूड, बनावटी हंसी और एक्टिंग ...., और जवाब में कुछ बोली नहीं, खामोशी को इकरार समझकर कहिए या खामोशी का फायदा उठाते हुए उसने अपने दोनों हाथ जोड़ दिये और बगैर जवाब की परवाह किये वो घूम गया, जैसे कोई नाराज होकर जा रहा हो और मनाने वाला थक गया हो मनाते २। पता नहीं लेखक अपने आपमें एक घुटन सी महसूस कर रहा था वहाँ।

बंगले से बाहर आकर उसने एक राहत की साँस ली जैसे किसी मुसीबत से छूटकर आया हो, घबरा सा गया था वो इस बनावटी दुनियाँ में जाकर जिसे रात में दिन का जामा पहना रखा था, हर बात में बनावट थी, हर बात

में एक धोखा था, हर चीज को बदल दिया गया था, सच ही एक एकान्तप्रिय आदमी ऐसी शोर शराबे वाली महफिलों में जाकर घबरा जाता है, और चाहता है कि बस किसी तरह छुटकारा मिले इस बन्धन से तो वो एक चैन की साँस ले।

यही हाल उसका था, सड़क की खुली हवा में आकर उसने अपने आपको आजाद पाया, जेब से रूमाल निकालकर उसने चेहरे को साफ किया, लगता था कि जैसे उसका मूड ऑफ हो चुका था, एक अजीब सी परेशानी महसूस कर रहा था वो। सड़क पर खामोशी ही छाई हुई थी, कोई इक्का-दुक्का लोग ही आ जा रहे थे या कोई कार, टैक्सी वगैरा निकल जाती। अपने आपकी बातों में खोया वो पैदल ही बढ़ता चला जा रहा था, टैक्सी, स्कूटर या किसी सवारी के करने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था, चूंकि जेब का हाले-बेहाल था, मगर वो इस बात पर बिना गौर किये अपनी शाही सवारी पर ही चला जा रहा था, कदम चलने में व्यस्त थे और दिमाग सोचने में।

सोच रहा था कि आखिर मुमताज के दिल में यह इश्क प्यार की बातें अभी तक क्यों हलचल मचाये हुए हैं, उसका हर वक्त का परेशान सा रहना, हर बात में उदासी, चेहरे पर मायूसी और वीरानपर आखिर वो क्यों अपने आपको इन बातों से रिहा नहीं कर पाती, क्या उसकी एक तरफा मुहब्बत उसके दिल में इतनी समा गई है कि उसका अपने आप पर भी कोई जोर नहीं रहा, लेकिन तभी अपने आपसे कहा, मुमताज के इन बातों में गुमराह होने में वो खुद भी गुनहगार है, पूछा उसने खुद से ही, कि जब वो इस बात को जान चुका था कि मुमताज उससे किस अन्दाज से बात करती है उसमें इश्क की मिलावट है तो क्यों उसने इस ओर लापरवाही बरती। उसे शुरू में ही अपने रुख में ऐसी रुखाई पेश कर देनी चाहिए थी कि वो जिससे सम्भल जाती या ऐसा नजरिया और अन्दाज पेश करना चाहिए था कि जिससे उसे अपनी गलती का अहसास हो जाता और वो बहकने से रोक लेती अपने आप को। लेकिन उसकी लापरवाही और उसकी बेपरवाही का नतीजा यह हुआ कि आज वो अपने आप में गुम हो गई है—, उसके लिए कह देना आसान

कि तुम भूल क्यों नहीं जातीं मुमताज़। लेकिन यह बात तो मुमताज़ के दिल से पूछे कोई कि भूल जाना कितना आसान है। कहते हैं न कि माफी माँगना बहुत आसान होता है मगर कोई उसके दिल से पूछे जो माफ करता है, कि क्या गुजरी है दिल पर।

इसी तरह की बातों में खोया वो बढ़ता चला जा रहा था अपनी मन्जिल की तरफ।

आखिर अब वो कर भी क्या सकता है मुमताज इस रास्ते पर बहुत दूर तक निकल गयी है कि जहाँ से अब आवाज देकर पुकारना बहुत कठिन है, वो अब सुन नहीं पाएगी इस आवाज़ को, सिर्फ अब यही एक रास्ता है कि वो खुद को सम्भालने की कोशिश स्वयं ही करे।

एक गहरी साँस लेकर वो रेलवे की 'ओवर ब्रिज' की तरफ मुड़ गया, पहली ही सीढ़ी पर पाँव रखने से पूर्व उसने एक नयी सिगरेट जलायी और धीरे २ सीढ़ियाँ चढ़ने लगा, हर तरफ खामोशी बिखरी हुई थी, पुल पर बैठने वाले भिखारी भी कहीं सर छुपाने को चले गए थे, उसकी निगाह सीढ़ियाँ खत्म होते ही कोने पर बैठने वाले अन्धे भिखारी को ढूंढ रही थी जिसे वो पाँच या दस पैसे का सिक्का दे दिया करता था। जब कभी भी वो इस रास्ते से गुज़रता था।

जैसे ही वो पुल पर आया सरसराती हवा उसके चेहरे को छूकर एक कम्पन छोड़ गयी, रात के इस पहर में काफी ठन्ड हो जाती है बम्बई में, और अब तो वैसे भी सरदी का मौसम करीब आ रहा था, वैसे तो बम्बई में मौसम में तबदीली कुछ खास नहीं लेकिन फिर कुछ न कुछ असर जरूर पड़ता है हर मौसम का। और इस ठंडी हवा को चेहरे पर अनुभव करने में भी एक मजा आ रहा था, तेज हवा की वजह से सिगरेट भी तेजी से जलती जा रही थी, कभी-कभी छोटी २ चिन्गारियाँ भी फूटकर पीछे की तरफ हवा में उड़ जातीं, रात के अंधेरे में छोटी २ लाल-हरी बत्तियाँ और दूसरे बल्ब ऐसे बिखरे पड़े थे जैसे वे एक दूसरे की आकर्षण शक्ति से जकड़े खड़े हों।

जैसे ही वो पुल के मध्य में आया उसकी उड़ती नजर बायीं तरफ की

लाइनों को नापती हुई दूर तक फिसल गयी लेकिन साथ ही फिसलते २ एक दम रुक भी गयी, बढ़ते कदम वहीं जाम हो गए, हाथ में पकड़ा सिगरेट बड़ी आहिस्ता से होठों के करीब आया और एक लम्बा सा कश लेकर बड़ी बारीकी से वो उस तरफ देखने लगा, देखा उसने कि कोई छाया रेल की लाइनों में आहिस्ता २ चली जा रही थी, लेकिन एक दो मिनट तक भी वो छाया उसी तरह रेल की पटरियों में ही चलती रही तो वो समझ गया कि इसकी इच्छा अब इन्हीं लाइनों में चलते २ खत्म हो जाने की है क्योंकि लेखक के दिमाग में एक विचार यह भी कौंध रहा था कि बारह पच्चीस पर आने वाली हावड़ा एक्सप्रेस के आने का टाइम हो चुका है और फिर उसकी स्थिर आँखों ने अंधेरी रात में तारों की छाँव में उस छाया के कुछ २ लहराते बालों से यह भी अन्दाज लगा लिया था कि वो छाया किसी औरत की है—, और इतनी रात गए एक औरत का इस तरह अकेले आना और फिर अब तक वो उसी तरह पटरियों में ही चली आ रही थी, स्पष्ट था कि यह एक आत्म-हत्या के सिवाय कुछ नहीं हो सकता—, और जब उसने टाइम देखा तो दिल धक् से रह गया, सवा बारह बजे से भी सुई ऊपर ही खिसक चुकी थी इससे आगे वो कुछ न सोच सका, सिगरेट को पाँव तले मसलकर वो तेजी से वापिस सीढ़ियों की तरफ बढ़ा और पल भर में ही सारी सीढ़ियाँ उतरकर वो उस तरफ की लाइनों की तरफ भागा, कितनी लाइनों, सिगनल के तारों आदि को सावधानी से पार करते हुए उस लाइन की तरफ रुख किया जिसके मध्य में वो आकृति अब तक बिना रुके बढ़ी चली जा रही थी, और वो भी अपने पूरे जोर से भागकर उसको पकड़ने की कोशिश में था, कि पता नहीं किस तरह उसका पाँव किसी स्लीपर अथवा तार से उलझ गया कि वो धड़ाम से एक जोरदार झटके से लाइनों से बाहर की तरफ बिछी पत्थर की रोडी पर जा गिरा, तेजी में होने की वजह से गिरते ही हाथों के बल कुछ दूर तक घिसटता ही गया, उसकी आँखों के आगे अंधेरा सा छा गया एक पल को तो, ऐसा मह-सूस किया उसने कि जैसे उसे ही इन्जन ने पीछे से धक्का देकर उठा फेंका हो, लेकिन दूसरे ही पल वो संभल गया और बिना अपना हाल जाने उसने फिर

सामने का रुख किया और पहले की तरह दौड़ने लगा, साथ ही देखा उसने कि गाड़ी की रोशनी मोड़ काटकर आ रही थी और साथ ही अब उसकी छाया बिल्कुल स्पष्ट हो गयी, उड़ते हुए बाल, लहराता आँचल और एक छाया चित्र की तरह साफ दिखाई दे रही थी, धधकती ट्रेन अपने पूरे जोर शोर से बढ़ती चली आ रही थी और लेखक ने भी अपनी रफ्तार तेज कर दी थी मगर वो छाया उसी तरह मस्त चाल से चली जा रही थी।

'..........और तभी सिर्फ एक क्षण पहले लेखक ने उस छाया को धक्का देकर लाइनों से बाहर खदेड़ दिया और स्वयं भी उसकी बाँह पकड़े सिगनल के खम्बे से जा टकराया, धड़धड़ाती ट्रेन पास से गुजर रही थी, उस छाया ने जिसने इन्जन की इतनी जोरदार विसिल पर गौर नहीं किया था और सोच रही थी कि बस अब उसकी भी चीख इस चीख में गुम हो जाएगी, लेकिन इस जोरदार धक्के ने उसे चौंका दिया और अपने आपको किसी की बाहों में पाकर झट से उससे अलग गयी, और अपने आपको पास से गुजरती हुई ट्रेन के नीचे गिराने की कोशिश करने लगी—, तो लेखक ने उसकी बाँह पकड़कर वापिस खींचते हुए कहा—यह क्या पागलपन है।

मगर वो लड़की अपने आपको उसकी पकड़ से नहीं छुड़ा सकी, साथ ही इतने में गाड़ी भी वहाँ से निकल चुकी थी।

तब उसको अपनी बाहों से रिहा करके लेखक अपने सूट को झाड़ने लगा रूमाल से, तो वो लड़की एक कड़कती आवाज में बोल उठी—आखिर मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि आपने मुझे क्यों बचाया है, अपनी जिन्दगी की मालिक मैं खुद हूं—, आप कौन होते हैं इसमें दखल देने वाले क्यों बचाया है आपने मुझे।

ताकि तुम जीना सीख सको—, उसने उस लड़की की तरफ घूमकर कहा तो पता नहीं वो क्यों ठिठक गयी उससे नजरें चार होते ही, लेखक उसे एक क्रोध भरी नजर से देख रहा था, शायद गिरने की वजह से जो खरोंचे आ गयी थीं उनका दर्द अब उठा था।

लेकिन उस लड़की ने छूटते ही कहा—'तब तो यह दुनियाँ वाले बहुत ही

जालिम हैं जो जीने भी नहीं देते और मरने भी नहीं देते' मैं आपसे पूछती हूँ मुझे बचाकर क्या मिला है आपको क्या हक था आपको मेरी जिन्दगी में दखल अन्दाजी करने का।

तब उसने धीरे से कहा—, तुम अभी नासमझी की उम्र में हो, जिन्दगी और मौत को तुम सिर्फ एक खेल समझ रही हो, मगर तुम नहीं जानतीं कि 'इन्सान की जिन्दगानी के हर मोड़ पर उलझनें और परेशानियाँ तो अक्सर आती ही रहती हैं जिनसे लड़ करके जीने को जिन्दगी कहते हैं और हार जाने वाले के लिए उसका नाम मौत होता है—, और खुदकशी करने वालों की यही कमजोरी होती है कि वो जिन्दगी की परेशानियों से तो लड़ नहीं सकते, और इनसे छुटकारा पाने के लिए खुद को ही खत्म कर डालते हैं। आओ—, जिन्दगानी से लड़ना सीखो।

सुन करके वह लड़की खामोश हो गयी, बिल्कुल निश्चल खड़ी रही उसी तरह, न उसने जुबाँ से कुछ कहा, न उसके पाँवों ने कोई हरकत की, पता नहीं बुत बनी वो क्या सोच रही थी।

तब लेखक ने कहा—आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक पहुँचा दूँ, कहाँ रहती हो तुम।

मगर तब भी वो उसी तरह खामोश खड़ी रही, न हिली न डुली। और जब एक मिनट तक यह खामोशी उसी तरह बनी रही तो उसे दोबारा अपनी बात को दोहराना पड़ा—बोलो न, चुप क्यों हो, बताओ कहाँ रहती हो तुम।

यही तो एक मुश्किल है, उसने जबान खोली—कि अगर रहने का कहीं ठिकाना होता तो आज जिन्दगी इतनी डरावनी न लगती।

'मैं समझा नहीं तुम्हारी बात—,

'और मैं भी समझाने से मजबूर हूँ—, वह फिर उसकी अधूरी बात कुछ भी समझ न सका, जवाब ही इतना उलझा हुआ था कि कुछ भी तो मतलब नहीं लगाया जा सकता था, उसने फिर पूछा—क्या सचमुच तुम्हारा कोई घर बार नहीं है।

मैंने कहा न कि मैं कुछ नहीं कहना चाहती इस बारे में, उसने बड़े शान्त स्वर में कहा।

बात फिर एक पहेली बन गयी, तब लेखक ने झट से फिर एक सवाल कर डाला—आखिर कहीं न कहीं तो तुम रहती ही होगी।

आप खामख्वाह बात को बढ़ा रहे हैं मैं आपसे पहले ही कह चुकी हूं कि मैं इस बारे में कुछ भी नहीं कह सकती।

सुनकर वह चुप हो गया, और दोनों के बीच फिर खामोशी छा गयी, बात किसी रुख की तरफ न बैठती देख तब लेखक ने कहा—अगर तुम एतराज न समझो तो आओ—, मेरे साथ, मैं तुम्हें अपने घर ले चलने में रजामन्द हूं।

जी······? वो जैसे चौंक पड़ी, आप··

घबराओ नहीं, इतमीनान रखो तुम्हें किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा, मैं कोई आवारा या बदमाश नहीं हूं जो तुम्हें मुझसे घबराना चाहिए।

नहीं-नहीं, आप जाइए, मैं अपना इन्तजाम खुद कर लूंगी।

लेकिन तुमने अभी तो कहा है कि तुम्हारा कोई ठौर-ठिकाना नहीं, फिर··········,

फिर भी कहीं न कहीं तो मन्जिल मिल ही जाएगी, किस्मत में जो लिखा होगा वो हो के रहेगा।

लगता है कि तुम्हारे दिमाग से अब तक खुदकशी का खुमार दूर नहीं हुआ, और जबकि मैं तुमको पनाह देने को तैयार हूं तो आओ मेरी ज़ुबां पर न सही अपनी किस्मत पर ही यकीन करके मेरे यहाँ चली चलो, आओ·· लेखक ने जोर देकर कहा।

उस लड़की ने धुंधली रोशनी में एक बार अपनी खोयी २ सी नजर को उठाकर लेखक की तरफ देखा और फिर सर झुकाकर वो उसके पीछे २ चलने लगी।

दोनों ही खामोशी से बढ़ते चले जा रहे थे, यूं तो अब उसका घर कोई खास दूर नहीं था, लेकिन फिर भी लेखक सोच रहा था कि कोई सवारी पकड़नी चाहिए लेकिन अपनी पाकेट की हालत पर मुस्करा दिया।

ऊपर अपने आशियाने की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ लेखक आगे २ था और

वो सहमी सी पीछे २ आ रही थी, ताला खोलकर वो अन्दर आया, और लाइट ऑन करके उसने पीछे मुड़कर दरवाजे पर खड़ी उस लड़की से कहा — आओ…, अन्दर आ जाओ। कहा उसने तो वो भारी २ कदमों से अन्दर आ गयी, बैठ जाओ , खड़ी क्यों हो, उसने चारपाई की तरफ इशारा किया और वो झिझकती हुई चारपाई पर बैठ गयी, और जब वो बैठ गयी तो लेखक ने उसकी सूरत पर गौर किया, एक काफी खूबसूरत गोरे-चिट्टे रंग की जवान लड़की थी वो, उम्र बीस साल से ज्यादा नहीं होगी उसकी, खिलता हुआ रंग, भरे सुर्ख गाल और घने गेसुओं में उसका भय-मिश्रित चेहरा उदास सा लग रहा था, नजरें झुकाए वो चुपचाप सी बैठी थी, न मालूम किन सोच में डूबी हुई थी वो।

बिना उससे कुछ कहे लेखक अपने कपड़े तबदील करने में लग गया, वो खुद सोच रहा था कि उससे क्या कहा जाय, खाने के बारे में इस वक्त पूछना ठीक है या नहीं, या वो इसी तरह इन्हीं कपड़ों में सो जाएगी अथवा इसके लिए कुछ इन्तजाम करना पड़ेगा, लेकिन तभी वो लड़की बोल उठी ऊंची आवाज में—नहीं-नहीं, अब मैं जीना नहीं चाहती, वरना मैं यूं ही घुट २ कर मर जाऊंगी, दुनिया मुझे जीने भी नहीं देगी, मैं……. कहकर वो दरवाजे की तरफ बढ़ी।

तुम पागल तो नहीं हो गयी हो कहीं, कहकर उसने उसका रास्ता रोक लिया।

हाँ-हाँ मैं पागल हो गयी हूं, मैं यहाँ अब नहीं रुक सकती मुझे जाने दो।

'मगर यह बैठे २ तुम्हें क्या हो गया है—,

मैं अपनी जिन्दगी से घबरा गयी हूं यह कहो कि मैं अपने आपसे भी घबरा गयी हूं, मैं चाहती हूं कि कहीं भाग जाऊं इस दुनिया से……, या अपने आपको खत्म कर डालूं, मैं अब और जीना नहीं चाहती, मैं कहती हूं मुझे अब भी जाने दो, मत रोको मुझे ", कहते हुए वो दरवाजे की तरफ बढ़ी, मगर रास्ता तो वो रोके खड़ा था, उसने शान्त स्वर में समझाते हुए कहा— तुम कुछ देर आराम करो, सो जाओगी तो तुम्हारा दिमाग भी शान्त हो जाएगा तुम परेशान हो गयी हो इन उल्टी सीधी बातों को सोचते हुए।

मगर मैं कहती हूं कि आप कौन होते हैं मुझे रोकने वाले, मेरा आपसे रिश्ता क्या है जो मुझे आप जाने नहीं देते।

लेकिन क्या तुमने जिन्दगी को इतना सस्ता समझ लिया है कि कुछ उलझनें आ जाने पर उनको सुलझाने के बजाए जिन्दगी को ही खत्म कर डालो, क्या मरने का बिचार तुम्हारे दिमाग में उस वक्त भी कभी आया था जब तुम कभी बहारों में थीं या खुश थीं······,

लेकिन अब मुझे कोई खुशी नहीं चाहिए, मेरी आरजू अब किसी बहार को पाने की नहीं है।

लेकिन मरने की आरजू तो है न तुम्हारे दिल में, लेखक ने भी जोर से कहा।

हाँ···, उसने भी उसी तरह जवाब दिया।

'मगर अब तुम मर नहीं सकतीं।

मैं पूछती हूं कि आप मुझे बार २ क्यों जीने के लिए उपदेश दे रहे हैं, आपकी आखिर मुझमें क्या दिलचस्पी है।

तुम अभी नादान हो, जिन्दगी और मौत को तुम सिर्फ एक खेल समझ रही हो, इन्सान अगर अपने आप भरोसा रखे तो सब मुश्किलें अपने आप हल हो जाया करती हैं और फिर साथ ही जीने की तमन्ना भी खुद-ब-खुद पैदा हो जाती है, तभी इन्सान को पता लगता है कि जिन्दगी क्या चीज है, उसको खो देना कितनी बड़ी भूल है।

और अगर आपको मेरी जिन्दगी की इतनी ही फिक्र है तो मैं आपसे पूछती हूं कि क्या आप मुझ से शादी करना गवारा समझेंगे ?

'शादी······, उसने दोहराया।

'हाँ शादी, उसने जोर देकर कहा—मुझसे···, एक बेपनाह लड़की से, कहते हुए लेखक की सूरत की तरफ देखा, जो आश्चर्यचकित था, जैसे उस पर किसी ने अचानक हमला कर दिया और वो संभल भी न पाया हो, वो कुछ कहना ही चाहता था कि उस लड़की ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा—और जानना चाहते हो कि मैं कौन हूं, तो सुन लो, मैं एम मौहमबेन

लड़की हूं……, बोलो जवाब दो, और अगर जिन्दगी का ब्यान सुनना चाहते हो……, तो यह भी सुन लो कि मैं तीन चार माह में एक बच्चे की मां भी बनने वाली हूं……एक मासूम बच्चे की मां ……, तो जवाब दो, क्या राजी हो मुझसे शादी करने के लिए……, क्या आप मेरे मासूम बच्चे का बाप बनना मंजूर कर लोगे, क्या कह सकोगे जमाने वालों से कि यह मेरा अपना बच्चा है…, मेरा खून है …, मैं ही इसका बाप हूं—, अब चुप क्यों हो गए हैं आप, जवाब क्यूं नहीं देते, कि क्या आप प्यार कर सकेंगे उस पराये खून से. बोलो न जवाब दो… अब क्यूं खामोश हो गए हैं आप, आप ही ने तो कहा है कि उलझनों से मत घबराओ, मुसीबतों का सामना जिन्दगी से लड़कर करो, और वो एक बड़े लहजे अन्दाज में बोली—आपने मेरी जान बचाई, मुझे जीने के लिए कहा, आपका बहुत २ अहसान लेकिन यह एक अहसान और करदो तो इस अबला की जिन्दगी बच जाएगी ।

शादी……, सोचा उसने, इस लब्ज पर, और साथ ही एक बच्चे का बाप यानी कि एक मुस्लिम खून का पिता और पति, लेकिन दूसरे ही पल उसने कहा—शादी का फैसला सुना देना इतना आसान काम नहीं है, लेकिन फिर भी मैं इतना वादा जरूर करता हूं कि मैं तुम्हारी हर मुमकिन मदद करने की पूरी कोशिश करूंगा, जहाँ तक हो सकेगा मुझसे, मैं तुम्हारी हर जरूरत को जुटाने का पूरा यत्न करूंगा ।

तो फिर इसका क्या अहसान और क्या फायदा, जमाना तो फिर मेरे बच्चे पर उंगली उठाएगा, मुझको बदनाम करेगी यह दुनिया, लोग उस मासूम से पूछेंगे कि तुम्हारा बाप कौन है… "तो वो नादान क्या जवाब देगा" मैं क्या कहूंगी……, आप क्या जवाब देंगे कि मेरे साथ आपका ही क्या रिश्ता है, मैं आपकी क्या लगती हूं……,

एक बड़ी कश-म-कश की अजीब सी हालत पैदा हो गई थी, कि क्या कहा जाए और क्या न कहा जाए, हर तरफ से परिस्थिति उलझी हुई थी, तब लेखक ने धीरे से पूछा—मगर मैं जानना चाहता हूं कि वो जलील इन्सान कौन है जिसने तुम्हारी अस्मत से खिलवाड़ की है और अब तुम्हारी जिम्मेदारी लेने से मुंह फेरे हुए है ।

तो वो एक गहरी सांस छोड़कर रह गयी, चेहरा आवेश में सुर्ख हो गया था उसका, आखें खोले शायद वो उसी की सूरत को अपने दिल के परदे पर देख रही थी, कहने लगी—अब चाहे आप उसे जलील कहिए या बुजदिली का खिताब दीजिए, पर अब कुछ नहीं हो सकता उसको कोसने से, मेरी जवानी से खेलकर मुझे अब गर्दिशों में धकेल कर शायद वो खुशियाँ मना रहा होगा।

'मगर उसका नाम पता, ठिकाना कुछ तो होगा।

'लेकिन अब बताने से कोई फायदा नहीं।

—, छुपा तो ऐसे रही हो जैसे आज भी वो तुमसे असीम मुहब्बत करता हो।

अब वो बुजदिल क्या मुहब्बत करेगा, वो मुहब्बत की बातें तो जवानी के रंगीन खेल से पहले ही दोहराई जाती हैं सिर्फ'' ''और उसने भी मुहब्बत के नगमे गमे दिल से रंगी फिजाओं के सिसकते साजों पर कुछ तरह तकल्लुफ से गाए कि मैं प्यार के तराने समझकर उनमें खो गई और मेरे बहकने का फायदा उसने जी भर के उठाया, मगर मैं यह न जानती थी कि हविस के पूरा हो जाने के बाद वो मुझे यह कह कर हैरान कर देगा कि हम में और तुममें चाँदी की दीवार है।

लेकिन तुम यह बताओ तो सही कि वो आखिर है कौन, हो सकता है कि मैं कुछ इसका हल निकाल सकूं ''', कहा लेखक ने।

सब बेकार है'''', उसे तो कहना दूर की बात है, मैंने अपनी सुलगती दास्तान उसके बाप तक से कही, मगर उस बेरहम ने भी मुझे ही गुनाहगार कहा, बल्कि यह भी हिदायत दी कि अगर तुमने मेरे बेटे के खिलाफ कभी भी जुबाँ खोली तो इसका अन्जाम तुम्हारी मौत होगी।

मगर तुम बताओ तो, मैं कम से कम उस निर्दयी को बता तो सकूं कि मौत कितनी सस्ती होती है।

चिकने घड़ों पर कभी पानी नहीं ठहरा करता, उसकी आँखों में दौलत का नशा छाया हुआ है, वे पैसे से सब कुछ खरीद सकते हैं, उन्हें क्या मालूम किसी की इज्जत क्या चीज होती है।

लेकिन तुम्हारे मां बाप ने भी कोई कदम नहीं उठाया इस ओर, क्या उन्हें अपनी बेटी की इज्जत की परवाह नहीं थी, और साथ ही अपनी भी तो बदनामी है उनकी।

यही तो एक रोना है चूंकि सौतेली माँ, जो हमेशा ही मुझे खा जाने वाली नजरों से देखती है, और हमेशा ही वो मुझे अब्बा हजूर की नजरों में गिराने की ताक में रहती, और वो भी अम्मी के प्यार में पागल हुए थे और यही वजह थी कि मैं प्यार की प्यासी उस निर्मोही की प्यार भरी बातों में खो गयी, लेकिन मुझे क्या पता था कि प्यार को पहचानने के लिए भी अकल से काम लेना जरूरी है।

सुन करके लेखक खामोश खड़ा हुआ था, हर तरफ से बात एक गम्भीर परिस्थिति में घिरी हुई थी, कुछ भी जवाब देना आसान न था, वो सोच रहा था कि इसकी खुदकशी की वजह इसकी यही सब परेशानियाँ थीं, आखिर एक औरत ही थी वो भी, इतनी उल्झनें देखकर घबरा न जाती तो और क्या होता, हर तरफ से उसको ठोकरें ही मिलीं, तब उसने आहिस्ता से कहा—क्या मैं जान सकता हूं कि तुम्हारा नाम क्या है—,

जी……, वो हड़बड़ा गई, लेकिन सम्भलते हुए धीरे से बोली— मेरा नाम शहनाज है।

अच्छा, तो देखो ऐसा करो, अब तुम सो जाओ, रात बहुत ज्यादा गुजर चुकी है, तुम्हारा मसला बड़ा रंजीदा है, इस पर सुबह गौर करेंगे।

आप क्यूं मेरे लिए परेशान होते हैं, मुझे आप मेरे हाल पर छोड़ दीजिए मैं किस्मत की मारी कहीं भी चली जाऊंगी, आप क्यों बेकार में मेरे लिए मुसीबत मोल लेते हैं, कहते २ उसके आँसू मचल उठे, जिन्हें छिपाने को उसने मुंह फेर लिया।

देखो शहनाज तुम एक समझदार लड़की हो, रात के इस पहर में तुम कहां जाओगी यह भी मैं जानता हूं……, मगर तुम यह भी जानती हो कि यह दुनियाँ कितनी बेरहम है, हो सकता है कि जिसे तुम अपनी मंजिल समझे बैठी हो शायद वहाँ तक पहुंचते २ ही तुम किसी जगह पहुँच जाओ कि तुम

फिर न दुनियाँ का मुंह देख सकोगी, तुम बेफिक्र रहो, यहाँ तुम अपने आपको बिल्कुल सुरक्षित समझो, मैं……मैं अपने आपको कोई देवता तो नहीं कहता, लेकिन हाँ इतना जरूर कहूंगा कि मैं इन्सान हूं और इन्सानियत को जानता हूं इसी इन्सानियत की कसम खा सकता हूं कि तुम्हें मुझ से किसी भी हालत में नहीं डरना चाहिए, मैं तुम्हें किसी किसम का नुकसान पहुंचाने का इरादा नहीं रखता।

नहीं ···· मैं इस बात के लिए नहीं कह रही, मैं एक हद तक आपको जानती हूं कि आप कौन हैं, लेकिन……,

लेकिन क्या·····, इसके बारे में।

नहीं यह मकसद नहीं, बल्कि यह सब आप के लिए एक परेशानी है और मैं नहीं चाहती मेरे लिए आप भी परेशान हों।

मैं इस बात का जवाब देना नहीं चाहता, तुम चुपचाप उस कमरे में सोने चली जाओ और अपने दिमाग से यह मरने का फतूर निकाल दो, हिम्मत से काम लो सब मसले हल हो जायेंगे, और कह कर उसने देखा कि वो फिर कुछ कहना चाहती थी, मगर उसको बोलने का मौका न देते हुए उसने कुछ जोर से कहा—मैं कहता हूं कि तुम जाती हो या नहीं!

इसके बाद वो कुछ न बोली, और उस कमरे की तरफ बढ़ गयी जिसकी ओर उंगली से इशारा किये लेखक खड़ा था।

२२

एक लम्बा मोड़ काटती हुई कार जुहू के तट पर जा रुकी, साजिद और लेखक दोनों ही उतर कर एक साथ चलते हुए लोगों की चहल पहल से हटकर एकान्त जगह पर आकर बैठ गए।

साजिद हैरान था कि आज लेखक को क्या ऐसी बात कहनी थी कि जो

घर पर नहीं की जा सकती थी, कि जिसके लिए अपना उसका दोनों का घर छोड़ कर इस जगह को ठीक समझा है, दोनों ही जब बैठ गए तो लेखक ने कहा—'मुझे तुमसे आज कुछ खास बात करनी है, और······

'वो तो मैं देख ही रहा हूं कि बातें कुछ खास नहीं बल्कि बहुत ज्यादा खास हैं, कि जिनके लिए यहाँ तक आना पड़ा है, साजिद ने बात काटते हुए कहा ।

'ऐसा ही समझो, लेखक ने कहा ।

और इसके बाद लेखक ने शहनाज की बाबत सारी बातें सुना डालीं ।

और सुनकर साजिद असमंजस में पड़ गया कि इसके बारे में क्या कहा जाए क्या न कहा जाए एक बड़ा टेढ़ा मामला था यह । कहने लगा—तो वह लड़की इसका मतलब है बारह रोज से तुम्हारे ही यहाँ है ।

'हाँ, लेखक ने धीरे से कहा ।

मगर वो यह क्यों नहीं बताना चाहती कि उससे खिलवाड़ करने वाला वो कौन था ।

बस एक यही बात है जो उसने लाख पूछने पर नहीं बताई, उसका कहना है कि जब वो खुद उनसे टक्करें मार २ कर थक गई है तो आप भी कुछ नहीं कर सकते, उस निर्मोही ने जब यहाँ तक कह दिया है कि मैं तुम्हें जानता तक नहीं कि तुम कौन हो, और फिर क्या सबूत है कि इस बच्चे का बाप मैं ही हूँ·····, तुम जैसी आवारा और नीच तो क्या पता कितनों से मुहब्बत के खेल खेलती हैं·····,

मामला वाक़ई बड़ा टेढ़ा है, माँ-बाप उस लड़की को रखने में रजामन्द नहीं और वो नील उसे पहचानने से इन्कार करता है, फिर तिस पर भी गर्भवती है, दुनियाँ की बदनामी और ताने आखिर कब तक वो सहती रहेगी, अब तुम्हीं बताओ तुमने क्या सोचा है, साजिद बोला ।

'मैं तो अब इसी नतीजे पर पहुंचा हूँ कि उसे अब जिन्दगी भर के लिए पनाह दे दूं अब हमेशा के लिए मेरे पास ही रहेगी ।'

'तुम होश में तो हो', कहा साजिद ने—'या तुम भी सोचने की ताकत

खो बैठे हो, एक ऐसी लड़की जो किसी दूसरे के बच्चे की माँ बनने वाली है उससे तुम शादी करोगे, दूसरे का पाप अपने सर पर लेने की जिम्मेदारी लेने को कहते हो।

यह सब ठीक है साजिद, लेकिन मैं जानता हूँ कि उस मासूम के साथ धोखा हुआ है, उसे नादान समझ कर लूटा गया है, वह नहीं जानती कि प्यार के बदले में ऐसा भयंकर फल मिलेगा कि वो कुछ भी सोचने न पायेगी।

अगर तुम इस बात को लेकर ऐसा सोचते हो तो पता नहीं आज दुनिया में कितनी ही ऐसी लड़कियाँ होंगी, जिनके साथ ऐसे धोखे हुए होंगे और वो इसी हालत में होंगी, तब तुम ऐसी सारी लड़कियों की जिम्मेदारी ले लोगे क्या ? क्या तुम्हीं ने इन बातों का ठेका ले रखा है, कह उसने लेखक की तरफ देखा जो सर झुकाये सोच में डूबा हुआ था।

लेकिन इस वक्त तो दूर की बातों में न जाते हुए सोचना तो मौजूदा हालत पर है, वो एक बेपनाह दुनिया की सताई हुई औरत है, जिसके अरमानों को दफन कर दिया गया है, न जाने वो हर पल क्या सोचती रहती है, तुम एक बार अगर साजिद उसे देख लो तो तुम्हारा दिल भी पसीज जाए, साथ ही तुम्हारे दिल में उस बेरहम इन्सान के लिए लाखों बद्दुआएँ निकल जायें, और एक मासूम वो भी है जो इतने आँसू बहाकर फिर भी यही कहती है कि खुदा करे उनकी खुशियाँ आबाद रहें, अपनी दुनिया लुटाकर भी लूटने वाले की दुनिया की सलामती की दुआएँ करती है वो, एक बार भी तो आज तक उसके लिए एक बद्दुआ नहीं निकली उसके मुंह से।

वो सब ठीक हो सकता है, लेकिन हमदर्दी दिखाने की भी एक हद होती है, और आपका यह फैसला हद से बाहर है, हर मुसीबत का मारा दुखी तो होगा ही, लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं है कि उसे अपने सर ही मढ़ लिया जाए, इन्सानियत यही कहती है कि हर दुखी की मदद करनी चाहिए, अव्वल तो यह भी बड़ा मुश्किल है कि एक आदमी कितनों की मदद कर सकता है, लेकिन इसका मकसद यह थोड़े ही न है कि उसकी मदद करते २ उसे हमेशा के लिए गले लगा लिया जाए।

रात बीत चली थी, समुद्र से आती ठण्डी हवा कुछ कम्पन सा लिये हुए थी, कितने लोग अपनी बातों में मस्त दुनिया से बेखबर थे, साजिद ने कुछ रुककर कहा—यहाँ तुम देख रहे हो न कितने जोड़े बैठे प्यार की बातों में मशगूल हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि इन सबकी शादी हो चुकी हैं, बल्कि इनमें से ज्यादा तादाद उन लोगों की होगी जो मुहब्बत के चक्कर में होंगे और यह भी जरूरी नहीं कि यह सब आपस में पाक मुहब्बत करते होंगे, न जाने कितनी जवानियाँ यही सोचती होंगी कि उनसे बढ़कर इस दुनिया में कौन खुशनसीब होगा, मगर उन्हें होश तभी आता है जब वो अपना सब कुछ लुटाकर दुनियाँ को अपनी आँखों से देखती हैं, तब उन्हें पता लगता है कि यह सब एक रंगीन सपना था, एक सुनहरा धोखा था, फरेब था, और फिर वो भी अपने आशिक के कदमों में अपने आपको झुकाकर अपनी जिन्दगी की भीख माँगती हैं, उनको उन्हीं के वादे याद दिलाती हैं, मुहब्बत का सदका देती हैं, लेकिन वो अपना मतलब पूरा हो जाने के बाद उससे दूर भागने की ताक में होते हैं और नतीजा यह होता है कि तब किसी के लिये चांदी की दीवार रुकावट बन जाती है तो किसी के लिये दुनिया दीवार खड़ी कर देती है। कोई पहचानने से इन्कार कर देता है तो कोई अपने आपको मजबूरी की आड़ में छुपा लेता है, मकसद सबका 'ना' ही होता है. कोई सीधे रास्ते कहता है तो कोई घुमा-फिराकर कहता है, क्या मालूम कि इन बैठे हुए लोगों में कितनी ही ऐसी होंगी कि अपने चाहने वाले को यह बता रही होंगी कि अब तो पेट में पलते हुए पाप को पाँच माह होने को हैं, घर वालों को भी मुझ पर शक होने लगा है, देखो न पेट को मैं कब तक छुपाती रहूँगी और जवाब में वो आशिक साहब उसे झूठे दिलासे देते हुए कहेंगे—तुम फिक्र न करो, हम जल्दी ही शादी कर लेंगे, हमें दुनिया की कोई ताकत मिलने से नहीं रोक सकती, बस दो-चार रोज की बात और है और वो कोई झूठा बहाना टपका देंगे इस एवज में, क्योंकि वो तो इस वक्त की इन्तजार में होते हैं कि लड़की का भेद उसके माँ बाप और दुनिया वालों को पता लगे और वो राहत की साँस लें, क्योंकि उनके पास तो घुला हुआ जवाब पहले से ही तैयार

होता है कि वो थी ही आवारा और कमीनी, क्या पता किसे २ 'लिफ्ट' देती रही होगी, और वो चाहे अपनी मुहब्बत की लाख कसमें खा ले, उन पर कोई असर थोड़ा ही होता है, फिर वो तो अपना दामन झाड़कर बेफिक्र हो जाते हैं। किसी की बर्बादी हो या आबादी, उन्हें क्या लेना देना होता है।

साजिद कहे जा रहा था और वो सुन रहा था, क्या मालूम सर झुकाये वो किस बात पर गौर कर रहा था, अपनी बात को पल भर तक रोककर साजिद बोला—सुनो ऐसा करो—, और लेखक ने सर इस तरह उठाया जैसे कटघरे में खड़ा अपराधी जज की पहली लाइन सुनकर अपना चेहरा उठाता है. उसकी आँखें अपनी तरफ उठी देख साजिद ने बात की कड़ी जोड़ी—उस की देख रेख के लिए किसी नरसरी होम में इन्तजाम करा दो, बच्चा पैदा होने के बाद या उससे पहले वो कहीं अपना इन्तजाम कर लेगी, आखिर दुनिया में हजारों लड़कियाँ नौकरी करती हैं और अगर वो बच्चे को न भी लेना चाहे तो वो हास्पिटल के हवाले कर सकती है, इसके बारे में अगर कोई अड़चन वगैरा आएगी तो मैं ठीक करा दूंगा।

लेकिन तुम नहीं जानते······वो कहीं भी रहना पसन्द नहीं करेगी, उसकी जुबाँ पर हर वक्त मौत का नाम चढ़ा हुआ है मुझे पूरा यकीन है कि वो जमाने को अपना दागनुमा चेहरा दिखाने से पहले इस दुनिया से कूच कर जाएगी। वो आत्महत्या कर लेगी साजिद आत्महत्या, और यह पाप······यह पाप मेरे सर पर होगा, इसका गुनाहगार मैं हूंगा।

मर जाने दो अगर मरती है तो, साजिद ने भी तैश में आकर कहा—अगर वो मर जाने का डर दिखाती है तो इसमें हम पर कौन सा अहसान कर रही है, मुँह काला उसने किया है और सजा तुम्हें मिलेगी, यह कहां का उसूल है, अगर अपनी इज्जत की इतनी परवाह थी तो पहले ही सब कुछ सोच समझ कर कदम रखती।

मगर साजिद वो जाएगी कहां आखिर, टूटे हुए दिल और सताये हुए इन्सान की क्या हालत होती है उसे तुम नहीं जानते, उसका दिमाग खराब हो जाता है, वो कुछ भी सोच नहीं पाता कि वो क्या कर रहा है, कौन सा

कदम सही है और कौन सा गलत है वो नहीं जान पाता फिर वो एक औरत है, जो दिल से कमजोर है और बदन से भी, यह दुनिया वाले, जिनमें आज हविस की भूख बहुत ज्यादा भरी हुई है वो उसे जिन्दा ही खा जायेंगे........, और किसी तरह उसने जीने की सोच भी ली तो भी सुखी से जी न सकेगी, वो समाज के ठेकेदारों के हाथों बिक जायेगी, उनके इशारों की कठपुतली बन जायगी, उसकी अस्मत के दुश्मन बन जायेंगे, यह मेरा दावा है साजिद, कि वो अगर जरा भी बहक गई तो एक दिन कोठे पर बैठी नजर आयेगी, और मैं जानता हूँ कि वो अभी भी नासमझी की उम्र में है, वो जमाने की इन क्रूर बातों से आज भी नावाकिफ है और उसके इस भोलेपन का फायदा बहुत बुरी तरह उठाया जायेगा।

तो इसका मतलब है कि अब तुम उस लड़की को जीवन भर के लिए अपने साथ रखना चाहते हो।

'हाँ——, अभी तक तो इरादा यही है।'

लेकिन जानते हो.....साजिद ने दाँतों को पीसते हुए कहा कि वो पराये खून के बच्चे की माँ बनने वाली है।

'तो क्या हुआ, जहाँ उसकी जिम्मेदारी संभालूँगा वहाँ वो भी अपनी किस्मत का लिखा खायगा।

ओफ हो ! यह कैसी नादान बच्चों की सी बातें कर रहे हो तुम——, एक पराये का पाप और उसे तुम अपने गले लगाओगे। उसकी परवरिश करोगे।

तो क्या हुआ, लेखक ने एक गहरी साँस छोड़ते हुए कहा कि इन्सान अगर कुत्ते के पिल्लों को पाल सकता है तो क्या मैं इन्सान की औलाद से प्यार नहीं कर सकूँगा।

कहना ही बहुत आसान है यह सब ! करने और कहने में जमीं-आसमां का फर्क होता है, जरा इस बात को भी सोच लेना, लेकिन मैं इसे तुम्हारी कोई अक्लमन्दी नहीं समझता।

सो तो सब ठीक है, पर....., कहते २ रुक गया।

............पर बात यह भी तो है कि कुत्ते के पालने से दुनिया बदनाम नहीं करती किसी को, मगर पराये पाप की जाँच-पड़ताल दुनियां वाले बड़ी बारीकी से करते हैं तुम किस २ का मुंह बन्द करोगे, किस २ को जवाब दोगे, मैं तुमसे अब भी यही कहता हूं कि तुम अब भी गलती कर रहे हो, यह कदम उठाना एक बहुत बड़ी मुसीबत को गले लगाना है, मैं तुमसे यही कहता हूं कि तुम अब भी अपना फैसला बदल डालो।

नहीं साजिद ! मैं इस बारे में अब कोई तबदीली नहीं करना चाहता, जहाँ तक मुझसे हो सकेगा मैं अपना फर्ज निभाने की पूरी कोशिश करूंगा, लेखक ने यह बात बड़े शान्त स्वर में कही तो साजिद उबल पड़ा, गुस्से से भरी मगर दबी आवाज में बोला—यह कोई तुम्हारे उपन्यास का पलॉट नहीं है, एक हकीकत है हकीकत, तुम्हें इस बारे में कोई उपन्यास नहीं लिखना जिसे तुम इतना आसान समझ रहे हो, अब भी होश में आ जाओ, आँखें खोलकर देखो यह कोई सपना नहीं है, बल्कि एक सच्चा वाकया है।

लेकिन मैंने अब पूरी तरह फैसला कर लिया है कि जब तक भी वो इस जहाँ में रहेगी, मेरे पास ही रहेगी।

सुना जब साजिद ने तो एक व्यंग कसते हुए बोला—तो सिर्फ एक का ही भला क्यों करते हो, दुनिया में इस बात का इश्तहार निकलवाकर जितनी लड़कियाँ इस हाल में हों उन सब का हाथ क्यूं नहीं थाम लेते।

सब का न सही, चलो एक ही का भला हो जाए मेरे हाथ से यही बहुत है, हाँ इस बात की दुआ जरूर करूंगा कि मेरे जैसे इन्सानों की गिनती में बढ़ोतरी जरूर होनी चाहिए जो शहनाज जैसी दुखी लड़कियों का हाथ थामने को तैयार हों ताकि वो गुमराह लड़कियाँ और गुमराही की गलियों में न भटकने पाएं।

और साजिद जैसे जहर का घूंट पीकर रह गया, उसकी इस बात का कुछ जवाब तो देना चाहता था वो मगर फिर भी खामोश हो गया, उसने फिर इतना ही कहा—अगर तुम्हें ऐसा करना ही था तो मुझसे राय लेने की क्या जरूरत थी, या तुमने मुझसे इस वास्ते बताई है कि मैं इसे घर जाकर अम्मी जान, अब्बा हजूर और मुमताज से कह सकूं।

'नहीं साजिद, यह मकसद नहीं था, मैंने तो यह सोचा था कि शायद तुम भी मेरी बात से मुस्तफिक होगे, लेकिन अब मैं इतना जानता हूं या समझ लो जान चुका हूँ कि किसी से मैं भी इस बात के बारे में अगर मश्वरा करूं तो वो मेरी बात से नहीं बल्कि तुम्हारी कही बातों के हक में होगा लेकिन खैर जोभी होगा, अच्छा ही होगा।

इस पर साजिद ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि दोनों ही खामोश बैठे हुए थे।

'शायद किसी के पास भी कहने को कुछ न था।

२३

रात के वक्त जब लेखक अपने घर पर पहुंचा और सीढ़ियाँ चढ़कर जैसे ही उसने दरवाजे को आहिस्ता से धकेला तो वो खुल गया, अन्दर कदम रखते ही उसने देखा कि शहनाज रसोई घर से बाहर दहलीज के इस तरफ की दीवार से सर टिकाए जमीन पर बैठी न जाने एक टक आँखें खोले क्या देख रही थी, उसके कदमों की आहट सुनकर उसने सर घुमाकर उसकी तरफ देखा और झट से खड़ी हो गयी, लेखक ने एक नजर उसके चेहरे पर डाली और कपड़े बदलने लगा, वो अभी तक वहीं खड़ी थी उसी तरह।

शहनाज ···, उसने गम्भीर स्वर से पुकारा तो शहनाज की जैसे चेतना लौट आयी, वो चौंक कर बोली—जी ···,

'पानी तो पिलाना जरा, कहकर वो कुर्सी पर आकर बैठ गया, और मेज पर रखे अखबार की तरफ झुक गया, तभी शहनाज पानी से भरा गिलास लेकर उसके सामने आन खड़ी हुई, वो मेज पर इसे रखने जा ही रही थी कि उसने हाथ बढ़ाकर उसके हाथ से ले लिया।

पी चुकने के बाद जब उसने गिलास वापिस शहनाज को थमा दिया तो कहने लगी—खाना ले आऊँ आपके लिए ?······,

तुमने भी मेरे ख्याल से अभी तक नहीं खाया होगा, लेखक ने उसके सवाल के जवाब के एवज में उल्टा सवाल ही पेश कर दिया, कहने लगा—अच्छा, ले आओ''', और हाँ देखो अपना भी ले आना ।

नहीं मैं बाद में खा लूंगी, कहकर वो जाने लगी, तो लेखक ने उसी तरह गम्भीर आवाज में कहा—क्या तुम्हें रोज २ समझाना पड़ेगा शहनाज ! कि तुम अपने आपको बेगाना मत समझा करो ।

और शहनाज सर झुकाकर चली गयी ।

थोड़ी ही देर में उसने खाना मेज पर लगा दिया, और स्वयं भी उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठकर खाने लगी, नजरें उसकी झुकी हुई थीं खाना खाने के दौरान उसने एक बार गौर से शहनाज की तरफ देखा तो उसका हाथ का लुक्मा मुंह तक जाते २ रुक गया, देखा उसने कि कितनी मासूम लड़की है यह, एक दम भोली भाली नादान सी । झुकी पलकें, खामोश चेहरा, कितनी मासूमियत भरी है हर बात में इसकी । मगर दिल टटोल कर देखे कोई । उसने यूं ही बिना बात कह दिया—क्या बात है, तुम बहुत धीरे २ खाती हो ।

जी'''नहीं तो, वो हड़बड़ा गयी, पलकें उठाकर देखा उसने धीरे से और फिर से झुका लीं उसने, और लेखक मुस्करा पड़ा अपने मन ही मन में, सोचने लगा उसकी तरफ देखकर, साजिद कहता है कि इसे अपने घर में मत रखो, कह दो उसे कि वो हॉस्पिटल या नरसरी होम में चली जाए, या अपना इन्त-जाम किसी और जगह कर ले, उसने देखा नहीं इस मासूम को, अगर इसकी खामोश और भीगी पलकों में छुपी झील सी गहरी आँखों में एक बार झाँक कर देख ले वो, तो उसे मालूम हो कि उसने जो कहा है वो उसकी भूल है, यह कैसे कहा जाए उससे कि वो इस घर से चली जाए, इन सीढ़ियों से उतर कर सीधे सड़क पर इधर या उस तरफ जहाँ चाहे चली जाए और फिर इसके बावजूद जबकि वो उसका जिन्दगी भर का साथ निभाने का वचन दे चुका है, तब वो फिर से अपनी बात बड़े फ़क्र के साथ कह सकेगी—इन्सान मुसीबतों से सामना करने का सबक दुनिया को देना तो अच्छी तरह जानता है मगर खु

उस पर अमल करना नहीं जानता, मुसीबत गले पर पड़ने पर हर कोई बचना चाहता है, और फिर शहनाज में आखिर कमी क्या है, उसका कसूर सिर्फ यही है न, कि वो एक पराए खून की माँ बनने जा रही है, वो उससे पहले किसी को अपना बदन सौंप चुकी है, तो इसका मतलब है कि क्या दुनिया के हर इन्सान को पूरा २ यकीन है कि उसकी पत्नी का बदन शादी से पहले बिल्कुल अछूता था, उसको किसी ने न छुआ था, जरा पूछें तो अपनी बीवी से कि क्या वो शादी से पहले भी किसी से मुहब्बत करती थी और फिर देखें जरा उसके चेहरे पर बदलते रंगों को, आखिर यह इश्क बाजी जो आजकल इतने रंगों पर है, न जाने इसमें बहक कर कितनी लड़कियों के पाँव फिसलते होंगे, और यह जरूरी नहीं कि उनकी शादी उनके चाहने वालों से होती होगी, बल्कि ऐसा तो बहुत कम होता होगा, तब वो भी तो किसी न किसी की बीवी बनती होंगी, और जीवन भर अपनी जिन्दगी का वो राज दिल में छुपाकर रखती होंगी, उनके खाविंद साहब क्या जानें कि उनकी नई नवेली दुल्हन जो पहली रात को उनकी बाहों में जकड़ी हुई कसक रही थी वो सब सिर्फ अदाएँ थीं, वरना न जाने वो तो ऐसी कितनी ही रंगीन रातें मना चुकी थी अपने आशिक के पहलू में मचल कर ।

और यह भी तो हो सकता है कि यही खाविंद जो अपनी दुल्हन का घूंघट उठाकर उसे अपनी जान और दिल कहकर अपने दीवाने पन का अन्दाज पेश कर रहे थे, न जाने यही डॉयलाग्स उन्होंने कितनी हसीन जवानियों से कहे होंगे ।

और इधर शहनाज सोच रही थी कि यह किस्मत भी कितनी अजब होती है, कहाँ वो उस दिन रेल की पटरियों में यह सोचती हुई चली जा रही थी कि आज की रात जिन्दगी की आखिरी रात होगी, फिर नहीं देख पाएगी कभी इस संगदिल दुनिया को, आज के बाद वो इस दुनिया से हमेशा २ के लिए फना हो जाएगी, कोई याद नहीं करेगा कि शहनाज नाम की भी एक लड़की थी, किसी राह चलते ने उसकी मौत को लेकर किसी दूसरे से अगर चर्चा कर भी दी तो वो अफसोस करते हुए इतना कह अपनी बात को खत्म कर देगा—

बेचारी ने जवानी में ही इस दुनिया से मुंह फेर लिया, जरूर किसी दुख की मारी होगी, लेकिन वो क्या जानती थी कि उसे अभी इस दुनिया में रहना है, और यही किस्मत उसे यहाँ तक खींच लायी, एक ऐसी जगह जहाँ उसने कभी ख्वाब में भी न सोचा था और फिर उसकी जिन्दगी का फैसला इतने अजीब ढंग से हो जाएगा कि वो यकीन भी नहीं कर पाएगी कि यह सच है, ऐसा भी हो सकता है। उसके दाग को कोई छुपाने वाला मिल जाएगा, साथ ही हर कदम पर उसको सहारा देने वाला मिल जाएगा, बल्कि यह कहकर उसका हौसला पस्त नहीं होने देगा—शहनाज इसकी गुनाहगार तुम नहीं हो, तुम दुनिया के बदलते रंगों से वाकिफ नहीं थीं, तुम्हें उस बात का अहसास नहीं था, कि दुनिया में धोखा भी एक चीज है।

मगर हैरानी उसे इस बात की हो रही थी, आज से तीन दिन पहले जब उससे लेखक ने कहा था—अब से तुम इस घर की मालकिन हो, हर इन्तजाम की मालकिन तुम हो, कल से खाना तुम बनाओगी, और देखो अब मुझे इसके बदले किसी जवाब की जरूरत नहीं है।

लेकिन उसने फिर भी कहा था—यह आप क्या कह रहे हैं, एक पापिन को घर में रख कर उसके हाथ का बना खाना खाएंगे।

तब उन्होंने छूटते ही कहा था—मुझे यह बतला दो कि क्या तुम एक औरत नहीं हो, आखिर क्या कमी है तुम में, क्या ऐब है तुम में, तुम कोई कोढ़ी तो हो नहीं।

'मगर एक पापिन तो हूं, वो बिलख पड़ी थी, कहकर मुझसे यह एक और गुनाह मत करवाओ, मेरे हाथों पर गुनाहों की स्याही लगी हुई है, इन नापाक हाथों से मैं··· ,

मैंने तुमसे पहले भी कहा है कि मैं अपनी बात के एवज में बहस बाजी नहीं सुनना चाहता, कहकर उन्होंने बात काट दी थी बीच ही में।

'······क्या सोच रही हो तुम, लेखक ने अचानक उस पर सवाल कर दिया, तो खाना खाते २ वो एक मतरबा फिर काँप गयी, अपने आपको ख्यालों की कैद से रिहा करते हुए उसने कहा—जी, कुछ नहीं, और अपनी घनी स्याह

पलकों को उठाकर उसने उसकी तरफ देखा और फिर धीरे से उसने नजर झुका ली।

खाना खा चुकने के बाद शहनाज बर्तन समेट चली गई।

और कुछ ही देर बाद रसोई घर से नल से पानी गिरने की आवाज आ रही थी, शायद उसने बर्तन मांज लिये थे और वो उन्हें धो रही थी।

२४

और जब से मुमताज को इस बात का पता चला कि लेखक ने एक ऐसी लड़की को अपनी जिन्दगी में शामिल कर लिया है जो एक गैर ही नहीं गुनाहगार भी है, और वो भी इतनी कि वो एक जीती जागती पाप की परछाईं है, उसके आँचल पर एक गहरा दाग लगा हुआ है, वो एक हरामी बच्चे की माँ बनने वाली है, और फिर तिस पर गजब यह कि उसकी यह हालतें जानते हुए भी लेखक ने उससे शादी करने का वायदा किया है, उसे शहनाज की किस्मत से रश्क होने लगा, कि वो उस इन्सान की बीवी बन जाएगी जिसकी खामोश मुहब्बत को अपने दिल में न जाने कितने अरमानों से सजाए बैठी थी, वो उसके प्यार की हकदार बन जाएगी जिसके प्यार की खातिर उसने अपनी हर सदा का सदका दिया था एक दिन, मगर उसने उसके प्यार को ठुकरा दिया था।

पलंग पर लेटी मुमताज, शहनाज की बातों में खोयी हुई थी, दिन का तीसरा पहर भी ढलने जा रहा था, और पता नहीं कब से वो इन बातों के बारे में सोच रही थी, बेचैन सी थी वो, कभी इस तरफ करवट लेती तो कभी उस तरफ। उसका दिमाग शहनाज की फर्जी सूरत बना रहा था, उसे साजिद से मालूम हुआ था कि लेखक ने उसे बताया था कि वो एक निहायत खूबसूरत लड़की है, बड़ी मासूम भोली भाली है। मगर वो सफल नहीं हो पा रही थी कि उसकी सूरत का नक्शा क्या हो सकता है।

मगर उसके दिमाग में यह बात हलचल मचा रही थी कि वो खूबसूरत है और लेखक के घर पर रहती है, दिन और रात उसकी वहीं बीतती होगी।

'रात ···', उसने फिर दोहराया इस लब्ज को, और बेचैनी से करवट बदली उसने। रात को उस घर में दो जवाँ बदन नींद की खुमारी में न जाने क्या ख्वाब लेते होंगे, जरूर शहनाज का पलंग लेखक के पलंग के साथ मिला हुआ होता होगा, बिल्कुल करीब २ ! रात की मदहोश तन्हाइयों में वो दोनों एक दूसरे की तरफ मुंह करके प्यार भरी बातें करते होंगे।

और तभी उसने फिर करवट बदली और साथ ही दिमाग ने भी विचार धारा को एक दूसरी तरफ मोड़ दिया, सोचने लगी—नहीं, नहीं, वो प्यार की भला क्या बातें करते होंगे, शहनाज भला प्यार की बात का कहाँ जवाब दे सकती होगी, वो तो बहुत सीरियस रहती होगी, हमेशा अपने आपमें डूबी रहती होगी, अपने बारे में ही सोचती रहती होगी 'मगर···लेखक······', वो उसे इन गम की बातों में न जाने देता होगा, वो जरूर उससे प्यार की बातें करता होगा, और तब यह निश्चित है कि अपनी पिछली यादों में खो जाती होगी, उसे अपनी संगदिल मुहब्बत की याद जरूर आ जाती होगी, और याद आ जाता होगा उसे अपना वो बुजदिल आशिक, जिसके आगोश में वो कभी बे-लिबास होकर मचली होगी, और उसने उसके फूल से नाजुक जिस्म से जी भर के दिल बहलाया होगा, तब यह बात तय है कि उसकी आँखों में आँसू जरूर उभर आते होंगे, मगर ऐसे में··········, ऐसे में लेखक भला खामोश कैसे रह सकता होगा, यह कैसे हो सकता है कि वो आँसू बहा रही हो और वो चुप-चाप लेटा रहे, नहीं, नहीं यह नामुमकिन है, वो बेचैनी से उठकर कमरे में टहलने लगी, न जाने वो परेशान सी क्यों हो रही थी, उसके दिमाग ने बात की अगली कड़ी जोड़ी, तब लेखक आहिस्ता से अपने पलंग से उठकर उसके करीब आता होगा और उसके पास बैठकर उस पर झुकते हुए कहता होगा—क्यों खामख्वाह रोती हो तुम्हें गम किस बात का है, मैं जो हूँ तुम्हारा, इस दुनिया में फिर तुम फिक्र किस बात की करती हो, कहकर वो उसके गालों पर से उलझे बालों को हटाकर उसके गालों पर फिसल आए आँसुओं को प्यार से

पोंछ देता होगा, और वो अपनी पलकें उन्माद से बन्द कर लेती होगी, ऐसे में कितनी खूबसूरत लगती होगी वो, शायद सोते वक्त उसके सीने पर आँचल भी नहीं होता होगा। एक जवान लड़की बेआंचल लेटी हुई हो, उस पर झुका हुआ हो मर्द, और फिर वो जो उसे चाहता हो, ऐसे में भला इतना करीब होकर कौन अपनी धड़कनों पर काबू रख सकता है और झुककर उसके जवाँ सीने पर जरूर उसके सुर्ख रुखसारों को चूम लेता होगा और रात की खामोश तन्हाइयों में वो हल्की सी चुस्की कमरे में खिल उठती होगी।

और मुमताज़ कसक उठी यह बात सोचकर न जाने उसका दिमाग क्यों परेशां हो रहा था। इन बातों को सोचकर, साँसें उसकी खुद की तेज हो गयी थीं जैसे वो खुद इस हालत से गुजरी हो। अभी २ पता नहीं वो क्यों नहीं अपने दिल पर काबू रख सकी, बेचैनी सी महसूस कर रही थी वो, उसे खुद को नहीं मालूम था कि इसकी वजह क्या है।

खामोश सी खड़ी वो एक टक दीवार की तरफ देख रही थी, सूनी दीवार की तरफ। वो चाहती थी कि इन फिजूल बातों से अपने दिमाग को परेशान न करे, मगर वो न चाहने पर भी अपने आपको इन बातों से रिहा नहीं कर पा रही थी, उसके दिमाग में लेखक से ज्यादा शहनाज ने हल चल मचा रखी थी, सोच रही थी मुमताज कि वो किस तरह उसकी जिन्दगी में एक तूफान की तरह आ गयी है, दुनिया की बदनामी के डर से कहाँ वो एक दिन अपने आपको बरबाद करने जा रही थी और कहाँ वो एक इतनी इज्जतदार औरत बन गयी है, वो कितनी खुशनसीब है, अगर वो इससे पहले जिन्दा रहती तो लोग उसके नाम पर थूकते, उसकी सूरत से नफरत करते, शायद ही उसे सारी जिन्दगी कोई प्यार के दो लब्ज कहता, मगर आज..., वो लेखक के प्यार की साया में सारी उम्र आराम से गुजारेगी, जब तक इस दुनिया में उस लेखक का नाम रहेगा तब तक लोग उसका नाम भी याद रखेंगे, उसे कोई शहनाज कहकर नहीं पुकारेगा बल्कि लोगबाग उसे लेखक के नाम के आगे मिसेज़ लगा बड़ी इज्जत से उसका नाम लेंगे, जिस भी सोसाइटी में वो जाएगी, उसे लोग अपने हाथों पर उठा लेंगे, इस वास्ते, चूंकि वो दुनिया के एक मशहूर राइटर की बीबी है।

मगर दूसरे ही पल उसने आपसे पूछा आखिर तुम क्यों सोच रही हो उसके बारे में, तुम्हें क्या मतलब है इन बातों से, शहनाज ही नहीं, जो भी उसकी बीबी बनती, उसको यह सब कुछ तो हासिल होना ही था, और आज शहनाज की किस्मत का सितारा बुलन्द था कि वो इतनी इज्जत की हकदार बन गयी है।

और इससे आगे वो चाहती थी कि यह बात यहीं रुक जाए, कुछ मत सोचे वो शहनाज के बारे में। मगर तभी उसके दिल ने एक सवाल पेश कर दिया कि इन सब बातों को तुमने शहनाज के साथ इस वास्ते जोड़ा है न, चूंकि एक दिन तुमने खुद यह सपने अपने लिए सजाए थे, कि तुम्हारी मुहब्बत के परवान चढ़ने पर क्या रंग भरे जाएंगे।

नहीं, नहीं, उसने आपको झिकोर डाला, मुझे अब यह सोचने का कोई हक नहीं है, मुझे ऐसी कोई बात नहीं कहनी चाहिए, उसने घबराकर अपने सीने पर हाथ रख लिया, ऐसा लगा उसे कि जैसे उसकी मायूस-मुहब्बत फिर से रोशन हो उठी हो, और दिल फिर उसी पुराने नगमे की तारों को छेड़ बैठा हो।

नहीं-नहीं. यह सब बेकार की बातें हैं इनके बारे में नहीं सोचना चाहिए, यह मौजू की बातें गुजरे हालातों के साथ दफन हो चुकी हैं, जैसे वो अपने दिल को सहारा देने की कोशिश कर रही थी, वो नहीं चाहती कि दिल का दर्द फिर से हरा हो जाए, मगर वो बेकरार दिल जैसे उलझ सा गया था अपने आपमें, और उसी तरह खामोश खड़ी थी कि दिल भर आया उसका अपनी मुहब्बत की नाकामयाबी पर और सुलगते दिल की वो सर्द सदाएँ नगमे में ढलकर जुबाँ से बह निकलीं, गम के दरिया की बाढ़ को रोकना उसके बस से बाहर हो गया था, वो अपने टूटे दिल का हाल नगमे से बयान कर रही थी अपनी लरजती आवाज से, दुनिया से बेखबर होकर, वो यह भी भूल गयी थी कि उसके बराबर वाले कमरे में आज इतवार होने की वजह से उसके अब्बा हुजूर वहाँ मौजूद हैं।

कोई खुशी का गीत होता तो शायद यह समझ लिया जाता कि बैठे २

यूं ही गुनगुना उठी होगी, मगर वो तड़पता हुआ नगमा और इस तरह दर्द भरी आवाज में गाना, मूड की बात नहीं कही जा सकती थी, और जब पहली ही लाइन उसके अब्बा हुजूर के कानों में पड़ी तो वो चौंक उठे, शायद कोई अपना एकाउन्ट वगैरा चैक कर रहे थे कि उनकी चलती कलम वहीं रुक गयी।

मुमताज जब खामोश हुई तो उसे अपनी इस हालत का फिर भी ख्याल न आया और इसके बाद वो फूट पड़ी, शायद आँसू भी उसके बस से बाहर हो गए थे।

आकर वो पलंग पर औंधी लोट गयी, तकिये में मुंह छुपा लिया उसने।

और करीब इसके पन्द्रह बीस मिनट बाद उसे अपनी इस भूल का अहसास हुआ, तो वो घबरा उठी, ऐसा लगा उसे कि जैसे यह सब एक सपने की तरह गुजरा हो, मगर अफसोस तो इस बात का था कि यह एक सपना नहीं हकीकत थी।

पूछा उसने अपने आपसे, यह सब कैसे हो गया, उसे किसी बात की भी होश नहीं रही, क्या सोचते होंगे उसके अब्बा हुजूर, मायूस मुहब्बत का नगमा और अपने वालिद साहब की मौजूदगी में। उसकी जुबाँ से यह सब बातें कैसे फिसल गयीं, कुछ समझ न सकी वो इन बातों को। और तभी उसके अब्बा हुजूर ने पुकारा—मुमताज! ··· ,

और मुमताज सहम गयी उनकी आवाज सुनकर, घबरा गयी वो, आहिस्ता २ भारी कदमों से वो अपने कमरे से बाहर आयी, और गैलरी में आकर उसने वालिद साहब के कमरे की तरफ रुख किया, दरवाजे पर उसको खड़ो देख उन्होंने कहा—आओ अन्दर आ जाओ, बाहर क्यों खड़ी हो।

मुमताज ने अन्दर आकर देखा, वो कमरे में बेचैनी से टहल रहे थे, उनकी मुमताज की तरफ से पीठ थी, उन्होंने उसी तरह खड़े २ कहा—बैठो मुमताज़, और उसकी तरफ घूमते हुए बोले—मुझे तुमसे कुछ कहना है।

मैं जानती हूं अब्बा हुजूर! कि आप क्या कहना चाहते हैं। मुमताज ने बड़े लहजे स्वर में जवाब दिया, तो उसके अब्बा हुजूर ने एक बार गौर से

अपनी बेटी की तरफ देखा, मगर चेहरे के हाव भाव में अन्तर न आया, कहने लगे—यो तो मैं जानता हूँ कि समझदार को सिर्फ इशारा ही काफी होता है, लेकिन मैं जानना तो यह चाहता हूं कि तुम समझदार होकर भी यह नासमझी की बातें क्यों कर रही हो।

मगर अब मुमताज खामोश थी, सर झुकाए शायद बात पर गौर कर रही थी कोई जवाब न पाकर उन्होंने फिर कहा—मैं तुमसे यह पूछना चाहता हूँ कि आखिर इस तरह हर वक्त उदास और खामोश रहने का सबब क्या है, तुम्हें गम किस बात का है।

'लेकिन मुमताज फिर भी खामोश रही, जवाब देती भी क्या इसका। तब उसके वालिद साहब ने कुछ कड़े स्वर से कहा—अब चुप क्यों बैठी हो, कुछ मैं भी तो सुनूं कि तुम्हारे दिल के वो सुलगते अरमान कौन से थे आखिर कि जिनकी खातिर तुम इस तरह बेतकल्लुफ हो गा रही थीं कि '', कहते २ वो रुक गए, बोले—मैं क्या मिसाल दूं इसके बदले कि कहते हुए भी शर्म आती है।

'टूटे हुए दिल के जजबातों को समझना बहुत मुश्किल होता है, न जाने यह बात कैसे उसकी जुबां से फिसल गयी, तो उसके अब्बा हुजूर कांपती आवाज व रोब से कह उठे—वही तो मैं पूछना चाहता हूँ कि आखिर तुम्हारा दिल टूटा किस बात पर है, क्या तुम्हें रुपये पैसे की कमी है, कौन-सी जरूरत तुम्हारी ऐसी थी कि जिसकी फरमाइश तुमने की हो, और वो हमसे पूरी न हो सकी हो, या तुम्हारे साथ कोई ज्यादती हुई है कि तुम उसके लिए तड़प रही हो, आखिर यह सब क्या मजाक बना रखा है तुमने, सारे घर को तुमने परेशान कर रखा है, ऐसा लगता है जैसे यहाँ मातम मनाया जा रहा हो, किसी का।

मुमताज ने धीरे से सर उठाया, मगर नजर उनसे मिलते ही झुक गयी, इतना कह लेने पर जब उसके वालिद साहब को कोई जवाब न मिला तो उन्होंने फिर बात को आगे बढ़ाया, कहने लगे—अगर मैं गलत नहीं हूँ तो क्या ठीक नहीं कि आज भी तुम उन्हीं बातों को अपने दिल में बिठाए हुए हो जिनका पर्दाफाश एक दिन हो चुका है।

नहीं'', मुमताज ने झट से कहा,

'कैसे नहीं, उन्होंने छूटते ही कहा—बल्कि यह बात भी सच है कि तुम अक्सर उन्हें अपने दिल में दोहराती भी हो।

नहीं, नहीं ! यह झूठ है, मुमताज चीख उठी।

'तब यह गमगीन नगमे इतनी सर्द आवाज में गाना और गाकर फिर खुद ही रो पड़ना किस बात की गवाही हैं।

नहीं—,अब्बा हुजूर नहीं ! यह सब गलत है, मुमताज ने पूरे जोर से कहा।

अगर यह सब झूठ है, तो मुझे यह बताओ कि आखिर तुम्हारा ऐसा कौन सा सगा सम्बन्धी मर गया है जिसके दुःख में तुम यह दिन रात मुहर्रम मनाए बैठी रहती हो, क्या तुम मुझे इतना अनजान समझती हो, मैं कोई छोटा बच्चा नहीं हूँ कि जिसे तुम अपनी बातों से बहला लोगी, मैंने तुम्हारी नजर हर रोज पहचानी है, चाहे यह आज की बात रही हो या कल की।

और मुमताज चुप हो गयी इस बात के आगे।

और फिर से खामोशी को तोड़ते हुए उन्होंने कहा—मुमताज एक बात मैं तुमसे सिर्फ आखिरी बार कहूँगा—, और इस जुमले को कहकर उन्होंने मुमताज की तरफ देखा, कि वो सर उठाए तो यह बात उससे जरा नजर मिला कर कही जाए, मगर जब उसका चेहरा उसी तरह झुका रहा तो उन्होंने अपनी बात पूरी करते हुए कहा—कि अगर तुम आज भी पहले की तरह लेखक को लेकर अपने दिल में मुहब्बत के महल बनाती हो तो मैं समझता हूं कि यह एक सिर्फ गुनाह ही नहीं एक बहुत बड़ा पाप भी है, यही नहीं इस बारे में की गी बात को दोहराना भी तुम्हारे लिए गुनाह है।

और मुमताज सूखे पत्ते की तरह कांप उठी, घबराकर उसने क्षण भर को अपना चेहरा उठाया, मगर एक अपराधी की तरह उसकी निगाह फिर से झुक गई, हल्की २ पसीनें की बूंदें उसके माथे पर शबनम की तरह बिखर उठीं।

उसके कानों ने सुना, हाँ मुमताज यह सचमुच एक बहुत बड़ा पाप है, उस

इंसान के बारे में ऐसी जलील बात सोचना, जिसने तुम्हें अपनी अजीज बहन माना है, मैं समझता हूं इससे बढ़ कर और कोई गुनाह क्या हो सकता है, अपने आपको सम्भालो मुमताज, इन बातों से भला क्या हासिल होगा, बल्कि उलटा अपने ऊपर पाप लेना है, क्या तुम साजिद को लेकर एसी बात सोच सकती हो क्या साजिद...... ।

नहीं अब्बा हुजूर, ऐसा मत कहिए, मुमताज जैसे चीख उठी, और करीब आकर अपने वालिद साहब से लिपट गई, खुदा के लिए और कुछ मत कहिए, मुमताज जैसे कांप सी गई, उसके वालिद साहब ने उसे अपनी बाहों में भर लिया, बेटी की यह हालत देखकर लगता था खुद उनका गला भर आया था, अपने आप को संभालते हुए बोले—क्यों परेशान होती हो मौजू की बातों को लेकर, तुम्हें आखिर अपनी जिन्दगी में गम किस बात का है, हर चाहत को पूरा करने की हर मुमकिन ताकत तुम्हारे पास है लेकिन दुनिया में कुछ बातें ऐसी भी हुआ करती हैं, जिनके आगे किसी का जोर नहीं होता, मुमताज के सर पर हाथ फेरते हुए बोले—तुम्हारे बारे में उसके दिल में क्या था यह मैं भी न समझ सका था, कि उस दरिया दिल में तुम्हारी जगह एक पाक कमल की तरह थी, मगर आज......, कहते २ वो रुक गए एक पल को, कहने लगे—आज उसने एक लड़की को जिस हाल में पनाह दी है, मैं इसके बारे में क्या कह सकता हूं कि उसका दिल कितना महान है, यह खुदा के सिवाय और कोई नहीं बता सकता। कहकर उन्होंने मुमताज को अपने से अलग कर दिया।

'खुदा उसकी मदद करे, उन्होंने एक लम्बी साँस छोड़ते हुए कहा—इस रास्ते पर चलना कोई आसान काम नहीं है।

और इसके बाद मुमताज कमरे से बाहर आ गई, गैलरी में जैसे ही आयी थी, उसकी नजर नीचे हाल में पड़ी, तो देखा उसने कि लेखक और उसकी अम्मी बातें करते हुए उधर ही आ रहे थे, उसने देखा कि लेखक के चेहरे पर किसी किस्म की परेशानी नहीं थी, अभी वे चार या पाँच सीढ़ियाँ ही चढ़े थे कि अचानक उसकी नजर ऊपर उठ गई तो सामने ही गैलरी पर खड़ा मुमताज

से नजरें चार हो गयीं, और मुमताज़ ने झट से अपने दोनों हाथ मुस्कराकर जोड़ दिये, और उसने भी मुस्कराहट से जवाब दिया वहीं से।

करीब आकर उसने मुमताज़ से कहा—"क्यों ?" क्या तबीयत कुछ नाशाद थी कि तुम इस तरह सुस्त दिखाई दे रही हो।

'जी नहीं ! मुमताज़ ने कहा, यूं ही बस सारा दिन घर पर बैठे रहने से आलस छाया रहता है।'

और तभी मुमताज़ के वालिद साहब भी अपने कमरे से बाहर आ गए, उनका सामना होते ही लेखक ने दोनों हाथ जोड़ दिये, और बदले में जवाब देते हुए बोले—तुम सब लोग बाहर क्यों खड़े हो, आओ अन्दर आकर बैठो, और स्वयं वापिस मुड़ कर आगे २ चल दिये।

अन्दर आकर सभी बैठ गये, तो लेखक ने पूछा—शायद साजिद घर पर नहीं है।

तब उसके बराबर में बैठी मुमताज़ की अम्मी कहने लगीं—हाँ, अभी वो तुम्हारे से करीब आध घन्टा पहले बाहर निकला है, आज 'सन्डे' है न, इस वास्ते फुरसत होती है।

और तभी मुमताज़ वहाँ से उठकर जाने लगी, तो लेखक ने कहा—देखो, तुम्हारे इस तरह चुपके से उठकर जाने का मकसद मैं समझ गया हूं।

'तो इसमें भला तकल्लुफ फिर किस बात का है।'

नहीं यह बात नहीं, चाय मैं अभी पी कर आया हूं एक पब्लिशर के यहाँ गया था, तो वहाँ दो तीन अपने साथी और मिल गए थे, तो चाय का दौर बड़े 'हाई स्केल' पर चला फिर वहां।'

मगर यह जानते हैं आप, आज कितने दिनों बाद तशरीफ लाये हो—, मुस्कराहट से बोली।

अरे, तब चाय की भला ऐसी कौन सी बात है, लोग बाग तो दिन में दस २ मरतबा पीते हैं, मुमताज़ के वालिद साहब बोले।

और उसकी खामोशी इकरार बन गई।

मुमताज़ के चले जाने पर उसके वालिद साहब ने गम्भीर आवाज में

कहा—तुम तो इधर कई दिन से आये ही नहीं, मैं तुमसे कहना यह चाहता था कि वो लड़की जो तुम्हारी पनाह में है आजकल, क्या तुमने उसे जिन्दगी भर के लिए अपने जीवन में शामिल कर लेने का आखिरी फैसला कर लिया है।

आपकी इस बारे में क्या राय है, उसने उल्टा सवाल कर दिया।

'मैं भला क्या कह सकता हूं, हमसे ज्यादा सोचने समझने को दिमाग तुम रखते हो।'

लेकिन यह जरूरी नहीं कि मेरा हर कदम सही ही होगा, हो सकता है कि मैंने गलत उठाया हो, आपको दुनियादारी का तजुर्बा है, ऊंच नीच आप मुझसे ज्यादा हद तक पहचानते हैं, शायद हो सकता है कि भले बुरे को पहचानने में कामयाब हो सका होऊं।

कुछ देर के लिए कमरे में खामोशी छा गई।

और इस खामोशी को तोड़ते हुए उन्होंने कहा—तुमने जो यह कदम उठाया है, वो बेशक कहीं बहुत ज्यादा इन्सानियत का है, लेकिन अगर एक आँख से इन्सानियत को देखा जाय तो दूसरी आँख से दुनिया की नजर को पहचानना भी जरूरी होता है, और अगर दुनिया वालों से यह राज छुपा भी लिया जाय, तो अपने लिये तो यह राज कोई राज नहीं होता। इस रास्ते पर चलना सीने पर तीर खाने से कहीं ज्यादा मुश्किल है, इन्सान के लिए जीती मक्खी निगलना बहुत मुश्किल होता है, किसी को अगर यह मालूम हो जाय कि उसकी बीबी शादी से पहले अच्छे चाल चलन की नहीं थी, वो इस बात को अफवाह समझकर अपने आपको धोखे में रख सकता है, लेकिन एक औरत से इस हाल में प्यार करना, कितना मुश्किल काम है, यह बयान करना मेरे बस से बाहर है। दूसरे के बच्चे से प्यार करना कोई हंसी खेल नहीं होता, और फिर उस औरत को अपनी नजर में एक ऊंची जगह देना, उसकी इज्जत करना, शायद न यकीन करने वाली बातें हैं, अगर वो सिर्फ एक गरीब लड़की होती, और तुम्हारी पसन्द में वो सही होती, तो उसे अपना लेने में कोई बुराई नहीं थी, रुपया-पैसा, दहेज ही सब कुछ नहीं होता, बात तो सारी

उम्र प्यार से निभाने की होती है, वह कमियां तो बाद में अपने आप दूर भी की जा सकती हैं, मगर एक दाग को, जिसका पता भी अच्छी तरह हो उसे छुपाकर रखना कोई हंसी खेल नहीं, असलियत जानकर भी उसकी तरफ से आँखें मूंद लेना बहुत मुश्किल होता है।

और लेखक जो अभी तक चुप था, कहने लगा—अगर यह सब बातें मैं निभा लूं, तब तो कोई बुराई नहीं है ?......

तब बुराई तो कोई नहीं, लेकिन निभाना तो इतना आसान नहीं, इन्सान के बदलते रंगों का कुछ पता नहीं होता, फिर यह जिन्दगी भर की बात है, और तुम समझदार हो।

मगर अब मैं अपने फैसले को बदलना नहीं चाहता, लेखक ने बात को ज्यादा बढ़ाना अच्छा न समझा, और उसने अपनी बात को यहीं खत्म कर दिया।

तीनों ही खामोश बैठे थे, बात का कोई 'टॉपिक' ही नहीं सूझ रहा था किसी को।

तभी नौकरानी चाय की तश्तरी लेकर अन्दर आई, रखकर जब वो वापस जाने लगी तो मुमताज़ की अम्मी ने पूछा—मुमताज़ कहाँ रह गई ?

जी, उनकी कोई सहेली आई हैं, नीचे बैठी हैं ड्राइंग रूम में।

कौन, नौशाबा है क्या ?

जी नहीं, कोई और हैं, कभी २ आती हैं वह, उस दिन पार्टी में आई थीं वे, नाम तो याद नहीं मुझे।

अच्छा जाओ तुम, कहकर वो चाय तैयार करने लगीं।

चाय पीने के दौरान में साजिद के अब्बा हुजूर बोले—तुम्हें शायद साजिद ने बताया होगा कि मुमताज़ की सगाई पक्की कर दी है एक जगह।

जी हाँ, कहा तो था, उसने। मगर बताया था कि बातचीत चलाई है अभी तो।

हाँ, बात तो तीन दिन पहले ही तय हुई है, बस आध घण्टा पहले लड़के के वालिद साहब ने फोन किया कि लड़का सूरत से अहमदाबाद जाते वक्त दो

घण्टे के लिए बम्बई में रुकेगा और फिर तीन बजे फिर से 'बाई एयर' रवाना हो जाएगा, इस बीच वो एक बार लड़की को देखना चाहता है, हमारे तो हाथ पाँव ही फूल गये कि सिर्फ आध घण्टे में हम क्या २ करें, बेटी वालों को तो सारी बातें देखनी पड़ती हैं, और वो भी ठीक आध घण्टे में ही सीधे 'एयर-पोर्ट' से इधर ही गये। और फिर एक मुसीबत यह थी कि साजिद भी उस दिन 'आऊट ऑफ स्टेशन' था, तब खैर किसी तरह इन्तजाम कर ही दिया सब।

तब मुझे बुलवा लिया होता, लेखक ने कहा।

मगर बात तो यह थी न दरअसल, कि तुम्हारे घर का पता सिर्फ ड्राइवर और दीनू को पता है, और मजे की बात यह थी कि दीनू छुट्टी पर है आज कल, अपनी बेटी की शादी करने गाँव गया हुआ है और ड्राइवर को लेकर तुम्हारी अम्मी को 'एयर पोर्ट' ले जाना निहायत जरूरी था, एक तरफ तो 'एयर पोर्ट' का रास्ता यहाँ से पच्चीस मिनट से ज्यादा का ही होगा और इधर तुम्हारे घर तक पहुंचने में भी पन्द्रह मिनट मामूली बात है, अब बताओ एक ड्राइवर और दो रास्ते थे, जाये भी तो किधर जाये, और वो हंसकर बोले—सभी इत्तफाक भी एक ही दिन हुआ करते हैं, लेकिन एक बात बाद में दिमाग में आयी कि तुम्हारे नीचे वाले होटल में तुम्हारे नाम फोन करके तुम्हें इत्तिला दी जा सकती थी, मगर जल्दी में तो दिमाग वैसे ही खराब हो जाता है।

तब खैर सब काम सही हो गये न।

हां, वो अच्छी निभ गई थी, मगर शर्म तो आ रही थी न, कि हम घर के तीन के सिवाय और तो कोई था ही नहीं।

और वे लोग काम क्या करते हैं ?

बताया तो है कि लड़के के वालिद तो बम्बई में ही रहते हैं और वे मिलों को 'कॉटन' सप्लाई करते हैं, और लड़का अहमदाबाद में है, अभी पिछले दिनों बड़ा शान्दार होटल खोला है उन्होंने, करीब साठ लाख की लागत लग गयी होगी, और अभी भी 'डवलपमेंट वर्क' चल रहा है, कहते हैं अभी पच्चीस तीस

लाख और लग जायगा, देखोगे उसकी तस्वीर ! कहते हुए वो उठकर अपनी बड़ी सी मेज के पास आये और उसकी ऊपर की दो एक दराजें खोलकर देखीं उन्होंने, पर तस्वीर वहाँ नहीं थी, माथे पर एक क्षण में ही कई बल पड़ गये, जैसे सोच में पड़ गये हों कि शायद कहीं और रख दी हो, 'मगर थी तो इन्हीं दराजों में,' अपने दिल में बुदबुदाते हुए बोले, और साथ ही उन्होंने नीचे वाली बड़ी दराज खोली तो ठिठक गये, तस्वीर तो वहाँ पड़ी थी मगर दराज में रखा हुआ पिस्तौल फिसलकर उस पर आन पड़ा था, झट से उन्होंने हाथ बढ़ाकर तस्वीर उठा ली, और पिस्टल तस्वीर से ढलककर दराज में रह गया, अपने आपको संभालते हुए तेजी से वापिस मुड़े और लेखक की तरफ मुखातिब होते हुए बोले—यह देखो, यह है उसकी तस्वीर।

कॉपी साइज में गले से थोड़ा नीचे तक का 'एनलार्ज' पोज था, देखा उसने, कि एक भरा पूरा सुन्दर चेहरा था, काफी 'एटरेक्टिव परसनेलिटी' दीख रही थी उसकी, चेहरे में एक आकर्षण सा दिखाई दे रहा था।

कैसे लगे हैं तुम्हें ? मुमताज़ की अम्मी ने मुस्कराकर कहा।

बहुत अच्छे हैं, लेखक ने तस्वीर को गौर से देखते हुए कहा—शक्ल सूरत तो बहुत ख़ूब है, और स्वभाव कैसा है यह आप जानते होंगे।

स्वभाव भी बस तुम्हारे जैसा है, वे मुस्करा पड़ीं, जैसी तुम्हारी आदत है न, बस बिल्कुल वही हाल उसका है। उस दिन वो यहाँ आया, तब मुमताज़ तो शर्म से मरी जा रही थी मगर वो मजाक करने से बाज नहीं आया, कहने लगा—शरमा तो इस तरह रही हो जैसे आज के बाद तुम्हारा मुझसे फिर कभी वास्ता ही नहीं पड़ेगा और तब का पता नहीं क्या-क्या कहा होगा, जब कुछ देर के लिए दोनों अकेले में बैठे थे। तभी तो वो आज यहाँ बैठी नहीं हमारे पास, चूंकि उसे पता था कि उसकी सगाई की बात हम जरूर छेड़ेंगे, वरना तुम आओ और वो तुम्हारे पास से इतनी जल्दी भाग जाए यह भला कैसे हो सकता था।

तब शादी भी अब जल्दी ही तय कर दो।

हाँ सोचा तो यही है, अगले महीने की किसी तारीख में बात तय हो

जायगी, मुमताज के वालिद साहब बोले, और घबराओ नहीं तुम भी, अगर तुम्हारी मर्जी उसी लड़की से शादी करने की है तब उसे मैं अपनी बेटी समझकर तुमसे शादी इतनी धूम-धाम से करूंगा कि दुनिया भी देखती रह जायगी।

नहीं मुझे तो आपका बेटा बनना मंजूर है, उसने सर झुकाकर कुछ शर्म से कहा।

तब थोड़ी देर के लिए तुम सिर्फ अपनी अम्मीजान का बेटा बन जाना, चूंकि लड़की की शादी पर बाप का होना ज्यादा मायने रखता है, और बाद में तो दोनों का बाप बन जाऊंगा, कहने को तो कह दिया उन्होंने पर शायद उनका गला रुंध गया था, अपनी आवाज पर काबू रखते हुए बोले —अगर तुम हमारी और अपनी दोनों की मरजी से लड़की पसन्द करते तो वो एक ज्यादा उम्दा बात थी, मगर खैर ! अगर तुम्हारी पसन्दगी इसी में है तो हमारी भी खुशी उसी में है, 'राह से अगर तुमने एक लोहे का जंग लगा टुकड़ा उठा ही लिया है तो उसे लोहा ही समझकर इस्तेमाल मत करना, बल्कि उसे अपने आपको पारस समझकर सोना बना देना' ताकि दुनिया की नजरों में वो अपने आपको गिरा हुआ न समझे, कोई उस पर उंगली न उठा सके, कोई यह कहने की जुर्रत न कर सके, कि दुनिया के उस फेमस राइटर की बीबी..........., नहीं, नहीं, मैं उसके लिए कोई गिरा हुआ लब्ज इस्तेमाल नहीं कर सकता, अपनी बात को पल भर को रोकते हुए बोले— तुमने जो यह कदम उठाया है, यह एक बहुत जिम्मेदारी लिये हुए है, किसी को इस पर यकीन नहीं आ सकता, अगर तुम भी किसी से इस बारे में जिक्र करोगे तो वह यही समझेगा कि शायद तुम पीकर अपने किसी नाविल के प्लॉट की बात कर रहे हो।

कुछ देर को बात का सिलसिला टूट गया इस बात पर आकर।

तब साजिद के अब्बा हुजूर ने बात का रुख बदला, कहने लगे—मुमताज अब तक नहीं आयी नीचे से, देखो तो कौनसी सहेली आई है उसकी।

आई गई तो कोई भी नहीं है, वरना यहाँ तक थोड़ी बहुत भी भला

आवाज न आती, यूं ही नीचे बैठी है शरम के मारे, मुमताज़ की अम्मी जान ने कहा।

तब क्या नौकरानी भी झूठ बोल रही थी, यह बात लेखक ने कही।

तो और क्या, उसे पहले ही समझाकर भेजा होगा उसने, वरना उसकी नाक में दम कर देती, मुमताज़ के वालिद साहब बोले।

मैं देखती हूं जरा, कहकर मुमताज़ की आपा कमरे से बाहर आयीं और गैलरी में आकर उन्होंने मुमताज़ को पुकारा, तो वो मुस्कराती हुई सामने आ गयी, और अम्मी को देखकर सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आने लगी, उसको आता देख वो अन्दर आ गयीं।

जैसे ही मुमताज़ कमरे में दाखिल हुई उसकी अम्मी जान ने पूछा—कौन सी सहेली आयी है तुम्हारी।

और मुमताज झेंप सी गई, अपने गुथे हुए बालों के आखिरी छोर को उंगलियों पर लपेटने खोलने लगी, तो लेखक ने अपने पास खड़ी हुई मुमताज का धीरे से हाथ पकड़कर कहा—शायद इनके खामिद साहब आ गए होंगे और सुनना ही था कि मुमताज़ शरम से लाल सुर्ख हो गयी कि उसके गालों की लाली को उस वक्त गुलाब की पंखुड़ियाँ देख लेतीं तो वो भी शर्म से सर झुका देतीं।

और मुमताज़ ने लेखक के पास बैठते हुए उसके कन्धे से अपना सर लगा लिया।

और उसके ढीलेढाले बँधे बालों ने ढलकर गालों को छुपा लिया, कि कहीं गुलाब की सुर्ख पंखुड़ियां रश्क ही न करने लगें।

२५

मुमताज़ के दिल में शहनाज को देखने की ख्वाहिश रह रह कर मचल रही थी कई दिन से, कैसी है वो यह जानने की उसकी इच्छा थी, उस दिन

जब लेखक उसके यहाँ आया था तो उसने उसका चेहरा देख कर तो यही अन्दाजा लगाया था कि जैसे वो शहनाज की तरफ से पूरी तरह सन्तुष्ट था, उसकी आँखों में ऐसी कोई झलक नहीं दिखाई दे रही थी कि वो इस मामले में कुछ चिन्तित हो। क्या सचमुच शहनाज ने उसके दिल को जीत लिया है। मगर वो कुछ भी इस ओर फैसला नहीं कर पा रही थी।

और इस बात का फैसला करने के लिये वो पलंग से उठकर ड्रेसिंग टेबल के सामने आ गयी। जल्दी से उसने हल्का सा मेकअप किया और नीचे आ गयी।

गैरिज से कार निकाल कर वो लेखक के घर की तरफ चल पड़ी। चलती कार के हल्के-हिचकोलों में उसका दिमाग भी हिचकोले खा रहा था, मंजिल की तरफ हालांकि वो बढ़ रही थी मगर वो उस तक पहुँचने से पहले भी मंजिल के बारे में सोच रही थी।

और वो थी शहनाज !

शहनाज के सिवा उसके दिलो-दिमाग में और कोई न था इस वक्त। कितनी सूरतें बना चुकी थी वो उसकी अपने दिल में, मगर बिना देखे उसे दिल के आयने पर कैसे उतार सकती थी, मगर इससे कहीं ज्यादा वो सोच रही थी कि क्या उसे शहनाज से बात करनी चाहिए, चूंकि वो एक कलंकित औरत है, उसके दामन पर दाग लगा हुआ है, वो एक गिरी हुई औरत है उसके चाँद से माथे पर काला टीका...।

क्या कहा, चाँद से माथे पर......।

चाँद ! वो जैसे दहल गई, उसके अपने ही मुँह से यह बात निकली थी अपनी ही बात पर वो परेशान हो गयी। क्या वो सचमुच चाँद सी होगी... और कार को एक दम ब्रेक लग गयी, चूंकि "क्रासिंग" पर "रैड लाइट" "ऑन" थी, उसके आगे पीछे, बराबर में कितनी ही कारें, स्कूटर, टैक्सियाँ और एक दो डबल स्टोरी की बसें घरर्-घरर् कर रही थीं।

तभी उसकी नजर कार के 'बैक व्यू मिरर' पर पड़ी, उसने जब अपनी सूरत उसमें देखी तो पाया कि जैसे वो कुछ 'नरवश' सी हो गयी थी, मगर

परेशानी किस बात की थी वो यह न समझ पा रही थी, अपने से ही नजरें चार हो जाने पर उसने पाया कि इन आँखों में भी तो उदासी सी है, पता नहीं क्या ढूंढ रही थी अपने आप में।

और तभी उसके कानों में तीन चार कारों के हार्न की आवाज एक साथ पड़ी तो घबरा कर उसने पीछे मुड़ कर देखा तो दो एक टैक्सियाँ और कारें उसके चलने की इन्तजार कर रहे थे, चूंकि सामने ग्रीन लाइट चमक रही थी और साथ ही उसके आगे का 'रश' भी खत्म हो चुका था, अपनी भूल का अहसास उसे हुआ और उसने जल्दी से कार आगे बढ़ा दी।

और तब मंजिल पर ही आकर रुकी।

सड़क के किनारे कार को लगा कर वो धड़कते दिल से सीढ़ियाँ चढ़ने लगी, दरवाजे पर देखा उसने कि एक नयी खूबसूरत सी 'नेम प्लेट' लगी हुई थी लेखक के नाम की। अपने आपको सम्भाल कर उसने दरवाजे पर कार की चाबी से ठक-ठक की तो दूसरे ही क्षण दरवाजा दो हिस्सों में बट गया, और शहनाज से मुमताज़ की नजरें चार हो गयीं, पलकें झपक उठीं उसकी।

और अपने सामने किसी को पा कर शहनाज बड़े अदब से एक ओर हट गयी, यह एक मूक निमन्त्रण था अन्दर आने का।

तब मुमताज़ ने लेखक का नाम दोहराते हुए पूछा क्या घर पर हैं।

'जी……! उसने आहिस्ता से कहा।

और मुमताज ने जैसे ही कदम रखा अन्दर, तो सामने से लेखक भी आता दिखाई दिया उसे, हाथ में शायद कोई किताब थी उसके, उसको सामने पाकर बोला—मुमताज़ तुम! आओ-आओ, और बढ़ कर उसने उसके कन्धे पर बाजू रख ली।

मुमताज़ जब कुर्सी पर बैठ गयी तो उसने देखा कि शहनाज जो दरवाजा बन्द कर वापिस मुड़ी थी……, वो शायद यह सोच रही थी कि वो क्या करे, उसकी इस परेशानी को लेखक भी समझ रहा था, उसने इस हालात को हल किया और शहनाज की तरफ इशारा करते हुए बोला—तुम शायद इन्हें नहीं जानती होगी, यह हैं मेरी बहन मुमताज़!

और बदले में शहनाज का हाथ आदाब के अन्दाज में उठ गया, और मुमताज ने भी उसके चेहरे की तरफ देखते हुए जवाब इस तरह दिया जैसे वो कोई कठपुतली हो, नजर उसकी शहनाज के चेहरे पर थी, वो अवाक् सी बैठी थी आँखें खोले, उसे यकीन न आ रहा था जैसे कि सचमुच शहनाज इतनी खूबसूरत हो सकती है, यह झुकी २ निगाहें, लम्बी स्याह पलकें और उन पर कमान सी मुड़ी हुई पतली २ भौहें, गजब ढा रही थीं, गोरा चिट्टा रंग और गालों की लालिमा तो इतनी सुर्ख थी जैसे लहू उसके रुखसारों में जम सा गया हो, पतले पतले सुर्ख होठों को देख कर उसने अपने होठों को दाँतों तले दबा लिया कि जिसके होंठ बिना लिपिस्टिक के इतने खुबसूरत लग रहे हैं और अगर वो लिपिस्टिक लगा ले तो पता नहीं कितना सितम ढा दें। घने बालों में वो महताब सा चेहरा देख कर शायद मुमताज के दिल में कुछ चुभन सी हुई।

वो सचमुच एक हसीन जल परी सी लग रही थी सादी सी उसने हल्के नीले रंग की साड़ी बाँध रखी थी उस वक्त, और उसी रंग से मिलता जुलता ब्लाउज कसा हुआ था उसके जवान सीने पर। कोई खास मेकअप में भी तो नहीं थी वो..., मगर उसकी वो खूबसूरती...इस सादगी में एक हैरतअंगेज थी।

शहनाज जो पल भर को यहाँ रुकी थी और इस पल भर में ही मुमताज ने उसकी खूबसूरती को आँखों से पी लिया था, मगर लगता था कि घूंट उसके हलक से उतरा बड़ी मुश्किल से था, और जब वो रसोई घर की तरफ बढ़ने लगी तो लेखक ने कहा—देखो, चाय तैयार कर देना।

सुनते ही यह बात मुमताज बोल उठी—क्यों, अभी से रुखसत करना चाहते हैं आप मुझे, कि... ,

अच्छा भई, अभी ठहर जाओ थोड़ी देर को, उसने हँसते हुए शहनाज की तरफ देखते हुए कहा, और शहनाज वहीं ठिठक गयी, बढ़ता हुआ कदम वहीं रुक गया, मगर यह रुके हुए कदम शहनाज के लिए परेशानी बन गए कि अब कदम किधर बढ़ाए जाएं, उसकी इस बात को लेखक भांप गया, उसने धीरे से कहा—सुनो।

आहिस्ता से वो वापिस घूम पड़ी, और जब करीब आ गयी तो लेखक ने कहा---अभी यहाँ बैठ जाओ, थोड़ी देर बाद चाय बना देना।

खामोश खड़ी शहनाज कुछ न बोली जुबां से, और उसकी आज्ञा का पालन करती हुई वो धीरे से उसके बराबर में कुर्सी पर बैठ गयी, और उसके बैठते ही जब मुमताज ने शहनाज को अपने इतना करीब पाया तो ऐसा लगा जैसे रात की रानी की खुश-बू महक उठी हो, उसके खूबसूरत चेहरे में पता नहीं क्या ऐसी कशिश थी कि वो उसे इस तरह निहार रही थी कि जैसे वो उसकी आशिक हो और वो माशूका।

और शहनाज भी इस बात का अहसास कर रही थी अच्छी तरह कि वो उसके चेहरे को बारीकी से देख रही है मगर क्या कह सकती थी, और लेखक भी इस बात को नोट कर रहा था कि मुमताज का ध्यान किस बात में है।

घर तो तुमने अपना अच्छा सजा रखा है, मुमताज ने बात का सिलसिला कायम करते हुए कहा, मगर चेहरा उसका शहनाज की तरफ था, और कहा भी उसने शहनाज से ही था।

'जी .....', ऐसी तो कोई खास बात नहीं है, शहनाज ने कुछ रुक कर धीरे से जवाब दिया, और जब उसकी झुकी पलकें उठीं और निगाहें मुमताज की निगाहों से टकरा गयीं तो पता नहीं इन शराब सी मदहोश निगाहों का सामना मुमताज क्यों नहीं कर पायी, पलकें झपकती हुई उसकी निगाहें झुक गयीं, और इसी तरह झुकी पलकों को बिना उठाए उसने कहा---बल्कि यह कहो कि तुम बहुत खुशनसीब हो जिसे इस घर को संवारने का हक मिला है।

इस बात को शहनाज तो न समझ सकी मगर लेखक समझ गया कि किस मकसद से उसने यह बात कही है, और न समझ सकने की वजह से शहनाज को खामोश हो जाना पड़ा।

और किसी के खामोश हो जाने पर बात का सिलसिला टूट जाता है तब दूसरे के लिए यह बड़ा मुश्किल हो जाता है कि अब वो क्या बात छेड़े, यही हाल इनका था, मुमताज ने पता नहीं किस बात की कड़ी जोड़ी थी कि

शहनाज की खामोशी ने उसे आगे न बढ़ने दिया, तब इस खामोशी को तोड़ते हुए लेखक ने कहा—खुशनसीबी और बदनसीबी कोई अपने हाथ की बात नहीं होती, इन्सान के हाथ में कर्म करना होता है बाकी उसका फल क्या मिलेगा वो यह नहीं कह सकता।

खैर जाने दीजिए इस बात को। हमें क्या लेना देना है इन बातों में सर खपा कर। मुमताज़ ने यह बात शायद इसलिए कही कि वो इसका जवाब नहीं दे सकती थी, या भूली बातों को कुरेदना नहीं चाहती थी।

कहाँ वो रास्ते भर सोचती आ रही थी कि शहनाज से बात करना भी पसन्द नहीं करेगी, और अगर उसने बात की भी तो वो उसका जवाब रूखा ही देगी, एक दम रूखा ताकि वो समझ जाए कि मुमताज उससे बात करना पसन्द नहीं करती, मगर यहाँ आकर उसकी अपनी ही नीयत बदल गई।

शहनाज की इतनी सादगी और भोलेपन में वो खुद खो गयी थी, खामोश पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी हुई थी वो उसके सामने, जिसके चेहरे पर मासूमियत जरूर थी मगर मायूसियत नहीं थी, और मुमताज़ दहल गयी थी उसके चेहरे पर उदासी देख कर, कोई कम गम न था यह उसके लिए, यही बात सोच रही थी मुमताज, कि काश ! अगर उसके साथ ऐसी कोई बात न हुई होती तो कितनी खुशी होती उसके चेहरे पर, हर बात में वो मुस्करा पड़ती, और मुस्कराती जब वो तो पता नहीं कितनी खूबसूरत लगती।

मुमताज ने बात का सिलसिला फिर से जोड़ते हुए कहा—क्या बात है, आप बहुत खामोश सी नजर आती हैं कुछ बात करो, कोई बात पूछो।

आप फरमाइए कुछ, शहनाज ने जबरदस्ती मुस्कराते हुए जवाब दिया।

शायद आपको इन्होंने मेरे बारे में कभी कुछ नहीं बताया।

मगर मैंने पूछा भी तो कभी नहीं, कहकर उसने एक ठंडी साँस छोड़ी, बात को पूरा करते हुए कहने लगी—और इतना हक ही कहाँ है मुझे कि इतनी बातें पूछ सकूं, आवाज कुछ भीग गयी थी उसकी कहते हुए, दर्देदिल को छूना भी तो आसान नहीं होता।

माफ करना, शायद मैंने कोई गलत बात कह दी है मगर इतना जरूर

कहूंगी कि तुम्हें गुजरे हुए हालातों को एक ख्वाब समझकर भुला देना चाहिए, और तुम्हें अपने मौजूदा हालातों पर गौर करना चाहिए।

अपने आपको बहलाने के लिए इन्सान सोचता तो बहुत कुछ है मगर अमल कितना कर पाता है यह वही जान सकता है जिसके साथ कुदरत ने मजाक किया हो, बड़ी गम्भीरता से उसने यह बात कही थी मगर मुमताज जैसे सहम सी गई थी, जैसे यह दास्तान उससे काफी ताल्लुक रखती हो।

फरमाती तो आप ठीक हैं मगर इन्सान अपने आपको बहलाने के लिए क्या नहीं करता, जो चीज उससे छूट जाती है उसको भुलाने के लिए वो उसमें बुराइयाँ ढूंढता है ताकि दिल उसकी तरफ से उदासीन हो जाए ताकि दिल उसके लिए भटकने न पाए।

आपकी इस बात के लिए मैं तहेदिल से अहसान मन्द हूं, शहनाज ने धीरे से जवाब दिया, जैसे उसके लिए मुमताज की बात कोई खास महत्त्व नहीं रखती थी, और दूसरी ओर मुमताज उसके चेहरे की तरफ ही देखे जा रही थी जिसकी वजह से वो कुछ भारीपन महसूस कर रही थी। पता नहीं मुमताज की नजर उसके रुखसारों से क्यों हटने नहीं पा रही थी, उसके काश्मीरी सेब से गालों को देखकर जैसे उसका दिल मचल उठा था उन्हें चूमने को। और सोच रही थी कि लेखक का दिल क्या कभी मचला नहीं होगा इन गुलाब से गालों को चूमने को, भला कैसे रह सका होगा वो इतनी हसीन जवानी को अपने इतना करीब पाकर। जरूर उसने कभी न कभी किसी न किसी बहाने रात की खामोशी में या दिन के उजाले में इन रुखसारों पर अपने तपते होंठ रखे होंगे।

अपने आपको मुमताज की नजरों से बचाने के लिए शहनाज धीरे से उठ आयी वहाँ से। और रसोई घर में चली आई।

और रह गए अब वहाँ मुमताज और लेखक साहब।

वो अभी तक इन दोनों के हाव भावों को देख रहा था गौर से, कि मुमताज की नजरों में क्या है और शहनाज की निगाहें किस तरफ हैं।

क्या आपने शहनाज से हमारे बारे में कभी कुछ नहीं बताया, मुमताज बोली।

'कोई खास नहीं, क्योंकि ऐसी बातें दूसरे का मूड देखकर कही जा सकती है और जब दूसरे सुनने वाले को अपने आपकी बातों से ही फुरसत न मिले तब भला कैसे चर्चा की जा सकती है।

'—टूटे हुए दिल का हाल समझना बहुत मुश्किल होता है' और अगर तुम यह कहतीं कि—, कि औरत के दिल का हाल औरत अच्छी तरह समझ सकती है, तो शायद ज्यादा बेहतर होता।

और अगर मैं यह कहती कि टूटे हुए दिल का हाल वही समझ सकता है अच्छी तरह, जिसके खुद के दिल पर कभी चोट पड़ी हो।

तो यह जानती हो कि इसके लिए कहने वाले का इसके बारे में तजुर्बेकार होना निहायत जरूरी है।

वही तो मैंने भी कही है।

तो क्या तुम्हारा दिल भी कभी टूटा है ?···,

जी···जी नहीं तो, मुमताज जैसे बात की रौ में पकड़ ली गई थी।

जानती हो किसी बात को कहने का दावा वही कर सकता है जिस पर वो बात कभी हो गुजरी हो।

'लेकिन सुनी सुनाई बातों को भी तो किसी बात के एवज में कहा जा सकता है।

और सुनी हुई बात और तजर्बे की बात में कितना फर्क होता है, क्या तुम इस असलियत को भूल जाना चाहती हो।

बस यही बात तो आपकी बुरी है, कि आप किसी बात को लेकर उस पर बहस करने लग जाते हैं, मुमताज ने अपनी हार न मानते हुए यह बात कह दी, ताकि बात का सिलसिला यहीं टूट जाए वो जानती थी न उसकी आदत कि जितनी वो बात को बढ़ाएगी उसका जवाब उतना ही उलझता चला जाएगा।

और तब लेखक ने भी हंसकर कह दिया—अच्छा, तो लो हम इस बात को यहीं रोक देते हैं। अब तुम कोई नई बात शुरू करो।

और तभी मुमताज ने देखा कि शहनाज रसोई घर से चाय की तश्तरी थामे बाहर निकली और उनकी तरफ बढ़ने को हुई।

मगर चाहे आप इसे मुमताज की खुश किस्मती समझिये या शहनाज के लिए बेशर्म इत्तफाक कि उसकी साड़ी का पल्ला उसके कन्धे से ढलता हुआ बाजू पर आ गया कि उसका वो मदहोश सीना कमर तक बिना किसी पर्दे के स्पष्ट हो गया, और उसको वापिस कन्धे पर रखने के लिए एक हाथ से तश्तरी थामना खतरे से खाली नहीं था, मजबूर होकर उसको पन्द्रह बीस कदम की यह दूरी तय करनी पड़ी, हालांकि लेखक की नजर उसकी तरफ नहीं थी मगर फिर भी उसके गाल शरमा गए, लेकिन पता नहीं मुमताज की नजर क्यों वहीं टिकी रही, उसके कसमसाते जवाँ उरोजों से उसने नजर क्यों नहीं हटायी।

उसे अपने कालिज के जमाने की बात याद आ गयी कि लड़कियाँ उससे कहा करती थीं कि मुमताज तुम्हारे उरोजों को देखकर तो खुदा का दिल भी जलता होगा, कितनी खूबसूरती है इनके उठान में। पर आज उसे लगा उसे कि शहनाज के उरोजों की गोलाई और उठान उसके उरोजों से कहीं ज्यादा हसीं हैं।

'—पता नहीं लड़कियाँ भी क्यों छोटी-छोटी बातों को लेकर तुलना करती हैं।

और जब शहनाज ने तश्तरी मेज पर रख दी तो लेखक ने झट से कहा—तीसरा कप क्यों नहीं लाईं।

जी, मैं थोड़ी देर ठहर कर पी लूंगी, और उसने तश्तरी से चायदानी और दो कप प्लेट उठा कर मेज पर रख दिये।

'क्यों—' ?

'अभी जी नहीं है पीने का।

मगर जब मेहमाँ के साथ मेजबाँ ही मेहरबाँ नहीं होता तब तुम जानती हो, मेहमान क्या समझते हैं……?

तो क्या हमारे साथ चाय पीने में तुम्हारी कोई हतक हो जाएगी, मुमताज ने भी झट से सवाल कर दिया।

और शहनाज ने भी मुमताज की बात का जवाब पहले देते हुए कहा—

मैं तो एक नाचीज हूँ बल्कि डरती हूं कि कहीं आपकी शान में न कोई हलक हो जाए मुझ से, कहते कहते उसका गला भर आया और इस जजबात को जज्ब करने के लिए उसने मुँह दूसरी तरफ फेर लिया, मगर वो आँसू दिल की जुबाँ बन गए, चाह कर भी वो अपने आप को न रोक सकी ।

'आखिर यह क्या नादानी है, उठने को लेखक ने कुर्सी को पीछे खिसकाया, मगर उससे पहले मुमताज शहनाज तक पहुँच चुकी थी, उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए उसे अपनी ओर किया मुमताज ने, कहने लगी—क्या हमें तुम पराया समझती हो, और उसके चेहरे पर से उसके हाथ को हटाते हुए मुमताज ने कहा—क्यों अपना दिल छोटा करती हो, रोने से क्या मिलेगा आखिर ! और फिर तुम्हें गम किस बात का है, कहते हुए उसने शहनाज का चेहरा अपने कन्धे से लगा लिया और प्यार से उसके गालों पर ढल आए अश्कों को अपनी हथेली से पोंछ दिया ।

आखिर छू ही लिया उसने शहनाज के गालों को,

उसके तपते सुर्ख रुख़सारों को !

इस तरह प्यार से उसने शहनाज के नर्मगालों पर हाथ फेर ही लिए ।

'—मगर शहनाज बेचारी न समझ सकी इस बात को ।

किसी के दिल में क्या है जानना बड़ा मुश्किल होता है ।

मालूम नहीं दिन में एक बार तो जरूर रोना होता है इसे, लेखक ने फिर से कुर्सी पर बैठते हुए कहा, कितनी बार समझाया है कि इससे सेहत पर बुरा असर पड़ता है, मगर पता नहीं फिर भी क्यों सोच नहीं आता इस बात पर ।

शहनाज को बिठाते हुए मुमताज ने कहा—बैठो तुम, मैं कप लेकर आती हूं, कह कर वो रसोई घर में चली गई और जा कर एक कप प्लेट उठा लाई ।

तीनों प्यालों में चाय उंडेल कर मुमताज ने कहा लो पियो, और शहनाज ने प्याला अपनी ओर खिसका लिया ।

तीनों ही चुपचाप चाय की चुस्कियाँ लेने लगे ।

चाय पीने के बाद तकरीबन पन्द्रह बीस मिनट और बैठी होगी मुमताज वहाँ, मगर कोई खास बात चीत न हुई ।

तब उसने उठते हुए कहा, अच्छा इजाजत दें अब ।

इतनी जल्दी ! यह स्वर शहनाज का था ।

काफी देर हो गई है, फिर यहाँ का चक्कर तो लग ही जाता है, कभी भूले से तो कभी चाहते हुए ।

आज तक कितने सौ मरतबा आ चुकी हो इधर, जरा बताना तो, पूछा लेखक ने ।

'फिर कभी गिन कर बताऊँगी, मुमताज ने हँस कर बात उड़ा दी ।

अच्छा शहनाज ! फिर मिलेंगे कभी, और तुम कभी आ जाना उधर, अगर अपना घर समझो तो ।

'..........'

क्यों, आओगी न ?

'कोशिश करूँगी,

बिना और कुछ कहे मुमताज़ ने एक बार उसके झुके चेहरे की तरफ देखा और फिर सीढ़ियों की तरफ बढ़ गई, पीछे-पीछे उसके लेखक भी सीढ़ियाँ उतर गया ।

दो चार मिनट को मुमताज और लेखक की गुफ्तगू हुई कार के पास खड़े हुए, और फिर इजाजत लेती हुई मुमताज कार में बैठ गयी ।

और जब नजरों से गायब हो गयी तो वो ऊपर चला आया ।

और जब पांच सात मिनट तक भी रसोई घर से कोई आहट न हुई तो उसने शहनाज का नाम लेकर पुकारा ।

मगर जब जवाब नदारत रहा तो वो किचिन की तरफ बढ़ा तो देखा उसने कि शहनाज दीवार से सर लगाये बैठी थी और उसकी आवाज को सुन कर हिलने की कोशिश कर रही थी ।

क्या हो गया है तुम्हें, उसने करीब आकर उसका कन्धा हिलाया ।

कुछ नहीं यूँ ही बैठे २ सर चकरा गया था जरा,

कितनी बार कहा है कि अपना ख्याल रखा करो, मगर तुम हो कि ध्यान ही नहीं देतीं, कह कर उसने बाजू पकड़ कर उठाया उसे, और सहारा देकर 'उसके' कमरे तक लाया उसे ।

बिस्तर पर लिटा कर उसे, कहने लगा---आराम करो तुम, यह प्यालियाँ-प्यालियाँ मैं धो लूंगा।

नहीं-नहीं आप रहने दें शहनाज ने जाते हुए का हाथ पकड़ लिया, कहने लगी---मैं अभी थोड़ी देर में उठ कर अपने आप सब निपटा लूंगी......,

२६

सुनहरी सांझ ढल चुकी थी, और रात अपने पंख-पसारने को तैयार थी, दूर आसमान में कहीं कहीं बादल के सफेद टुकड़े तैर रहे थे, जैसे वो अपने साथियों से बिछुड़ गए हों. अंधेरे का अहसास पाते ही शहनाज ने लाइट ऑन कर दी।

अकेली बैठी थी घर में उस वक्त, मगर ख्यालों से घिरी हुई थी, यूं तो वैसे भी सोचने की धारा इन्सान को कभी भी तन्हा नहीं होने देती, और किसी ने इन्हें रहनुमा ही बना लिया हो तो यही भी अपनी पूरी हमदर्दी दिखाते हैं उसके साथ। और शहनाज ने भी शायद ख्यालों के संग दोस्ती कर ली थी, हर वक्त कुछ न कुछ सोचती ही रहती अपनी जिन्दगी के बारे में, कि कितनी अजीब है यह किस्मत भी, कहाँ से कहाँ ले आई, उसने तो पतवार छोड़ कर अपनी डगमगाती कश्ती को तूफानों के हवाले कर दिया था और खुद आँखें मूंद ली थीं कि इस भयंकर तूफान को वो देख न सके और डगमगाती कश्ती तूफानों की लपेट में आकर लहरों में खो जाए। मगर क्या जानती थी वो कि सागर से सुलह न करके सही सलामत संभल कर उसकी संगेदिल सफीना साहिल पर आ लगेगी।

उठ कर वो खिड़की के करीब आ गई जहाँ से जमीं का नजारा भी दीख रहा था और आसमान का भी, सड़क पर आने जाने वाले अपने आप में मस्त अपनी मंजिल की तरफ बढ़े जा रहे थे, किसी को क्या लेना देना है दूसरे के

चेहरे पर झांक कर कि परेशानी है या पशेमानी। और तभी उसकी नजर आसमान की तरफ उठ गयीं, जहाँ कितने ही सितारे खामोशी से झिलमिला रहे थे, और देख कर उन्हें, उसने एक ठन्डी सांस ली, शायद सोच रही थी कि उसकी किस्मत का सितारा भी इन्हीं सितारों में था कहीं इधर-उधर, मगर अब न जाने टूट कर कहाँ छिटक गया होगा, लेकिन उसने अपने नये सितारे को खोज निकालने की कोशिश नहीं की और खिड़की पर पर्दा खींच दिया, पलट कर दीवार से खड़ी वो कमरे की चार दीवारी को देख रही थी गौर से टकटकी लगाए, जिसमें वो सुरक्षित थी, जहाँ रह कर उसकी तरफ कोई उंगली नहीं उठा सकता, कोई उसको बुरी निगाह से नहीं देख सकता. कोई यह नहीं कह सकता कि वो एक कलंकित औरत है चूंकि उसके पाप छुपाने वाला कोई है, उसके दागी-दामन पर अपना पाक दामन फैलाने वाला कोई हमदर्द उसके साथ है..., मगर वो हमदर्द जिसने उसके दाग को धोने की जिम्मेदारी ली है, जो उससे यह कहता है कि तुमने कोई गुनाह नहीं किया, उसके बारे में सोच कर वो परेशान हो उठती कि उसकी जिन्दगी बचाने की खातिर वो अपनी जिन्दगी कुरबान करने को तैयार है, यह सोच कर उसकी आंखें भर आयीं और दिल पिघल गया, गालों से ढलते हुए दो बेजुबार आँसू जमीन पर गिर पड़े, और वो दीवार से उसी तरह लगी खड़ी रही, कमरे के सन्नाटा और दिल की खामोशी को इक गम से लदे गीत ने तोड़ दिया, पता नहीं कैसे उसके दिल से फूट पड़ा था यह रंजेगम का चश्मा. दिल की गहराइयों में डूबी हुई वो भीगी सदाएं उसकी जुबाँ से इस तरह बेहोशी से निकल रही थीं जैसे रात की खामोशी में शान्त होकर नदी मदहोशी से बहती है, गा रही थी वो ।

अब तमन्ना नहीं सीने से लगाने की तुझे,
अपने दुखते हुए पहलू में बिठाने की तुझे।
अब न वो शौक है महके हुए बुस्तानों का,
अब न वह रक्स है दहके हुए अरमानों का ॥

आँखों से आँसू बरस रहे थे और दिल के जजबात, जो न जाने कब से

दबे पड़े थे, आज इस कैद से निकल जाना चाहते थे, वो चाहती थी कि और नहीं तो वो कम से कम इन बेजुबां दीवारों से तो अपने दिल का हाल बयान कर ही डाले, ताकि दिल का गम कुछ हलका हो जाए मगर वो नहीं जानती थी कि ये दीवारें बेजुबाँ ही नहीं बेजान भी हैं, कहने वाले कह तो देते हैं कि अब तो पत्थर के सनम पूजा करेंगे ताकि घबराएं तो टकरा भी सकें, मगर शायद असलियत को वो भूल जाना चाहते हैं कि घबरा कर वो पत्थर के सनम से टकराएंगे तो पत्थर के उस देवता का क्या जाएगा, सर तो अपना ही फूटेगा, और वो भी बिना इन बातों पर गौर किये अपना हाले-दिल बयाँ किये जा रही थी ।

और जब फिर से कमरे में खामोशी छा गई तो उसके हम सफर ख्यालों ने फिर उसे अपने परों पर बिठा लिया और उड़ चले उस मंजिले-मकसूद की तरफ जिसका कोई नाम नहीं था, मंजिल पर पहुँचना तो जरा दूर की बात ही समझिये चूंकि सफर ही ऐसा था जो कभी न खत्म होने वाला था ।

तभी धीरे से किवाड़ खुला तो उसने झट से अपनी नजरें उठा कर उधर देखा और जल्दी से उसने अपने आँसू पोंछ लिये, हालांकि आने वाले ने उन्हें देख लिया था मगर फिर भी हर इन्सान दूसरे को धोखा देने की पूरी कोशिश करता है, और उसने भी उसी असूल को अपनाया था, घर के मालिक को आया देख वो धीरे से अपनी मंजिल यानी कि रसोई घर की तरफ बढ़ने लगी, और अभी वो दो चार कदम ही आगे बढ़ी थी कि लेखक ने आहिस्ता से कहा—

क्या सोच रही थीं तुम······इस तरह खड़ी हुई,

'जी—, '·········' 'खाना ले आऊं आपके लिए, शहनाज ने कुछ दबी हुई और कुछ सहमी आवाज में कहा ।

'—मगर यह तो मेरी बात का जवाब नहीं है, कहने के साथ-साथ वो बिस्तर पर बैठ गया, और जूते के फीते खोलने लगा, फीते खोलने के दौरान उसने सर उठा कर देखा, शहनाज उसी तरह खड़ी थी, और तब जूते उतार कर वो बिस्तर पर लेटते हुए बोला—'सुनो—।

और वो बोझिल कदमों से उसके करीब आ गयी।

'—बैठो जरा, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।

जी······, वो कुछ संभल कर बोली—पहले आप खाना खा लीजिए।

फिर वही बात है न, यह कोई होटल तो नहीं है जहाँ खाली नहीं बैठा जा सकता, और फिर जब 'बटलर' और 'वेटर' तुम हो। तो हमें फिक्र किस बात की है, बैठो न।

और वो धीरे से उसके पास फर्श पर बैठ गयी।

और तब उसने उसकी तरफ मुंह करते हुए उसके सर पर हाथ रख कर कहा—मुझे वो दिन, वो घड़ी बता दो तुम, जिस रोज तुम्हारे चेहरे पर मैं इस सोजे-गम की जगह रौनके-बहार देखूंगा, आखिर इस तरह खामोश चुपचाप से रहने का मकसद क्या है।

और जवाब में शहनाज की आँखों से दो मोती आहिस्ता से उसके गालों पर इस तरह ढल आए जैसे गुलाब की नर्म पंखुड़ियों पर से शबनम के कतरे फिसल पड़े हों।

शहनाज! उसने धीरे से उसका नाम पुकारा, कहने लगा—मैं अभी इतना समझदार नहीं हो पाया कि अपने सवाल के जवाब का मतलब मैं इन आँसुओं से समझ सकूँ, अगर तुम अपनी जुबाँ से कहो तो मैं शायद कुछ समझ भी सकूं, बोलो न।

तब शहनाज ने आहिस्ता से अपना चेहरा उठाया, और उससे नजर कुछ मिलते ही उसने अपनी पलकों को और बन्द कर लिया, कि रही सही आंसू की कैद बूंदें भी ढल कर गालों पर से फिसल गयीं।

शहनाज, सम्भालो तुम अपने आपको, दिल की बातों में बह कर अपने कीमती आँसू न बहाओ, कुछ भी गौर मत करो इस दिल की बातों पर, समझ लो कि यह पत्थर का है।

काश! कि यह पत्थर का ही होता, शहनाज ने भरे गले से कहा।

'पत्थर का दिल होता नहीं, बनाया जाता है, तुम भी अपने दिल को पत्थर का बना लो, तब ये ख्याल जो तुम्हें परेशान करते हैं, टकरा कर

पत्थर दिल से फिर कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा, दुनिया में रह कर इन्सान को बहुत कुछ करना पड़ता है, कभी गम के बादल मंडराते हैं तो कभी खुशियों की बहारें भी छाती हैं, धूप-छांव, अंधेरा-उजाला तो इस दुनिया की रीति है, मगर तुम हो कि सिर्फ यही सोच बैठी हो कि रात के अंधेरे के बाद दिन का उजाला अब कभी दिखाई नहीं देगा, और देखो, मैं एक बात फिर से तुम्हें कहना चाहता हूँ कि तुम हर वक्त आँसू न बहाया करो, यह मोती बहुत कीमती होते हैं, और फिर तुम्हें अपनी सेहत का हर तरह से ख्याल रखना चाहिए''''''।

और इसके बाद शहनाज कुछ न बोली, उठ कर वहाँ से रसोई में चली गयी।

और आखिरी पर खाने की थाली लिए वो उसके करीब आयी, उसके हाथ में थाली थमाते हुए बोली, मैं जरा तिपाई उठा लाऊं।

उसने थाली को थामते हुए कहा—और तुम नहीं खाओगी क्या।

मुझे भूख नहीं है इस वक्त, वह तिपाई को लाकर उसके सामने रखते हुए कहने लगी—और फिर रात के खाने के लिए डॉक्टर ने भी मना किया है।

लेकिन पाबन्दी तो नहीं लगाई, कि भूख भी हो, तो भी न खाया जाए।

नहीं सच कहती हूँ मुझे भूख बिल्कुल भी नहीं है।

देखो यह बात ठीक नहीं है शहनाज! खाने की तुम्हें भूख नहीं होती और अगर मैं कह दूं कि दूध पी लेना तो वो तुम्हें अच्छा नहीं लगता, अगर अपना न सही, कम से कम''''''

आप भी तो जिद करते हैं हर बात में, कह कर वो वापिस रसोई में चली गयी।

तब उसने भी फिर कुछ न कहा, और चुपचाप खाना खाने लगा।

खाना खाने के दौरान वो सोच रहा था कि शहनाज के चेहरे का यह वीरानापन कैसे खत्म हो सकता है, उसके चेहरे की यह उदासी रौनक में कैसे बदल सकती है, वह कौन सा तरीका अख्तियार करे कि वो हरदम बुलबुल सी

चहकती रहे। सोचने लगा वो कि वो खूबसूरत तो है ही, साथ ही उसके बोलने के अन्दाज में भी एक बांकापन हैं, और अगर किसी औरत के पास यह दोनों चीजें हों तो फिर उसमें 'अदा' का न होना नामुमकिन है, और यही बात है कि शहनाज को अपने हुस्न पर कल तक नाज जरूर रहा होगा, वो अपने आप पर गरूर भी जरूर करती होगी और उसकी यही अदाएँ दीवानों को बिना तीर के तड़पाती होंगी, और यह सब बातें गलत भी नहीं हो सकतीं, चूंकि कोई मरता उसी पर है, जिसमें कोई अदा होती है, आज चाहे शहनाज अपने आपको लाख बदलने की कोशिश करे मगर नहीं बदल सकती, उसकी यह विचारधारा तब टूटी जब शहनाज ने तिपाई के कोने पर पानी का गिलास लाकर रखा और वो 'टक' से बोल उठा था, उसने धीरे से शहनाज की तरफ नजर उठायी तो देखा कि वो उसकी किसी बात के लिए इन्तजार कर रही थी और साथ ही अपने माथे और गालों पर झुक आयी अपनी पेचदार कड़ियों को संवार रही थी, वो मुस्करा पड़ा दिल ही दिल में कि शहनाज दिन में कितनी ही बार जुल्फों की इन आवारा लटों को गालों की सीमा से बाहर करती है मगर वो फिर बेशर्मी से उसके गालों को चूमने लगती हैं, आखिर उसने उन्हें बीस बरस तक गालों पर झुकाकर बिजली गिराना सिखाया था, अब वो भला इतनी नालायक कैसे हो सकती हैं कि जिस रिहर्सल को वो बीस साल तक करती रही हों उसे बीस दिनों में भूल जाएँ। उसके लाख हटाने पर भी वो फिर झुककर उसके गालों का चुम्बन ले लेती हैं।

बस, अब और कुछ नहीं चाहिए, उसने शहनाज से कहा और गिलास उठाकर उसने मुँह से लगा लिया।

और जब वो बरतन उठाकर जाने लगी तो उसने कहा—जरा माचिस ला देना।

उसके इस जुमले पर शहनाज ने एक नजर उसकी तरफ देखा और फिर निगाहें झुकाकर वहां से चली गई।

और जब उसने माचिस लाकर उसके हाथ पर रखी, तो लेखक ने कहा,

लो लेती ही जाओ, कहते हुए उसने सिगरेट होठों में दबा ली और जलाकर माचिस को वापिस उसके हाथ में रख दिया, मगर न जाने कैसे शहनाज के हाथ में आकर भी माचिस फिसल गई और फर्श पर गिरते ही उसमें बची हुई पन्द्रह बीस तीलियाँ बिखर गयीं।

ओफ ! होऽ····, शहनाज के मुँह से निकल गया और वो झुककर उन्हें उठाने लगी।

तभी न जाने क्यों लेखक का दिल मचल गया, उंगलियों में दबी सिगरेट होठों से लगी रह गयी, जिसकी वजह यह थी कि जब शहनाज माचिस की सींकें बीन रही थी तो थोड़ा झुकी हुई होने की वजह से उसके ब्लाउज के गले के रास्ते से उसके गुलाबी उरोज बिल्कुल स्पष्ट हो गए थे और वो सिगरेट का कश तक खींचना भूलकर उनकी खूबसूरती में खो गया, कितने खूबसूरत हैं इसके उरोज, उसके दिल ने जरूर कहा होगा तभी तो सिगरेट का कश खींचना भी वो भूल गया था, शायद दिल की धड़कनें भी जरूर तेज हो गयी होंगी, चूँकि आखिर उसका दिल भी एक इन्सान की तरह धड़कना जानता था, और वो अपनी नजर को तब तक नहीं उठा सका जब तक कि शहनाज तमाम तीलियाँ चुनकर उठ न खड़ी हुई। उसके चले जाने के बाद भी पल भर तक वो नहीं जान सका कि अभी एक क्षण पहले वो एक रंगीन ख्वाब देख रहा था या एक हकीकत, मगर दोनों ही एक कयामत थी।

लेकिन जो भी हो, वो परेशान हो उठा था, बिस्तर से उठकर वो खड़ा हो गया और सिगरेट का एक काफी लम्बा कश खींचा उसने, पूछने लगा अपने आपसे, क्यों उसने अपनी नजर को वहीं टिका रहने दिया, लेकिन अब क्या हो सकता था, सोचता हुआ वो अपने लिखने की मेज पर आ चुका था।

काफी देर तक वो लिखता रहा और कुछ सोचने को जब उसने अपनी कलम को रोका और दिमाग को ख्याल के पीछे दौड़ाया, तो तभी शहनाज उसकी पीठ पीछे आकर खड़ी हो गयी।

तब उसने धीरे से कहा—तुम अभी तक सोयी नहीं।

और उसने भी आहिस्ता से जवाब दिया—यही मैं आपसे कहने आयी थी कि रात काफी बीत चुकी है और अभी तक आप जाग रहे हैं, कहती हुई वो उसके सामने आ गयी, उसने शहनाज के कहने के अन्दाज पर गौर किया और साथ ही उसके खूबसूरत मुखड़े की तरफ देखा, कहने लगा—लो मैं भी अब तुम्हारे कहने पर बस किये देता हूं।

२७

मालूम नहीं मुमताज़ आज फिर क्यों शहनाज से मिलने को बेचैन रही थी उसकी कार के पहिये उसके दिमाग के ख्यालों की तरह तेजी से घूम रहे थे, मतवाली चाल से कार उसके मस्तिष्क की मंजिल तक पहुंचने को दौड़ रही थी, मगर मुमताज ड्राइव इस तरह कर रही थी जैसे उसने पी रखी हो या वो बेहोशी की हालत में चला रही हो, बस, स्टीयरिंग संभाले वो एक्सीलरेटर को पाँव तले दबाये इस तरह बैठी थी गुमसुम कि जैसे वो खुद भी न जानती हो कि आखिर कार को वो कहाँ ले जाना चाहती है।

और कार जब मंजिल पर आकर रुक गयी तो उसने सर उठाकर देखा कि वो वहीं पहुंच गयी है जहाँ वो पहुंचना चाहती थी, मगर वो यहाँ तक आ कैसे गयी इस बात को न समझ सकी, उसने दिमाग को थोड़ा झटका दिया, और अपने आपको संभालते हुए खुद से ही कहने लगी, होश में आजाओ मुमताज।

कार से उतरकर वो ऊपर आयी, उसने आहिस्ता से दरवाजा खोला और अन्दर चली आई, किसी की आहट का अहसास पाकर शहनाज रसोईघर से बाहर आयी और जब उसने अपने सामने मुमताज को देखा तो कह उठी—'आप......'

मुझे 'आप' नहीं तुम कहा करो शहनाज ! मैं तुम्हारे से कोई इतनी बड़ी तो नहीं हूं।

आप बैठिये तो सही पहले, शिकायतें वह बाद में कर लेना, कहते हुए उसने कुर्सी उसके आगे बढ़ानी चाही तो मुमताज ने कहा—नहीं, नहीं, रहने दो मैं यहीं बैठ जाऊंगी, कहने के साथ साथ वो बिस्तर पर बैठ गई।

शायद भाई साहब घर पर नहीं हैं, मुमताज ने लेखक को सम्बोधित करते हुए पूछा, पता नहीं क्यों झिझक गयी थी यह लब्ज दोहराते वक्त।

जी, अभी आध घण्टा पहले ही गये हैं बाहर, कहकर शहनाज उसी तरह खड़ी रही और न ही मुमताज ने उसे बैठने को कहा, एक बड़ी अजीब हालत में घिर गई शहनाज, मुमताज भी खामोश थी और शहनाज भी, न वो कुछ कह सकी न उसने कुछ कहा, शहनाज इस बात की इन्तजार कर रही थी कि मुमताज कुछ कहे तो वो भी इस हालत से राहत पाये। मगर लगता था जैसे कि मुमताज सोच रही थी कि बात क्या करे।

और जब कुछ देर तक मुमताज कुछ न बोली तो शहनाज ने कहा—आप चाय तो पियेंगी न।

क्या……? मुमताज ने चौंककर पूछा, मगर दूसरे ही पल संभलकर कहने लगी—उन्हें आ लेने दो, साथ ही पी लेंगे।

कुछ कह नहीं सकती कि कब लौटेंगे वो, फिर चाय की ऐसी कौनसी बात है, और बन जायगी, कहकर वो रसोई में चली गई।

और मुमताज पता नहीं किस बात के पीछे दौड़ रही थी, जो यूं खोयी खोयी सी बैठी थी, अव्वल तो वो इस बात पर गौर कर रही थी कि वो यहाँ तक आ कैसे गई है, कौन सी ऐसी ताकत थी जो उसे यहाँ तक खींच लायी है, क्या शहनाज की खूबसूरती ने उसे बेचैन कर दिया कि वो खिंची चली आई है, उसने अपने आपसे पूछा, क्या शहनाज की सूरत देखने को उसका दिल मचल उठा था, या उससे बात करने को बेताब हो उठी थी, लेकिन वो कोई फैसला नहीं कर पायी, उसका दिल इस बात को मानने से इंकार भी कर रहा था और इकरार भी, पता नहीं इसी तरह ख्यालों में डूबी वो क्या क्या सोच रही थी।

कि तभी शहनाज ने चाय लाकर मेज पर रख दी और कहने लगी—आइये !

ओह ! मुमताज ने हौले से कहा और कुर्सी पर बैठ गयी आकर के।

और शहनाज ने जैसे ही उसके सामने वाली कुर्सी संभाली, मुमताज़ ने थोड़ा मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा—बड़ी जल्दी तैयार कर लायी हो चाय।

दो कप तो सारे ही बनाने थे, कितनी देर लग जाती भला।

और अगर दोनों कप मैं ही पी लूं तो·····? तुम·····?

तब भी कोई हर्ज की बात नहीं, और वैसे भी मैंने अपने लिये तो आपका साथ देने को बनाई है वरना·····शाम की चाय मैं कम ही पीती हूं।

'क्यों ?'

सकपका गई शहनाज इस 'क्यों' पर, मगर संभलकर बोली—'बस वैसे ही।'

और तभी मुमताज की नजर सामने शैल्फ पर रखे 'ग्लूकोज' और 'बौर्न विटा' के डिब्बों से टकरा गयी और टकराते ही झुक गयी तो नजरों का सामना शहनाज के हाथों से हो गया जो केतली से चाय प्यालों में उंडेल रहे थे, मगर उसकी गोरी २ पतली कलाई, जिस पर करीब नौ दस पतली २ खूबसूरत काले कांच की चूड़ियां चमक रहीं थीं।

कितनी खूबसूरत लग रही थी उसकी कलाई।

काली-काली चूड़ियाँ और खूबसूरत गोरी सी कलाई।

ऐसी लग रही थीं वे, जैसे गोरे गोरे गाल पर काला तिल,

'—मुमताज का दिल जैसे दहल उठा।

'पता नहीं क्यों'

ऐसा लगा उसे, जैसे कि उसका दिल जल उठा हो और उसमें से बिल्कुल इसी तरह के काले रंग का धुआँ निकल पड़ा हो।

उसने एक नजर शहनाज के चेहरे पर डाली और अचानक उसकी नजर भी उठ गयी थी उस वक्त, तो दोनों की नजरें आपस में मिलते ही झुक गयीं।

शहनाज ने चाय का प्याला उसके सामने करते हुए धीरे से कहा—लीजिए, और झुक कर मुमताज ने चाय की एक चुस्की ले ली और बड़ी धीमी आवाज में बोली—एक बात पूछूं तुमसे शहनाज !

किसी के बात पूछने पर इस अन्दाज को पहले पेश करने पर हर आदमी घबरा जाता है कि पता नहीं क्या पूछना चाहता है दूसरा। यही हाल उसका था, चाहे वो बात अगर बिना इस जुमले को पहले पेश किये कह दी जाए तो इतनी खतरनाक महसूस नहीं होती जितनी कि अब लगने लगती है, शहनाज ने भी कुछ हिचकते हुए कहा—जी......।

तो मुमताज बोली—वो तुम्हें प्यार तो करते हैं न......?

एक पल तो ठिठक गयी वो, फिर धीरे से कहने लगी—कह नहीं सकती इस बारे में, मगर हाँ, इतना जरूर जानती हूं कि वो मेरी इज्जत बहुत करते हैं जिसका बदला पता नहीं मैं कैसे चुकाऊंगी। शहनाज ने यह बात अपनी दृष्टि स्थिर रखते हुए बड़े अन्दाज से कही।

देखो मेरी बात का बुरा मत मानना, मैंने तो यूं ही पूछा था तुमसे।

लेकिन अब मेरे बुरा मानने और न मानने से क्या होता है, आपने तो पूछ ही लिया है न ! लेकिन देखिए आप भी 'फील' मत कीजियेगा, मैंने भी आपसे यूं ही कह दिया है।

और मुमताज को यूं लगा जैसे शहनाज ने उसके मुँह पर तमाचा दे मारा हो और वो इतनी सहम गई हो कि गाल भी न सहला सकी हो, उसकी सांस तेज हो गयी यह बात सुन कर मगर कुछ कह न सकी, और होठों को इस खामोशी की सजा देने के लिए उसने उन्हें गर्म चाय में डुबो दिया।

और अगर आपको एतराज न हो तो मैं भी आपसे एक सवाल पूछना चाहती हूं शहनाज ने यह बात जब बड़े अन्दाज से कही तो मुमताज की नजरें एक दम उसकी तरफ उठ गयीं और साथ ही उसकी आँखों में 'क्या' का भाव स्पष्ट हो रहा था, मगर हल्क से यह लब्ज दोहरा न सकी वो जैसे उसका गला रुंध गया हो।

तब दोबारा शहनाज ने इस खामोशी को तोड़ते हुए कहा—पूछना यह चाहती थी आपसे कि कहीं आप मुझसे नफरत तो नहीं करतीं।"

सुना जब मुमताज़ ने तो नजर को बिना उठाए कहने लगी—"क्यों ?"

'माफ करना, कहने के साथ-साथ शहनाज कुर्सी पर से खड़ी हो गयी, और कहने लगी—मैंने आपसे अपने सवाल का जवाब मांगा है न कि सवाल के बदले सवाल।

और अगर मैं कोई जवाब न दूं तो……?

तो, साफ जाहिर है कि खामोशी का मतलब इकरार से होता है, क्या यह सवाल इतना आसान है कि जिसका जवाब सिर्फ 'हां' या 'ना' में महज एक पल में दिया जा सकता है, दिल की गहराइयों में इन्सान के जज़बात हमेशा मचलते रहते हैं चाहे वो प्यार के हों या नफरत के। तब इस सवाल के जवाब से पेश्तर उल्टा सवाल कर देना, साफ जाहिर है कि आप सीधा जवाब न देकर उसे घुमा फिराकर कहना चाहती हैं।

नहीं शहनाज, मेरा मतलब यह नहीं है, अगर ऐसी बात होती तो मैं भला यहाँ आती क्यों—, मुमताज़ ने उसी तरह बैठे बैठे कहा।

लेकिन क्या सबूत है कि आप मुझ ही से मिलने आयी हैं, आपके भाईजान भी तो इसी घर में रहते हैं।

तुम हर बात का मतलब उल्टा लगा रही हो शहनाज ! मुमताज़ ने तड़प कर उसकी ओर घूमते हुए कहा—मैं तुम्हें क्या बताऊं कि मेरे दिल में तुम्हारे प्रति क्या क्या विचार हैं, मैं तुम्हें क्या समझती हूं। तुम यकीन नहीं करोगी, आज सुबह से ही मैं बेचैन सी हो रही थी, जानती हो किसके लिए……? सिर्फ तुमसे मिलने को।

आपने जो भी कहा है सब सच हो सकता है मगर यह सब बातें मेरे सवाल का जवाब नहीं कही जा सकतीं।

आखिर तुमने ऐसा सवाल किया ही क्यों है, मुझे तुम ही बता दो कि तुम्हारे अपने ही सवाल के लिए तुम मुझसे क्या उम्मीद रखती हो।

'अगर इतना अन्दाज लगाने का मादा मुझ में होता तो यह सवाल ही क्यों करती।

और……अगर तुम अपने इस सवाल का जवाब जानना ही चाहती हो,

तो इस बात पर यकीन करना शहनाज ! कि मैं ही नहीं, हमारे घर का हर शख्स तुमसे हमदर्दी रखता है, लेकिन पता नहीं तुममें क्या कशिश है कि मुझे तुमसे एक खास मुहब्बत सी हो गयी है, मैं जब तुमसे पहली बार मिली थी यानी कि इससे पहले जब हमारी मुलाक़ात हुई तब न जाने क्यों तुम्हें देखकर मैं अपने आपमें खो गई थी, ऐसा लगा कि जैसे हमारी इससे पहले भी कभी मुलाक़ात हुई है या मैंने तुम्हें पहले भी कहीं देखा है, मगर याद नहीं आता। लेकिन शहनाज, मैं पूछना यह चाहती हूं कि तुमने ऐसा सवाल पूछा किस मकसद से था ?

जैसे आपने पूछा था, वैसे ही मैंने भी आपसे कह दिया।

नहीं शहनाज ! मेरा मकसद कुछ और था, मैंने अपना सवाल इसलिए किया था कि दुनिया में हमदर्दी और प्यार दो अलग-अलग चीजें हैं, कहीं ऐसा तो नहीं है कि वो तुमसे सिर्फ हमदर्दी ही रखते हों, चूंकि मदद करना और मुहब्बत करना एक चीज नहीं है, मगर तुम उल्टा मुझ से सवाल कर बैठीं जिसका जवाब तुम जानती भी थीं, ऐसा मैं दावे से कह सकती थी, कहते हुए मुमताज उसके करीब आ गयी और उसकी कमर में अपनी बाहें डालकर उसे अपने से लगाते हुए बोली---लगता है तुम नाराज बहुत जल्दी हो जाती हो, कहो तो इसके लिए माफी मांग लूँ।

और मुस्करा पड़ी शहनाज उसकी इस बात पर, अपने आपको उसकी बाहों में पाकर कुछ शरमा भी गई, कहने लगी---क्या माफी भी पूछकर माँगी जाती है।

क्यों नहीं, हो सकता है कि मैं तुमसे माफी माँगू और तुम मुआफ न करो तब मुझे खामख्वाह में माफी भी माँगनी पड़े कहते हुए उसने अपना बन्धन थोड़ा और कस लिया, शहनाज के नर्म बदन को अपनी बाहों में कसने से पता नहीं उसे क्या मजा आ रहा था, उसके जिस्म से गुलाब की तरह खुशबू महक रही थी और उसके सुर्ख तपते हुए रुखसारों को अपने इतना करीब देखकर तो वो मरी जा रही थी जैसे, दिल तो मचल रहा था उसका कि वो उसके गुलाबी गालों और नर्म रुखसारों को चूम ले और फिर अपने होंठ उसके खूबसूरत पतले

पतले सुर्ख लबों पर रख दे, बिल्कुल आशिक की तरह, और फिर पागलों की तरह उसके चेहरे पर बेशुमार प्यार की मोहरें लगा दे, मगर·····कैसे ?

इसका कोई जवाब नहीं था उसके पास, उसने हल्के से उसे अपनी बाहों से जुदा कर दिया कि कहीं उसका दिल सचमुच ही मचल न उठे।

उससे अलग होते ही शहनाज ने चाय के बर्तन सम्भाले और स्टोवेयर की तरफ चल पड़ी, और कमरे में मुमताज अकेली रह गयी, उसकी नजर फिर बौउर्न विटा और 'ग्लूकोज' के डिब्बों से टकरा गयी, साथ ही अगले पल उसकी आँखों के आगे शहनाज की गोरी-गोरी कलाइयाँ झूल उठीं और उन पर लिपटी हुई काली-काली कांच की कीमती चमकदार चूड़ियाँ चमक उठीं, 'यह सब प्यार नहीं तो क्या है, वो खुद से कह उठी, कितनी खुशकिस्मत है शहनाज, जिसे उसका प्यार मिला है और इसके बाद कुछ ही दिनों में शादी की घोषणा जब समाज की नजरों में हो जाएगी तो उसे असीम शौहरत भी मिल जाएगी, न जाने कितनी ही पत्र-पत्रिकाओं में उनके एक साथ चित्र छपेंगे, वो कोई मामूली राइटर नहीं है, अपने थोड़े ही समय में उसने काफी शौहरत हासिल कर ली है, उसकी कई हिन्दी पुस्तकों का उर्दू और अंग्रेजी में तर्जुमा हो चुका है, उसका लिखने का एक अलग ही स्टाइल है जिसकी वजह से पब्लिक उसे लाइक करती है। तब शादी हो जाने पर भला उसकी बीवी को दुनिया न जाने, यह भला कैसे हो सकता है, वो स्वयं भी उसकी तारीफ अपने किसी नाविल अथवा कहानी में किसी 'पाईन्ट' को ले कर देगा, कि वो आधी-आधी रात तक उसके साथ जागती है, उसे चाय बनाकर देती है, उसे बार-बार सो जाने को कहती वगैरा-वगैरा। तभी शहनाज कमरे में दाखिल हुई तो मुमताज ने पूछा—कब तक आएंगे वे, इतनी देर तो हो गयी है, अब अगर तुम इजाजत दो तो मैं चलने की तैयारी करूं।

लेकिन अभी से···, अभी तो आकर ढंग से बैठी ही नहीं और चलने की तैयारी पहले से ही करने लगी हो, क्यों कुछ काम है क्या ?

नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं, कहने के साथ-साथ फिर से मुमताज कुर्सी पर बैठ गयी, तो शहनाज भी उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गयी, बैठते

वक्त उसकी चूड़ियाँ खनखना उठीं, उसकी चूड़ियों भरी कलाई मेज पर टिकी हुई थी और उसके महकते दहकते गाल और रुखसार मुमताज की नजर का निशाना बने हुए थे, उसके चेहरे पर झूलती हुई बालों की कड़ियाँ कितनी खूबसूरत लग रही थीं, शहनाज ने एक बार धीरे से उसकी तरफ निगाह उठा कर देखा और जब उसकी आँखों को अपनी तरफ उठे हुए देखा तो उसने अपनी नजर झुका ली। हालाँकि मुमताज का बार-बार का इस तरह का देखना उसे बुरा लग रहा था, मगर वो क्या कर सकती थी।

दोनों तरफ से इस बेहोश खामोशी को तोड़ते हुए मुमताज ने धीरे से कहा—शहनाज ! तुम कहोगी तो सही, कि मैं तुमसे उल्टी-सीधी बातें पूछती हू लेकिन फिर भी मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूं कि तुम आखिर उस शख्स का नाम क्यों छिपाये हुए हो जो इन सब बातों के लिए जिम्मेदार है।

'क्या करिएगा पूछकर ?' कहा शहनाज ने और एक पत्थर की मूर्ति की तरह अपनी जगह से उठ गयी, कहने लगी—और अब हो भी क्या सकता है जमाने वाले औरत पर ही कलंक लगाना जानते हैं, मर्द का मुंह काला करना नहीं आता उन्हें। और फिर अगर वो अमीर हो तो उसे भला समाज क्यों कर गुनाहगार कहेगा, उसके पास सोने चाँदी के ढेर होते हैं जिसके पीछे उसके सब ऐब छिप जाते हैं, जिसके ढेर पर बैठकर वो अपने आपको एक बड़ा आदमी साबित कर सकते हैं, मुसीबत तो उनके लिए होती है जिनके पास अस्मत का खजाना होता है, जिसके लुट जाने पर वो किसी से एक आह भरकर शिकवा भी नहीं कर सकता, इन्साफ तो जरा दूर की बात है। एक गहरी साँस उसके मुंह से निकल गयी, कहने लगी—'खुदा करे उनका हर दिन एक जशन की तरह हो और रात रंगीनियों में डूबी हुई।'

मगर तुम्हें बता देने में क्या ऐतराज है, तुम्हारा कहना गलत है कि मर्द का मुंह काला नहीं किया जा सकता, उसे भी सजा दी जा सकती है और वो भी ऐसी कि उसकी आने वाली औलाद भी याद रखेगी कि उनके खानदान में ऐसे इन्सान भी थे जो नीच और कमीने थे।

मगर इन बातों से क्या हासिल हो सकता है, किसी दूसरे को गुनहगार

समझने से पहले इन्सान को खुद की गलतियाँ देखनी चाहिएँ, फर्क सिर्फ इतना रह जाता है तब, कि किसी का कसूर ज्यादा होता है और किसी का कम।

लेकिन तुम्हें बता देने से क्या एतराज है।

जमाने वाले सिर्फ मजाक करना ही जानते हैं, हर एक को दूसरे की जिन्दगी में दिलचस्पी दिखाई देती है, किसी को कुरेदने में उन्हें एक मजा आता है, शहनाज ने यह बात बड़े अन्दाज से कही तो मुमताज का दिल जैसे दहल उठा, उसने यह बात मुंह पर ही कितनी खोली से कह दी थी, जैसे उसने मुमताज का दिल खोलकर मजाक उड़ाया हो, सचमुच उसकी भृकुटियाँ तन गई थीं। जी तो चाहा उसका कि वो जोर से चीख उठे—शहनाज! तुम बहुत मुहफट हो, 'लेकिन गलत नहीं उसके दिल ने झट से उसका जवाब दे दिया।

इससे आगे फिर कुछ कहने का साहस न कर सकी थी। न ही उसने पलटकर शहनाज की तरफ देखा। कमरे में एक अजीब-सी खामोशी छा गई।

दोनों ही चुप थीं —,

तब इस खामोशी को थोड़ी देर बाद मुमताज ने तोड़ा, कहने लगी—शहनाज! एक बात मैं तुमसे और कहना चाहती हूं और यह भी चाहती हूँ कि तुम उसका बुरा मत मानना, उसने पलटकर शहनाज की तरफ देखा, वो सर को थोड़ा झुकाए खड़ी थी, मगर जाहिर था कि वो मुमताज की बात को गौर से सुन रही थी, तब मुमताज ने कहा—जमाने में धोखा खाया हुआ इन्सान सचमुच एक बहुत बड़ी उलझन में फंसा होता है और अगर उससे कोई इसकी वजह पूछता है तब वो यही समझता है कि वह सिवाय मेरा मजाक उड़ाने के और कर भी क्या सकता है, यह तो दुनिया का दस्तूर है कि घर से माल गँवाया, और बाहर से पागल कहलवाया, मगर मैंने तुमसे एक हमदर्दी की तरह बात पूछी थी और तुमने उसे उलटा ही समझा, और मैंने उसका बुरा नहीं माना, और न ही तुम मेरी बात को कोई मजाक समझना। अच्छा, अब मैं चलती हूं, कहते हुए उसने शहनाज के कन्धे पर हाथ रखकर थपथपाया और बिना उसके जवाब का इन्तजार किये सीढ़ियों की तरफ बढ़ गयी शहनाज तो जैसे पत्थर की शिला हो गयी थी बात सुनकर भी वो कुछ न बोली न ही

उसने मुमताज को रुकने के लिए कहा, यही नहीं वो अब भी उसी तरह खड़ी थी, जैसे मुमताज ने कोई पहली सी बात कह दी हो और वो उस पर गौर कर रही हो।

जो पता नहीं कब तक उसी तरह खड़ी रहती अगर लेखक उसको इस तरह खड़ा देखकर न कहता—क्या सोच रही हो।

और जब उसने यह बात कही तो वो चौंक पड़ी, उसे आभास हुआ कि वो आ गया था और वो जान भी नहीं पायी, अपने आपको सम्भाल कर बोली—जी, कुछ नहीं।

कुछ क्यों नहीं, उसने कहा, जानती हो मुझे आए हुए पाँच मिनट से भी ज्यादा हो चुके हैं और तुम जरा भी नहीं हिलीं अपनी जगह से न सर को तुमने उठाया न कदमों को तुमने हिलाया, तब भला मैं कैसे मान लूं कि तुम कुछ नहीं सोच रही थीं।

और जब जवाब में शहनाज ने कुछ न कहा, तो उसने फिर अपनी बात को बढ़ाते हुए कहा—मैं देख रहा हूं शहनाज, कि तुम दिन-ब-दिन और सीरियस होती जा रही हो, तुम खुद भी नहीं जानती हो कि जब तुम किसी बात का जवाब देती हो तो उसका मतलब क्या होता है, और जब तुमसे इस हाल में पूछा जाए कि तुम क्या सोच रही हो तो तुम्हारा एक ही जवाब होता है जी कुछ नहीं, आखिर तुम अपने आपको समझने और समझाने की कोशिश क्यूं नहीं करतीं, अपने दिल की बातों को मुझ से छिपाकर क्यों रखती हो।

आपको तो वैसे ही वहम हो गया है, खामख्वाह में, कोई बात हो तो बताऊं भी—, शहनाज ने कहा।

बहुत खूब! यह बात कहकर तुम अपने आपको धोखा दे सकती हो मगर मुझे नहीं, क्या यह झूठ है कि तुम अभी ख्यालों में डूबी हुई थीं।

और अगर मैं कह दूं कि यह सच है तब......,

तब जाहिर है कि मेरा दूसरा सवाल यही होगा कि तुम क्या सोच रही थीं, एक पल रुककर उसने शहनाज के जवाब की इन्तजार की मगर जब उसने कुछ न कहा तो उसने कहा—बताओ न, कि तुम क्या सोच रही थीं।

मैं सोच रही थी कि मैं कौन हूं 'क्या हूँ'

और जानती हो महज यह दो सवाल ही इन्सान को पागल कर देने के लिए काफी हैं।

और जो पहले से ही अपने होश-ओ-हवास खो बैठा हो तब…?

शहनाज, यही तो वो तुम्हारा पागलपन है, यह उलझी हुई बातें यह लाजवाब सवाल और बिना मतलब के ख्यालात, जिनको लेकर तुम अपने आप को हर वक्त परेशान किये रखती हो, तुम खुद समझदार हो, सब बातें अच्छी तरह समझती हो, मगर फिर भी तुम्हें समझाना पड़ता है।

लेकिन यह बातें असलियत से परे नहीं हैं, आखिर मैं आपकी क्या लगती हूं, कौन हूं मैं आपकी—,

मगर इस घर में रहकर कोई अहसान तो नहीं कर रही हो तुम।

लेकिन एक बोझ तो बन गयी हूं,

नहीं, यह गलत है,

मगर मैं कहती हूं कि ठीक है, मेरे आने से पहले आप आराम की जिन्दगी बसर करते थे, आपको कोई चिन्ता नहीं थी कोई फिकर नहीं था, लेकिन यह झूठ नहीं है कि मेरे आ जाने से आपके खर्चे बढ़ गए हैं आपको किसी हद तक फिक्र भी सताती है।

नहीं शहनाज, यह बात नहीं है, और फिर जानती हो जिम्मेदारियों का नाम ही जिन्दगानी है, कहकर मुस्करा पड़ा वो, शायद तुम नहीं जानतीं शहनाज कि तुम्हारे आने से मेरी जिन्दगी में कितनी तब्दीलियाँ आ गयी हैं। खैर छोड़ो इन बेफिजूल की बातों को, जल्दी से खाना ले आओ, बड़ी जोरों की भूख लग रही है, उसको उसी तरह खड़ा देखकर कहने लगा—जल्दी लाओ न, फिर चलें जरा!

यह आप रोज-रोज कहाँ जाने लगे हैं, जहाँ सारी-सारी रात आपको लग जाती है—,

'क्या तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं है?'

यह मैंने कब कहा है, मगर आप बता क्यों नहीं देते, कि ऐसा कौन-सा

काम है आखिर जिनके लिए आपको पिछले दस बारह दिनों से रात को ही जाना पड़ रहा है और फिर यही नहीं, सारी रात लग जाती है आपको।

अच्छा, अब तुम पहले खाना तो लाओ,

नहीं पहले आप बताइए,

सच कहता हूं शहनाज, भूख बड़ी जोरों की लग रही है।

मैंने आज कोई खाना-दाना नहीं बनाया, शहनाज ने नाराजगी की अदा से कहा।

'क्यों ?'

मगर शहनाज कुछ न बोली,

चलो यह भी अच्छा किया तुमने, आज फिर किसी होटल का स्वाद चखने को मिलेगा, फिर, चलें।

मुझे भूख नहीं है।

कहीं अपने लिए बनाकर रख तो नहीं लिया तुमने, कि मैं इधर खिसकूँ और तुम इधर अकेले ही दावत उड़ाओ, खैर मैं पहले रसोई घर की 'इन्क्वारी' किये लेता हूं, कहकर जब वो उठा और रसोई घर की तरफ जाने लगा तो शहनाज ने मुस्कराकर कहा—अच्छा बैठिये आप मैं लेकर आती हूं।

नहीं अब तो मैं ही देखूंगा जाकर, हो सकता है तुमने अपने लिए कोई स्पेशल चीज बनाई हो।

और जब वापिस आया तो थाली में चार रोटियाँ, एक कटोरी भर सब्जी और थोड़ी-सी दोपहर की बची हुई दाल थी, मेज पर रखकर उसने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—तुमने अपने लिए नहीं बनाया कुछ ?

नहीं—,

मेरा जी नहीं करता, इस वक्त खाने को,

वो तो मैं पहले से ही जानता था कि तुम्हारा यही जवाब होगा, तब खैर आओ इसी में से हिस्सा बटाओ, कहते हुए उसने पास खड़ी शहनाज का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने पास वाली कुर्सी पर बिठाते हुए कहने लगा—तुम अगर इसी तरह जी न ठीक होने के बहाने करके ठीक तरह से खाना भी

नहीं खाओगी तो इस तरह काम कैसे चलेगा, लो…, कहते हुए उसने एक कौर उसके मुँह की तरफ बढ़ा दिया।

नहीं मैं सच कहती हूं मुझे जरा भी भूख नहीं है।

वो तो मुझे पता है, कहा उसने और जबरदस्ती उसके मुँह में रख दिया।

आप भी जिद करते हैं।

अच्छा-अच्छा अब तुम बातें बाद में करना, पहले चुप चाप खाना खा लो।

खाना खा चुकने के बाद शहनाज बर्तन समेट कर चली गई और उसने आदत के अनुसार सिगरेट सुलगा लिया. बर्तन रखकर जब वो वापिस आयी तो उसने कहा—शहनाज ! आज मुमताज़ आयी थी न।

जी—, आपके आने से थोड़ी देर पहले ही गई थी, मगर आपको कैसे पता लगा।

जब वो नीचे आकर कार में बैठने ही वाली थी कि अचानक मैं भी आ पहुँचा, मगर तुमने तो बताया ही नहीं।

आपने आते ही बातें भी तो क्या-क्या छेड़ दी थीं।

और तुम भी तो पता नहीं कहाँ खोयी हुई थीं।

लेकिन आपकी वह बहन मुझे जरा भी पसन्द नहीं, बात बात में न मालूम क्या-क्या खोद-खोद कर पूछती है।

तुम नहीं समझोगी उसकी बातों को, वो भी तुम्हारी ही तरह है, बात पूछना कुछ चाहती है और पूछती कुछ है, क्यों आज भी उसने कोई ऐसी वैसी बात पूछ ली थी क्या ?

बल्कि आपको यह पूछना चाहिए था कि मैं उसका जवाब दे पायी थी या नहीं।

मुस्करा पड़ा वो शहनाज की बात पर, और उठते हुए बोला—तुम कौनसा कम हो, ईंट का जवाब पत्थर से देना जानती हो, कहने के साथ उसने जीन का लम्बा सा ओवर कोट उतार लिया खूंटी पर से। और जब हैंगर निकाल कर उसने बिस्तर पर लापरवाही से फेंक दिया तो शहनाज

उसके हाथ से थामने की कोशिश करते हुए कहने लगी—'क्या आज भी जाने की तैयारी है।

'हाँ'.........।

मगर आप जाते कहाँ हैं, यह बता देने से आपको क्या हर्ज है, क्या मुझे इतना भी हक नहीं है ? मैं आपसे इतना भी नहीं पूछ सकती ?

नहीं यह बात नहीं है, और अगर तुम जानना चाहती ही हो तो तुम्हें मैं इसके बारे में आधी रात को बताऊंगा, मेरा इन्तजार करना''', कह कर वो सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया।

और शहनाज कुछ न समझ सकी इस बात को।

और वो इन्तजार करने लगी आधी रात की, कि कब घड़ी की दोनों सुइयां मचल कर एक के ऊपर एक हो जाएं और उसे यह राज सपष्ट हो।

बिस्तर पर लेटी वो करवटें बदल रही थी, सोच रही थी कि कितना ख्याल रखते हैं वो मेरा, काश ! कि उसके आँचल पर दाग न लगा होता, उसके माथे पर कलंक का टीका न होता तो न जाने उनके प्यार का क्या आलम होता, उनके सीने में सर छुपा कर वो शरमा सकती और वो उसके रेशम सी अलकों में सर छुपा कर कह सके, मेरी शहनाज ! तुम कितनी हसीं हो, और तब वो अपनी बोझिल पलकें उठा कर उनकी बाहों में तड़प कर कहती—मुझे इतना प्यार न किया करो वरना मैं यूं ही मर जाऊँगी, और मरने का लब्ज उसकी जुबाँ से सुनते ही वो अपने होंठ उसके सुर्ख लबों पर रखते हुए कहते—अगर तुम मर जाओगी तो मैं कहाँ जाऊँगा मेरी जान।

इसी तरह की मीठी बातें सोचती हुई पता नहीं कब उसे नींद ने अपनी गोद में समेट लिया, हालाँकि वह सोना तो नहीं चाहती थी मगर फिर भी उसकी आँख लग गयीं, तभी नींद की खुमारी में उसे लगा कि जैसे कोई दरवाजा खटखटा रहा हो, हड़बड़ा कर वो उठ बैठी, उसका अन्दाज सही था आवाज सुन कर उसने पूछा—कौन......?"

मैं हूं, शहनाज !

आवाज पहचान कर वो बिस्तर से उठी और साड़ी के आँचल को सम्भालते हुए उसने दरवाजा खोल दिया।

लेखक ने अन्दर आते हुए कहा—क्यों, सो गयी थीं क्या ।

नहीं, यूं ही नींद आ गयी थी, कहा उसने और दरवाजा बन्द करने को बढ़ी तो उसने कहा—रहने दो बन्द क्यों कर रही हो ।

क्यों, फिर जाना है आपको ।

'लेकिन अकेला नहीं, तुम भी साथ चलोगी ।

मगर कहाँ......? उसने हैरानगी से पूछा, और फिर इस वक्त ।

क्यों, रात को देख कर डर गयी हो क्या ?

डरने और न डरने की बात नहीं है, मगर इस वक्त चलियेगा कहाँ ।

"तुम आओ तो सही, सब समझ जाओगी ।

तब शहनाज ने एक बार उसके चेहरे को देखा, मगर कुछ समझ न सकी, रात का वक्त, और वो भी आधी रात ! आखिर एक औरत का दिल था उसका भी, धड़कने लगा तेजी से, एक क्षण में ही उसके मस्तिष्क में यह विचार धारा बिजली की तरह कौंध उठी, कि—वो एक औरत है और एक आदमी के घर में रहती है......जिससे कोई रिश्ता नहीं है उसका अभी तक ! कोई नहीं जानता कि वो उसके घर में रहती है......वह उसकी क्या लगती है, कहीं...... रात के इस खामोश अंधेरे में......? वो सहम गयी, आखिर तो वह एक मर्द ही है......भले ही लाख अच्छा हो मगर किसी के दिल में क्या है......, यह कौन जान सकता है ।

क्यों क्या सोचने लग गयीं, तुम, जब उसने कहा तो वह ठिठक गयी, वह कह रहा था—क्या बात है तुम खामोश क्यों हो गयी हो ।

मगर उसने कोई जबाब न दिया उसका ।

शहनाज को खामोश देख कर उसने थोड़ा मुस्करा कर कहा—क्या तुम यह सोच रही हो कि मैं तुम्हें रात के इस पहर में कहाँ ले जाना चाहता हूं, कह कर उसने शहनाज के चेहरे की तरफ देखा और बोला—मगर घबराओ नहीं, मैं तुम्हें बिल्कुल सही सलामत वापिस लाऊंगा, आओ ।

सुन कर उसकी बात को शहनाज ने सर झुका लिया, और बढ़ते हुए सीढ़ियों तक आ गए ।

शहनाज के कन्धे पर हाथ रख कर, उसके साथ-साथ सीढ़ियाँ उतरते हुए बोला—क्यों घबरा गयी थीं न तुम। पगली, क्या मुझ पर भी यकीन नहीं, कि मैं तुम्हें कोई नुकसान पहुंचाने का इरादा नहीं रखता हूं। सुना जब शहनाज ने तो सिमट कर रह गयी।

सीढ़ियाँ उतर कर दोनों ही फुटपाथ के करीब आ गए, जिससे लगी हुई एक टैक्सी खड़ी थी, दरवाजा खोल कर पहले उसने शहनाज को बैठाया और फिर दूसरी ओर से घूम कर उसने 'स्टयरिंग' सम्भाल लिया, शहनाज की आँखों में आश्चर्य स्पष्ट हो रहा था, सीट पर खिसकते हुए वो उसके करीब आते हुए बोली—यह कार किसकी है।

कार नहीं टैक्सी है यह, कहा उसने और स्टार्ट कर दी।

चलिये टैक्सी ही सही......, अगर मैं अभी तक समझी नहीं यह माजरा।

नहीं, वैसे तुम समझ चुकी हो, और अगर तुम मेरे मुंह से ही सुनना चाहती हो तो सुन भी लो, मैं रात के वक्त टैक्सी चलाता हूं।

सुन कर शहनाज ने उसके चेहरे की तरफ देखा, जो कोट के उठे हुए कालर में भी कानों तक छिपा था, उसने भी एक बार शहनाज की तरफ देखा और दूसरे ही पल निगाह सामने कर ली, चूंकि टैक्सी काफी स्पीड से दौड़ रही थी।

शहनाज को खामोश देख कर उसने कहा—क्यों, अब तो पता लग गया न कि मैं रात को 'रोड इन्सपेक्टरी' करता हूं।

लेकिन वो फिर भी खामोश रही, नजरें उसकी सामने टिकी हुई थीं, टैक्सी लाइट काली सड़क पर दूर तक फैलती जा रही थी।

तुम खामोश क्यों हो शहनाज, कोई बात करो, कहने के साथ-साथ उसने एक लम्बा मोड़ काटा तो शहनाज ने उसके कन्धे पर हाथ रख लिया, वह देख रही थी कार को वह यूं ही घुमा फिरा रहा है कोई निश्चित मंजिल की तरफ रुख नहीं है उसका, जैसे वे दोनों हवा खोरी को निकले हों।

और सच भी तो था, तेजी से भागती हुई टैक्सी 'गेट वे ऑफ इन्डिया' से निकलती हुई उसके दाहिने की ओर गर्व से सर उठाए 'ताज' और 'प्रिन्स'

होटल की ऊंची-ऊंची इमारतों के पास से सर्राटे से निकल गयी, जिससे आगे मुश्किल से एक फरलांग की दूरी पर 'प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम की बिल्डिंग आ गयी जिसके आगे से पल भर में ही टैक्सी निकल गयी तब मोड़ काट कर 'एस्प्लेनेड रोड' से आगे बढ़ती हुई टैक्सी 'जनरल स्टोर्स' पहुंची जिसकी चमक-दमक और सजावट लोहे के मजबूत 'शटल'स' में बन्द होकर सुबह होने का इन्तजार कर रही थी, इस स्टोर्स के पीछे 'बाम्बे गवर्नमेन्ट सिक्रेटरियट' के 'इनफारमेशन ऑफिस' की इमारत का ऊपरी हिस्सा यहाँ से साफ दिखाई दे रहा था। सामने ही 'यूनिवर्सिटी' की भव्य इमारत पर लगा 'राजाबाई क्लाक टावर' शहर में सबसे ऊंचा होने के कारण क्यों न नजर आता, शहनाज ने क्लाक टावर की तरफ देखा, जिसके डायलों के पीछे से आती तेज रोशनी में बड़ी बड़ी मोटी सुइयां सवा बारह बजा रही थीं।

आगे बढ़ती हुई टैक्सी 'बाम्बे हाई कोर्ट' के सामने से गुजरी और फिर 'फ्लोरा फाउन्टेन' से मोड़ काटती हुई 'सेण्ट्रल टेलीग्राफ आफिस तथा 'ओरियण्टल इनश्योरेन्स' कम्पनी की इमारतों को पीछे छोड़ती हुई टैक्सी इनके दाहिनी ओर 'हार्नबी रोड' की तरफ मुड़ गयी, हार्न-बी-रोड पर बढ़ती हुई टैक्सी 'इवान्स फ्रेजर' और 'ह्वाइट-वे-लेडला' स्टोर्स को पीछे छोड़ती हुई बोरी-बन्दर' पहुंची जहाँ से 'बाम्बे म्यूनिसिपल कारपोरेशन के 'ऐडमिनिस्ट्रेटिव आफिस' नजर आ रहे थे, जिनके दाईं ओर बढ़ती हुई टैक्सी जी० आई० पी० के 'विक्टोरिया टर्मिनिस' रेलवे स्टेशन के करीब आई तो शहनाज से रहा न गया, कहने लगी---कार को कहीं रोकियेगा भी, या यों ही बिला वजह घुमाते रहोगे---

"तुमने हुक्म ही कब किया है......कहते हुए उसने साइड लेकर टैक्सी सड़क के ओर लगा दी, पूछने लगा---'हाँ तो फरमाओ' फिर कहाँ ले चलूं आपको......!"

शहनाज ने एक बार उसके चेहरे की तरफ देखा और फिर नजर को सामने कर लिया, मगर बोली नहीं।

'हाँ, तो बताया नहीं तुमने कि किधर चलूं।"

शहनाज ने यह बात भी सुनी उसकी, मगर फिर भी खामोश रही, उसकी निगाह दूर दाहिनी तरफ बनी हुई मुगल जैसी इमारत, जो कि 'जनरल पोस्ट आफिस' है. खिड़कियों में जगमगाती रोशनी को देख रही थी।

शहनाज तो उन धुँधली बस्तियों में पता नहीं क्या खोज रही थी और वह उसके चेहरे की तरफ देख रहा था, उसके गालों पर झूलती गेसुओं की लटें भी उसकी तरह खामोश थीं और जब वो इतनी देर भी कुछ न बोली तो उसने फिर टैक्सी को स्टार्ट कर दिया।

और फिर जब वो करीब पौन घन्टे बाद रुकी तो वह मंजिल थी 'जुहू'।

जैसे ही टैक्सी रुकी तो विन्ड स्क्रीन से हवा का एक हल्का-सा लहराता हुआ झोंका आया और शहनाज की जुल्फों से शरारत करके निकल गया तो उसके गेसुओं ने भी बड़ी अदा से उसके गालों का चुम्बन ले लिया।

तब लेखक ने कार का दरवाजा खोला और नीचे उतरकर शहनाज से कहा—आओ",

और जब वह नीचे आ गयी, तो उसके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहने लगा—क्या बात है तुम कुछ चुपचाप सी हो, दोनों के कदम बढ़ते हुए समुद्र की तरफ बढ़ रहे थे, धीमी-धीमी चलती हुई हवा रात के इस पहर में काफी ठन्डक बिखेर रही थी, दोनों आकर एक तरफ बैठ गए, हर तरफ खामोशी छाई हुई थी, दूर तक फैला हुआ शान्त सागर एक अजब-सा नजारा पेश कर रहा था।

इस छाई हुई खामोशी को जब शहनाज ने न तोड़ा तो उसे कहना पड़ा—शहनाज, तुम इस तरह खोयी-खोयी सी क्यों हो, क्या नाराज हो मुझसे तुम।

जी नहीं, उसने जुबाँ खोली, कहने लगी—आप रात के वक्त दुनिया वालों से छुपकर टैक्सी चलाते हैं।

लेकिन मैंने तुमसे तो नहीं छुपाया?

मगर आप चलाते तो मेरी वजह से हैं न, मैं ही वो वजह हूँ जिसके लिये आप अपनी रात की नींद हराम करके इतनी मेहनत करते हैं, आखिर मैं आप की क्या हूं जिसकी खातिर आप इतनी तकलीफ सहते हैं, और उसके मचलते

हुए आँसू जो शायद इस वक्त तक की इन्तजार में रुके हुए थे बह निकले। उसका सर अपने आप उसके कन्धे से आकर लग गया।

तब अपने कन्धे से लगी शहनाज के सर पर उसने हाथ रखते बड़ी गम्भीरता से जवाब दिया—तुम चाहे कुछ भी कह लो मगर मैं तुमसे सिर्फ इतना ही कहूंगा कि तुम मेरी जिन्दगी हो।

यह बड़ी अच्छी बात कही है आपने, जिसने आकर आपकी जिन्दगी में तूफान मचा दिया हो उसे आप अपनी जिन्दगी कहते हैं लेकिन आप ऐसा काम करते क्यों हैं।

'क्यों यह काम बहुत बुरा है क्या ?'

अगर बुरा नहीं है तो कोई इज्जत वाला भी नहीं है, जैसे एक छोटे शहर में तांगे और रिक्शा वाले की औकात होती है वैसे ही बड़े शहरों में टैक्सी ड्राइवर की होती है, क्या आपको इसमें हीन भाव नजर नहीं आता जब आपसे कोई तेज मिजाज वाला आदमी 'वे' और 'अबे' करके बात करता होगा।

तब उस वक्त मैं भूल जाता हूं कि मैं एक फमस राइटर हूं जिसे बहुत से लोग जानते हैं, तब मैं सिर्फ इतना याद रखता हूं कि मैं एक टैक्सी ड्राइवर हूं बस, जिसकी मंजिल उसके पीछे बैठे हुए साहब की मंजिल तक आकर खत्म हो जाती है, चाहे कोई इज्जत से बात करे या कोई गाली देकर, अपने पर कोई असर नहीं होता।

लेकिन असलियत तो यह है न कि यह सब बातें आपको मेरी वजह से सहनी पड़ती हैं।

पहले तुम मुझे यह बता दो कि क्या मुझमें और तुममें कोई फर्क है जो तुम हर बात में अपने आपको अलहदा समझती हो।

है क्यूं नहीं, आप·····,

बस मैं इस बारे में कुछ नहीं सुनना चाहता, उसने शहनाज की बात काटते हुए कहा, मैं जानता हूं जो तुम्हारी दास्तान है तुम अपने दिल को छोटा मत किया करो, मैंने तुम्हारा हाथ पकड़कर कोई तुम पर अहसान तो नहीं किया।

लेकिन शहनाज ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया, सिसकियाँ फूट रही थीं, और आंसू बह रहे थे, मगर जुबाँ खामोश थी।

देखो, तुम इस तरह अगर हर वक्त आंसू बहाती रहोगी, तो जानती हो इससे सेहत पर कितना असर पड़ता है, मगर तुम हो कि कोई ख्याल ही नहीं करतीं, कहते हुए उसने शहनाज का सर अपने कान्धे से उठाया, और पीठ पीछे अपनी बाजू लेजाकर अपने में समेटते हुए बोला—रोको तो इन आँसुओं को। सिसकियों को अपने वश में करते हुए किसी तरह शहनाज ने अपने आंसुओं को रोक लिया, मगर कुछ देर तक दोनों ही खामोश बैठे रहे, समुद्र से आती ठन्डी हवा दोनों के बदन में ठन्डक पैदा कर रही थी, शान्त लहरों से आती गम्भीर-सी आवाज खामोशी को डरावनी सी बनाए थी, चाँद का एक टुकड़ा मात्र ही आसमान पर चमक रहा था, जिसकी वजह से सागर खामोश था।

इस छाई हुई खामोशी को शहनाज ने बड़ी दबी आवाज में तोड़ते हुए कहा—एक बात कहना चाहती हूं आप से।

'क्या…?' बड़ा शान्त स्वर था उसका भी।

सुनकर एक पल बाद शहनाज ने उसी तरह लहजे में कहा—क्या आप मुझे मेरे हाल पर नहीं छोड़ सकते।

सुना जब उसने, तो एक बार उसने शहनाज के चेहरे की तरफ देखा, और कहने लगा—छोड़ सकता हूं, मगर एक शर्त पर, और वो यह कि तुम्हारी कोख में पलता हुआ बालक जब तक इस दुनिया में न आ जाए, तब तक तुम्हें मेरे पास हर हालत में रहना होगा, चाहे तुम इसे मजबूरी समझ लो या मेरी इल्तजा, और उसके बाद उस बच्चे को हमेशा के लिए तुम मेरे पास छोड़कर चाहे जहाँ जा सकती हो, ताकि तुम्हारा हाथ थामने से कोई हिचक न सके, तुम्हें किसी की जुबाँ से अपने लिए एक भी गिरा हुआ शब्द न सुनना पड़े, यही नहीं तब भी मैं तुम्हारी हर हालत में मदद करने की कोशिश करूंगा, कि तुम किसी शरीफ खानदान की बहू बन सको, दुनिया के ऐश-ओ-आराम लुत्फ ले सको, यह दुनिया बहुत रंगीन है शहनाज! और मैं भी यही चाहूंगा कि तुम भी उन रंगीनियों में खोकर सब कुछ भूल जाओ, बल्कि यहाँ तक कि

तुम अपने आपको भी भूल जाओ, मुझे भी, अपने बच्चे को भी, सब को ! और यह अच्छा भी है, वरना तुम्हें मेरे साथ रहकर सिवाय जमाने की कश-म-कशों के और क्या मिल सकेगा, प्यार भरी बातों से दिल जरूर बहल सकता है मगर पेट नहीं भर सकता, उसके लिए इन्सान को जरूर मेहनत करनी पड़ती है, और फिर मैं समझता हूं कि तुम काफी हद तक मेरी जिन्दगी से वाकिफ हो चुकी हो ।

और शहनाज उसकी बात को सुन रही थी, मगर बैठी थी एक पत्थर की मूर्ति की तरह, जैसे वो बेजान हो, निश्चल, बिना किसी हरकत के । तभी उसकी खुली हुई आँखों से आँसुओं के दो सफेद मोती मचलकर गालों पर से यूं ढुलक गए जैसे कमल की पंखुड़ियों पर से पानी की बूंदें फिसल जाती हैं, और तब भी उसमें कोई हरकत न हुई, खामोश चुपचाप बैठी थी वह, उसने शहनाज की बाँह पर हाथ रखते हुए फिर कहा—मैं सच कहता हूं शहनाज ! मैं तुम्हारी उस मासूम निशानी को जिन्दा रहने तक सम्भाल कर रखूँगा, समझूँगा कि शहनाज ने जितने दिन मेरी खिदमत की, उसके बदले में उस फूल को हमेशा महकाए रखने की कोशिश करूंगा, मैं……,

बस ! खुदा के वास्ते और कुछ न कहिए, वह जैसे कराह उठी हो ।

नहीं शहनाज ! मुझे सचमुच उस दिन बहुत खुशी होगी जिस दिन तुम किसी ऊँचे घराने की बहू बन कर…,

ऐसा मत कहिए—, शहनाज ने तड़प कर कहा—ऐसा मत कहिए, मैं अब कहीं नहीं जाऊंगी, मुझे अब किसी और के दर पर मत फेंकना, वरना मैं उसके दर को लाँघने से पहले ही दम तोड़ दूंगी, यह दो जुमले कहते ही वो सिसक पड़ी, लाख चाहने पर भी वो अपनी रुलाई को न रोक सकी, और उसने अपने आपको लेखक पर ढीला छोड़ दिया, शायद पहला ही अवसर था यह शहनाज का । उसने अपने आपको उसकी बाहों में गिराया था, और खुद उसने उसके गले में बांहें डाल दी थीं ।

शहनाज ! देखो न, अपने आप पर हौसला रखो, इस तरह हर बात पर रो देना क्या ठीक होता है, और फिर यह घर भी नहीं है, किसी ने देख

लिया तो पता नहीं क्या सोच बैठेगा, कहते हुए उसने उसी के आँचल से उसके आँसू पोंछ दिये, और आहिस्ता से उसने अपने आपको शहनाज के बन्धन से रिहा कर लिया।

उससे अलग होकर शहनाज ने अपने अस्त-व्यस्त बालों को ठीक किया और साड़ी के पल्ले को सही करके कन्धे पर डाला, एक सर्द आह लेकर उसने खामोश सागर की तरफ देखा, उसी तरह मासूमियत से बोली—एक बात कहूं आपसे······

अच्छा ही है, अगर तुम आइन्दा भी बात कहने से पहले इजाजत न माँगा करो—,

सुनकर उसने बात पर गौर जरूर किया, मगर अपनी शान्त मुद्रा में किसी तरह की तबदीली न की उसने, कहने लगी—आपसे एक अर्ज करना चाहती थी, और वह यह कि······कहते कहते वो अपनी जगह से धीरे से उठ कर खड़ी हो गयी, और बात को पूरा करते हुए बोली—मैं चाहती हूं कि बच्चे के पैदा होते ही आप उसे किसी यतीमखाने में भेज दें, मैं सच कहती हूं आपसे मैं जिन्दगी भर नहीं पूछूंगी कि मैं एक बेटे की माँ बनी थी या इक बेटी की।

'यह बात तुमने दिल से कही है या खाली जुबां से।'

'नहीं, दिल से कह रही हूं।'

'क्या सचमुच ! तुम एक माँ होकर ऐसा कह रही हो, अगर यह बात एक माँ के दिल से निकली है तो मैं उस रहमदिल की तारीफ करूंगा, लेकिन मैं पूछना चाहूंगा उसी दिल से कि उस मासूम का क्या कसूर है, जिसकी उसे इतनी बड़ी सजा मिलनी चाहिये, कि वो मां का प्यार न पा सके, सारी जिन्दगी यतीमखाने की सूनी दीवारों से पूछता रहे कि तुमने वो देखा होगा, ऐ बेजान दीवारो कि वो बुजदिल माँ कौन थी जिसने अपने सीने से जुदा करके मुँह फेर लिया था, और वो भी सिर्फ इस वास्ते न कि ताकि वो खुद सारी जिन्दगी आराम से रह सके, उसे दुनिया वाले बदनाम न कर सकें, कोई यह न कह सके, वो आवारा, बदचलन, कमीनी या बदजात थी, चूंकि उसका

पाप उससे जुदा हो चुका है, दुनिया की निगाहों में वह अब एक शरीफ लड़की है, मगर वाह ! ऐ माँ के दरिया दिल''''', कि पाप तो कोई करे और सजा कोई भुगते । वाह ! शहनाज तुमने भी बात खूब कही, और अगर मैं तुम्हें तुम्हारे हाल पर छोड़ दूँ तो तब तुम ऐसा ही करोगी, न ! अपने चैन के लिए इन्सान क्या नहीं करता, और फिर यह तो चैन से बढ़ कर इज्जत का.........,

बस करिये, मुझमें अब और सुनने की ताकत नहीं है ....। और सचमुच उसने अपने कानों पर हाथ रख लिये, कि अगर वो कुछ कह भी रहा हो तो उसे सुनाई न पड़े ।

शहनाज, सच्ची बात तो सुनना बहुत मुश्किल होता है और सुनकर सहना उससे कहीं ज्यादा मुश्किल होता है, लेकिन जब कोई बात कहे तो उसका जवाब देना भी जरूरी होता है । खैर, छोड़ो इन बातों को, आओ अब वापिस लौट चलें, रात बहुत ज्यादा भीग चली है, शायद तुम्हें तो ठण्ड भी लग रही होगी, कहने के साथ-साथ उसने अपना कोट उसके कन्धे पर रख दिया और शहनाज ने बिना किसी इन्कारी के अपने पर ओढ़ लिया ।

बढ़ते हुए कदम उनके टैक्सी के करीब आ गये थे, शबनम की महीन महीन बूँदें छत पर से फिसलती हुई हर तरफ शीशों पर बिखर गई थीं, क्योंकि टैक्सी भी बेचारी समुद्र के नजदीक खड़ी रात के इस पहर का लुत्फ ले रही थी ।

सड़क पर कोई ज्यादा रश नहीं था इस वक्त, काफी रफ्तार से दौड़ती हुई टैक्सी अपनी मंजिल का रास्ता तय कर रही थी, दोनों ही खामोश बैठे थे, सिर्फ टैक्सी की घर्र-घर्र की आवाज हवा में घूम रही थी ।

जैसे ही टैक्सी घर के पास आकर रुकी, दोनों ही अपनी-अपनी तरफ से उतर गये, और उसी तरह खामोशी धारण किये वो दोनों ऊपर आ गये, लाइट ऑन करके शहनाज आगे बढ़ गयी, और वह बिस्तर पर बैठते हुए बोला—एक गिलास पानी तो लाना ।

तब शहनाज ने कन्धे से कोट उतार कर कुर्सी की पीठ पर रख दिया और

पानी लेने चल दी तो वह बड़बड़ाने लगा—पता नहीं यह उल्टी सीधी बातें कहाँ से इसके दिमाग में आ जाती हैं, कितनी बार समझाया है कि न खुद को परेशान किया करो न दूसरे को, मगर तुम हो कि जैसे समझती ही नहीं। इतने में शहनाज भी पानी लेकर आ पहुँची थी, मगर वह फिर भी कहे जा रहा था—बात को न समझने की तो कसम खा रखी है किसी और काम में ध्यान लगाये तो दिमाग ठिकाने रहे।

तो और क्या किया करूं, बोली वह, और गिलास को उसके हाथ में थमा दिया।

आज जैसे मुमताज़ ने तुमसे कहा था, तो थोड़ी तुम हवाखोरी कर आतीं तो मैं कोई मना नहीं कर रहा था।

हाँ, ताकि वह बात-बात पर मेरा अच्छी तरह मजाक उड़ा सके, शहनाज ने तुनककर कहा।

क्यों·····?

और नहीं तो क्या·········, जैसे आज भी बड़े तकल्लुफ से पूछ रही थी कि एक बात पूछूं तुमसे कि क्या वो तुमसे प्यार करते हैं, ताकि अगर मैं कहूं कि 'हाँ' तो वह मुझे खुशनसीब कहकर मुझ पर फब्तियाँ कस सके और अगर कहूं कि 'नहीं' तो वह जी भरके हंस सके, मेरा तमाशा बना सके, मुझसे बार-बार उसकी वजा पूछ सकें, आखिर एक बदचलन जो ठहरी जो चाहे कोई कह ले।

शहनाज ! वह चीख उठा, उसकी बुलन्द आवाज कमरे की दीवारों से सर फोड़कर गूंज उठी, वह अपनी तरफ पीठ किये खड़ी शहनाज के दोनों बाजू पकड़कर अपनी तरफ करते हुए बोला—कोई कहकर तो देखे इस लब्ज को तुम्हारे लिये·········, सच कहता हूं तुम्हारे लहू की कसम ! अगर उसका खून न कर दूं तो, चाहे वो कोई ही हो, मुमताज तो क्या अगर उसका बाप और भाई भी, जिसे मैं भी अपना बाप और भाई मानता हूं, यह बदहवास लब्ज तुम्हारे लिये इस्तेमाल करके तो देखे, बतला न दूं कि यह लब्ज कितना महंगा है, तुम बताती नहीं हो कि तुम्हारी इन सर्द आहों और गर्म आँसुओं का

जिम्मेदार कौन है, वरना सच कहता हूं अगर उसकी लाश को अपने हाथों चीरकर कुत्तों और चीलों को न खिला दूं तो समझ लेना मैं अपनी माँ का बेटा नहीं, बोलो, न ! आज भी बतला दो कि इन बातों का गुनाहगार कौन है।

मैं समझती हूं कि आप मुझे मजबूर नहीं करेंगे।

बस, एक ही जुमला तुम्हारे पास है, जिसके आगे तुम मेरी बात को खामोश कर देती हो, खैर ! तुम दिल न छोटा किया करो, कहते हुए नर्म पड़ गया और कोट उठाकर चलने को हुआ तो शहनाज पूछ बैठी—क्या फिर जा रहे हो।

हाँ, और अभी तो सुबह होने में साढ़े तीन घन्टे बाकी हैं, लेकिन, बस मैं एक चक्कर 'सैण्ट्रल' का लगाकर टैक्सी गैरिज में खड़ी करके आ जाऊँगा, कहते हुए वह सीढ़ियाँ उतर गया, और शहनाज दरवाजा बन्द करने को आगे बढ़ी।

टैक्सी की घर्र·····घर्र आवाज खामोशी में गूंज उठी।

२८

दोपहर का वक्त था, मुमताज अपने कमरे में सो रही थी, उसी नींद की खुमारी में कुछ भी पता न था कि कोई उसके पास पलंग पर बैठा है।

और यह थी नौशाबा।

जो उसके पास ही बैठी उसके हुस्न को निहार रही थी, कमरा चारों तरफ से बन्द था, रोशनदान से आती हुई हल्की-हल्की रोशनी को जलती हुई एक ट्यूब कुछ रोशन किये हुए थी, इस धुँधली और घुली हुई रोशनी में नौशाबा मुमताज का सौन्दर्य देख रही थी, बेखबर सी सोती मुमताज के जवाँ उभरे हुए सीने पर से आँचल गायब था, और उसकी जगह उसके रेशम से

बाल नागिन की तरह बल खाते हुए उसके उरोजों पर बिखरे हुए थे, सीपियों की तरह बन्द पलकें बड़ी खूबसूरत लग रही थीं, बिखरी जुलफों में उसका महताब सा चेहरा नींद की बेहोशी में खामोश था मगर लगता था जैसे वह मुस्कुरा रही हो, तभी नौशाबा ने उस पर थोड़ा झुकते हुए अपनी एक उँगली से उसके गाल को सहलाते हुए बड़ी खामोश सी आवाज से पुकारा मुमताज !

अपने गाल पर हल्का सा स्पर्श पाकर मुमताज सिहर उठी, मचल कर उसने अपनी अलसाई सी बोझिल पलकों को उठाया और जब उसकी निगाहों की रंगीनियों ने इस धुँधले प्रकाश में नौशाबा को देखा तो कह उठी—अरे······तुम ! कब आयी हो।

बस समझो कि सुबह ही बम्बई में कदम रखा था और दोपहर को तुम्हारे आगोश में हूं।

अपने पर झुकी नौशाबा को मुमताज ने अपनी बाहों में घेर लिया कहने लगी—मैं तो समझी थी शायद काश्मीर की रंगीन फिजाओं में खोकर तुम बम्बई को भूल गयी होगी।

यह भला कैसे हो सकता है, कहा उसने और मुमताज के गुलाबी होठों पर अपनी उँगली से शरारत करते हुए बोली—कि हफ्ते तक तुम्हारी शादी हो और मैं तुमसे दूर रहूं।

सुनते ही मुमताज शरम से सुर्ख हो गयी, जिसकी हिमायत पलकों ने झुक कर पूरी की।

अच्छा अब उठो भी·····, कहते हुए नौशाबा ने उसे अपनी बाहों में समेट कर बैठा दिया, तो मुमताज का हाथ अपने सीने से लग गया और वह अपने आंचल को इधर-उधर देखने लगी।

आँचल को अपने सीने से लगाकर मुमताज ने बड़ी शोखी से कहा—और सुनाओ मेरी जान, काश्मीर की जन्नत में जुदाई के दर्द ने भी अपना सरूर कुछ गरूर से दिखाया या नहीं।

यह सवाल तो तुमसे मुझे करना चाहिए कि यह एक हफ्ते की जुदाई तुम किस तरह सह रही हो।

क्यों ?

इस वास्ते कि सैंयां के पहलू में रात गुजरने में अभी पूरे सात दिन हैं, खैर ! जरा दिखाओ तो अपने 'उनकी' तस्वीर, देखें तो कि हमारी इस जूही की कली को किस किस्मत वाले ने अपने चमन में सजाया है ।

अच्छा, पहले तुम यह बताओ कि क्या पियोगी ?

माफ करना, मैंने तुमसे कुछ और ही बात कही है ।

तो देख लो न······, वह सामने प्यानों पर तो रखी है, उसने बड़ी तेजी से यह बात कही ।

ओफ ! इतनी दिलफरेब हो कि आंखों से एक पल भी जुदा नहीं कर सकतीं······, कहा उसने और तस्वीर की तरफ बढ़ गयी और उसके पीठ करते ही मुमताज वहां से खिसक गयी।

और जब वापिसी पर आयी तो तौलिये से मुँह हाथ पोंछती हुई आ रही थी, शायद बाथ रूम से आयी थी वह, और पीछे-पीछे उसके नौकरानी स्कॉश के दो तैयार गिलास लिये आ रही थी, जब वह तश्तरी समेत रख कर चली गयी, तब मुमताज ने कहा—लो······।

तो नौशाबा ने उसकी तरफ घूमते हुए कहा, शक्ल सूरत तो अच्छी खासी है, बाकी तारीफें तुम बता दो ।

वह तो तुम्हें मैं शादी के बाद ही बता सकूंगी, बहरहाल तुम फरमाओ कि तुम्हें अपने उनकी शक्ल सूरत पसन्द है न, और शायद तुम तो उनके मिजाज को भी बयान कर सकती हो, क्योंकि······।

मुझे नहीं पता बेशर्म कहीं की ···· ।

घबराओ नहीं मेरी महरबां, अगर मुझे घर से निकालने की तैयारियां हो रही हैं तो तुम्हें इस घर में बुलाने का भी प्रोग्राम पूरे जोर शोर से बन रहा है ।

तुम्हें बात करते हुए जरा भी शरम नहीं आती ।

शुक्र है खुदा का कि तुम्हें तो शरमाना अच्छी तरह आता है, इसी तरह की उल्टी सीधी बातें कर रही थीं यह दोनों ही, जिनका न कोई मकसद था न

मतलब, लेकिन हां, कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है कि जब बात बिना किसी टॉपिक के शुरू हो जाती है तो ऐसे ही सवाल जवाब हुआ करते हैं जिनका कोई खास मतलब नहीं निकाला जा सकता, तभी मुमताज़ ने भी एक ऐसी बात पेश की जिसे पूरी तरह बेतुकी का खिताब दिया जा सकता है, कहने ही लगी—एक बात है नौशाबा, इतने दिन काश्मीर रहने से तुम्हारे गालों का रंग डल झील की तरह सफेद और साफ हो गया है, साथ ही अगर तुम यकीन मानो तो रुखसारों की लाली ने काश्मीर के सुर्ख सेबों को भी मात कर दिया है।

माफ करना मेरी जाँ, डल झील का पानी तुम्हारी आँखों की तरह नीला है न कि सफेद।

चलो ऐसे ही सही, मगर काश्मीरी सेबों का रंग तो लाल ही है न, या कहीं वह भी नीला-पीला है।

बस सिवाय बातें बनाने के तुझे और क्या काम है।

अच्छा जनाब लो—, कहती हुई मुमताज फिर से पलंग पर लेट गयी, और तकिये को ठीक से सर के नीचे रखते हुए बोली—अब हम कुछ नहीं बोलेंगे।

अरे अरे तुम तो लेट गई हो, मैं तो तुमसे उठने को कहने वाली थी।

क्यों……?

आज पिक्चर देखने का इरादा है।

क्यों ……क्या कहीं आज फिर तुम्हारे महबूब ने साथ देने से इन्कार कर दिया है, जो तुम इस टिकट का अहसान मुझ पर चढ़ाना चाहती हो।

ऐसी तो कोई बात नहीं है डार्लिंग! मगर हाँ यह हो सकता है कि शायद तुम्हारी बराबर वाली सीट तुम्हारे इन राइटर साहब की रिज………, तेजी से चलती बात को एक दम ब्रेक लग गयी, पता नहीं कैसे यह बात उसकी जुबाँ पर से फिसल गयी, वरना, मुमताज के 'बर्थ डे' पर इस बात का राज फाश हो जाने पर उसने अकेले में घन्टों इस बात पर विचार किया था, और आइन्दा से उसने इस बारे में बात न करने की कसम भी खायी थी,

यहाँ तक कि इस बारे में उससे कोई बात भी न पूछूँगी, ऐसा भी उसने सोचा था, कि शायद कहीं मुमताज का दिल खिसक न पड़े। मगर पता नहीं कैसे आज वह यह बात कह गयी।

देखा उसने कि मुमताज़ भी पलंग पर से उठ कर उसकी तरफ पीठ किये खड़ी थी, शायद इस बेबाक बात ने उसके दिल को थोड़ा छू लिया था। बात के इस तरह अचानक टूट जाने पर जो खामोशी छा गयी थी उसको तोड़ते हुए नौशाबा ने कुछ दबी आवाज में कहा—माफ करना मुमताज़! भूले से निकल गयी थी यह बात ज़ुबाँ से .....।

आज शायद यह पहला ही मौका था नौशाबा के लिए, कि उसने कह कर किसी बात को उस पर गौर करने के साथ-साथ उसका अहसास किया हो और साथ ही उसके लिए माफी माँगनी पड़ी हो, अपनी बात के दूसरे पहलू को पूरा करते हुए बोली—अच्छा ही है कि अगर तुम जल्दी तैयार हो जाओ, क्योंकि घड़ी की सुइयाँ पाँच से भी ज्यादा बजा चुकी हैं।

तब धीरे से मुमताज़ ने सर पीछे की ओर घुमाया, और अलमारी से हल्के से गुलाबी रंग की साड़ी और ब्लाउज उठा कर नीचे चली गयी।

उसके चले जाने के बाद नौशाबा ने एक राहत की साँस ली, और मुस्करा पड़ी अपनी ही बात पर कि क्या कहने जा रही थी आज वह। लेकिन गनीमत यह हुई कि मुमताज ने आगे कोई बात कही नहीं।

तभी मुमताज़ कमरे में दाखिल हुई, जो आगे पीछे से साड़ी की सलवटों को ठीक करती आ रही थी, ड्रेसिंग टेबिल की तरफ बढ़ते हुए उसने बड़े शोख अन्दाज से पूछा—कौनसी पिक्चर की टिकटें बुक हैं तुम्हारे पास।

'दी लास्ट नाइट' की, नौशाबा ने कुछ मुस्करा कर कहा।

ओह! तो आज इंगलिश पिक्चर का इरादा है।

ख्याल तो कुछ ऐसा ही है, क्यों पसन्द नहीं तुम्हें।

यह तो देख कर ही पता लगेगा।

इस तरह बातों के साथ-साथ मुमताज़ के हाथ मेकअप करने में व्यस्त थे।

काफी जल्दी-जल्दी करने पर भी टाइम पौने छः का हो ही गया उन्हें बंगले से बाहर आते-आते।

नौशाबा की कार फाटक के पास ही लगी हुई खड़ी थी, मुमताज के बैठते ही नौशाबा ने कार स्टार्ट कर दी, रास्ते में कोई खास बातचीत नहीं हुई दोनों की।

जैसे वे थियेटर में जाकर बैठीं, कि एक मिनट बाद हाल में अंधेरा छा गया।

सबकी निगाहें सामने पर्दे पर टिक गयीं।

२६

मुमताज की शादी हुए आज करीब बीस रोज गुजर चुके थे, एक के घर की रौनक अब दूसरे के घर में रौनक-ए-अफरोज हो रही थी।

मगर आज फिर करीब तीन दिन से मुमताज और उसका खामिद जमाल बम्बई में आये हुए थे, शादी के शुरू के दिनों में तो होता ही कुछ ऐसा है कि दो जवान दिल एक दूसरे को देखकर हर पल बेचैनी से धड़कते हैं, बदन में शोलों की सी गर्मी होती है, और उमंगें हर पल प्यारी सी रहती हैं। रात की खामोश वादियाँ रंगीनियों में डूब कर भीग जाती हैं, बल्कि अफसोस इस बात का होता है कि रात इतनी जल्दी बीत कैसे जाती है। यही हाल इनका भी था, मैरिज के बाद हनीमून मनाने के लिए ख्वाबों की नगरी उदयपुर को चुना गया, जहाँ की बहकी फिजाओं में खोकर उन्हें पता ही न लगा कि बारह रोज कैसे गुजर गए।

दोनों ही बैठे हुए आपस में बातें कर रहे थे।

यह कमरा मुमताज का ही था, जिसमें उसने अपने कंवारेपन के इक्कीस बरस गुजारे थे। मगर आज उसके कमरे की हर चीज खुश सी नजर आ रही

थी, क्योंकि आज की मुमताज में कल की मुमताज से काफी फर्क नजर आ रहा था, उसकी गदराई देह में कुछ और उभार सा पैदा हो गया था, सीने की गोलाइयों में एक विशेष भारीपन सा आ गया था लगता था जैसे वह कसे हुए बिना बाहों के ब्लाऊज की कैद से रिहा हो जाना चाहते हों, यही नहीं गालों की लाली में कुछ और सुर्खी घुली हुई मालूम पड़ रही थी, और साथ ही चेहरे पर एक अजीब सा नमकीन पन झलक उठा था, आँखों की चर्बी में थोड़ी और बढ़ोतरी हो जाने की वजह से वे और नशीली सी लगने लगी थीं, बल्कि सारा चेहरा हर वक्त इस तरह लगता था कि जैसे नींद की खुमारी में पुलक रही हो।

दोपहर कुछ ढल चुकी थी।

मुमताज पलंग पर लेटी किसी किताब के पन्ने पलट रही थी और जमाल उसके पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठा सिगरेट का धुँआ उगल रहा था, टाँगें फैला कर उसने पाँव पलंग की पट्टी पर टिका रखे थे, और देख रहा था मुमताज की खूबसूरती को कितनी अच्छी लग रही है इस वक्त। गुदगुदे मोटे मोटे दो तकियों को पलंग की पीठ से ढलाई के अन्दाज में रखे हुओं पर उसका टिका हुआ चांद सा रौशन चेहरा कितना भला लग रहा है, और इस तरह उचक कर लेटने से उसका उभरा हुआ सीना और ऊपर उठ गया है, फिर साड़ी का पल्ला भी तो काफी नीचे तक खिसककर इधर-उधर अस्त व्यस्त सा बिखरा पड़ा था, और गले से लिपटी हुई सोने की चेन बल खाकर बड़े अन्दाज से उसके उरोजों के बीच लहरा रही थी, खुद उसका एक हाथ इसी से खेल रहा था, तभी उसने करवट लेकर कहा—तो चलिएगा न शाम को फिर वहाँ…,

'कहाँ…,

'जहाँ जाने को मैंने सुबह भी आपसे कहा था।

तो वहाँ जाना क्या बिल्कुल जरूरी है?'

हाँ है तो—आप नहीं जानते कि वे मुझे कितना मानते हैं।

उसकी यह बात सुनकर वह कुर्सी से उठकर उसके पास पलंग पर आकर बैठ गया, उस पर थोड़ा झुकते हुए बोला—यह सब रिश्ते मतलबी होते हैं,

और खास कर पैसे वालों से तो हर कोई दोस्ती रखने में अपनी शान समझता है।

नहीं···आप नहीं जानते उन्हें, कि वे कैसे हैं, अब्बा हुजूर उन्हें अपने बेटे की तरह मानते हैं।

यही बात तो तुमसे मैंने कही है कि यह रिश्ता इन्सानों से नहीं सिर्फ पैसे से होता है, दौलत वालों के तो दोस्त खुद-ब-खुद बन जाते हैं। उनके आगे पीछे घूमते हैं, चमचागीरी करते हैं।

मगर हर एक तो एक सा नहीं होता, फिर उनकी आँखों में हमने आज तक ऐसी झलक नहीं देखी, साथ ही उन्हें कमी किस बात की हो सकती है, इतने फेमस राइटर हैं, काफी कुछ कमा लेते होंगे।

छोड़ो इन बेकार की बातों को। जमाल ने उस पर थोड़ा और झुकते हुए कहा, जानती हो न, मुझे ऐसी बातों से बड़ी बोरियत महसूस होती है, और तुम्हें भला इन बातों से क्या वास्ता, यह दुनिया बहुत बड़ी है, हरएक अपने आप में मस्त है, कोई अमीर है तो दौलत का मजा खुद ही लूटता है और अगर कोई फेमस है तो अपने लिए, हाँ वैसे अगर कोई अपना दिमाग खराब करना चाहे तो सबसे अच्छा तरीका है कि वह दूसरों के बारे में सोचना शुरू कर दे।

अच्छा ! हटो भी, मुमताज ने अपने ऊपर झुकते हुए जमाल को हटाने की कोशिश करते हुए कहा।

और उसने तब उस पर थोड़ा और झुकते हुए कहा—आखिर तुम मुझसे अभी तक शरमाती क्यों हो, कहने के साथ ही उसने, सीने पर मचलती चेन से खेलते मुमताज के हाथ पर हाथ रख दिया, तो अपने सीने पर उसका हाथ इतना करीब पाकर मुमताज सिहर उठी, साथ ही जमाल का बदन उस पर और ढीला होता जा रहा था, और इस भार तले उसका हाथ नर्म नितम्भों पर रुका रह गया, साँसों की गर्मी और करीब होती जा रही थी, कसक कर मुमताज ने अपनी पलकें बन्द कर लीं, सारा बदन उसका कसमसा सा उठा, आखिर कह ही उठी बोझिल आवाज में 'हटिये न ··',

क्यों ?…, जमाल ने यह लब्ज उस पर थोड़ा और झुकते हुए कहा—कि जिसे मुमताज के सिवाय और कोई न सुन सका।

चूड़ियाँ चुभ रही हैं…, उसने बहाना बनाया, और आहिस्ता से उसने जमाल का हाथ अपने सीने पर से खिसकाकर अपनी बगल में ले लिया, साथ ही करबट लेकर उसने मुँह दूसरी तरफ कर लिया, तब उसके चेहरे पर घिर आयी घटाओं को अपने हाथ से हटाते हुए कहने लगा—देखो न जरा मेरी तरफ…,

ऊं हूँ—, मुमताज ने कसक कर कहा।

और तभी दरवाजे पर दस्तक की आवाज ने दोनों को चौंका दिया, झट से जमाल मुमताज पर से हट गया, और मुमताज ने भी अपनी अस्त-व्यस्त साड़ी और जुल्फों को ठीक किया, क्योंकि जमाल दरवाजा खोलने जा रहा था।

दरवाज़ा खोलकर जमाल एक तरफ हुआ तो नौकरानी ने भीतर आकर भरी हुई तश्तरी मेज पर रख दी, जिसमें दो गिलास मिल्क-शेक और एक बड़ी सी प्लेट रेफ्रीजरेटर से निकले हुए ठण्डे-ठण्डे फलों से भरी हुई थी।

रखकर जब वह जाने लगी तो जाती हुई के कदमों की तरफ देखकर चाल के अन्दाज को जमाल का देखना मुमताज को जरा बुरा सा लगा।

मुमताज के सामने आकर वह बैठ गया और एक नई सिगरेट सुलगाकर उसका धुँआ मुमताज के चेहरे पर फेंकता हुआ बोला—एक बात है जालिम तुममें…, कि तुम्हारी अदाएँ बड़ी कातिल हैं।

सुनते ही मुमताज ने बुरा सा मुंह बनाकर कहा—कितनी बार कहा है आपसे कि ऐसी बातें मत कहा करिए।

जब तुम्हारी अदाएँ ही ऐसी हैं तो भला फिर क्या कहूं, तुम ऐसी अदा मत दिखाया करो तो मैं नहीं कहा करूंगा।

मगर मुमताज ने उसकी इस बेहूदी बात का कोई जवाब न दिया और न ही उसने कुछ कहा, चुपचाप उसने गिलास उठाकर उसकी तरफ बढ़ा दिया।

और जब जमाल ने देखा कि मुमताज का रुख नाराजगी की तरफ होने को है तो मर्द ने अपनी चापलूसी का तीखा तीर चलाया, कहने लगा बड़े ही सीधे

सादे अन्दाज में—तुम अभी बात कर रही थीं न अपने उन राइटर साहब की…। तो मुमताज़ की नजर जो झुकी हुई थी एक चमक लिए हुए उसकी तरफ उठ गयी…, और इस बीच जमाल अपनी नजर बड़ी अदा से झुका कर बात को पूरा करते हुए बोला—और साथ ही फरमाया था कि वे तुम्हें बहुत चाहते भी हैं, तो फिर इसका मतलब है कि उन्हें बहुत ज्यादा गरूर है कि उन्हें मालूम होते हुए भी वे खुद क्यों नहीं यहाँ आ गए।

उनके यहाँ से खबर आयी थी कि उनकी वाइफ…, की तबीयत ठीक नहीं है।

ओह ! तो जनाब शादी शुदा हैं।

जी हाँ—, मुमताज ने उसकी तरफ और कुछ नजर झुकाकर धीरे से कहा—आजकल 'इनडेज' हैं।

शुक्र है नौबत यहाँ तक आ पहुँची है वरना मैंने तो सुना है कि अक्सर राइटरर्स की बीबियाँ उनसे नाराज रहती हैं, क्योंकि उन जनाब का दिल तो हीरोइन की ब्यूटी लिखते-लिखते और रोमान्स की खाली बातें लिखते-लिखते ही भर जाता है, न दिन का ख्याल रहता है उन्हें न रात की परवाह होती है कि उनकी बीवी बेचारी कब तक तकियों को बाहों में दबाकर गुजारा करेगी और उनकी बीबी बेचारी उनसे नाराज न हो तो भला फिर और क्या करे।

लेकिन वे दोनों ऐसे नहीं हैं, कहते हुए मुमताज एक बड़ी सी काश्मीरी नाशपाती प्लेट से उठाकर सावधानी से उसका छिलका उतारने लगी, और साथ ही बात को भी आगे बढ़ाती हुई बोली—हर वक्त घर में एक मीठी मुस्कराहट सी फैली रहती है, दोनों ही एक दूसरे का बहुत ख्याल रखते हैं।

यह सब उनके ख्याली पुलाव होते हैं, प्यार तो वे इतना जताते हैं कि अपनी वाइफ के बड़े मीठे-मीठे नाम रखते हैं, और चाहे वह बात-बात में गधे की तरह दुलत्ती मारती हो, मगर वे उसे फिर भी उसी तरह पुकारेंगे।

जमाल ने जब यह बात कही तो मुमताज को हल्की सी हंसी आ गयी, तब जमाल ने भी मुस्कराहट से साथ देते हुए कहा—नहीं सच है यह बात, हमारे भी एक फ्रेण्ड थे, अपने आपको राइटर कहते थे, अगर किसी थके

क्लास चालीस पन्नों के रिसाले में उनकी कहानी-वहानी छप जाती थी तो सारे शहर में ढिंढोरा बजवा देते थे, हरएक के पास लिए-लिए फिरते थे उसे, ऐसे रिसालों से कुछ मिलने मिलाने की उम्मीद तो होती नहीं, इस वास्ते बेचारे किसी प्राइमरी स्कूल में सौ, सवा सौ की नौकरी करते थे, तो इत्तफाक से एक दिन हम तीन या चार दोस्त उनके यहाँ पहुंच गये, तो उन्होंने बड़े प्यार से अपनी बीवी को पुकारते हुए कहा—मेरी चान्दी·····! जरा चार कप चाय तो बनाना, तो उसकी वाइफ चन्द्रलेखा ने तपाक् से कहा—मर गयी चान्दी तुम्हारी सारा दिन चाय बनाते-बनाते। क्या मिले है सारा दिन कागज काला करते-करते, ऊपर से सारा दिन चूल्हे को फूंक फूंककर साथ में मुँह हमारा काला होवे है, तब उस दिन के बाद हमने तोबा की।

लेकिन उन्हें तो किसी बात की कमी नहीं, न ही उनका स्वभाव ही ऐसा है।

खैर छोड़ो इस किस्से को, जमाल मुमताज़ का मूड फ़ेश होते देख अपनी दिल्लगी की बातों पर आना चाहता था, मगर मुमताज़ ने झट से कहा—बे फिक्र रहिये, वहाँ ऐसी बात नहीं है, आप खुद देखेंगे कि वे कितने अच्छे आदमी हैं, और फिर शहनाज तो फरिश्ते की तरह पेश आने वालों में से है, उसे तो······

शहनाज! जमाल ने उसकी बात काटते हुए कहा—यह कौन है······क्या 'उसकी'······

जी हाँ, यह 'इनकी' बीवी का नाम है, कहने के साथ साथ उसने नाशपाती के चार छः टुकड़े कर दिये और नजर उठाकर अपने खाविंद की तरफ बढ़ाते हुए बोली—लीजिए······

और जमाल ने एक फांक उठा ली······,

अरे! मैंने आपसे प्लेट पकड़ लेने को कहा है, न कि···, और मुस्कराकर उसने बात अधूरी छोड़ दी।

ओह! कहकर जमाल ने होठों में सिगरेट दबाकर प्लेट पकड़ ली।

और मुमताज़ फिर से दूसरी छीलने में मशगूल हो गई।

तभी पल भर बाद जमाल ने एक अजीब सा सवाल किया—लगता है शादी काफी पुरानी हो गई है उनकी······

जी··············, सुनते ही मुमताज़ कुछ सकपका गयी, मगर संभलते हुए बोली—जी हाँ, काफी पुरानी हो गयी है, और आहिस्ता से उसने अपनी निगाह उठाकर उसकी तरफ देखा, जो एक लम्बा सा कश खींचकर धुआँ छोड़ रहा था, तभी पता नहीं क्यों मुमताज ने अपनी बात का रुख बदलते हुए कहा—आपका क्लब जाने का प्रोग्राम तो आज कैन्सिल रहेगा न ····,

क्या वहाँ जाना बहुत जरूरी है, जहाँ से कोई बुलाने तक तो आयए नहीं।

कहा तो है कि घर में जब कोई बात हो तो ····,

तुम भी क्या हो, बच्चों की तरह करती हो, जानती हो बिजनेसमैन अगर घूमने भी निकलता है, तब भी उसका कोई न कोई 'परपज' होता है, वहाँ जा कर सिवाय सरदर्द के और क्या होगा।

अच्छा, थोड़ी देर के वास्ते ही सही, फिर चले चलेंगे क्लब।

और अगर पहले क्लब चला जाए और वापिसी पर अगर टाइम मिला तो उसके हो लिया जाय तो कैसा रहे।

अगर आप सच पूछें, तो मुझे तो क्लब जाकर बोरियत महसूस होती है, सिगरेटों का धुआं, शराब की बदबू और पता नहीं कैसा बुरा सा माहौल होता है कि मेरा तो दम घुटने लगता है।

उसकी बात सुनते ही जमाल जोर से हँस पड़ा, कहने लगा—बहुत खूब ! लोगबाग क्लब में जाकर वापिस आने को नहीं चाहते और तुम कहती हो वहाँ जाकर बोरियत होती है, रात की रंगीनबादियों में वहाँ पता नहीं हर रात कितने अजनबियों से मुलाकातें होती हैं, और मुलाकात के बाद फिर बातें··········और बातें भी वो जो सिर्फ उस रात तक ही की सरहद में रहकर खत्म हो जाती हैं, वो बातें घरों की तरह किसी की नुक्ताचीनी और गिले की नहीं होतीं, वो होती हैं सिर्फ अपनी, वरना किसी के घर में जाकर सिवाय परेशानियों को रोने के और क्या होता है।

मुमताज सुन तो रही थी उसकी बात, मगर लगता था कि उस पर गौर नहीं कर रही थी,

अच्छा, तो फिर ऐसा करते हैं, अब जल्दी ही चल देते हैं यहाँ से, उनके यहाँ से होकर फिर क्लब चले चलेंगे।

तुम्हारी जिद की बात है, खैर, हम भी ना नहीं करेंगे।

अपनी बात पर मुस्करा पड़ी मुमताज, बोली—कहीं इसमें भी कोई बिजनेस की बात तो नहीं।

लेकिन तुम्हें मालूम होना चाहिए, कि अगर हो भी तो बिजनेसमैन किसी से कहा नहीं करते।

कहा उसने तो दोनों हँस पड़े, मगर दोनों की हँसी में कोई फर्क था या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता।

शाम की इन्तजार को ज्यादा बेजार न बनाने के लिए मुमताज तैयार होने में लग गयी, दिल में पता नहीं एक अजीब सी खुशी क्यों फूट रही थी, गुनगुनाते हुए हर काम को कर रही थी, नहाने ही नहाने में उसे आध घण्टे से ज्यादा लग गया, ठण्डे ठण्डे पानी की भरी हुई संगमरमर की चिकनी हौज से निकलने को जैसे जी ही नहीं चाह रहा था, उसका। अपनी गदराई देह को हल्के-हल्के तौलिये में सुखाकर उसने नमी में कमी न होने दी, पानी की हल्की-हल्की चमक अपने आवरणहीन बदन पर देखकर पता नहीं क्यूं अपने आप से ही शर्म के मारे मरी जा रही थी वह। महकते पाऊडर के मुलायम से खुशकिस्मत पफ ने उसके नाजुक जिस्म की हर ऊंचाई नीचाई को बड़े प्यार से चूम लिया कि जैसे उसे गरूर हो आया हो, अपनी खुशकिस्मत पर कि इतनी खुशकिस्मती तो खाविंद के हाथों को भी नसीब कहाँ होती होगी कि हर रोज इस आलम में मेहरबानी फरमाई जाती हो।

और जब वो हल्के से नीले रंग की छोटे-छोटे महीन-महीन सितारों से टंकी झिलमिलाती साड़ी को सँभालते हुए बाहर आयी तो उसका सामना जमाल से हो गया, जिसने एक प्यासी सी लरजती निगाह से उसकी तरफ देखा तो मुमताज ने भी शरमाकर करारी चितवन से उसकी तरफ देखते हुए

तीरे नजर कुछ इस शोख अन्दाज से चलाया कि जमाल ····जो कुछ कहने जा रहा था ठगा सा खड़ा रह गया और मुमताज़ बल खाकर अपने आपमें सिमट कर उसके पहलू से बचती हुई भाग आयी।

तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वह अपने कमरे में आ गयी, आइने के करीब आकर जब निगाह खुद पर पड़ी तो अपने आप पर से अपनी ही निगाहें उठाए न उठी उसकी, ऐसा लगा उसे जैसे नीले आकाश में झिलमिलाते सितारों के बीच उसका महताब सा चेहरा महताब को मात कर रहा हो, लाइट की किरणें सितारों से टकराकर एक अजब सी चमक बिखेर रही थीं, घूमकर हर तरफ उसने अपने आपको देखा और बालों को खोलकर एक झटका देकर उन्हें पीठ पर बिखेरते हुए आइने में देखा तो रही सही कमी भी दूर हो गई, सितारों की जगमगाहट में जुल्फों का अंधेरा पाकर चाँद सा चेहरा और चमक उठा, नीमबाज कहें या कमलनयन··········कि इतनी खूबसूरती पाकर अपराधी की तरह झुकने जा ही रहे थे उसे आइने में अपने करीब किसी की परछायीं दिखायी दी और देखते ही उसने पलटकर लगभग चीखती आवाज में कहा—आप ऽऽ··········! और दौड़कर उसके पास आ गयी, उसके हाथों को अपने हाथों में सम्भालते हुए बोली—ठीक हैं न आप·············और शहनाज······?

आने वाले थे राइटर साहब।

कहने लगा, यह सवाल करने का हक पहले मुझे है, लेकिन खैर फिर भी जवाब यही है कि सब खैरियत है, तुम्हारी इन्तजार, कहीं बेकरार न करे इस वास्ते खुद ही यहाँ तक चला आया, हाँ, तो जनाब जमाल साहब कहाँ गये हैं·······।

पीछे मुड़कर देख लीजिए, उसने कहा।

तो उसने पीछे मुड़कर देखा, वह अन्दर आ चुका था।

देखते ही जमाल ने कहा—ओह ! अभी तुम्हारी ही बात कर रहे थे।

इसके लिए शुक्रिया।

खैर यह भी अच्छा हुआ कि तुमने आने की तकलीफ की, क्योंकि मुमताज़

तुमसे दो चार मिनट को मिलने के लिए प्रोग्राम बना रही थी अभी, कि क्लब जाते वक्त दुआ सलाम करने का इरादा है, तब यह अच्छा ही हुआ कि तुम खुद ही चले आये, टाइम भी बचा और फर्ज भी पूरा हो गया।

लेकिन मैं तो सिर्फ उनको ही नहीं, आपको भी लेने आया था कि अगर आप चलते दो चार मिनट के लिए ही सही हमारे गरीबखाने की रौनक रोशन कर देते तो यह अहसान ही होता आपका।

वैसे तो बात ठीक है कि अहसान इन्सानों पर ही किये जाते हैं, लेकिन अब बात यह है न कि मुमताज को तुमसे सिर्फ मिलना ही तो था, वो यहाँ भी मिल लिया गया है और तुम्हारे घर में भी वही बात होती।

लेकिन क्या तुम शहनाज से नहीं मिलोगी, यह बात उसने मुमताज़ की तरफ देखते हुए कही और फिर थोड़ा सा जमाल की तरफ मुड़ते हुए बोला—उसने खास ताकीद की थी कि किसी प्रकार भी हो, एक बार दूल्हे मियाँ को घर जरूर लाइएगा—, और उसे कुछ कहने का मौका देने से पहले उसने एक छोटा सा सवाल कर डाला—क्या आप चलेंगे नहीं……? कह कर उसने बड़े अन्दाज से जमाल की तरफ देखा, और दूसरे ही क्षण उसको कुछ कहने का मौका देने के लिए उसकी तरफ चेहरा घुमाकर वापिस मुमताज़ की तरफ कर लिया, जिसका घनेरी जुलफों में चन्द्रमा सा चेहरा झुका इस तरह उदास लग रहा था जैसे चाँद की पहली किरण पड़ते ही श्वेत कमल मायूस सा हो जाता है। तभी जमाल ने बड़ी सधी अदा से कहा—नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं थी, लेकिन ख्याल यह आ रहा था कि तुमको खामख्वाह तकलीफ होगी, महमानवाजी के लिए मर्द को भागदौड़ करना अच्छा नहीं लगता।

लेकिन जब बीबी की हालत ठीक न हो तो इसमें भला हर्ज की क्या बात है।

इसी लिहाज से तो कहा है।

ओह! तो आपको मालूम है कि……आजकल उसकी तबियत नाशाद है, कह कर उसने एकदम जमाल की तरफ देखा, और फिर होठों पर मुस्कुराहट लाते हुए बोला—शायद मुमताज़ ने बताया होगा।

हाँ हाँ......, खिसियाते हुए बोला—अभी यहीं तो बातें कर रही थी, इस बारे में, कह कर उसने एक उचटती सी नजर से उसकी तरफ देखा मगर उसकी निगाह अपने पर टिकी देख उसने झुक कर ऐश्ट्रे में पता नहीं क्यों सिगरेट को मसल दिया जब कि वह अभी आधे से भी ज्यादा बाकी था, और जब उसने फिर नजर उठायी तो कह उठा—खड़े क्यों हो......बैठ जाओ न, और खुद उसके पीछे की तरफ होकर सोफे की पीठ से कुशन को ठीक से रखने लगा।

लेकिन अब आप जल्दी तैयार हो जाइए......, तो अच्छा ही है। यह मुमताज़ ने जमाल की तरफ देखते हुए कहा—ज्यादा न सही दस पांच मिनट ही ठहरेंगे वहाँ, मैं जरा शहनाज से तबियत का हाल पूछ लूंगी, और आपका भी फर्ज पूरा हो जाएगा।

और बिना कुछ कहे जमाल वहाँ से हट गया।

वैसे कैसी तबीयत है शहनाज की......मुमताज़ ने बड़ी दबी आवाज में कहा।

वैसे तो बिल्कुल दुरुस्त है, बस अब दो चार रोज की बात भी मुश्किल से है।

सुनकर मुमताज़ ने पलकें झपका लीं, बोली—उसका ख्याल अब सावधानी से रखना।

सुनकर उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि पूछने लगा—यह बताओ, कि तुम खुश हो न......?

क्या जबाब देती भला वह उसका, जवाब के अन्दाज में शरमा जाना ही काफी था, और बढ़ गयी साथ ही आइने की तरफ, तो जैसे वो दरवाजे की तरफ बढ़ा तो मुमताज़ पूछ बैठी, आप कहाँ चले......?

जरा नीचे ....।

मगर नीचे तो कोई नहीं है अम्मी-जान तो नौशाबा के यहाँ गई हुई हैं।

क्यों......? समझते हुए पूछा उसने।

तो वह बढ़ कर ड्रेसिंग टेबिल के सामने बैठ गयी, और हाथों से ब्रुश

धालों पर चलाती हुई कुछ शरारत से बोली—उससे यह पूछने कि वह सचमुच भाईजान से प्यार करती भी है या नहीं।

कह तो दी यह बात मुमताज़ ने, मगर उसने देखा कि आइने में वह सर झुकाए बैठा था, तो वह भी सहम सी गई, सोचने लगी—, कि क्या कह डाला है उसने, और चुपचाप बाल बाँधने लगी।

पता नहीं क्यों वह खुद भी उदास सी लग रही थी, इस वक्त। वरना बाथरूम से जिस 'जौली मूड' से निकल कर अपने कमरे तक पहुँची थी अब वो मूड ऑफ सा हो गया था, पता नहीं वह शहनाज के बारे में सोच रही थी या लेखक के, जो इस मूड में बैठा हुआ था, या सोच रही थी कि हो सकता है कि जमाल के बोलने के बेहूदे अन्दाज पर वह गौर कर रही हो, चूँकि जमाल ने हर बात में बड़ी शान से 'तुम' लब्ज को दोहराया था।

लेकिन वह किसी भी अन्जाम तक न पहुँच पायी, खुद वह इस बात को बुरा महसूस कर रही थी कि एक आदमी तो 'आप' कह कर उसकी इज्जत कर रहा हो, और दूसरा जवाब में 'तुम' कह कर अपनी शान समझ रहा हो।

इसी तरह की बेहोश बातों को दिल में सोचते हुए वह तैयार होकर ड्रेसिंग के सामने से उठी और उससे बोली—चलें……?

जमाल साहब………? उन्हें आ जाने देतीं।

नहीं……वे तो नीचे ही होंगे।

और दोनों जब नीचे आने लगे तो सीढ़ियों की ठक् ठक् ने जमाल को चौंका दिया, मुमताज की तरफ देखते ही बोला—पान खाओगी……?

मुमताज ने देखा कि नौकरानी छोटी सी, चांदी की तश्तरी में एक लगा हुआ तैयार पान लिये खड़ी थी।

नहीं मुमताज ने कहा।

तुम्हारे लिये मंगाऊ……, इशारा लेखक की तरफ था, और चेहरा उसका नौकरानी के झुके चेहरे की तरफ था, बोला—पान ये काफी अच्छा लगाना जानती है।

माफ करना, मैं खाया नहीं करता।

लच्छा तो आओ, जल्दी चलो……।

और बम्बई की स्याह साफ सड़कों पर से 'मरकरी' की न्यू मॉडल हंस की तरह तैर रही थी, यह थी वह कार……जो मुमताज़ को दहेज में दी गई थी, खैर ! यह बात भी कौनसी बड़ी है—, आखिर एक अमीर बाप की बेटी थी, जिसके निक़ाह में मेहर पैंतालीस हजार के लिखे गए हों, तो अगर उसकी शादी पर तीन चार लाख का दहेज दे दिया गया हो तो कौनसी गजब की बात थी यह।

जैसे ही कार लेखक के घर के नीचे आकर रुकी तो सबसे पहले वही उतरा और उनको आमन्त्रित करते हुए बोला—आइए, और ऊपर जाने के लिए सीढ़ियों की तरफ बढ़ते हुए बोला—इधर……।

और सीढ़ियाँ चढ़ कर उसने धीरे से दरवाजा खोल दिया तो सामने ही नीचे के होटल से कुछ देर के लिए मंगाया गया लड़का अदब से खड़ा हो गया, और जब वे लोग करीब आ गए तो उसने कुर्सियाँ इधर-उधर खिसकाकर उनको बैठा दिया, फर्नीचर भी थोड़ी देर के लिए नीचे से मंगा लिया गया था, इस कोरी दिखावे की दुनिया में इन्सान अपनी इज्जत के लिए क्या नहीं करता।

शुक्र तो इस बात की थी कि यह छोटा सा फ्लैट क्या सुन्दर ढंग से बना हुआ था और फिर शहनाज के हाथों ने इसकी सादगी में भी एक सौन्दर्य खिला दिया था, बैठते ही जमाल के मुमताज़ बोली—शहनाज किचिन में है या………।

नहीं, अपने कमरे में लेटी होगी शायद।

उठ कर मुमताज उसके कमरे की तरफ बढ़ गयी।

और इधर वह छोकरा नीचे चला गया।

तब जमाल ने कहा—फ्लैट तो किराए का ही होगा।

जी हाँ, लेकिन शुक्र है इस दुनिया के उसूलों का कि इन्सान पैसे के जोर पर फ्लैट तो क्या खूबसूरती भी किराए पर ले सकता है।

हो सकता होगा, मगर हमने इन बातों पर कभी गौर नहीं किया, और फिर यह बातें सिर्फ राइटर्स के लिए ही ठीक हैं।

अपना-अपना ख्याल है, खैर लीजिए······कह कर उसने मेज पर रखे 'गोल्डफ्लेक' के टिन का ढक्कन खोलकर उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—मैं तो यही पीता हूँ, अगर आपको एतराज हो तो······

नहीं-नहीं, कह कर जमाल ने एक सिगरेट ले ली।

सुलगाकर धुँए का एक बड़ा सा गुब्बार छोड़ते हुए बोला—इन्सान को बहुत ज्यादा नहीं सोचना चाहिए कि जिन्दगी क्या है और दुनिया क्या है······।

हो सकता है जमाल साहब ! मगर अगर आप बुरा न मानें तो मैं यही कहूंगा कि आपकी बात सरासर गलत है।

तभी लड़का एक बड़ी सी तश्तरी में सजा हुआ शानदार कॉफी सेट थामे हुए मेज के करीब आया।

रख कर जब वह चला गया तो जमाल ने कहा, तुमने यह तकलीफ क्यों फरमाई······हम तो क्लब जा ही रहे थे।

एक कप कॉफी की क्या बात है, यह तो यूं ही चलते ही पी ली जाती है, और तभी उसने मुमताज़ को बाहर आने के लिए पुकारा, मगर उसने पुकारते ही चेहरा घुमाकर जमाल की तरफ कर लिया, पता नहीं क्यों वह जमाल की तरफ ही देखे जा रहा था।

तभी मुमताज़ की आवाज सुनाई दी, जो शहनाज से कह रही थी—अब आ भी जाओ न, इसमें भला शर्म की क्या बात है।

यह आवाज यहाँ कमरे तक साफ सुनाई दे रही थी, जिसे यह बैठे हुए दोनों भी सुन रहे थे, जमाल सर को थोड़ा घुमाकर दायें तरफ किये हुए था और सिगरेट का कश बड़े आराम से खींच रहा था, मगर लेखक की नजर उसके चेहरे पर ही थी, न मालूम क्यों, तभी जब उसे अहसास हुआ कि मुम-ताज़ और शहनाज कमरे से निकल कर इस तरफ आ रही हैं तो उसने जमाल का ध्यान भंग करने के लिए मुमताज़ की तरफ देखते हुए कहा—अन्दर बैठकर ऐसी कौन-सी गुप चुप बातें हो रही हैं जो बाहर बैठकर नहीं की जा सकतीं।

तब तक दोनों कुछ करीब भी आ चुकी थीं।

और लेखक ने तब कुछ खड़ा होते हुए कहा—यही हैं इस घर की माल-

किन''नाम तो आप जानते ही होंगे, और आप हैं मिस्टर जमाल—, हमारी मुमताज के खामिद साहब !

तब शहनाज का हाथ धीरे से अदाब का अन्दाज पेश करते हुए उठ गया, और जमाल ने भी बड़ी अदा से जवाब दिया।

मुमताज जमाल की बगल वाली सीट पर न बैठते हुए लेखक की बगल में मुस्कराकर बैठ गयी, और शहनाज का हाथ पकड़ कर मेज के उस तरफ करके खींचते हुए बोली—बैठ जाओ न'''?

और शहनाज जैसे सकते की हालत में आ गयी, घबराई सी नजर से उसने लेखक की तरफ देखा, जिसने कह दिया—बैठ जाओ न''', इसमें शर्म या एतराज की कौन सी बात है, फिर यह कोई पराए तो नहीं''',

सहम कर शहनाज ने कुर्सी संभाल ली।

तब मुमताज ने कॉफी तैयार करने को हाथ बढ़ाया ही था कि राइटर साहब ने उसे टोकते हुए कुछ अदा से कहा—तुम रहने दो, शहनाज तैयार कर लेगी, और फिर तुम्हारे हाथ की तैयार की हुई तो रोज पीते हैं।

आज इसके हाथों की पीकर देखें, क्यों आपको ऐतराज तो नहीं, इशारा जमाल की तरफ था, जिसने सुनकर छोटा सा जवाब दिया कोई खास तो नहीं,

और हो भी भला क्या सकता है कहकर वह मुस्करा पड़ा और सिगरेट का टिन उसकी तरफ बढ़ाते हुए बोला—लीजिए,

और जमाल ने झट से एक सिगरेट इस तरह खींच ली जैसे वह हड़बड़ा गया हो।

लाइटर दे देना शहनाज जरा''', मुमताज ने उससे कहा और शहनाज ने उसी तरह झुकी नजर से अपने बायीं ओर पड़ा लाइटर उठाकर अपने दायीं ओर रख दिया, और फिर से कॉफी बनाने में लग गयी।

तैयार करके शहनाज ने कठपुतली की तरह सबके आगे कप प्लेट सरका दिये।

कॉफी में अगर शक्कर कम हो तो और डाल लेना, इसमें शर्म मत करना जमाल साहब, अव्वल तो ठीक ही होगी, क्योंकि औरतें इन कामों में बड़ी

माहिर होती हैं, सूरत देखते ही अन्दाज लगा लेती हैं कि किस किस्म का आदमी है ।

लेकिन इन्होंने भी तो कुछ नहीं कहा, कहा मुमताज़ ने ।

वैसे यह एक्टिंग करना बड़ा मुश्किल होता है, लेखक ने यह बात जमाल की तरफ देखते हुए कही और फिर चेहरा मुमताज़ की तरफ घुमाते हुए बोला—लड़कों की इन अदाओं पर, कालिज लाइफ में बहुत सी लड़कियाँ मरा करती हैं, कहा उसने तो मुमताज़ कुछ हल्के से खिलखिला उठी ।

सुनते ही जमाल कुछ झेंप सा गया ।

मगर मुमताज़ ने उसी तरह शरारत के अन्दाज में कहा—कहीं आप अपने कालिज लाइफ का तजुर्बा तो नहीं सुना रहे ।

माफ करना, जिस शहर में मैं पढ़ता था, उस कालिज में सिर्फ एक कामर्स साइड ही ऐसी थी जिसके स्टूडेन्ट बेचारे इधर-उधर देखते हुए ऐसे चलते थे जैसे रेगिस्तान में ऊँट ।

'तो क्या यह जरूरी है कि इन अदाओं की स्कीम, क्लास में लड़कियाँ होने पर ही कामयाब हो सकती है, वैसे नहीं ।

बेशक, किसी को अपनी तरफ एट्रेक्ट तभी किया जा सकता है जब कि रोजाना अपनी इन मासूम अदाओं को पेश किया जाय, तब एक क्लास ही ऐसा सेन्टर होता है, जहाँ यह बात लागू हो सकती है, जैसे क्लास में खड़े होकर अगर बड़े भोलेपन से प्रोफेसर से सवाल किया जाए तो यह तय है कि सारी क्लास की नजर उसकी तरफ उठ ही जाएगी, और ऐसे में अगरकिसी लड़की की तरफ देखकर वह लड़का पलकें झपका ले तो ऐसा हो नहीं सकता कि वह लड़की उसके बारे में दिन में दो चार बार न सोचे ।

'—अच्छा छोड़िये भी न इन बातों को, आप भी क्या टापिक लेकर बैठ गए हैं, मुमताज़ ने बात को यहीं रोक देना चाहा ।

तभी लेखक ने मुमताज को कोहनी का हल्का सा झटका मारते हुए उसका ध्यान शहनाज की तरफ मुखातिब किया, जो सर झुकाए बैठी थी और कॉफी के प्याले से उड़ती हुई भाप को देख रही थी, खुदा जाने भाप की तरह वह भी ख्यालों के पंखों पर सवार होकर कहाँ उड़ रही थी ।

तब न मालूम मुमताज को क्या शरारत सूझी, वह अपने खाविंद की तरफ देखते हुए बोली—आप भी क्या कमाल के आदमी हैं, आपके बराबर बैठे हुए मेजबाँ ने तो अभी तक एक घूंट भी नहीं पिया और आपने आधा प्याला खाली कर दिया है। शायद वो बेचारी तो सोच रही होगी कि आप कहें तो वह बिस-मिल्लाह करे।

मेरे ख्याल से औरत की बात औरत जल्दी मानती हैं, इस वास्ते तुम ही कह दो, जमाल ने एक मंजे हुए कलाकार की तरह कहा।

मगर पहले आपने कोशिश तो की होती, अगर नाकामयाब होते, तब मदद की अपील करते। कहते हुए उसके होठों पर शरारत मचल रही थी।

लेकिन तभी शहनाज ने हौले से थोड़ा झुककर और थोड़ा कप को उठाकर एक घूंट भर लिया।

लो उसने किस्सा ही खत्म कर दिया, कहकर मुमताज हँस पड़ी, बोली शहनाज से—एक मिनट तो और ठहर जाती जरा। देखते तो क्या जवाब देते यह, क्यों कोई हमदर्दी थी इनसे कि तुमने इनका रास्ता आसान कर दिया।

लेकिन शहनाज तब भी चुप थी।

और तब जमाल बोला—तुम जल्दी से निपटने की कोशिश करो, क्लब को देर हो जाएगी वरना।

बस अब वहीं तो चलना है, कहा मुमताज ने उससे, और शहनाज से उसने सवाल कर दिया—तुमने क्या कोई बात न करने की कसम खायी हुई है।

आजकल के जमाने में कसम खाने वाले ही अक्सर उसको निभाना नहीं जानते, शहनाज ने कहा तो मुमताज उसके चेहरे की तरफ देखने लगी, मगर उसने बात को आगे नहीं बढ़ाया, बल्कि उसको रफा-दफा करने के लिहाज से बोली—अच्छा-अच्छा अब तुम जल्दी से कॉफी पीकर हमें 'सी-आफ' करने की कोशिश करो, और खुद भी जाकर आराम करो, क्योंकि हमें पता है कि अब तुम भी फिलासफी में बातें करना सीख गयी हो।

लेकिन न मालूम क्यों, मुमताज की बात सुनते ही शहनाज कुछ सकपका गयी, जैसे उसने यह बात कहकर गलती कर दी हो, पलकें झपकाकर जल्दी-जल्दी कॉफी पीने लगी।

और जब यह पीने का यानी कि सिर्फ काफी का दौर खत्म हुआ तो जमाल सबसे पहले खड़ा हुआ और मुमताज की तरफ देखते हुए बोला—आओ अब काफी देर हो गयी है।

आए हो तो चले भी जाना, लेकिन इतनी जल्दी क्या है, थोड़ी देर और बैठ जाइए·····, कहते हुए लेखक उठ खड़ा हुआ।

नहीं, फिर आ जाएँगे···, यह जवाब मुमताज़ का था।

और तीनों ही सीढ़ियों की तरफ बढ़ गए, सिर्फ शहनाज वहीं रह गयी।

और जब उन दोनों को रुखसत करके लेखक ऊपर आया तो उसने देखा कि शहनाज कुर्सी की पीठ पर हाथ रखे खड़ी थी, उसके करीब आकर उसने धीरे से उसके कन्धे पर हाथ रख दिया, कहने लगा—क्या सोच रही हो।

और शहनाज ने आहिस्ता से अपनी गरदन घुमाकर उसकी तरफ देखा और बोली—कुछ नहीं।

अच्छा, जाओ तुम आराम करो, कहते हुए उसकी पीठ पीछे बाजू लेकर उसे कमरे के दरवाजे तक ले गया।

और तभी होटल का छोकरा बर्तन उठाने आ गया था।

साथ ही पीछे उसके एक और भी आदमी था, शायद उसकी ड्यूटी फर्नीचर उठाकर ले जाने की थी।

३०

'—तुम होश में तो हो···········या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, यह बात लेखक ने शहनाज से बड़े गुस्से से कही·····जो उसके सामने ही कुछ दूरी पर खड़ी थी, और उसी तरह कड़कती आवाज में बोला—मैं पूछता हूं, आज तुम्हारे दिमाग में यह 'अबार्शन' कराने की बात क्यों आई है, आखिर इसकी खास वजह क्या है।

लेकिन शहनाज जवाब में खामोश थी, वो उसी तरह पलकों को थोड़ा गिराए खड़ी थी, जैसे इसका जवाब सोच रही हो।

बोलो न, जवाब दो, खामोश क्यूं खड़ी हो।

'मैं अपने पाप का मुँह नहीं देखना चाहती।'

वो तो साफ जाहिर है कि जब अबार्शन हो जाएगा तो किसी का मुँह देखने न देखने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता, लेकिन मैं पूछना तो यह चाहता हूं कि आखिर तुम उसका मुँह क्यों नहीं देखना चाहतीं, और फिर 'एट-ए-टाइम' जब कि वक्त न के बराबर हो तब तुम्हारे दिमाग में यह बात क्योंकर आयी है......

यह मेरी ख्वाइश है......बस !

लेकिन किस मकसद से।

हरएक बात बताई नहीं जाती।

ठीक है, कि हरएक बात बताई नहीं जाती, लेकिन हरएक से छुपायी भी नहीं जाती, क्या वह ऐसी है कि तुम मुझे भी बताना नहीं चाहती हो, तो इसका मतलब है कि तुम मुझसे भी छुपाना चाहती हो।

और इस वक्त यहाँ है ही कौन, जिससे मैं यह कहना नहीं चाहती—, शहनाज ने बात को घुमाकर मुँहतोड़ जवाब दिया, तो वो बल खाकर रह गया, और घूरकर उसने शहनाज की तरफ देखा मगर नजर झुकाए खड़ी शहनाज उसका यह रूप न देख पायी।

इस छा गई खामोशी को तोड़ते हुए वह बोला—एक बात पूछना चाहता हूं शहनाज तुमसे, कि तुम्हारा प्रेमी क्या सचमुच तुमसे दिली मुहब्बत करता था।

तब शहनाज ने आहिस्ता से अपना चेहरा उठाकर उसकी तरफ देखा और फिर से निगाहें नीचे करते हुए बोली—मैं इसका जवाब नहीं दे सकती।

दे नहीं सकतीं या देना नहीं चाहतीं।

ऐसा ही समझ लीजिए।

शहनाज !......ऽऽ........, वह चीख उठा, तुम होश से बात करो, जानती

हो तुम ...., कि इस वक्त किससे बात कर रही हो, मैं तुमसे पूछता हूं तुम इसका जवाब क्यों नहीं देना चाहतीं......?

लेकिन शहनाज फिर खामोश खड़ी रही और उसकी इस खामोशी ने उसका पारा और भी चढ़ा दिया, वह पल भर की भी इन्तजार किये बगैर उसी तरह गुस्से से भरकर बोला—बोलो न......, मैं जवाब चाहता हूं इस बात का कि तुम इस बात को बताना क्यों नहीं चाहतीं।

तो शहनाज के सब्र का पैमाना भी छलक उठा आखिर एक इन्सान ही थी, वह भी अपने आपको बस में न रख सकी, तड़पकर बोली—यह पूछकर आप मेरा मजाक उड़ाना चाहते हैं।

और न बताकर तुम मेरा मजाक उड़ाना चाहती हो।

लेकिन मैं मजबूर हूं और आपके इस सवाल का जवाब दे नहीं सकती।

तो इसका मतलब है कि तुम साथ ही तौहीन भी कर रही हो।

आप चाहे जो मतलब लगा लें, मैं क्या कह सकती हूं।

बहुत खूब ! सीनाजोरी भी साथ में है। और साथ ही थोड़ा वह उसके करीब आ गया, और कड़कती आवाज में बोला—मैं ज्यादा नहीं, तुमसे सिर्फ छोटा सा जवाब हाँ या ना में चाहता हूं....।

सुनते ही शहनाज उसकी तरफ से पलटकर पीठ करके खड़ी हो गई और वह भी उसी तरह कुछ ऊंची आवाज में बोली—और अगर आप बुरा न मानें तो क्या मैं पूछ सकती हूं कि आप यह सवाल पूछकर करेंगे क्या ...?

और इस बात पर वह फिर बल खाकर रह गया, एक हाथ की मुट्ठी को दबाकर उसने दूसरे हाथ की हथेली पर जोर से मारकर अपने गुस्से को नाकामयाबी का पुरस्कार दिया।

लेकिन तभी शहनाज अपनी जगह पर खड़ी खड़ी वापिस घूमी और एक बड़े संभले हुए लहजे में कुछ नर्म आवाज में बोली—इस सवाल के पहलू का हर अन्दाज आपके पास है, क्या आप इतना भी अन्दाजा नहीं लगा सकते कि एक लड़की जिसके साथ इतना बड़ा धोखा हुआ हो और इस धोखे को कामयाब करने की कोशिश कभी भी तब तक पूरी नहीं हो सकती जब तक कि

उससे प्यार के नाटक न खेले गए हों, फिर उसके बाद का हर नजारा आपके सामने है।

मैंने तुमसे यह बातें नहीं पूछीं, मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि क्या वो तुमसे दिली मुहब्बत करता था, यानी कि हो सकता है कि उससे 'ना' किसी वजह से कराई गई हो, वैसे तुमसे निभाने को तैयार हो।

नहीं ! शहनाज ने तेजी से कहा।

ठीक है, मैं जानता था कि तुम्हारा यही जवाब होगा, कहकर उसने अपनी मुट्ठियाँ कस लीं, मगर तभी उसने सुना कि शहनाज रो रही है, घूमकर उसने पीछे देखा, उसके कानों ने सही सुना था, करीब आकर उसने धीरे से पूछा—तो इसमें रोने की क्या बात है भला।

तो और क्या हँसने की बात है, जब अपनी किस्मत में लिखा ही रोना है तो फिर गम किस बात का है, लेकिन अफसोस तो यह है कि दुनिया वाले रोने भी नहीं देते, और हँसा तो सकते ही नहीं।

मैं जानता हूं कि बात का यह तीर तुम किस पर चला रही हो, लेकिन याद रखना शहनाज कि तुम्हारा वो ख्याल गलत है जिस मकसद से तुमने यह बात कही है, लेकिन अच्छा है कि तुमने कह कर अपने दिल का गुब्बार निकाल लिया है।

लेकिन अब मैं इस दुनिया की हर वीरानी हर रंगीनी से भी निकल जाना चाहती हूं।

ताकि तुम अबॉर्शन करा सको, है न यही तमन्ना।

हाँ—,

लेकिन तुम समझती क्यों नहीं, तुम्हें गम किस बात का है, जब मैंने तुमसे जिन्दगी भर को साथ निभाने का वायदा किया है, तब तुम फिक्र किस बात की करती हो, अगर तुम्हारे दिल में कोई अरमान, कोई सपना हो तो कहो मैं उसे पूरा करने की हर मुमकिन कोशिश करूँगा।

लेकिन देखिए तब अपने वादे से पीछे मत हट जाइएगा।

तो मेरी भी एक शर्त है कि तुम इस मौजूदा बात को नहीं दोहराओगी, बाकी जो कहो, मैं तैयार हूं।

लेकिन आपको इसमें ऐतराज क्या है, यह मेरी खुद की इच्छा है कि मैं अपने गुनाहों का अंजाम देखना नहीं चाहती, वरना मैं सारी जिन्दगी घुट-घुट कर तड़पती रहूंगी, जल-जलकर मर जाऊंगी, इसलिए अच्छा ही है कि एक बार दर्द सहकर हमेशा का नासूर खत्म हो जाए।

लेकिन मैं जानता हूं कि तुम यह कदम क्यों उठाना चाहती हो, इस वास्ते न, कि तुम इस बन्धन से रिहा होकर, किसी से बदला······

नहीं—, मैं इस बात को नहीं सुनना चाहती।

चलो ऐसे ही सही, लेकिन एक बात है शहनाज ! क्या यह सच नहीं है कि पिछले दो-तीन दिन से तुम पहले से कहीं ज्यादा बेचैन हो गई हो।

नहीं ! कहकर उसने तेजी से अपना चेहरा घुमा लिया।

हो सकता है कि यह बात गलत हो, लेकिन क्या यह भी गलत है कि तुम्हें तुम्हारी पिछली जिन्दगी ने फिर से कुछ परेशान सा कर दिया है······?

ऐसी भी कोई बात नहीं है—, वह दृढ़ स्वर में बोली।

तो क्या यह भी सही नहीं है कि तुम अपने उस बेवफा प्रेमी को लेकर फिर से कुछ सोचने लगी हो।

'मैं कहती हूं यह कुछ भी नहीं है।' वह उसी तरह खड़े-खड़े चीखकर बोली।

मान लेता हूं तुम्हारी इस बात को शहनाज········, उसका स्वर भी कुछ तेज हो गया, कहने लगा—लेकिन क्या यह भी गलत है कि तुमने यहाँ आने के बाद उस बदमाश की सूरत कभी भी नहीं देखी, जो इन पापों का गुनाहगार है।

यह सब बातें एकदम गलत हैं, तेजी से कहकर वह उसकी तरफ पलट पड़ी, तेज हो गई साँसों पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोली—आखिर आप भी क्यों परेशान करने पर तुले हुए हैं, यह सब बातें बेबुनियाद हैं, इनका कोई मकसद नहीं, कोई मतलब नहीं।

क्या तुम यह बात दावे से कह रही हो।

'············'

मैं जानता हूं कि यह सब बातें गलत नहीं हो सकतीं, दिल का हाल चेहरे से पता लग जाता है और जो बाकी कसर रह जाती है वह कहने और जवाब देने के अन्दाज से पूरी हो जाती है।

आप चाहे कुछ से कुछ सोच लीजिए, इसमें किसी का क्या कसूर हो सकता है।

मैं किसी और की बात नहीं सिर्फ तुम्हारी बात कर रहा हूँ, वह गरज कर बोला—

लेकिन मैं यह बातें सुनना नहीं चाहती, उसके कहने का लहजा भी तेज था,

चूंकि इस वास्ते न, कि यह सब बातें सच्ची हैं।

नहीं·········ऽऽ—।

तो और क्या गलत है।

हाँ, बिल्कुल गलत है।

लेकिन मैं कहता हूं कि यह सब सही हैं, इनमें से एक भी गलत नहीं है शहनाज —, क्या तुम इस बात को मानने से इन्कार कर सकती हो कि तुम फिर से परेशान नहीं हो उठी हो, क्या यह भी गलत है कि तुम्हारी पिछली जिन्दगानी ने तुम्हारे दिल को फिर से जख्मी नहीं कर दिया है, क्या यह भी सही नहीं है कि तुम पिछले दो तीन रोज से पहले से कहीं ज्यादा बेचैन हो, क्या यह बात भी झूठी है कि यहां आने के बाद तुमने कभी भी उस शख्स को नहीं देखा जिसने तुम्हें धोखा दि·········।

नहीं ! ऽ······नहीं !! ऽऽ······नहीं !!! ऽऽऽ—, वह चीख उठी, सांसें उसकी तेज हो गयीं, बिफर कर बोली—यह सब झूठ है।

तो क्या यह भी झूठ है कि जमाल ही वह कमीना इन्सान है जिसने तुम्हें गुमराह करके अपनी दुनिया में मुमताज़ को दाखिल किया है।

नहीं !—, छूटते ही वह बोली, लेकिन सकपकाकर कुछ कह न पायी इससे आगे, और हड़बड़ा सी गयी।

कैसे नहीं ! मैं कहता हूं यह सच है और बिल्कुल सही है, बाकी सब बातें गलत हो सकती हैं लेकिन यह बात गलत नहीं हो सकती, कहते हुए उसने

गुस्से से भर कर उसके दोनों बाजू कस कर पकड़ लिये और उसे जोर से झिझोड़ते हुए बोला—बोलो न, जरा मुझसे नजरें मिला कर कह दो कि यह बात गलत है, कहो न, अब खामोश क्यों हो।

लेकिन घबराई हुई शहनाज कुछ भी न कह सकी उसकी जबान जैसे तालू से चिपक गयी थी।

उसके बाजू छोड़ कर उसके आगे से बढ़ गया कहने लगा—तुम क्या दूसरों को बेवकूफ समझती हो, इस राज की तह तो मैंने उसी दिन पा ली थी जिस रोज उनको यहाँ इन्वाइट किया जाना था, मैंने उस जलील जमाल का नाम ही लिया था कि तुम सर से पाँव तक काँप गयी थीं और उसके बारे में की जाने वाली हर बात तुम्हें बहुत तकलीफ दे रही थी, लेकिन तुम पूरी तरह हैरान इस वास्ते नहीं हो पायी थीं चूंकि तुम उसको मुमताज के शौहर के रूप में उसे नहीं देख सकी थीं, पर इतना मैं समझ गया था उस वक्त भी कि तुम्हारी जिन्दगी में दखल देने वाला अगर यह जमाल नहीं भी है तो वैसे उस शख्स का नाम जमाल ही है जिसने तुम्हें इस मंजिल तक पहुंचाया है, और इस बात की तहकीक करने के लिए मैं उसे यहाँ लाने के बहाने, यहाँ आने से पहले मिलने गया था, कि अगर वह शहनाज के नाम से चौंक जाएगा या बात को उड़ाने की कोशिश करेगा तो साफ जाहिर होगा कि यह जमाल वही जमाल होगा, और यह बात निकली भी सच, मुझसे वह नजर मिलाकर बात नहीं कर सका, हर बात में किसी बहाने नजर नीची रखना, या कहीं और देखना या बात को बदलने की कोशिश करना, इस बात की गवाही दे रहा था कि वह शहनाज को जानता है, और फिर सबसे बड़ी बात तो यह थी कि वह यहाँ न आने के भी कई बहाने बनाने की पूरी कोशिश कर रहा था, लेकिन साथ ही वह देखना भी चाहता था, क्योंकि हो सकता है कि यह शहनाज कोई और ही हो, और अगर हो भी तो शायद इस बारे में वह क्या प्लान बनाता मैं कह नहीं सकता, लेकिन उसका यहाँ आकर एक्टिंग से बात करना, अदा से बोलना या अनजान सा बनना मुमताज को ही धोखा दे सकता है, हमारी आँखों को नहीं, लेकिन साथ ही मैं यह भी

कहूंगा कि उसकी इस एक्टिंग में तुम्हारा भी काफी हद तक हाथ था, लेकिन जानती हो, धोखा हर एक को नहीं दिया जा सकता।

उसकी तरफ से पीठ किये शहनाज आँसू बहा रही थी, लेकिन इस बात की बगैर परवाह किये उसने फिर अपनी बात को आगे बढ़ाया—इतनी मामूली सी बात तो कोई भी समझ सकता है कि जब दो आदमी किसी बात पर अलग-अलग जगहों पर किसी ऐसे आदमी के सामने, एक दूसरे का नाम सुनकर चौंक जाएं जो दोनों को जानता हो, तब साफ जाहिर है कि वे दोनों एक दूसरे के लिए अजनबी नहीं है, लेकिन घबराओ नहीं शहनाज ! मैं आज उस जमाल के बच्चे को अच्छी तरह बता दूंगा कि एक शहनाज जैसी मासूम लड़की के जजबातों से कैसे खेला जाता है, किसी को बरबाद करने का अन्जाम क्या होता है, किसी को लूटकर खुद बहारों का मजा लेना कितना महंगा होता है, आज जलील को इसकी सजा भुगतनी ही पड़ेगी, मैं ·······।

नहीं—ऽऽऽ, चीख सी पड़ी शहनाज, और उसके करीब आकर उसके हाथों को पकड़ते हुए बोली—खुदा के लिए ऐसा कुछ न करना, यह दुनिया बड़ी जालिम है, यहाँ पैसा ही सब कुछ है, कहीं आपको कुछ हो गया तो मैं······।

लेकिन आज मैं उन्हें बता दूंगा कि इज्जत भी कोई चीज होती है, और अस्मत भी कि जिससे खेलना इतना सस्ता नहीं होता, कहकर उसने झटके से शहनाज़ के हाथों से अपने हाथ छुड़ा लिये और दरवाजे की तरफ बढ़ गया।

मगर घबराकर शहनाज फिर तेजी से आकर उसके सामने खड़ी हो गई और कहने लगी—नहीं, मैं आपको इस वक्त कहीं नहीं जाने दूंगी।

अच्छा है शहनाज़, कि अगर तुम इस वक्त मुझे मत रोको, उस शरीफ-जादे को मैं आज बता देना चाहता हूं कि शराफत क्या चीज होती है, कि जिसने किसी की शराफत का जो नाजायज फायदा उठाया है वह कितना महंगा है, मैंने तुम्हारे खून की कसम खाई है कि बदला खून का खून से ही पूरा हो सकता है, मैं आज······

नहीं ऽऽ.........., ऐसा मत कहिये, कहते हुए वह थर-थर काँप रही थी, उसको अपनी पूरी ताकत से थामते हुए बोली—अब ऐसा करने से भला क्या मेरा दाग धुल सकता है, इसे तो अब इन्सान तो क्या खुदा भी अगर चाहे तो नहीं मिटा सकता, तो फिर बदला लेकर क्या हासिल होगा।

किसी दूसरे को चोट पहुंचाकर उसकी तकलीफ का अहसास उसे तब तक नहीं होता जब तक कि खुद को उसे चोट न लगे, कहते हुए वह क्रोध से लाल सुर्ख हुआ जा रहा था, उसकी आँखों से जैसे चिनगारियाँ फूट रही थीं, बदन उसका रह-रहकर फड़क सा रहा था।

नहीं, ऐसा मत कहिये, मैं आपके पाँव पड़ती हूं, कहीं आपसे कोई उल्टा-सीधा कदम उठ गया तो वे जालिम बरबाद करने पर तुल जायेंगे, कहते हुए वह सचमुच उसके कदमों पर गिर पड़ी, और बड़े बोझिल स्वर में बोली—मैंने उस शख्स को सचमुच दिल से माफ कर दिया है, चाहे उसने मुझसे कितनी ही ज्यादती की है, लेकिन आधा कसूर मेरा भी तो है, मुझे मेरे गुनाहों की सजा मिल रही है, और उसके गुनाहों की सजा का फैसला खुदा स्वयं करेगा।

लेकिन तुम्हारे इस गुनाह का गुनहगार खुदा नहीं जमाल है, उसकी आँखों की वासना को मैंने पहचाना है, उसने किसी एक को नहीं, कई लड़कियों को बरबाद किया होगा, उसके होठों पर खेलने वाली जहरीली हँसी हमेशा के लिए आज मिटाकर ही छोड़ूंगा।

आप कहीं पागल तो नहीं हो गए, शहनाज ने यह जुमला कड़कती आवाज में कहा तो उसका चेहरा तमतमा सा गया, शायद उसके लिए जिन्दगी में यह पहला मौका था, जब किसी ने उससे ऐसा कहा था, तड़पकर उसने जमीन पर बैठी शहनाज की तरफ देखा जो चेहरा उठाये उसी की तरफ देख रही थी, बड़े दृढ़ स्वर में उससे लड़ते हुए बोली—क्या आप यह भूल गये हैं कि अगर वह मेरे गुनाहों का गुनहगार है तो आपकी बहन मुमताज का शौहर भी है, अगर आप मेरे अरमानों का गला घोंटने वाले का गला घोंट देंगे तो उससे मुझे क्या हासिल होगा, बल्कि क्या साथ ही मुमताज के अरमान हमेशा के

लिए नहीं मिट जाएँगे, मेरी जिन्दगी में तो जो लिखा है सो होना ही है, लेकिन साथ ही उसकी जिन्दगी भी बरबाद हो जायगी, उसने अभी जिन्दगी में देखा ही क्या है, मेरे पीछे आप उस मासूम की छोटी सी दुनिया बरबाद मत कीजिए, वरना सारी जिन्दगी वो तड़प-तड़पकर आपके नाम को कोसती हुई खत्म हो जायगी, मैंने उसको माफ कर दिया है, आप भी उसे अपनी बहन का शौहर समझकर माफ कर दीजिये, आपको मेरी कसम है, सच कहती हूं किसी का घर बरबाद करके क्या मिले ·····, आह् ऽऽ·········!

बात को अधूरा छोड़कर ही वो कराह सी उठी, अपने आपको सँभाल न पाई और उसके कदमों में ही गिर पड़ी।

शहनाज ! क्या हो गया तुम्हें, घबराकर उसने शहनाज का सर अपने हाथों में ले लिया, मगर उसकी पलकें बन्द सी हो गई थीं, जैसे गश सा आ गया हो, सँभलकर उसने शहनाज को अपनी बाँहों में उठा लिया और लाकर बिस्तर पर लिटा दिया, उसके करीब ही चारपाई पर बैठकर उसने मुंह और नाक के पास हाथ रखा, सांस बराबर चल रही थी, उठकर वह पानी लाने को दौड़ा, अभी कमरे के दरवाजे के पास ही पहुंचा था कि शहनाज फिर कराह उठी, दौड़कर वह फिर उसके पास आ गया और उसके पास बैठकर दोनों हाथों से उसके चेहरे पर से बालों को हटाकर उस पर झुकते हुए घबराकर पूछा उसने—क्या हो गया है शहनाज तुम्हें।

पलकों को खोलने की कोशिश की शहनाज ने, लेकिन खोल न सकी, बल्कि उन्हें जोर से दबाती हुई बड़ी धीमी आवाज में बोली—नर्स को बुला लीजिए, मैं दर्द से मरी जा रही हूं।

अच्छा, अच्छा, तुम घबराओ नहीं, मैं अभी नीचे जाकर फोन करता हूं।

कहकर उसने उस पर चादर ओढ़ा दी।

और लपककर दरवाजे से बाहर हो गया।

\+ \+ \+

मगर कोई क्या जानता था कि यह राज की बात जिससे छुपाने की कोशिश की जा रही थी वही अपने कानों से सुन चुकी थी।

और वह थी मुमताज़ !

जमाल की बीबी !

उसी जमाल की जिसने कभी शहनाज के जिस्म से भी खिलवाड़ किया था ।

बात दरअसल यह हुई कि जिसे इत्तफाक ही कहा जाना चाहिए, वह अकेली शहनाज से मिलने आ रही थी, चूँकि उसी रात उसे अपने शौहर के साथ वापिस अहमदाबाद चला जाना था, और वो अपने आपको रोक न सकी, लेकिन अभी वो सीढ़ियों पर ही थी कि उसे शहनाज और लेखक के कुछ जोर शोर से और कुछ गुस्से से बात करने की आवाज सुनाई दी तो वो ठिठक सी गई, सोचते हुए वो आहिस्ता-आहिस्ता कदम बढ़ाती हुई ऊपर तक आई, लेकिन दरवाजे तक आकर रुक गयी, उसे लगा कि बातों का रुख और झुकाव जैसे उसकी तरफ ही का है, चूँकि अबाॅर्शन तक की बात तो वो सुन न सकी थी, जब वो आयी तो बात शहनाज की पिछली जिन्दगानी की चल रही थी, ज्यूँ-ज्यूँ बात आगे बढ़ती गई, वह हैरान सी होती गई और जब उसने अपने शौहर और शहनाज के राज की बात सुनी तो उसका दिल धक् से रह गया, जैसे पाँव तले की जमीन खिसक सी गई, खुद वो लड़खड़ाकर गिर गयी होती अगर उसने संभलकर दीवार का सहारा न ले लिया होता, शहनाज की एक-एक बात सुनकर उसकी आँखें बरसने से रह न सकीं, लेकिन दिल ज्वालामुखी की तरह दहक रहा था, माथे की नसें जमाल का यह चित्र देखकर तन सी गई थीं उसकी, दोनों की बात अभी पूरी तरह खत्म नहीं हो पाई थीं कि वो वापस नीचे आ गयी ।

गुस्से और हैरानगी से काँपती हुई वो कार में आकर बैठ गयी ।

जैसे ही उसने कार स्टार्ट की, तभी बहुत हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गयी, बिल्कुल फुहार की तरह । टाइम करीब साढ़े आठ का हो चुका था, लेकिन बादलों की वजह से रात का यह पहला पहर कुछ और घना सा हो गया ।

गुमसुम सी बैठी मुमताज़ अपने बंगले की तरफ बढ़ी जा रही थी, सड़क

भीग चुकी थी……और इस गीली आइने सी सड़क पर स्ट्रीट लाइट चमक रही थी, और मुमताज़ की कार की रफ्तार इस वक्त पैंतालीस से भी ऊपर थी, जैसे वो चाहती थी कि बस, पल भर में ही घर पहुच जाएं, मछली की तरह फिसलती हुई कार हर मोड़ को बड़ी तेजी से काट रही थी, और ख्याल उसके, उससे कहीं ज्यादा तेजी से घूम रहे थे, सबसे ज्यादा परेशान तो उसे वो बात कर रही थी कि आज ही उसने जमाल से यहाँ आने को कहा था, तो उसने बड़ी लापर्वाही से जवाब दिया था—तुमने भी क्या यह बेवकूफी के रिश्ते जोड़े हुए हैं, जानती हो जब औरत की शादी हो जाती है तो उसके अपने सब रिश्ते टूट जाते हैं, और उनकी जगह उसके शौहर की जान पहचान वालों से जुड़ जाते हैं। उस वक्त तो मुमताज समझ न सकी थी कि इस बात के कहने का मकसद क्या था, लेकिन अब वो जान गयी थी यह बात क्यों कही गयी है।

हंस की तरह तैरती हुई कार ने एक मोड़ काटा और उसके दिमाग ने भी पासा पल्टा, आँखों के आगे उसकी शाम का वह नजारा घूम गया, जब उसने जमाल से शहनाज के यहाँ चलने को कहा था तो उसने बड़ा खूबसूरत बहाना बनाया था, मुझे वे लोग अच्छे नहीं लगते, फिर वहाँ जाकर मुझे तो बोरियत सी लगती है, साथ ही अभी तुम दो दिन पहले तो होकर आयी हो। इस ख्याल ने उसका पीछा छोड़ा तो वो इस बात में खो गयी कि आज उसने अकेली जाने की इजाजत भी बड़ी जल्दी दे दी थी, वरना तो कभी क्लब जाने की तैयारी होती है तो कभी सिनेमा का प्रोग्राम होता है।

दिल के गुब्बार उसके रह-रह निकल जाने को उतावले से हो रहे थे, लेकिन वो सोच रही थी कि इस वक्त अकेले बंगले में जमाल का होना भी मुश्किल है, क्योंकि अब्बा हुजूर तो बिजनेस सेण्टर पर होंगे, और साजिद तो हमेशा की तरह आऊट ऑफ स्टेशन था, फिर अम्मी जान भी घर पर नहीं हो सकतीं, क्योंकि खुद उन्हें वो आती बार नौशाबा के यहाँ छोड़कर आयी थी तो ऐसे में जमाल भला अकेला कहाँ बैठा होगा, जरूर वो कहीं निकल गया होगा।

लेकिन उसके फूले हुए नथने और हाथों में कसा हुआ स्टयरिंग इस बात की गवाही दे रहे थे कि उसके आने तक उसका यह गुस्सा खत्म नहीं होगा, वो उसके आने का इंतजार कर सकती है।

तभी कार बंगले के फाटक के बाहर आकर रुकी, गेट बन्द था इसलिए मुमताज़ ने जोर से हॉर्न दिया, तो फाटक से थोड़ी सी दूरी पर बनी हुई कोठरी से दरबान निकला और हल्की-हल्की बारिश से बचाव करने के लिए वह अपने ऊपर कोई कपड़ा डालना तक भूल गया बिजली की गति की तरह बढ़ कर उसने गेट खोला, और मुमताज का सुर्ख चेहरा देखकर वह बेचारा सहम सा गया, लेकिन मुमताज़ ने उसकी तरफ देखा तक नहीं, और कार को आगे बढ़ाकर बरामदे तक आ गयी।

जैसे ही वह हॉल में दाखिल हुई तभी उसकी नजर नौकरानी पर पड़ी जो बड़ी अदा से सीढ़ियाँ उतरती आ रही थी, जब उसने मुमताज़ को सामने देखा तो घबराकर पल भर को वहीं ठहर गयी, और फिर आहिस्ता आहिस्ता सीढ़ियाँ उतरने लगी, करीब आकर पूछा उसने—क्या वे ऊपर ही हैं।

जी......, उसने निगाह नीचे करके कहा, मालिक के कमरे में हैं।

और मुमताज़ तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ गयी, गैलरी पर आकर अपने कमरे के आगे से गुजरती हुई वह अपने अब्बा हुजूर के कमरे में दाखिल हुई तो उसने देखा कि जमाल उसकी तरफ से पीठ किये सिगरेट का धुँआ छोड़ते हुए किसी तस्वीर को देख रहा था।

किसी के आने की आहट पाकर वह बड़े अन्दाज से मुमताज़ की तरफ घूमा, लेकिन मुमताज का यह बदला हुआ चेहरा देखकर वह कुछ झेंप सा गया, चूंकि मुमताज़ उसकी तरफ ऐसे देख रही थी जैसे उसके चेहरे से कुछ पढ़ने की कोशिश कर रही हो, नजरें उसकी जमाल के चेहरे पर ही थीं, मुमताज का इस तरह देखना जमाल जैसे सहन न कर सका, कहने लगा—बहुत जल्दी लौट आयी हो।

तब मुमताज़ ने लापरवाही से हैन्डबेग पलंग पर फेंक दिया, और बात का

जवाब देने के बजाय उसने जमाल से उलटा सवाल कर दिया—आज आप बाहर घूमने नहीं गए।

तुम्हारे बगैर भला तबियत कैसे कर सकती है कहीं जाने को।

'क्या सचमुच ?' मुमताज़ ने बड़ी शोख़ी से कहा, लेकिन चेहरे पर हँसी या मुस्कुराहट नहीं थी बल्कि एक रौब सा था।

तो और क्या नहीं, जमाल ने उसकी तरफ देखते हुए कहा, और फिर सिगरेट को 'एश ट्रे' के 'कॉरनर' पर रख कर मुस्कुराते हुए बोला—देखो न, जहाँ तुम साथ नहीं थीं तो मेरा दिल भी बाहर जाने को नहीं हुआ, और फिर तुम भी जल्दी लौट आयी हो, शायद तुम्हारा मन भी ऊब गया होगा वहाँ जाकर।

मन तो तब ऊबता है जब दिल भर जाता है, चाहे कोई भी बात क्यों न हो, क्यों है न ठीक ?

कह नहीं सकता।

कह नहीं सकते या कहना नहीं चाहते।

कुछ ही समझ लो मुमताज़ ! वह खीज सा गया, बोला—इन फिजूल बातों पर बहस करने का क्या फायदा है।

हो सकता है यह बातें फिजूल की हों, लेकिन आज एक सवाल मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि आपको अपनी पिछली जिन्दगानी तो सारी याद होगी।

'क्यों ?.........'

मैंने आपसे सवाल का जवाब मांगा है, न कि उसकी वजह पूछने को कहा है, मुमताज़ ने कुछ तेज आवाज़ में कहा।

'नहीं !' जमाल ने भी उसे घूरते हुए जवाब दिया।

'अगर आपको याद नहीं रही तो मैं उसे दोहराए देती हूं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा।'

लेकिन मैं उसे सुनना ही नहीं चाहता, इसलिए बेहतर है कि तुम अपनी जुबान को खामोश ही रखो।

हाँ-हाँ क्यों नहीं, आपकी नेकरामियों को बताकर कहीं मुझसे कोई गुनाह

न हो जाए, ताकि कयामत के दिन मुझे इसकी सजा न भुगतनी पड़े, यही चाहते हैं न आप ? मगर आज·····, आज मैं खामोश नहीं रहूंगी, क्या आप समझते हैं कि दुनिया में सिर्फ आप ही एक अक्लमंद हैं, और बाकी सारा संसार बेवकूफ है, कहते हुए उसका जोश तूफान की तरह तेज होता जा रहा था, आवाज गुस्से से कांप उठी थी, कहने लगी—मुझे यकीन नहीं था कि आपकी मीठी-मीठी बातों के पीछे जहर भी घुला हुआ हो सकता है, हर अन्दाज के पीछे एक धोखा भी हो सकता है, बल्कि यह कहना चाहिए कि कमीनापन और मक्कारी भी हो सकती है।

मुमताज ! जबान संभाल···वरना·······, वह गुस्से से कांपकर चिल्ला उठा, लेकिन बात को पूरा न कर सका।

हाँ-हाँ कहिए, वरना आप क्या कर लेंगे, मेरा गला घोट देंगे, ताकि मैं यह न कह सकूं कि आप शादी से पहले किसी बेगुनाह लड़की की अस्मत से खेल चुके हैं।

यह सब बकवास है, जमाल ने अपने पूरे जोर से कहा।

क्या आप इन्कार कर सकते हैं कि आप वही शख्स नहीं हैं जिसने भोली भाली शहनाज की जिन्दगी तबाह की है।

क्या कहा ! मैंने·····? मैं तो शहनाज को इससे पहले कभी जानता तक नहीं था।

क्यों नहीं, अब आप उसे जानकर करिएगा भी क्या, बरबाद करने वाले अपना काम हो जाने के बाद फिर जान पहचान रखने की तकलीफ भला कहाँ करते हैं, जिनकी आँखों में वासना का परदा खिच आया हो, वे भला किसी को पहचान भी कैसे सकते हैं, कुत्तों की तरह हवस बुझाकर अपने रास्ते को चल····।

जबान संभालकर बात करो मुमताज !

अपनी इस सड़ी हुई जबान से मेरा नाम मत लो।

तो जाओ फिर अपने उसी भाईजान के सीने से लग कर रहो, जो तुमसे भैया और सैयां के दोनों रिश्ते निभा लेगा।

आप होश से बात कीजिए, सारी दुनिया आपकी तरह बदमाशों की नहीं है, मुमताज़ ने कड़क कर कहा, उसकी आँखों में जैसे खून-सा उतर आया था यह बात सुनकर। कहने लगी—मेरे लिए वे साजिद से भी ज्यादा अजीज हैं।

क्यों नहीं होगा, औरत और चाहती भी क्या है, जमाने से छुप-छुपकर अगर कोई उसकी हवस बुझाता रहे तो उस मजे के लिए वह उसे अपना भाई भी कह लेती है कि कहीं मजे में कजा न पैदा हो जाए, और वह·····

जबान को लगाम दीजिए! यह कह कर आप अपने कमीनेपन को जाहिर कर रहे हैं, मेरे ख्याल से आपने शहनाज को बहन बनाकर ही बरबाद किया होगा, उससे प्यार के वादे किये होंगे, अपनी मीठी-मीठी बातों से फुसलाया होगा, और जहाँ तक मेरा ख्याल है, 'तुमने' उससे जबरदस्ती की होगी, कहिए है न यही बात।

मुझसे बहस करने की जरूरत नहीं, मैंने तुमसे कहा है कि मुझे उसके बारे में कुछ भी पता नहीं है, मैं क्या जानूँ कि वो नामुराद कौन है, या वो बदमाश उसे कहाँ से फंसाकर लाया है।

दूसरों को बदमाश कहने वाले खुद बदमाश हुआ करते हैं, शर्म नहीं आती मासूम लड़कियों से सोहबत करके भी, और उस पर रौब साथ में डालते हैं। पता तो तब लगे न जब तुम्हारी बहन की कोई अस्मत लूटे, तब··,

मुमताज! वह गरज उठा, नथुने उसके फड़क उठे।

अब किस बात पर यह जोश आया है, हर लड़की की अस्मत और इज्जत कीमती होती है, वो भी किसी माँ बाप की बेटी होती है, किसी भाई की पाक बहन होती है, हर आदमी को किसी भी गैर लड़की की अस्मत उतनी ही कीमती समझनी चाहिए, जितनी उसकी अपनी बहन की होती है, अगर वह दूसरे की बहन को बुरी नजर से देखता है तो उसे सोच लेना चाहिए उस वक्त कि अगर कोई दूसरा उसकी बहन को बुरी नजर से देखे तो उसे कैसा लगेगा। जितनी जलन उसे अपनी बहन के बारे में किसी के एक भी बुरा लब्ज कह देने पर होती है वैसे ही हर दूसरे को भी उतना ही अहसास होता है, तब क्या आप भूल गए थे कि शहनाज भी एक लड़की है, उसको भी एक औरत की

इज्जत है, अगर आप उससे शादी नहीं कर सकते थे तो उससे यह खिलवाड़ करने की क्या जरूरत थी, क्या आपने उस वक्त यह नहीं सोचा था कि उसके इस हाल में पहुँच जाने पर उससे शादी करने को कौन तैयार होगा।

लेकिन क्या सबूत है कि उसको बरबाद करने वाला मैं ही हूँ।

अगर किसी और ने आपका नाम लिया होता तो शायद मैं मानने से इन्कार कर देती, लेकिन मैं उसके मुंह से सुनकर यह कभी नहीं कह सकती कि यह बात गलत होगी।

वो बकती है, जमाल ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

बस, यही तो उसकी खता है कि उस दिन अपने सामने पाकर उसने तुम्हारे मुंह पर थूका नहीं, और मुझसे चिल्ला-चिल्ला कर कहा नहीं, कि यह वही जलील इन्सान है जिसने मेरी अस्मत को बेहरमी से लूटकर अपनी रातें रंगीन करने के बाद जब मेरी यह हालत हुई तो अपने लाडले बेटे की नेक-नामियों पर परदा डालने के लिए अपने शरीफ बेटे के हमदर्द बाप ने उस मासूम को उल्टा मौत की धमकियाँ दीं, आखिर कमीने बेटे का बाप भी बदजात……,

इतना ही कहा था उसने कि जमाल का एक जोरदार तमाचा उसके गालों पर आ लगा, तो मुमताज़ नागिन की तरह तड़प उठी, होंठों को दाँतों तले दबाकर उसने आँसुओं को आँखों में ही रोक लिया, लेकिन सुर्ख आँखों में ठहरे हुए वो अश्क लहु के कतरों से कम न लग रहे थे, कड़क कर बोली—आपकी यह हिम्मत ! मैं शहनाज नहीं हूँ जो आपके आगे चुप हो जाऊँगी मैं चीख-चीख कर कह सकती हूँ कि तुम किसी कुत्ते से कम नहीं हो, और न ही तुम्हारे वालिद……,

खामोश हो जाओ मुमताज़ ! वरना मैं तुम्हारा गला दबा दूंगा कह कर वह उसकी तरफ बढ़ने ही वाला था कि बिजली की गति की तरह मुमताज ने मेज की 'ड्रार' खींचकर 'पिस्टल' उठा ली, और पलटकर शेरनी की तरह बिफर कर बोली—अब कहो जरा कि क्या कह रहे थे, वो शहनाज ही थी जो तुम लोगों की धमकियों के आगे खामोश हो गयी थी, और तुमने शायद उसको

बेवकूफ समझा होगा, उसका जी भर के मजाक उड़ाया होगा। कहते हुए वह थोड़ा-थोड़ा पीछे हटने लगी, सुर्ख अंगारों की तरह उसका चेहरा दहक-सा रहा था, तिस पर जमाल का हाथ चेहरे पर पड़ने की वजह से वह और सुर्ख हो उठा था, बालों के अस्त-व्यस्त हो जाने के कारण उनमें झांकता हुआ उसका चेहरा और डरावना हो गया था, उसकी तरफ घूरते हुए उसने पिस्तौल को अपनी उंगलियों में और कसकर पकड़ते हुए कहा—तुमने शहनाज़ की जिन्दगी तबाह नहीं की, तुमने उसे नहीं लूटा बल्कि अपनी बहन ज़रीना को चौराहे पर नंगा करके उससे सोहबत की है और तुम्हारे बाप ने उसकी दलाली……!

मुमताज़ !…जमाल ने इतनी जोर से चीख कर उसकी बात को काटा, कि कमरे की दीवारें तक कांप उठीं, गरज कर उसकी तरफ बढ़ते हुए बोला—लगता है तुम्हारे खानदान के सभी लोग रंडियों की दलाली करना अच्छी तरह जानते हैं, तभी तो तुम भी बढ़ चढ़कर अपना तजुर्बा बता रही हो, तुम्हारे…,

तमीज से बात करो, सभी तुम्हारे जैसे कमीने……, मुमताज़ ने भी उसी की तरह गरज कर कहा, तो जमाल ने फिर उसकी बात काटते हुए कहा—मैं जो कह रहा हूँ वह ठीक है, लगता है तुम तो क्या तुम्हारी माँ भी किसी रंडी की बेटी……,

खामोश !……, मुमताज ने मुंह से तो कहा ही साथ ही हाथ से भी उसने 'ट्राईगर' दबा दिया, एक के बाद एक करके धाँय-धाँय करती हुई दो गोलियां जमाल के सीने में जा लगीं।

आह ऽ ! की एक जोरदार कराहती हुई आवाज करके वह पछाड़ खाकर मुमताज़ के कदमों में गिर गया।

गिरते ही अस्फुट लब्जों में उसने कुछ कहा भी लेकिन गोलियों की धाँय-धाँय की आवाज सुनने के बाद मुमताज़ के जैसे होश ही उड़ गए थे।

पिस्तौल उसके हाथ में थी, मूर्ति की तरह निश्चल खड़ी वह एक टक् आँखें खोले खड़ी थी…, नजर झुका वह इतना भी न देख पायी कि उसके खामिद के खून की बहती हुई दो धाराएं गलीचे पर से बहती हुई उसके कदमों को चूम रही थीं।

जैसे वो अपने गुनाहों की माफी माँग रही हों।

इस जोरदार आवाज ने तमाम बंगले की दीवारों को हिला सा दिया।

घर के तमाम नौकर-नौकरानियाँ बंगलें के भीतर वाले हिस्से की तरफ दौड़े।

× × ×

इधर जैसे ही गोलियाँ चलीं, उधर उसी क्षण नर्स शहनाज के कमरे से बाहर निकली, जो हाथों को कपड़े से पोंछती हुई आ रही थी, उसको अपनी तरफ आता देख लेखक लपक कर उसके करीब आ गया, आँखों में एक सवाल सा चमक रहा था, कुछ पूछने ही जा रहा था वह कि नर्स ने मुस्कराते हुए कहा—'यू आर वैरी लॅकी, गॉड हैस गिवन यू ए ब्यूटीफुल 'टिव्न' ऑफ बॉयस'

'सच…! कहकर उसने जोर से नर्स की बाजू पकड़ ली।

नर्स एक जवान लड़की ही थी, उसके इस तरह बाजू पकड़ लेने से वह कुछ शरमा सी गई, बड़ी अदा से उसने अपने आपको रिहा करते हुए कहा—"रीयली'

उसको छोड़कर जब वह शहनाज के कमरे की तरफ बढ़ने लगा तो नर्स ने उसको रोकते हुए कहा—'प्लीज वेट ए मिन्ट'

ओह ! कहते हुए वह रुक गया।

'सरवेन्ट जरा अपना काम खतम कर ले, तब चले जाइएगा, नर्स ने कहा, तो वह अपनी जेबों को टटोलने लगा, शायद उनका हक उन्हें दे देना चाहता था।

नोटों को अपनी पॉकेट के हवाले करते हुए नर्स ने कहा—सरवेन्ट आज की एक रात यहाँ रहेगी, और मैं कल सुबह एक वार देख जाऊंगी।

'अच्छी बात है।'

तभी उसने देखा कि अधेड़ उम्र की 'सरवेन्ट' शहनाज के कमरे से बाहर आ रही थी, सरवेन्ट अभी कुछ ही कदम बढ़ी थी कि वह कमरे की तरफ दौड़ पड़ा।

वह उसके बाहर आने का इन्तजार ही तो कर रहा था।

आहिस्ता से उसने दरवाजा खोलकर कमरे में कदम रखा तो देखा कि बायीं ओर बिस्तर पर शहनाज लेटी हुई थी, और उसकी बगल में एक ही तरफ दोनों नन्हे-नन्हे से कोमल बच्चे लेटे थे, करीब आकर वो शहनाज के दाहिनी तरफ जमीन पर घुटने के बल बैठ गया, जिधर वो दोनों बच्चे सफेद कपड़ों में लिपटे हुए दुनिया की सब बातों से बेखबर होकर आराम से लेटे हुए थे, उसकी नजर धीरे से उठकर शहनाज के चेहरे पर जाकर रुक गयी, देखा उसने कि सफेद तकिये पर घुंघराले बिखरे-बिखरे बालों के बीच उसका खामोश सा चेहरा कितना खूबसूरत लग रहा था, बन्द पलकों को जैसे बड़ी मुद्दत के बाद आराम मिला था, गोरे चाँद से चेहरे के चारों ओर छितराई हुई घटाओं सी काली जुल्फें मचल कर सीने पर फैल गयी थीं कि कहीं कोई देख न ले कि उसके मदहोश सीने के उभार में और कसाव आ गया है, खूबसूरत शहनाज आज दो बेटों की मां बन गयी थी, जी तो उसका चाहा कि वो शहनाज को मुबारकबाद के एवज में हल्के से चूम ले, मगर वह ऐसा न कर सका, लौटकर उसकी नजर फिर बच्चों पर टिक गयी, बिल्कुल माँ की परछाई थे वे दोनों, मोतिये की नन्हीं-नन्हीं नाजुक कलियों की तरह गोरा रंग था उनका, और तिस पर गुलाब की सी लाली लिए उन्होंने माँ का खून अच्छी तरह खींच लिया था, नन्हीं-नन्हीं पलकों को कस कर दबा रखा था दोनों ने झुक कर उसने पहले एक बालक के दोनों मासूम गालों को प्यार से चूम लिया और जब दूसरे के कोमल-कपोलों पर उसने प्यार की निशानी रखी तो वह बिल्कुल शहनाज की बगल में होने के कारण लेखक का सर शहनाज के सीने से छू गया तो वह पुलक उठी, और जब शहनाज ने उसे इस तरह देखा तो उसने उसके सर पर प्यार से हाथ रख दिया।

तब आहिस्ता से उसने सर उठाकर शहनाज की तरफ देखा जो अलसाई सी बोझिल पलकों को थोड़ा सा खोले हुए उसकी तरफ देख रही थी, तब धीरे से उसने शहनाज का हाथ थाम कर अपने होठों से लगा लिया, धीमी सी आवाज में कहने लगा—कितना रहम दिल है परमात्मा, उसने एक के बजाय हमें दो बेटे दिये हैं।

सुनकर शहनाज ने अपनी मोटी-मोटी पलकों को कस कर बन्द कर लिया तो दो मोटे-मोटे आँसू उसकी आँखों के कोरों से बह कर बालों में बिखर गए।

न मालूम वो आँसू खुशी के थे या गम के।

नहीं शहनाज! तुमसे ज्यादा मैं खुश किस्मत हूं, देखो न आज इस घर की चारदिवारी कितनी खुश सी नजर आ रही है, कहते हुए उसने उसके चेहरे को अपने हाथों में ले लिया, साथ ही अपने चेहरे को उसके चेहरे के करीब लाते हुए बोला—आज से हम और तुम एक दूसरे के और करीब हो गए हैं, हमारी छोटी सी दुनिया में यह दो गुलाब के फूल अपनी महक फैला कर हमें बेहोश कर देंगे, तुम्हें कसम है 'मेरे' बेटों की, कि आज से मुझे तुम्हारी आँखों में कभी भी आँसू नजर नहीं आने चाहिएँ, कह कर उसने अपना सर शहनाज के सीने पर रख दिया, तो उसने भी कस कर अपनी छाती से लगा लिया।

और जब उसने सीने से सर उठाकर शहनाज की तरफ देखा तो पाया कि जैसे वह कुछ उदास सी है, पूछने लगा—क्या बात है शहनाज ?

'न जाने मेरा दिल क्यों घबरा सा रहा है'

'अब घबराना किस बात का है, तुम अपने दिल-ओ-दिमाग से सब फिक्र, सब चिन्ताएं मिटा दो।

'प्लीज डोन्ट डिस्टर्ब' उस अधेड़ महिला ने अन्दर दाखिल होते हुए कहा।

'ओ, के मैडम, कह कर उसने फिर चेहरा शहनाज की तरफ घुमा लिया, उसके गाल को थपथपाते हुए बोला—मेरी तमन्नाए, मेरी आरजू सब कुछ तुम्ही हो, अगर तुम्हीं कहोगी कि मैं घबरा रही हूं तो मुझे कौन सहारा देगा।

तब जवाब में शहनाज ने कुछ कहना चाहा, लेकिन उसके कुछ कहने से पहले ही वह उसके लबों पर उंगली रखते हुए बोला—तुम्हें मैडम ने खामोश रहने को कहा है।

उसने यह बात अभी कही ही थी कि तभी उनमें से एक ने रोना शुरू कर दिया तो उसकी आवाज सुन कर दूसरे को भी शोर मचाने की याद आ

गयी, तब अपनी बगल में लेटे दोनों बच्चों को शहनाज ने सीधे लेटे-लेटे ही अपनी बांह से समेट कर अपने से लगा लिया।

तब तक वह सरवेन्ट भी पुचकारती हुई करीब आ गयी थी।

तीनों को कुछ खिलाने पिलाने का इन्तजाम करो भई जल्दी से, वरना शोर मचाकर सारे घर को सर पर उठा लेंगे।

सब तैयार है, कह कर वह बाहर चली गई।

और जब चन्द मिनटों के बाद सरवेन्ट अन्दर आ गयी तो वह उठ कर बाहर चला आया।

दूसरे कमरे में खिड़की के करीब आकर उसने खिड़की के पट खोल दिये। पर्दा हटाकर उसने देखा कि बारिश फुहार की तरह अब भी बड़ी अदा से बरस रही थी, नीचे आइने सी सड़क में स्ट्रीट लाइट चमक रही थी, और वह ठन्डी-ठन्डी पुरवाई भी अपने चलने के अन्दाज पर इठला रही थी, उसने एक सिगरेट सुलगाया और धुंए को खिड़की से बाहर हवा में बिखेरते हुए सोचने लगा शहनाज की किस्मत के बारे में। कि यह कुदरत भी क्या-क्या रंग दिखाती है, वो मासूम जो कभी मरने जा रही थी, लेकिन किस्मत थी कि वह बच गयी, और जब बच गई वो उसे अपनी होने वाली औलाद की फिक्र पड़ गयी, दिन रात उसने इस बन्धन से छुटकारा पाने की सोची, लेकिन कुदरत को देखो, उसने एक के बजाय दो बेटे भेज दिए हैं। मगर उसकी समझ में यह न आया कि वह शहनाज को खुशकिस्मत कहे या बदनसीब। क्योंकि किसी भी दुखी से चाहे कितनी ही मुहब्बत करके उसे हर वक्त खुश रखा जाए, मगर दिल पर लगा हुआ दाग कभी नहीं मिट सकता, जब भी उसे तन्हाई मिलेगी, उसे वो पुरानी बातें जरूर याद आएंगी।

यह बातें वह सोच ही रहा था कि तभी दरवाजे पर दस्तक हुई तो उसकी विचारधारा बीच ही में टूट गयी, दरवाजा खोलकर जैसे ही वह पीछे हटा, तो सामने घबराए से दीनू को देखकर आश्चर्य से पूछ बैठा—तुम......इस वक्त कहो, खैरियत तो है....?

तो होश उड़े हुए दीनू ने लड़खड़ाती आवाज में कहा—मुमताज बी' ने अपने खाविंद का खून कर दिया है।

क्या कहा जमाल का······मुमताज़ ने······।

हाँ······उसने सर झुका कर कहा।

मगर कैसे।

पता नहीं, किसी शहनाज नाम की लड़की की बात कर रहे थे कि दोनों में खूब लड़ाई झगड़ा हुआ, और तब गुस्से में आकर उन पर गोली चला दी, उसने।

सुन कर वह ठगा सा खड़ा रह गया, शायद सोच रहा था कि शहनाज का राज मुमताज़ को कैसे पता लगा और वह तभी एक दम चौंक पड़ा, क्योंकि उंगलियों में दबा हुआ सिगरेट का छोटा सा टुकड़ा मांस को जलाने लग गया था, फर्श पर फेंक कर उसे पांव से मसलते हुए उसने कहा—तुम चलो, मैं अभी आया।

गाड़ी नीचे तैयार खड़ी है, नौकर ने कहा।

अच्छा ! कहा उसने तो, नौकर वापिस मुड़ गया।

तब वह भी रूमाल से चेहरे को साफ करते हुए शहनाज के कमरे की तरफ बढ़ गया, उसके पास आकर उसने फर्श पर उसके करीब बैठते हुए कहा—तुमने कुछ लिया है या नहीं······।

नहीं, अभी दूध लिया था।

देखो ! मैं जरा मुमताज़ के यहाँ जा रहा हूं, जल्दी ही लौट आऊंगा।

नहीं ! आप वहाँ मत जाइए, उसने अपना हाथ आहिस्ता से उसके हाथ पर रख दिया।

तुम घबराओ नहीं, मैं कुछ नहीं कहूंगा।

लेकिन सुबह चले जाना, इस वक्त जाना क्या·········।

नहीं शहनाज ! मुमताज ने नौकर के हाथ कहलवा भेजा है, अभी आने को।

इस वक्त ? खैर तो है।

घबराने की कोई बात नहीं।

अच्छा ! मगर देखो, उससे किसी बात का जिक्र मत करना।

अच्छी बात है, कह कर वह खड़ा हो गया, और अभी उसने गरदन उसकी तरफ से घुमाई ही थी कि शहनाज ने उसे पुकारते हुए कहा—देखो………, मुमताज शायद इस वक्त ससुराल जाने की तैयारी में होगी, चलते वक्त आप भी उसे कुछ दे देना………! शायद तभी बुला भेजा होगा।

सुनते ही वह कमरे से तेजी से बाहर आ गया, जैसे वहाँ उसका दम घुट रहा हो, कह तो दिया था अनजान शहनाज ने, मगर उसके दिल पर क्या गुजरी थी वह यह भला कैसे जान सकती थी।

और बिना इस बात पर गौर किये वह सीढ़ियों की तरफ बढ़ने को हुआ मगर फिर वापिस मुड़ गया, लेकिन सर उठाकर जब उसने सामने से आती हुई उस सरवेन्ट को देखा तो फिर से वह वापिस घूम गया और तेजी से सीढ़ियाँ उतर कर नीचे आकर उसने कार का पिछला दरवाजा खोला और बैठ गया।

ड्राइवर ने अपनी सीट संभाली हुई थी, और नौकर अगली सीट पर ही खिड़की के पास दुबक कर बैठा हुआ था।

३१

मुमताज को किसी तरह जमानत पर तो रिहा करा लिया गया, मगर ऐसा कोई आसार नजर नहीं आ रहा था वह हमेशा के लिए रिहा हो सकती, उसके वालिद चोटी का वकील तय करके उसे मुंह माँगे दाम देने को भी तैयार हो गए कि जिसकी शर्त यह थी कि मुमताज को किसी भी तरह रिहा करा दिया जाए, लेकिन जमाल के वालिद साहब को भी पैसे का नशा कम खुमारी पर नहीं था, वे लोग भी पूरी ताकत से अपने बेटे का बदला लेने को तुले हुए थे, उन्हें तब यह याद थोड़े ही रहा था कि अगर उनके बेटे का इन्तकाल हो गया है तो उनकी बहू भी तो विधवा हो गई और उनकी बहू का

नाम मुमताज ही है, और यह मुमताज भी तो वही है जिसके खिलाफ वे मुक-दमा लड़ रहे हैं।

मुमताज को जमानत पर रिहा हुए करीब बीस रोज हो चुके थे, और इस बीच उसके अब्बा हुजूर ने अपने पूरे दम से दौड़-धूप की थी, यहाँ तक कि वे जज महोदय की कोठी पर भी तीन-चार बार हो आये थे, मगर ऐसी कोई भी सूरत दिखाई नहीं दे रही थी कि मुमताज लोहे के सींखचों के पीछे खड़ी होने से बच जाए, कानून के हाथ दौलत के हाथों से भी लम्बे होते हैं, दौलत ने यहाँ तक तो केस को कुछ हल्का कर दिया था, पुलिस की रिपोर्ट अब यह बताने लगी थी कि ड्रार से पिस्तौल जमाल ने ही निकाला था और मुमताज को उसने गोली मारने की भी धमकी दी थी, और इस बात को सही करने के लिए रिपोर्ट का एक खास पॉइन्ट यह भी बन गया कि पिस्तौल पर जमाल की उंगलियों के निशान बिल्कुल साफ हैं।

और जब मुमताज ने भी फाँसी का फन्दा अपने सामने झूलता देखा तो पहली ही पेशी पर वकील की राय से उसका बयान भी बदल गया, तब उसने भी पूरे जोर से अदालत में चिल्लाते हुए कहा था—यह बिलकुल सरासर झूठ है कि मैंने जमाल का खून जान-बूझकर किया है, बल्कि असलियत यह है कि पहल उन्होंने ही की थी, उन्होंने मुझे बुरी तरह पीटा भी था, और उसके नाजुक गाल पर जमाल के हाथ का लगा हुआ तमाचा इस बात की गवाही बन गया, चूंकि एक तो वह बदन की वैसे ही कोमल थी और फिर मर्द के हाथ का चांटा और वो भी गुस्से में लगा हुआ ......, उसके गाल पर अच्छी तरह सूज आया था। अपने नथुनों को फड़फड़ाते हुए बोली—यह ठीक है कि गोली मेरे ही हाथ से चली है, लेकिन मैं इस बात को मानने से साफ इन्कार करती हूं मेरा ऐसा कोई भी इरादा नहीं था कि मैं उन पर जान-बूझकर गोली चलाऊं, बल्कि अपनी हिफाजत के लिए मैंने उनके हाथ से पिस्तौल छीननी चाही, और इत्तफाक से मेरे हाथ में आ भी गई, लेकिन फिर उन्होंने मेरे हाथ से वापिस लेने के लिए छीना-झपटी की, और इसी छीना-झपटी में पता नहीं किस तरह पिस्तौल चल गई और उनके सीने में एक के बाद एक दो गोलियाँ

लग गयीं, कहने के बाद उसने अदालत में ही खड़े-खड़े रोना शुरू कर दिया, जिसमें अभिनय ज्यादा और असलियत कम थी।

लेकिन पुलिस द्वारा मृत जमाल की फोटो को विरोधी पक्ष के वकील ने पेश करके इस बात का 'आबजेक्शन' उठाया था कि यह फोटो साफ जाहिर करती है कि यह गोलियाँ कुछ दूरी से चली हुई हैं, उसका यह पाइन्ट भी रास्ते में रोड़ा बना हुआ था कि 'पोस्ट मार्टम' की रिपोर्ट के मुताबिक गोलियाँ बिलकुल सीधी धंसी हुई पाई गई हैं, जो यह साफ जाहिर करता है कि गोलियों को निशाना मिला है, अगर छीना-झपटी में यह गोलियाँ चली होतीं तो कुछ न कुछ ऊपर या नीचे की तरफ उनका रुख होता।

दोनों तरफ से मामला उलझा हुआ था, और फिर साथ ही इस झगड़े का बयान देते वक्त मुमताज ने किसी घरेलू मामले को लेकर जो मनगढ़न्त कहानी रिपोर्ट कराई वह भी अदालत में कुछ जम न पाई, हालाँकि उसके वालिद ने मुमताज को कहा भी, कि तुम शहनाज की बात को पेश कर दो, लेकिन उसने साफ इन्कार करते हुए कह दिया, इससे भी कोई फायदा नहीं होगा, बल्कि वह खामख्वाह में लागों की नजरों मे आकर बदनाम हो जायगी, अब वह पहले वाली शहनाज नहीं रही, वह एक इज्जत वाली और एक शरीफ इन्सान की बीबी है, और अगर मैंने उसका नाम लिया तो उसके बारे में चर्चे अखबारों तक पहुंच जाएँगे, मैं यह कदम कभी नहीं उठा सकूंगी, न मालूम उसकी जिन्दगी में कैसे-कैसे करके बहार आई है, इस वास्ते अब मैं उसके महकते गुलशन को उजाड़ना नहीं चाहती। हर तरफ से जब उसके वालिद को उम्मीद की कोई किरण न दिखाई दी तो वे जमाल के वलिद साहब के पास भी गए; उनके कदमों में अपना सर झुकाकर उन्होंने यहाँ तक कहा—आप उसे मेरी बेटी न सही, अपनी नादान बहू समझकर अपने और हमारे खानदान की इज्जत बचा लें, मैं जिन्दगी भर आपका ऐहसान नहीं भूल सकूँगा।

तो उसके वालिद ने अपनी सुर्ख आँखें दिखाकर कहा—'जिसका बेटा मर जाता है उसके दिल से पूछो कि क्या गुजरती है।'

'और जिसकी बेटी का घर उजड़ जाता है उसके बाप के दिल का क्या हाल होगा क्या आप इसका अन्दाजा नहीं लगा सकते।'

'और नहीं तो कम से कम जिन्दा तो है।' उन्होंने बड़े क्रोध से कहा।

'ऐसी जिन्दगी से तो उसे मौत आ जाती तो इतना अफसोस न होता, जितना दुःख अब घर की इज्जत अदालतों में लुटती देखकर हो रहा है।'

'अपनी करनी का फल मिल रहा है, कौन सी कोई ज्यादती हो रही है।' कह कर वे उसके सामने से हट गये और मुमताज़ के वालिद सर झुकाये लौट आये।

किसी की भी समझ में कुछ न आ रहा था कि क्या किया जाए, केस को आखिर कब तक मुल्तवी किया जा सकता था, फिर ऐसा कोई भी पाइन्ट या चश्मदीद गवाह नहीं था जो इस बात को जाहिर करता कि मुमताज़ कसूरवार नहीं है, और फिर मरहूम जमाल की तरफ के वकील की बहस, पुलिस द्वारा ली गई फोटो और पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट आदि का पलड़ा अधिक भारी था।

क्या से क्या हो गया था, इस बात को सोचकर एक सपना सा लगता था कि मुमताज़..........., जो एक शोख और शरीर लड़की किसी अनदेखे अजनबी की खामोश मुहब्बत को अपने सीने में छुपाये अलीगढ़ से बम्बई आई और वहाँ उसने जब अपने मन के मीत को अपनी आँखों से देखा और साथ ही करीब पाया तो वह अपने आपको भूल गई, दिल ओ दिमाग उसका सारा दिन मीठे-मीठे सपनों की तस्वीरें बनाता रहता, और रात को बेचैनी से करवटें बदल-बदलकर वह नर्म-नर्म बिस्तर पर मचलते हुए न जाने परियों के से हसीन क्या-क्या ख्वाब देखती थी, जिनमें वह अपनी तड़प और बेकरारी के सुलगते हुए रंग भरती, और जब कभी उसे अपने ख्वाबों के शहजादे का कहीं बाहर जाने या घूमने को साथ मिल जाता तो वह अपने आपको दुनिया में सबसे ज्यादा हसीन और खुशकिस्मत समझती, अपने आपको वह उस वक्त इस तरह भूल जाती, जैसे शराब की खुमारी उस पर चढ़ गई हो, दिल की धड़कन भी कोई चीज होती है, यह वह तभी जान पाती, इस बात का पता भी उसे उन्हीं दिनों लगा था कि जुदाई में तड़पना, बेचैनी और बेकरारी सहना, किसी की इन्तजारी करना, यह सब बातें भी क्या होती हैं, और—, इसी

कश-म-कश में एक दिन उसके ख्वाबों के महल एक ही दिन में झटके से ढह गये, उसके सपने तार-तार होकर बिखर गये, उसे कई दिन तक यकीन न आया कि जिसे वह अपने मन-मन्दिर में बिठाकर उन्माद से पलकें बन्द किए न जाने किन हसरतों से उसकी पूजा कर रही थी कि अब आँखें खुलेंगी तो वह बदन का प्यार पाने के लिए बाँहें फैलाकर खड़ा होगा, लेकिन उसे विश्वास करना पड़ा था, मगर वो नादान दिल·······? वह न भुला सका इन बातों को, जबान से तो वह इस रिश्ते के आगे कुछ न कह सकी थी मगर नाजुक से दिल में एक काँटा सा चुभ गया था, जिसे निकालने से भी दर्द होता था और न निकालने से भी तकलीफ होती थी, तब इस सुलगती आग को बुझाने के लिए हर वक्त आँसू टप-टप गिरते रहते, खामोशी से, मगर वे बुझा न सके इस आग को। चेहरे की रौनक और दिल का चंचलपन तो दूर हो गया था, साथ ही जाते-जाते उसके दिल की उमगें भी लेता गया वह रजोगम। तब उसके दिमाग में शहनाज ने आकर थोड़ी सी हलचल मचाई, जिसने अपनी किस्मत के सहारे उस शख्स को पा लिया जिसकी परछाईं बनने के लिए उसने क्या न किया था, लेकिन वह कर भी क्या सकती थी सिवाय इसके कि वह अपने आपको और परेशान करे और इसी परेशानी से बचने के लिए उसने शादी के बंधन में बँध जाना ठीक समझा, ताकि दिल में उठता हुआ ज्वार-भाटा शांत हो जाए, दिल में मचलते अरमानों को दफन करने के लिए किसी के सीने से लगकर बाँहों में बंध सके, और साथ ही अपने कीमती आँसुओं को बिना बात पर बहने से रोकने के लिए किसी के कंधे पर सर टिका सके, मगर वो कंधा भी उसकी किस्मत में नहीं लिखा था।

कितनी लम्बी थी उसकी जिन्दगी की कहानी, जिसमें पहाड़ियों की सी ऊंचाई-निचाई थी और सागर की लहरों का सा तूफान था। कुछ कहा नहीं जा सकता था कि उसने जिन्दगी में क्या देखा था और क्या नहीं देखा था, खुशियाँ, हँसी-मजाक, चुलबुलापन, शरारत, अठखेलियाँ, मासूमियत, मायूसियत, उदासी, बेचैनी, बेकरारी, तड़प, आँसू और आहें क्या नहीं मिला था उसे और

अगर इन सबके बाद कोई चीज उसके हिस्से में आने से रह गई थी तो वो थी— मौत ।

जिसके इर्द-गिर्द उसकी जिन्दगी भँवर में फँसी सफीना की तरह चक्कर काट रही थी, मगर वो जानती थी कि उसे मौत अभी नहीं मिलेगी, कम से कम उसे अदालत तो मौत का ऐलान नहीं सुना सकती, चाहे खुदा बिना बताये उसे उठा ले, क्योंकि 'पैसा' और 'पहुंच' कानून को अगर मिटा नहीं सकता तो कम से कम उसे अपनी जगह से थोड़ा हटा तो सकता है, क्योंकि नोटों का नशा इतना तेज होता है कि वह कानून को भी बेहोश कर देता है और बेचारा कानून नशे में कहना तो कुछ चाहता है, मगर कह कुछ और जाता है ।

और इसी कानून का फैसला सुनने के लिए आज मुमताज को आखिरी बार अदालत में आना पड़ा था, घर के तो सारे आदमी थे ही अदालत में, बल्कि शहर के कई बड़े-बड़े रईस, और बिजनेसमैन और बड़े लोग भी वहाँ मौजूद थे, अगली सीटों पर मुमताज के वालिद साहब, उनकी अम्मी परेशानी से सर झुकाए बैठे थे, और उससे अगली सीट पर साजिद बैठा था और उसके बराबर की दो सीटों पर लेखक के बगल में शहनाज बैठी थी और उसके पास ही नौशाबा और उसकी अम्मी बैठी थीं, खामोशी और उदासी सभी के चेहरों पर थी, कोई किसी से बात नहीं कर रहा था ।

फैसला सुनाने का वक्त करीब आता जा रहा था और साथ ही दिल की धड़कन भी तेज होती जा रही थी कि अभी जज साहब के तशरीफ लाने का ऐलान हुआ और उनके अदालत में दाखिल होते ही सब खामोशी से खड़े हो कर बैठ गए ।

हर तरफ 'पिनड्राप साइलेण्ट' थी, केवल छत पर लटके हुए पंखों की एक दबी हुई सी आवाज फैल रही थी ।

अदालत की कार्यवाही शुरू की गई, कि तभी पेशकार ने केस का हवाला पढ़कर सुनाया तो मुमताज पुलिस की हिरासत में अदालत में लाई गई, जब वह 'विटनेस बॉक्स' में आकर खड़ी हुई तो उसका चेहरा मासूमियत

और उदासी लिये हुए था, सर झुकाए और उस हॉल में मुमताज को देखकर उसकी अम्मीजान का दिल रो पड़ा, आँसू तो सबकी आँखों में तैर रहे थे मगर वो दिल एक माँ का दिल था।

अदालत में मुमताज के आने से जो हल्की सी फुसफुसाहट फैल गई थी उसे दूर करने के लिए जज ने लकड़ी की हथौड़ी को अपनी मेज पर पीटते हुए कहा—ऑर्डर-ऑर्डर, और फिर से खामोशी छा गई, तभी एक मिनट तक अपने सामने रखे कागजों को उलटने-पुलटने के बाद जज ने फैसला सुनाना शुरू किया—'सेठ वाजिदअली की बेटी और मरहूम मुहम्मद जमालखाँ की बीबी मिसेज मुमताज बानो को अपने शौहर का कत्ल करने के जुर्म में अदालत और जूरी की राय पर दो साल की सख्त कैद की सजा दी जाती है।'

और सुनते ही मुमताज ने अपनी आँखों को कसकर बन्द कर लिया, मगर कोई न देख सका उनसे निकले हुए उन दो आँसुओं को, जो टपककर उसके हाथों पर गिर पड़े, मगर इस आह को उसकी अम्मी के दिल ने पहचान लिया था कि वे लगभग चीख ही पड़ी थीं।

अदालत की कार्यवाही खत्म हो चुकी थी और सभी उठकर बाहर जाने लगे थे।

और यह लोग भी तब बाहर आकर मुमताज से मिलने का इन्तजार करने लगे, जहाँ पास ही सेन्ट्रल जेल जाने के लिए पुलिस की गाड़ी तैयार खड़ी थी, कि तभी मुमताज बोझिल कदम उठाए सामने से आती दिखाई दी, जिसके पीछे पुलिस पूरी हिफाजत से थी, कदम उसके नजदीक आते जा रहे थे और सबकी नजर उसी की तरफ उठी हुई थी, करीब आते ही सबसे पहले वह अपनी अम्मीजान की तरफ बढ़ी और उस ममतामयी माँ ने भी बाँहें फैलाकर अपनी बेटी को सीने से कसकर लगा लिया, उनके कन्धे पर सर टिकाकर मुमताज बच्चों की तरह बिलख पड़ी, पता नहीं उसे अपनी किस्मत पर रोना आया था या अपनी माँ की यह हालत देखकर उसका दिल सिसक उठा था, देखने वाला कोई भी इस बात का चित्र अपने दिमाग में नहीं बना सकता था उस वक्त कि इस तरह पिघल जाने वाली मुमताज के हाथ से पिस्तौल भी चल सकती है।

मुमताज़ का चेहरा अपने हाथों में लेकर उसको अम्मीजान सिर्फ इतना ही कह पायीं—'मेरी बानू' और फिर से उसे इस तरह सीने से लगा लिया जैसे अब कभी भी वह इस बन्धन से रिहा नहीं होगी, तब सहारा देने के लिए उसके अब्बा हज़ूर ने अपनी बेटी के कन्धे पकड़ कर उसे मां से अलग कर दिया, और तब सिसक कर मुमताज़ उनसे लिपट गयी, अपना आँसुओं भरा चेहरा उठाकर उसने रोते हुए कहा—मुझे माफ कर देना अब्बा हजूर, मैंने आपके साथ बहुत बेइन्साफी की है, घर की इज्जत, मान मर्यादा, सब मेरी वजह से आज बरबाद हुई है।

तब उन्होंने भारी आवाज में कहा, माफी तो तुम्हें इनसे मांगनी चाहिए, कहते हुए इशारा उन्होंने अपने पास खड़े हुए जमाल के वालिद साहब की तरफ किया, बोले—बरबादी तो असल में इनकी हुई है।

"और बरबाद करने वाले आबाद हुए भी कब हैं.....!" कह कर उसने अपने ससुर साहब की तरफ से मुँह फेर लिया, तब उसके वालिद साहब ने दोबारा मुमताज़ को अपनी बाहों में लिया, कि कहीं वह कुछ और न कह दे, बात का पहलू बदलते हुए उन्होंने अपनी बेटी के आँसू पोंछे और कहने लगे—तुम घबराओ नहीं, अगर किस्मत में यही लिखा था तो मन्जूर करना ही पड़ेगा, मैंने जेलर साहब से मिलकर सब ठीक कर लिया है, तुम्हें किसी किस्म की तकलीफ नहीं होगी, बस ! समझना कि दिन कटी हो रही है, दो साल तो बहुत जल्द बीत जायेंगे, साथ ही मैं कोशिश करके चार छह महीने और कम करा लूंगा।

तभी पुलिस कांस्टेबल अदब से करीब आते हुए बोला—जल्दी कीजिए वक्त हो गया है।

सुनकर उन्होंने मुमताज को अपने आपसे अलग कर दिया, और तब बढ़कर मुमताज़ साजिद के सामने आ गयी, आ तो गई वह उसके पास, मगर उससे कहे क्या, यह न सोच पाई, भरी आँखें लिए उसने अपना चेहरा उठाया, कहने लगी—तुमसे क्या कहूं यह मैं सोच नहीं पा रही हूं मगर इतना फिर भी कहूंगी मैंने जिन्दगी में तुम्हें कुछ भी नहीं दिया है, बल्कि तुम्हें हमेशा परेशान किया है।

मगर यह बातें तुम किससे कह रही हो, साजिद ने कहा।

कह तो तुम्हीं से रही हू, मगर देखो, मेरी नौशाबा को कभी नाराज या नाशाद नहीं होने देना, अगर वह खुद न भी आए तो भी उसे जरूर बुलाते रहना, और हाँ, देखो, जब भी वो आए तो उसे मेरे ही कमरे में बिठाना, कही तो उसने यह बात साजिद से मगर कह कर उसके बराबर में खड़ी नौशाबा से लिपट गयी, दिल की आहें सिसकियाँ बन कर फूट निकलीं, जिसका साथ आँसुओं ने बड़े तकल्लुफ से दिया तब नौशाबा ने उसे सम्भाल कर अपने से जुदा करते हुए कहा—तब इसमें इस तरह जार-जार रोने की भला क्या बात है कहते हुए उसने मुमताज के आँसू पोंछ दिये, कहने लगी—तुम ऐसी बातें क्यों करती हो, बस थोड़े दिनों की तो बात है, धीरज से काम लो, नौशाबा ने यह बात कही ही थी कि पुलिस कांस्टेबल ने दोबारा आकर कहा—जल्दी करिए वक्त बहुत थोड़ा है, गाड़ी तैयार है।

मगर इस बात का कोई जवाब दिये बगैर मुमताज़ लेखक की तरफ बढ़ी, नजर तो मिली हुई थी उसकी मगर कह कुछ न पायी, तो उसकी जुबान से कहलवाने के लिए वह बोला—तुमने जो भी किया है मुमताज ! वो गलत है या ठीक, यह मैं नहीं कह सकता मगर इतना जरूर कहूंगा कि तुमने जो भी किया है उसे बिना सोचे समझे किया है, लेकिन अब अन्जाम को और ज्यादा रंजीदा न बनाने के लिए यही कहना होगा कि ईश्वर जो भी करता है सबके भले के लिए करता है, बस तुम भी इसी बात को सबसे कीमती समझना।

जवाब देना तो चाहती थी मुमताज इस बात का, मगर जवाब देने के लिए दो चार मिनट का वक्त चाहिए उसे, जो उसे नहीं मिल सकता था क्योंकि दो तीन पुलिस कांस्टेबिल लॉरी के पास खड़े उसके जल्दी से फारिग होने का इन्तजार कर रहे थे, तो इस परेशानी से बचने के लिए उसने सर झुका बात को स्वीकार कर लिया।

और अब आखिर में उसके सामने रह गयी थी शहनाज, जिसकी तरफ मुखातिब होते वक्त न जाने आँसुओं भरे उसके चेहरे पर मुस्कान की एक

हल्की सी रेखा कैसे खिंच गयी, न मालूम यह मुस्कान किसका मजाक उड़ा रही थी, शायद मुमताज़ अपनी ही किस्मत के रोने पर मुस्कुरा उठी थी, एक सर्द आह लेकर उसने शहनाज से कहा—हमारी और तुम्हारी जब भी मुलाकात हुई, मैंने हमेशा ही तुमसे ऐसी बातें कहीं, जिनसे तुम्हारे दिल पर चोट पहुंची, मगर मैं सच कहती हूं मैंने यह सब अनजाने में ही कहा होगा, इस वास्ते अगर तुमसे हो सके तो मुझे माफ कर देना शहनाज !

कहा तो आपने बहुत तौल कर है, आज इन तमाम बातों की जड़ तो मैं हूं, कसूर मेरा है सब, मगर सजा आपको मिल रही है, आखिर दुनिया में बदनसीब किसी को इसके सिवाय और दे भी क्या सकते हैं, आपकी ·······

नहीं शहनाज ऐसा मत कहो, बदनसीब तुम नहीं बल्कि मैं हूं जिसको जिन्दगी के हर मोड़ पर ठोकरें और नाकामयाबियाँ मिली हैं जिसकी किस्मत ने हर घड़ी कोसा है और कुदरत ने भी जी खोलकर मजाक उड़ाया है, जमाने वालों को तो दोष देना बेकार है जब जमाना साज ही हमारा दुश्मन बन गया हो तो इसमें किसी का क्या कसूर।

'मगर आज के इन हालात की गुनाहगार तो मैं हूं शहनाज ने एक अपराधी की तरह कहा।

नहीं शहनाज, तुम पर कोई इल्जाम नहीं दिया जा सकता, जो होना होता है वो होकर ही रहता है, मेरी किस्मत में जो लिखा था वो मुझे मिल रहा है, इसके लिए मैं दुनिया के किसी शख्स को बुरा भला क्यों कहू, और अगर कहना ही है तो मुझे खुदा से शिकायत करनी चाहिए जिसने मुमताज़ की तकदीर न जाने किस घड़ी में लिखी थी, कहने के बाद उसके मुंह से एक सर्द आह निकल गयी, और आँखों में नमी फैल गयी, उसने तब आहिस्ता से गर्दन घुमाकर अपनी पीठ पीछे खड़ी 'पुलिस वैन' की तरफ देखा, और फिर वापिस नजर घुमाते हुए उसने शहनाज की तरफ कर ली, तब एक बार तो उसका चेहरा झुक गया पल भर को, मगर दूसरे ही क्षण उसने अपना आँसुओं भरा चेहरा शहनाज की तरफ उठाया और उसके हाथ को धीरे से पकड़ते हुए बोली—एक 'इल्तजा' करना चाहती थी शहनाज तुमसे ! और जब

उसने शहनाज की आँखों में 'क्या' का मूक सवाल देखा तो वह बोझिल आवाज में बोली—'मैं जब भी जेल से लौटकर आऊं तो अपने इन बेटों में से रहम करके एक बेटे को मेरी गोद में भी डाल देना'' यह कह कर उसने तेजी से नजर घुमा ली और जाकर लॉरी में बैठ गयी, जो कि बैठते ही स्टार्ट हो गयी।

और......अपने पीछे धूल के गुब्बार उड़ाती हुई उसी में जज्ब हो गयी।